Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गांधी लोकगीत

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

माननीय श्री एच.डी. देवेगौड़ा
प्रधान मंत्री, भारत सरकार

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri
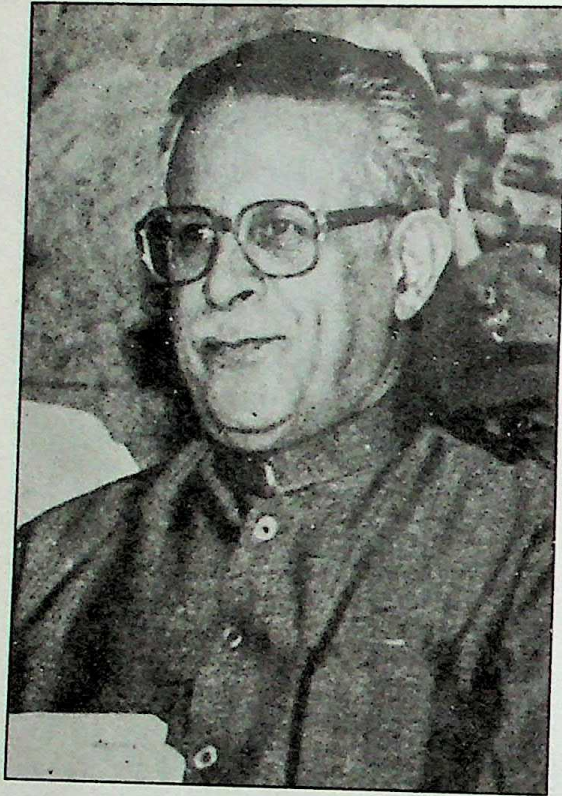
महामहिम श्री मोहम्मद शफी कुरैशी
राज्यपाल, मध्यप्रदेश
अध्यक्ष
महात्मा गांधी १२५वां जन्म वर्ष
समारोह समिति, मध्यप्रदेश

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सन्देश

हमें हर्ष है कि महात्मा गांधी १२५वां जन्म वर्ष समारोह समिति, मध्यप्रदेश ने पूज्य बापू की महिमायुक्त आदिवासी लोकगीतों के संकलन की एक विशेष पुस्तक ''गांधी लोकगीत'' प्रकाशित की है। हमें विश्वास है कि यह पुस्तक पूज्य बापू और भारतीय आजादी के प्रति हमारे आदिवासी भाईयों की आत्मीय अभिव्यक्ति की प्रत्यक्ष परिचायक सिद्ध होगी।

समिति का यह प्रयास प्रशंसनीय है, शुभकामनाएं।

अरविंद नेताम
पूर्व केन्द्रीय मंत्री, भारत सरकार,
महासचिव, अखिल भारतीय आदिवासी विकास परिषद्
नई दिल्ली

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

महात्मा गांधी १२५वां जन्म वर्ष समारोह समिति, मध्यप्रदेश ने महात्मा गांधी पर केंद्रित आदिवासी और आंचलिक लोकगीतों का संकलन कर प्रकाशित किया है। हमारे मध्यप्रदेश के आदिवासी भारतीय लोक संस्कृति के सशक्त संवाहक रहे हैं, जिस पर हमें गर्व है। प्रदेश की लोक बोलियों में रचित इन लोकगीतों में हमारे पूज्य बापू की महिमा का जिस ढंग से बखान मिलता है, वह अप्रतिम और अतुलनीय है।

हमें हर्ष है कि इस समिति ने इस दिशा में एक सशक्त प्रयास कर हमारे आदिवासियों की धरोहर को सदैव के लिए अमर बना दिया है। मैं आशा करता हूँ कि यह पुस्तक समिति के अन्य प्रकाशनों की भांति सुधी पाठकों और हमारे आदिवासियों के बीच अवश्य लोकप्रिय होगी।

दिग्विजय सिंह
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश
उपाध्यक्ष,
महात्मा गांधी १२५वां जन्म वर्ष समारोह समिति, मध्यप्रदेश

राज्य समन्वयक की ओर से...............

प्रकाशकीय

मध्यप्रदेश लोक बोलियों का हृदय प्रदेश है। मालवी, निमाड़ी, कोरकू, गोंडी, बुंदेलखण्डी, हलबी, छत्तीसगढ़ी आदि विभिन्न लोक बोलियाँ मध्यप्रदेश में अपनी गहरी समानता, संयोजनीयता तथा अन्तर्निर्भरता के कारण भाषाओं का कोलाज़ उपस्थित करती हैं। इतनी अधिक विविध बोलियाँ, लोकोक्तियाँ और आदिम परम्पराएँ अन्य किसी प्रदेश में नहीं होंगी, जितनी प्रचुरता के साथ वे मध्यप्रदेश में विद्यमान हैं।

मध्यप्रदेश में ही जहाँ कि सर्वाधिक आदिवासी आबादी निवास करती है, एक तरह से आदिवासी ही अब समूचे प्रदेश की बुनियादी अस्मिता के रूप में परीक्षित हैं। यह सुखद आश्चर्य का विषय रहा है कि औपचारिक शिक्षा, परिवर्तनीय सभ्यता और सतत उद्योगीकरण के थपेड़ों के बावजूद आदिवासी अब भी सच्चे धरती पुत्र के रूप में संस्कृति के संवाहक बने हुए हैं। मध्यप्रदेश में सर्वाधिक लोकबोलियों का जैसे कोलाज चित्रित है। इन लोकबोलियों में अनायास गाये गये गीत आज भी हमारी सांस्कृतिक धड़कन के पर्याय हैं। यह अजीब बात है कि अंग्रजों के खिलाफ भारतीय आजादी की लड़ाई में आदिवासियों ने उस तरह औपचारिक हिस्सा नहीं लिया जिस तरह औरों ने लिया, परन्तु अन्य किसी से भी आगे बढ़कर आदिवासियों ने ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ जंगे आजादी का परचम १८वीं सदी में ही थाम लिया था। १८५७ की लड़ाई के कोई एक सदी पहले और देश को आजादी दिलाने वाली स्वाधीनता संघर्ष की बुनियादी पार्टी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के जन्म के कोई डेढ़ वर्ष पहले मध्यप्रदेश में बस्तर जैसे दुरूह इलाके में आदिवासियों ने आजादी का मुकम्मिल संघर्ष शुरू कर दिया था। यह फिर हैरत की बात है कि मध्यप्रदेश के अधिकांश आदिवासी जिलों में महात्मा गांधी का दौरा नहीं हुआ, फिर भी इन लोकबोलियों में गांधी को मिथक महामानव, युगपुरुष और क्रांतिदूत बनाकर अबूझी उपमाओं से जिस तरह लैस किया गया है उसके सामने साक्षर कवित्व कहीं नहीं ठहरता।

आजादी का स्वर्ण जयंती वर्ष शुरू होने को है। इस पचासवें वर्ष में मध्यप्रदेश की महात्मा गांधी एक सौ पच्चीसवाँ जन्मवर्ष समारोह समिति राज्य शासन की आदिवासी लोक कला परिषद् के सहयोग से मध्यप्रदेश की लोकबोलियों मालवी, निमाड़ी, कोरकू, हलबी, गोंड़ी, बुंदेलखण्डी, बघेलखण्डी, छत्तीसगढ़ी आदि में गांधी और आजादी के महासमर के गाये गीतों की यह सिम्फनी प्रस्तुत करती है। ये गीत केवल प्रतीक हैं उस विशाल लोक साहित्य भंडार के, जो अब भी प्रकाशित होने को है। आदिवासी लोक कला परिषद् के सचिव डॉ. कपिल तिवारी तथा लोकबोलियों के गीतों के संचयक सर्वश्री डॉ. नर्मदाप्रसाद गुप्त, श्री गोमतीप्रसाद विकल, डॉ. भगवतीप्रसाद शुक्ल, श्री प्रह्लाद चन्द्र जोशी, श्री चन्द्रशेखर दुबे, श्री राधेश्याम बिहारी लाल शांडिल्य, श्री रामनारायण उपाध्याय, श्री बाबूलाल सेन, श्री डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित, श्री पीसीलाल यादव, श्री माधव शुक्ल मनोज, श्री शरद कुमार जोशी, डॉ. जुगल किशोर नामदेव, श्री देवेन्द्र सत्यार्थी के प्रति हम अपना आभार व्यक्त करते हैं। मध्यप्रदेश शासन के संवेदनशील मुख्यमंत्री श्री दिग्विजय सिंह, जो हमारी समिति के उपाध्यक्ष भी हैं, आदिवासी जनजीवन के प्रति अपनी प्रतिबद्धताओं के लिए जागरूक हैं। यह आदिवासी अस्मिता और चेतना को हमारी पहली भेंट है, अंतिम नहीं। यह हमारा सौभाग्य है कि भारत के प्रधानमंत्री इस कृति का विमोचन और लोकार्पण करने के लिए सहमत हो गये हैं, उनके प्रति हम केवल औपचारिक प्रतिबद्धता ज्ञापित नहीं करना चाहते, बल्कि हम उन्हें हृदय से धन्यवाद देना चाहते हैं। मध्यप्रदेश के शीर्षस्थ आदिवासी नेता और आदिवासी विकास परिषद के राष्ट्रीय महासचिव श्री अरविन्द नेताम भी बधाई और धन्यवाद के पात्र हैं, जिनके सहयोग से यह पुस्तक हम उचित अवसर के लिए प्रकाशित कर पा रहे हैं।

कनक तिवारी
राज्य समन्वयक

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अनुक्रमणिका

१.	डॉ. नर्मदाप्रसाद गुप्त	गांधी जू के गीत	पृ. १
२.	श्री गोमतीप्रसाद विकल	बघेली गीतों में गांधी	पृ. २७
३.	डॉ. भगवतीप्रसाद शुक्ल	बघेली लोकगीतों में गांधी	पृ. ५४
४.	श्री प्रहलाद चन्द्र जोशी	मालवी लोक जीवन में गांधी जीवनं के विविध प्रसंग	पृ. ८३
५.	श्री चन्द्रशेखर दुबे	गांधीजी पर केन्द्रित लोकशैली के गीत	पृ. ११४
६.	श्री राधेश्याम बिहारी लाल शांडिल्य	गांधी पर केन्द्रित हिन्दी, निमाड़ी और कोरकू गीत	पृ. १५५
७.	श्री रामनारायण उपाध्याय	लोकगीतों में गांधी	पृ. १८५
८.	श्री बाबूलाल सेन	लोकजीवन और साहित्य में बापू	पृ. १९१
९.	डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित	महात्मागांधी पर मालवी लोकगीत	पृ. २०८
१०.	श्री पीसीलाल यादव	छत्तीसगढ़ी गांधी गीत	पृ. २२६
११.	श्री माधव शुक्ल मनोज	बुन्देली गीतों में गांधी	पृ. २५७
१२.	श्री शरद कुमार जोशी	हिन्दी गीतों में गांधी जीवन दर्शन	पृ. २८८
१३.	डॉ. जुगल किशोर नामदेव	बुन्देली गीतों में गांधी	पृ. ३१६
१४.	श्री देवेन्द्र सत्यार्थी	लोक गीतों में गांधीजी	पृ. ३३५

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गान्धी जू के गीत

संकलन भावार्थ एवं संदर्भः
नर्मदा प्रसाद गुप्त
मंगलम्
सर्किट हाउस मार्ग
छतरपुर-४७१००१
(मध्यप्रदेश)

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

१.

सूरज जागो बड़े भोर सें, उठो पुकारो गान्धी नें।
प्यारे भइया हमं सोऊ जागें, उठो पुकारो गान्धी नें।।
हमें लड़ाई लड़ने जानें, टेर लगाई गान्धी नें।
माता खों आजाद करानें, टेर लगाई गान्धी नें।।
जोई बिदेसी सोई जरानें, जज्ञ रचाई गान्धी नें।
अपनो सब कछु होम करानें, जज्ञ रचाई गान्धी नें।
गोलिन के सामूँ आड़ जानें, कसम धराई गान्धी नें।
हमखों बलिबेदी चढ़ जानें, कसम धराई गान्धी नें।।

- स्व. रामकुँवरि गुप्ता, छतरपुर
के संग्रह से प्राप्त

- गान्धीजी ने पुकारा है और सूरज तक जाग उठा है, भैया, हम भी जागें। भारत माता को आजाद कराने के लिए हमें लड़ने जाना है। विदेशी वस्तुएँ जलाने के लिए गान्धीजी ने यज्ञ रचा है। हम भी अपना सब कुछ होम कर दें। गोलियों के सामने अड़ जाने के लिए गान्धीजी ने शपथ रखी है। आओं, हम भी बलिवेदी पर चढ़ जायें।

संदर्भ : स्वदेशी आन्दोलन (१९२० ई.) के बाद का गीत।

२.

देखौ टूटै न चरखा कौ तार,
चरखवा चालू रहै।। टेक।।
गान्धी बाबा दूल्हा बने हैं, दुल्हिन बनी सरकार। चरखवा.।।
सबरे वालेन्टियर बने बराती, नउआ बनो थानेदार। चरखवा.।।
सब पटवारी गाबैं गारीं, पूड़ी बेलें तैसीलदार। चरखवा.।।
गान्धी बाबा नेंग में मचले, दायजे में माँगें सुराज। चरखवा.।।
ठाँड़ी गवरमेंट बिनती सुनाबैं, जीजा, गौने में दैबी सुराज। चरखवा.।।
अरे टूटै न चरखा कौ तार, चरखवा चालू रहै।।

- स्व. रामकुँवरि गुप्ता, छतरपुर
के संग्रह से प्राप्त।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

- उक्त गीत महात्मा गांधी और अंग्रेज सरकार के विवाह का एक सटीक रूपक है। इसमें सेवादल के सदस्य बराती हैं और थानेदार नाई, पटवारी गारियाँ गाने वाले तथा तहसीलदार पूड़ी बेलने वाले हैं। गान्धीजी दायजे 'स्वराज' माँगने के लिए मचल रहे हैं, लेकिन गवर्नमेंट (अंग्रेज) उसे गौने में देने के लिए कहकर टाल रही है।

संदर्भ : १९२० ई. के स्वदेशी आन्दोलन और उसके बाद का चरखा-गीत, जो चरखा चलाते समय गाया जाने वाला एकल और समूह- गीत, दोनों रूपों में लोक प्रचलित रहा।

३.

चल-चल चक्र सुदर्सन मोरे
चल-चल चरखा चल रे।।टेक।।
गान्धी के सपनन के डोरे
चल-चल चरखा चल रे।।चल.।।
गान्धी नें सुराज के काजें ऐसो अलख जगाओं
ई चरखा के तार-तार में अपनो मंत्र भराओं
देस छोड़ जैहें जे गोरे।
चल-चल चरखा चल रे।।चल.।।
घर-घर में चरखा कौ सुर जो गूँज रओ है बाँको
जन-जन जाग रये जागन को जंत्र गओं है टाँको
दासता की बेड़ीं टोरे
चल-चल चरखा चल रे।।चल.।।

- श्रीमती कमला सोनी, राठ (जिला हमीरपुर)
से प्राप्त।

- मेरे चक्र सुदर्शन चरखे तू निरंतर चल। गान्धी के स्वपनों के सूत्र तू निरंतर चल। गान्धी ने स्वराज के लिए तुम्हारे तारों में मंत्र भर दिया है, जिससे अंग्रेज भारत छोड़कर चले जाएँगे। चरखे का स्वर हर घर में गूँज रहा है और जनता जाग रही है, क्योंकि वह जागृति का जंत्र है। गुलामी की बेड़ियाँ तोड़ने वाले तू निरंतर चल।

संदर्भ : १९२०-३० ई. में प्रचलित गीत।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

४.

सदाँ तुरइयाँ रे ना फूलें, सदाँ न सावन होई।
सदाँ न राजा रन चढ़ें, सदाँ न जोबन होई।। गान्धी जू के राछरे।।
सबरे संगी लड़ने गये हैं, हमइँ लड़न खों जाँय,
धनिया मोरी, गान्धी नें दई है पुकार।
कौना नें छेड़ी भयंकर लड़ाई, कौना नें दई है पुकार?
गान्धी नें छेड़ी भयंकर लड़ाई, नेहरू नें दई है पुकार।।
कौना गये हैं लड़ाई लड़न खों, संगी भये तय्यार?
बीरा गये हैं लड़ाई लड़न खों, संगी भये तय्यार।।
काना धरी हैं तुबक-तुबकिया, काना धरे हथयार?
धुल्लन टँगी हैं तुबक-तुबकिया, मदन धरे हथयार।।
काये खों पैरो जिरह उर बख्तर, काये खों लये हथयार?
चरखा चानें सूत कातबे, सत्याग्रह हथयार।।
गोरन की गोलिन के सामूँ, सीना खोल खड़े हो जायँ।
हथयारन के मोरचन सामूँ, जीत अहिंसा की हैं गायँ।।

- स्व. रामकुँवरि गुप्ता के निजी
संग्रह, छतरपुर से प्राप्त।

- तोरई सदा नहीं फूलती और न सदा सावन आता है। राजा सदा युद्ध नहीं करता और न सदा यौवन रहता है। हर का समय निश्चित है। गान्धीजी की पुकार पर सब साथी लड़ने गये हैं, हम भी लड़ने जाते हैं। यह भयंकर लड़ाई गान्धी ने शुरू की है और नेहरू ने बुलाया है। सभी वीर लड़ने गये हैं, कुछ तैयार हो रहे हैं। खूँटों में बंदूकें टँगी हैं और कोठे में शस्त्र रखे हैं। जिरह-बख्तर पहनना और हथयार लेना व्यर्थ है। सूत कातने को चरखा और सत्याग्रह का शस्त्र काफी हैं। अंग्रेजों की गोलियों के सामने सीना खोल देना है, ताकि हिंसा के विरूद्ध अहिंसा विजयी हो।

संदर्भ : १९२०-३० ई. में प्रचलित राछरा गीत।

५.

सब कोउ गाढ़ा पैरो भाई, जासों होय भलाई।
घर-घर राँटा चरखा धर लेव, बनवा लेव नटाई।
छोड़ देव इजलास तसीली, उर दीवानी भाई।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सौकत अली और गान्धी ने सबखाँ दओं जगाई।
दुज खुमान अब अपनी ऊअत किस्मत देत दिखाई।।

- श्रीमती सावित्री देवी, राठ (जिला हमीरपुर)
से प्राप्त।

-खादी पहनने की वकालत अनेक लोक कवियों ने की है, जिनमें द्विज खुमान भी प्रमुख हैं।

सबको खादी पहनना चाहिए, क्योंकि खादी कल्याणकारी है। हर घर में रहँटा, चरखा और नटाई हो। सब कचहरी, तहसीली और दीवानी त्याग दें। शौकत अली और गान्धी ने सबको जाग्रत कर दिया है। लगता है कि अब अपना भाग्योदय होने वाला है।

संदर्भ : १९२० ई. के स्वदेशी आन्दोलन के बाद गायी जाने वाली फाग, जिसमें आन्दोलन का सकेत और फलस्वरूप सफलता का आशावाद है।

६.

चलाउत आओ चरखा, कताउत आओ सूत।
गोरा खदेरन कों, बनिया कौ पूत।।१।।
सैयाँ होकें भारतबासी, काये हँसी कराउत मोर। (टेक)
खादी की धोती नई ल्याओ, धूपछाँव जबरन पैराओ।
तुम पै चलत न जोर।। सैयाँ.।।
खन में मन हट गाओ हमारो, सो ना चानें हमें तुमारो।
छिमा करौ जू खोर।। सैयाँ.।।
गाढ़ा की चोली बनवा देव, कुसमानी रंग से रँगवा देव।
लगा हरीरी कोर।। सैयाँ.।।
जो न स्वदेसी को अपनाओं, हमनें जानी तौ बस आओ।
अमन सभा कौ छोर।। सैयाँ.।।
पैयाँ परों देस रस पागो, मौत सो चुके हौ उठ जागो।
कयें खुमान भओ भोर।। सैयाँ.।।

- पत्नी अपने पति से कहती है कि भारत के नागरिक होकर हँसी का काम क्यों करते हो। धूपछाँह, खन आदि वस्त्रों से मन हट गया है, इसलिये खादी की चोली बनवा दीजिए। यदि गान्धीजी के ''स्वदेशी'' को नहीं अपनाते, तो अमन (शान्ति) सभा समाप्त समझो। तुम्हारे चरण छूकर इतना ही कहती हूँ कि देश-प्रेम की भावना जाग्रत करो, अब नया

प्रभात उग आया है। बनिया के पुत्र गान्धी ने अंग्रेजों को देश से भगाने के लिए चरखा चलाया और सूत काता है। तुम भी उनका अनुसरण करो।

संदर्भ : १९२० ई. के स्वदेशी आन्दोलन में और उसके बाद गाया गया।

७.

चौंक उठा था विश्व एक दिन सुन यह तेरी बानी।
रह न सकेगी इस अछूतपन की अब कहीं निशानी।।
गिरे हुए अपने पैरों से उठ ऊँचे होवेंगे।
पिछड़े हुए बढ़ेंगे आगे अब न पड़े सोवेंगे।।
तू चल पड़ा मृत्यु से लड़ने प्राणों की धर बाजी।
तुझे बधाई है ओ विजयी, जीती दुस्तर बाजी।।१।।

लड़ता है पर सदा शत्रु पर प्रेम भाव दरसाता।
चींटी तक की रक्षा करके असुर भाव भरवाता।।
पाप करें हम, किन्तु प्रायश्चित को वह आगे जाता।
अजब अटपटी लीला है कुछ नहीं समझ में आता।।
फिर भी खिंचे जा रहे पीछे ऐसा जादू डाला।
जुग-जुग जियै हमारा मोहन जगत मोहने वाला।।२।।

- भारतेन्दु अरजरिया ''इन्दु'' कुलपहाड़
(जि. महोबा) उ.प्र. से प्राप्त।

- गान्धीजी की यह घोषणा सुनकर विश्व चकित रह गया कि अब अछूतपन या छुआछूत का भेद नहीं रहेगा। पतित और पिछड़े दोनों प्रगति करेंगे। गान्धीजी की लीला अनोखी है। शत्रु से लड़ते हैं, पर प्रेमभाव रखते हैं। चींटी तक की रक्षा करते हैं। पाप कोई करे, प्रायश्चित वे करते हैं। सभी उनके जादू से मोहित हैं।

संदर्भ : छुआछूत को नष्ट करने के अभियान पर गाया जाने वाला गीत।

८.

श्रीराम जय राम जय जय राम।
उन सन्तों को सतत् प्रणाम।

जिन सब मेंटा भेदाभेद।
वर्ण-जाति का कर उच्छेद।।
जयति बुद्ध जय करूणा-धाम।
बहुजन-तारण भव-विश्राम।।
जय गुरू गोरख रामानन्द।
नामदेव हरि-भक्त अमन्द।।
जयति कबीरा जय रैदास।
अनहद पाया प्रकट प्रकास।।
जयति मिताई प्रभु चैतन्य।
हरि-रस सींचा भूतल धन्य।।
जय गुरू नानक सत्य अकाल।
जय-जय स्वामी दादूदयाल।।
एकनाथ जय तूलानामे।
जगत गुँजाया बिट्ठल नाम।
ज्योति फुले समभाव अनूप।।
जय बापा जनसेवा-रूप।।
जय सर्वोदय-व्रत-अवतार।
सत्य-अहिंसा -पालनहार।।
परहित-काज दधीचि-समान।
जय-जय गान्धी संत महान।।
इन संतों को सतत् प्रणाम।
श्रीराम जय राम जय-जय राम।।

- हरिजन-सेवक-संघ की प्रार्थना,
रचनाकार-स्व. वियोगी हरि, भगवद्भत
'शिशु' दिल्ली से प्राप्त

- इन पंक्तियों में भारत के उन महान् संतों को प्रणाम किया गया है, जिन्होंने वर्ण-जाति का भेदभाव समाप्त किया हो। भगवान बुद्ध, गुरू गोरखनाथ, रामानन्द, नामदेव, कबीर से लेकर बापा तक। इन संतों की परम्परा में गान्धीजी को

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

परिगणित किया गया है। सर्वोदय, सत्य, अहिंसा और परहित गान्धीजी के भूषण थे।

संदर्भ : प्रार्थना के रूप में गाया जाने वाला समूह-गीत।

९.

कलियुग का अंत आ गया, आया है सत्य-युग
मानव का मोल बढ़ गया, आया है धर्म-युग
गान्धी के राज में, बापू के राज में।
सबके ही हक समान हैं, कैसा ये ऊँच-नीच
दुश्मनी क्यों डालता है भाईयों के बीच
गान्धी के राज में, बापू के राज में।
पुतला जला रहे हैं हम इस छूतछात का
गढ़ भी ढहा रहे हैं हम इस जात-पाँत का
गान्धी के राज में, बापू के राज में।
पानी कुओं से लेंगे हमें रोकता है कौन?
दर्शन करेंगे मंदिरों में टोकता है कौन?
गान्धी के राज में, बापू के राज में।
देंगे मिला इन रूढ़ियों को धूल में अभी
बेकस हैं हम रहना नहीं इस भूल में कभी
गान्धी के राज में, बापू के राज में।
पीछे किसी से रहने को हरगिज नहीं तैयार
कहना न अब अछूत कभी हमको खबरदार
गान्धी के राज में, बापू के राज में।
हरिजन हैं हम हरिधाम में उत्सव मनायेंगे
जो गिर चुके तुमको भी हम हरिजन बनायेंगे
गान्धी के राज में, बापू के राज में।
हर दिल को प्रेम-प्रीति के अमृत से भरेंगे
गान्धी का हर हमेशा जय-जयकार करेंगे
गान्धी के राज में, बापू के राज में।

- प्रभात-फेरी का गीत
रचनाकार स्व. वियोगी हरि,
भगवदत्त, दिल्ली से प्राप्त

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

- गान्धी के द्वारा सत्य और धर्म का युग लाया गया है, इसीलिए मानव का सम्मान बढ़ गया है। अब सबके अधिकार समान हैं, फिर ऊँच-नीच का प्रश्न ही नहीं है। छुआ-छूत और जाति-पाँत को हम नष्ट करेंगे। हरिजन कुओं से पानी भरेंगे और मंदिरों में जाकर देवता के दर्शन करेंगे। सभी रूढ़ियों को तोड़ डालेंगे। हमें बेबस मत समझो, हम किसी से पीछे नहीं रहेंगे। सावधान, हमें अब अछूत न कहना। हम हर हृदय में प्रेम का अमृत भरेंगे और गान्धी बाबा का जयकार करेंगे।

संदर्भ : हरिजनों द्वारा प्रभात-फेरी में गाया गया गीत।

१०.

उठो भाईयो, चलो आज, माता ने तुम्हें बुलाया है।
कर्मवीर गान्धी के द्वारा यह संदेश पठाया है।
उठाकर रख दो पुस्तक वीर, गुलामी की तोड़ो जंजीर।
न हो जब तक भारत स्वाधीन,
न लो विश्राम, न हो श्रमहीन।
हो जाओ बलिदान देश पर, यही मंत्र सिखलाया है।।कर्मवीर.।।
नहीं डरेंगे, नहीं डरेंगे,
तोपों से, तलवारों से।
मर जावेंगे, मिट जावेंगे
पर कुछ करके जावेंगे।
परधीनता हटा सदा को, देश स्वतंत्र बनावेंगे।।कर्मवीर.।।

- मुन्नी लाल सोनी, महोबा से प्राप्त।

- भारत माता ने वीरगाँधी को भेजकर यह संदेश दिया कि भारत की दासता की जंजीर तोड़कर उसे स्वतंत्र कर दो। देश पर बलिदान होना है। प्रभावित होकर आजादी का सेनानी मर-मिटने का संकल्प करता है और देश को स्वतंत्र करने की घोषणा भी करता है।

संदर्भ : १९४२ ई. के आंदोलन में लोकप्रचलित गीत।

११.

चलने दो हाथ निहत्थों पर,
जत्थों पर जत्थे आवेंगे।
गान्धी के एक इशारे पर,

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लाखों मत्थे चढ़ जावेंगे।
तोड़े कानून किताबों का,
छापेखाने, अखबारों का।।
इस अनाचार के शासन को,
हाथों-हाथों चर जावेंगे।।

- श्रीमती प्रेमकुँवरि, झाँसी से प्राप्त।

- गान्धीजी के एक संकेत पर लाखों बलिदान होंगे। निहत्थों का दमन होने पर समूह के समूह संघर्ष करेंगे। इस अन्यायी शासन को जड़ से उखाड़ देंगे।

संदर्भ : अंग्रेजी शासन के दमन पर १९४२ ई. के बाद प्रचलित।

१२.
दरसन खों चलौ चलिये, गान्धी बब्बा जू हैं आये।।टेक।।
हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई, सब खों कंठ लगाये।
मिलजुर कें इक मानवता की, धरम धुजा फहराये।
बड़े-बड़े राजा-महाराजा, गान्धी टोपी लगाये।
घर-घर चरखा चलन लगे, खादी गान्धी लै आये। दरसन.।।
चालिस दिनन को लैकें अनसन, जल बिन, अन्न न खाये।
मौलाना उरबीर जवाहर, मोहनदास कहाये।
नगर गाँव तैसील जिलन में, जा जा कें सब छाये।
गाड़िन ठेला चढ़ी चढ़ोत्तरी, लाखन भीड़ लगाये। दरसन.।।
राज-पाट धन कुटुम छोड़ दये, ऐसो दुक्ख उठाये।
गाँव गलिन में कीरत गूँजी, सब नर मुक्ती पाये।
सब दासन के दास फकीरे, आँखन देखी गये।
सत्य अहिंसा लैकें गान्धी, सतवादी बीर कहाये। दरसन.।।

- श्रीमती सुधारानी, जबलपुर से प्राप्त।

- महात्मा गान्धी के दर्शन करने के लिए एक स्त्री दूसरी से आग्रह करती है और उनकी विशेषताएँ गिनाती है कि उन्होंने हिन्दू, मुस्लिम, सिख और ईसाई में कोई भेद नहीं किया और एक मानव-धर्म की स्थापना की है। खादी का प्रचार इतना हुआ कि राजाओं-महाराजाओं तक ने गान्धी टोपी धारण कर ली है। चालीस दिनों के अनशन से मौलाना आजाद,

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जवाहर लाल नेहरू और मोहनदास गान्धी सर्वत्र छा गए और उनके प्रभाव से लाखों लोगों ने उन्हें भेटें दी हैं। राजपाट, धन, परिवार छोड़कर बड़े दुःख झेले हैं, इसीलिए उनकी कीर्ति फैली। गान्धी ने सत्य-अहिंसा के अस्त्र लेकर सत्यवादी वीर की उपाधि प्राप्त की है।

संदर्भ : गान्धीजी की ख्याति फैलने के बाद का गीत।

१३.

काँधे पै लँगोटी एक तकली लिये है हाथ,
पास में न तेग है न तीर है कमनियाँ।
मोहिनी पढ़ो है ऐसो मोहित कियो है हिन्द,
चलत इशारे पर लोग अनगिनियाँ।
इनके अँगारू चल सकत किसी की नहीं,
ऐसों है निशंक शंक मानत है दुनियाँ।
बिन शस्त्र ही के शत्रुदलन पछारें देत,
लंदन हिलायें देत भारत को बनियाँ॥१॥
अस्त्र को अठाये बिन विश्व को कँपायें देत,
भारत को जगायें देत ऐसो बड़ो गुनियाँ।
हँस-हँस ढोयें देत भीतें परतंत्रता की,
युक्ति हूँ, बतायें देत चक्रिय है दुनियाँ।
कहाँ लौं बखानूँ ऐसो न सुनो है कहूँ,
मुट्ठी भर हाड़ किन्तु गुन अनगिनियाँ।
गजब गुजारें देत हलचल पारे देत,
लंदन हिलायें देत भारत को बनियाँ॥२॥

- अयोध्या प्रसाद गुप्त ''कुमुद'' उरई से प्राप्त।

- गान्धीजी कन्धें पर लँगोटी रखे हैं और हाथ में तकली लेकर चला रहे हैं। उनके पास कोई अस्त्र-शस्त्र नहीं हैं। वे मोहन-मंत्र सीख चुके हैं। उनके इशारे पर अगणित लोग चलने को तैयार रहते हैं। उनके सामने किसी की नहीं चलती। बिना शस्त्र के शत्रुओं को पराजित करते हैं और लंदन को कम्पित किये दे रहे हैं। भारत को जाग्रत करना, परतंत्रता ढहाना, विश्व को चकित करना और अमेरिका एवं ब्रिटेन को हिला देना गान्धीजी का कार्य था।

संदर्भ : कवित्त गायकी मध्ययुग की विशिष्ट गायकी थी, जो आगे चलकर बीसवीं शती के प्रथम चरण तक चलती रही।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

१४.

भये गान्धी जू महाराज, वीर जे नोखे भारत में ।।टेक।।
गान्धी जू महाराज तपी कैसी अंगरेजी
गान्धी नेता खड़े करे गेरउँ सें तेजी
गान्धी टोपी चला दई देखो भारत में।। भये.।।
जैसो गान्धी भेष पुजो, बैसई पजे हैं नाहर
पीड़ित मोतीलाल और सुतबीर जवाहर
सत्याग्रह की धूम मची देखो भारत में।। भये.।।
जिनके घर लच्छो खड़ी, पार नई माथा को
बे अब जेलन में डरे, छोड़ें घर उर दोरो
गेराँ डंका बज रओ है देखो भारत में।।भये।।
ए ब सी दरजा चढ़े जेल है अपनो-अपनो
लंदन लौं जाहिर भओ बिट्ठल भाई को सपनो
गान्धी लायँ सुराज, फकीरे चेतो भारत में ।।भये.।।

- श्रीमती निर्मला ठाकुर, बरगी से प्राप्त।

- गान्धीजी भारत के अनोखे वीर थे। उन्होंने अपने अनुयायी नेता देशभर में खड़े कर दिए, गान्धी टोपी पुजने लगी और मोतीलाल एवं जवाहरलाल जैसे शेर नेता उत्पन्न हुए। सत्याग्रह हुआ और धनी वर्ग तक जेल में भर गया। विट्ठल भाई पटेल का स्वप्न लंदन तक प्रकट हुआ, जिससे गान्धीजी का डंका ऐसा बजा कि स्वराज का मार्ग प्रशस्त हो गया।

संदर्भ : स्वतंत्रता- प्राप्ति के पूर्व का गीत।

१५.

जो नइयाँ हवा आँधी।
जो आओ है गान्धी।।
जो नइयाँ घटा भोली।
सत्याग्रहियन की टोली।।
गरीबन में लानें गान्धी की झोली।।
जो नइयाँ चमकत बिजुरी।
जो गान्धी के सपनन की,

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

माया है, सिगरी।।
जो नइयाँ बरसत पानी।
जो गान्धी जी के सत्य-
अहिंसा की बानी।।
जो नइयाँ बिरहिन डरपत।
जो गान्धी के डर सें
फिरंगी है तड़पत।।
जो नइयाँ हवा आँधी।
जो आओ है गान्धी।।

- अमरदान, पचकौरा, जालौन से प्राप्त

- वर्षा के विभिन्न उपादानों से गान्धीजी के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाएँ चित्रित की गयी हैं। गान्धीजी आँधी की तरह आये हैं। आसमान की घटा सत्याग्रहियों की टोली अथवा गान्धीजी की गरीबों के हित के लिए झोली की तरह लगती है। नभ में चमकती बिजली गान्धीजी के स्वप्नों की इबारत है। पानी बरसने का स्वर सत्य-अहिंसा की वाणी है। वर्षा में विरहिणी डरती है, जो गान्धी के डर से अंग्रेजों की तड़पन जैसी लगती है।

संदर्भ : वर्षा के रूपक से गान्धीजी के क्रियाकलापों और प्रभाव की व्यंजना। स्वतंत्रता के पहले गाया जाने वाला गीत।

१६.
जागो रे किसान भइया, जागने की बेला है।टेक।।
जीके संगै गान्धी है, को कहै अकेला है।। जागो.।।
गान्धी बाबा अलख जगायें
सत्याग्रह की धूम मचायें
हरिजनन खों गले लगायें
दारू पीवौं बंद करायें
जेलन की कोठरिन में, बंदियन का मेला है।। जागो.।।
सत्य-अहिंसा को व्रत धारो
जोर-जुलूम में कमऊँ न हारो
मातृभूमि कौ काज सँवारो
चायें अपनो तन-मन वारो
देह का है आदमी की, मिट्टी का ढेला है।।जागो.।।

- रामकली रैकवार, सागर से प्राप्त।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

- किसान भाई, जागरण की बेला आ गयी है, जागो। तुम्हारे साथ गान्धीजी हैं, फिर अकेला होने की चिन्ता नहीं है। गान्धी के सत्याग्रह ने धूम मचायी है और हरिजनों को गले लगाकर नशाबन्दी भी करा दी है। जेलों की कोठरियाँ भर गयी हैं। हे भाई, तुम भी सत्य-अहिंसा का व्रत लो, जुल्मों के विरुद्ध संघर्ष करो और मातृभूमि के लिए तन-मन निछावर कर दो।

संदर्भ : स्वतंत्रता-संग्राम में कृषकों के जागरण का गीत।

१७.

सात समुन्दर दूर सें आकें,
हम पै डाँको डारो जू, कै हाँ-हाँ जू, कै हूँ-हूँ जू ।।टेक।।
हमें बना दओं गली को कंगला,
गोरन माल डकारो जू, कै हाँ-हाँ जू, कै हूँ-हूँ जू ।।सात.।।
रकत चूस रओ खटमल भईया,
इनखों तुरतई मारो जू, कै हाँ-हाँ जू, कै हूँ-हूँ जू ।।सात.।।
गान्धी जू के खादी चला दई,
बिदेसी खों बाहर निकारो जू, कै हाँ-हाँ जू, कै हूँ-हूँ जू ।।सात.।।
गान्धी लड़ रथे आजादी खों,
उनखों देव सहारो जू, कै हाँ-हाँ जू, कै हूँ-हूँ जू ।।सात.।।

- श्रीमती मालती घोष, घोषयाना,
छतरपुर से प्राप्त।

- अंग्रेजों ने दूर से आकर इस देश पर डाँका डाला है। हमें कंगाल बनाकर खुद सारा माल हजम कर लिया है। रक्त चूसने वाले खटमलों को नष्ट करने के लिए साहस करो। गान्धीजी ने खादी चलवा कर विदेशी का बहिष्कार किया था। वे आजादी के लिए लड़ रहे थे, उन्हें संबल देना जरूरी है।

संदर्भ : स्वतंत्रता- पूर्व का गीत। लोक धुन पर आधारित। हाँ- हाँ जू और हूँ-हूँ जू स्वीकृति के पुराने संबोधन।

१८.

छिड़ी लड़ाई आजादी की, रन खेतन में जानें।
गोरन सें गान्धी जू लड़ रये, रन में हाँत दिखानें।। टेक।।
एइ भूम पै राम भयें ते, जिननें रावने मारो
एइ भूम पै किसुन भयेते, जिननें कंस पछारो
एइ भूम के तुम जवान हो, असुरन मार भगानें ।। गोरन.।।

जित्ते मिलें बिदेसी कपरा, होरी में सब धर दो
पैरो जोई सुदेसी मिलबैं, सूत कात कें बन लो
गान्धी जू खों अनसन करनें तुमें सोऊ संग रानें
सत्याग्रह की आन-बान में, सगै लाठी खाने
जेल गये जो गान्धी बाबा, रइयो तुमई सयानें।।गोरन.।।
दो बिल्ली आपस में लड़ रईं, अपने स्वारथ लानें
बंदरा की आँखिन में गड़ गई, उयै बाँट खा जानें
हिन्दू मुस्लिम कौ एका कर, बंदरा मार गिरानें।।गोरन.।।

- निजी संग्रह से प्राप्त

- स्वतंत्रता की लड़ाई शुरू हो गयी है, तुम्हें भी गान्धीजी के साथ लड़ने जाना है। इसी देश में राम और कृष्ण ने रावण और कंस का संहार किया था, तुम्हें भी असुरों को इस भूमि से भगाना है। विदेशी का बहिष्कार और स्वदेशी का स्वीकार कर गान्धीजी के साथ चरखा चलाना है। अनशन और सत्याग्रह में साथ रहना है, भले ही लाठी खाना और जेल जाना पड़े। अंग्रेजों ने बंदर-बाँट कर भारत के बँटवारे का मंत्र फूँका है, तुम्हें हिन्दू और मुसलमान की एकता स्थापित कर अंग्रेजों को पराजित करना है।

संदर्भ : १९४७ ई. में स्वतंत्रता -प्राप्ति के पूर्व का गीत। रचनाकार नर्मदा प्रसाद गुप्त ''प्रसाद''।

१९.

सिधि सम्पदा सम्हारन सुखमा समाज की।
छबि छाज रही राखन है कृषक लाज की।
आरत से देस भारत के करन काज की।
गान्धी की लँगोटी कि धुजा है स्वराज की।।१।।
खादी की बनी गौरव भारत के ताज की
लख-लख के भीति मानत मन में अराजकी।
चकचूरती कुचाल कठिन बैरी बाज की
गान्धी की लँगोटी कि धुजा है स्वराज की।।२।।
भारत के हरन क्लेस भरन विभव भाज की।
तन नग्न के सु ढकिबे की सरन साज की।
सुरसरि सी सन्त जग में छबि छटा छाज की।
गान्धी की लँगोटी कि धुजा है स्वराज की।।३।।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दुख हरन भरन कृषकन के घर अनाज की।
काटन गुलामी पाटन मुनि पंचराज की।
प्रतिमा है नरोत्तम जू तप और त्याग की।
गान्धी की लँगोटी कि धुजा है स्वराज की।।४।।

- गोकुल नगरिया, मऊरानीपुर से प्राप्त।

- महात्मा गान्धी की खादी की लँगोटी ऐसी प्रतीत होती है, जैसे स्वराज की पताका हो। वह समाज को सिद्धि और सम्पत्ति देने वाली, कृषकों की लाज बचाने वाली और देश की गौरव है। अराजकों के लिए भय, दुश्मनों की गति के लिए विनाशक और भारत के क्लेशों के लिए नाशक है। गंगा की तरह पवित्र और गुलामी के फन्दे को काटने वाली और त्याग की साकार प्रतिमा है।

संदर्भ : गान्धीजी की खादी और गुणों की प्रशस्ति में गाया गया 'सैरा' गीत।

२०.
द्वापर में मोहन भये, कलजुग मोहनदास।
एक थे जन्मे जेल में, इक रये कारावास।।
एक ने बंसी मधुर बजाई।
एक ने चरखा-तान सुनाई।
एक ने चक्र सुदर्सन फेरो।
एक ने गोरन खोंआ गेरो।
एक ने गोबरधन खों धारो।
एक ने जन-जन लओ उबारो।।
एक ने जुल्मी कंस पछारो।
एक ने जालिम राज उखारो।।
एक ने मोही द्वारका, एक ने सेवाग्राम।
गीता सम्बल एक का, एक के बल थे राम।।

- श्रीमती ब्रजलता मिश्र, झाँसी से प्राप्त।

- कृष्ण और गान्धी की संक्षिप्त तुलना पक्षपातहीन तराजू से तौलकर की गयी है। कृष्ण जेल में जन्मे थे, तो गान्धी जेल में रहे। एक ने वंशी ली, तो दूसरे ने चरखा। एक ने चक्र सुदर्शन घुमाया, तो दूसरे ने (बिना शस्त्र) अंग्रेजों को घेरा। कृष्ण ने गोवर्धन धारण किया (ब्रजवासियों की रक्षा की), तो गान्धी ने भारतवासियों का उद्धार किया (स्वतंत्रता दिलाई)।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

एक ने अन्यायी कंस को पछाड़ा था, तो दूसरे ने अन्यायी राज्य उखाड़ दिया। एक द्वारका में रमे, तो दूसरे सेवाग्राम में। गीता का सम्बल एक को था, तो दूसरे के बल राम थे।

संदर्भ : गान्धीजी के कार्यों और व्यक्तित्व को कृष्णजी के समकक्ष रखकर गरिमा प्रदान करना। स्वतंत्रता के बाद का गीत।

२१.

जौ अहिंसा कौ पाठ, जौ अहिंसा कौ पाठ,
गान्धी जू आकें पढ़ा गये।
पानी पीबें एकई घाट, पानी पीबें एकई घाट,
छिरिया उर सिंघ खों सिखा गये।।१।।
दूर करो भेद-भाव, दूर करो भेद-भाव,
जात-पाँत छूत सब मिटा गये।
पुर जैहे बो घाव, पुर जैहे बो घाव,
बूटी नई तो बता गयो।।२।।
तुमनें लये अवतार, तुमनें लये अवतार,
आजादी कौ रस चिखा गये।
कर दओ बेड़ा पार, कर दओ बेड़ा पार,
सत्याग्रह राह दिखा गयै।।३।।

- आशाराम त्रिपाठी, कर्रा, जिला छतरपुर से प्राप्त।

- गान्धीजी ने अहिंसा की सीख दी, जिससे शत्रु तक मिलकर रहने लगे। उन्होंने जाति-पाँति और छुआछूत के भेद-भाव दूर किये और विषमता का इलाज बताया। वे अवतारी थे। आजादी का आनंद उन्होंने दिया और भारत की नौका किनारे लगाकर सत्याग्रह का मार्ग निर्देशित किया।

संदर्भ : लमेटरा यानी लम्बी टेर वाले गीत की लोक धुन में स्वतंत्रता के बाद प्रचलित गीतांश।

२२.

गांधी एक महात्मा उपजे, कलजुग में औतारी रे।।टेक।।
तिनकी तिरिया पति बरता भई, कस्तूरी जग जानी रे।
चरखा संग रमाई धूनी, दोई मानस उपकारी रे।।गान्धी.।।
साँची बात धरम की जानी, और अहिंसा ठानी रे।
मरद तुराई लड़-लड़ सीजे, सत्याग्रह भओं जारी जारी रे।।गान्धी.।।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अंगरेजन सों जबर जोर भई, हार उनईं नें मानी रे।
भओ सुराज अपने देसा में, गाबें गान्धी की गारी रे।।गान्धी.।।

- श्रीमती निर्मला ठाकुर, बरगी (जिला-जबलपुर) से प्राप्त.

- गान्धीजी इस कलियुग में अवतारी व्यक्ति हो गए हैं। उनकी पत्नी कस्तूरबा पतिव्रता के रूप में प्रसिद्ध हुई। उन्होंने चरखा की तपस्या की और सच्चे धरम अहिंसा का व्रत लिया। सत्याग्रह में नर-नारी सम्मिलित हुए और संघर्ष किया। अंत में अंग्रेजों की पराजय हुई और देश स्वतंत्र हुआ।

संदर्भ : भारत के स्वतंत्र होने के बाद का गीत।

२३.
जब जब एक रास राजै, दुसमन होत पराजै।
रामचन्द नें रावन मारो, निसचर संग समाजै।
किसनचंद ने कंस पछारो, दुज देवन के काजै।
गौरमेंट से बिन असि मथुरा, गान्धी लेत सुराजै।।

- ननुआ काछी, भैंसायँ, जिला हमीरपुर से प्राप्त।

- जब एक राशि मिलती है, तब शत्रु पराजित होता है। राम ने रावण और राक्षसों का संहार किया था और कृष्ण ने कंस को पछाड़ा था। इसी तरह गान्धीजी ने बिना शस्त्र के संघर्ष करते हुए स्वराज ले लिया।

संदर्भ : १९४७ ई. के बाद गाया जाने वाला फाग गीत।

२४.
सत्य प्रेम समता मानवता सबमें हमको लाना है।
सूर वीरता भर भारत को जग का मुकुट बनाना है।।टेक।।
त्यागी कोंसिल में बैठाकर लोभ का नाश कराना है।
त्यागमूर्ति नीतिज्ञ भेज अन्याय को दूर भगाना है।
अंग पक्ष लोलुपी सिफारिस पोच संकोच मिटाना है।
मनुष्यता के निकट जौहरी परख-परख पहुँचाना है।
कहनी रहनी करनी संयम इन पर दृष्टी जमाना है।।सूर।।
गान्धीजी की नीति पकड़ लो जिसने शान बढ़ाई है।
हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई समझो भाई-भाई हैं।
मेल मंत्र से कई सदी की गयी आजादी पाई है।

स्वारथ में सिद्धांत न त्यागो नहिं जग होय हँसाई है।।
जिम्मेवार बनें सब नेता भारत-वीर कहाना है।।सूर.।।

- लावनीबाज मुंशी राजघर
सक्सेना (स्वर्गीय) अकौना के संग्रह से प्राप्त।

- सत्य, प्रेम, समता, मानवता के साथ वीरता का गुण भारत को जगत में श्रेष्ठ बना सकता है। त्यागी और नीतिज्ञ लोभ और अन्याय को विनष्ट कर सकते हैं। पक्षपात, सिफारिश और संकोच मिटाकर कथनी और करनी पर संयम रखना है। गान्धीजी की नीति में हिन्दू, मुस्लिम, सिख और ईसाई सब भाई-भाई हैं। इस एकता के मंत्र से भारत को आजादी मिली है। अब नेता वर्ग स्वार्थ लिप्त होकर सिद्धांत न त्यागें।

संदर्भ : राष्ट्रीय लावनी के दो चरण, जो १९४७ के बाद फड़-गायकी का महत्वपूर्ण अंग थी।

२५.
चन्दा सात समुँद गओ पार, सुरज की किरन जगी।
भाई बापू की जय-जय-कार, सुरज की किरन जगी।।टेक।।
मिटो गुलामी को अँधयारो
भओ स्वतंत्रता को उजयारो
दीन मलिन सिंगार समारो
सुख की बाँये पसार, सुरज की किरन जगी।।भई.।।
सुबरन सज गई बिन्ध पारियाँ
बौर भार झुक गई डारियाँ
नैं गईं नौनी नई नारियाँ
सहज रूप के भार, सुरज की किरन जगी।।भई.।।
बयें सुतंत्र नदियन की धारें
भरीं उमंगन कोर कगारें
लहरें लग-लग कूल किनारें
दै रईं मुँतियन हार, सुरज की किरन जगी।।भई.।।

- श्रीमती ब्रजलता मिश्र, झाँसी से प्राप्त।

- चन्द्रमा सात समुद्र के उस पार चला गया और नये सूर्य की किरणें उदित हुईं। गान्धीजी की जयकार होने लगी। गुलामी का अंधेरा मिट गया और स्वतंत्रता का उजेला हो गया । सब सुखी हुए। प्रकृति में परिवर्तन हुआ, तो नर-नारी भी सज-सँवर गये। स्वतंत्रता पाकर प्रकृति मनवांछित फल देने लगी।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

संदर्भ : झाँसी के कवि स्व. रामचरण हयारण 'मित्र' की रचना का प्रचलित रूप।

२६.

बापू हम तोरी कई करहैं, जोर-जोर ना धरहैं।
कोऊ जोरै लाख-करोरन, एक काम ना सरहैं।
प्रभु को छोड़ भरोसो, बोझा लाद-लाद के मरहैं।
बसा राम-राघव बानी में, सब काजै तन गरहैं।
कौन बात की फिकर स्याम जो, मन सों उन्हें सुमरहैं।।१।।
मनुआँ जो साँचो सुख चैये, पर के दुक्ख नसैये।
कमउँ काउ को बुरो न तकिये, बात बुरइ ना करिये।
जात-पाँत को भेद भुला कें, सब सौं हिल-मिल रैये।
कैये एक न कमऊँ काउ सों, चाय चार सुन लैये।
बापू कही स्याम तब मन सों, हिंसा दूर भगैये।।२।।

- स्व. श्याम सुंदर बादल, राठ के
फाग-संग्रह से प्राप्त।

- गान्धीजी को आश्वासन देने का संकेत इन लोक गीतों में है कि हम धन जोड़ कर न रखेंगे, बोझ लादकर नहीं मरेंगे और भगवान पर पूर्ण विश्वास करेंगे। गान्धीजी के अनुसार सच्चे सुख की प्राप्ति के लिए दूसरों के दुख दूर करना जरूरी है। किसी की बुराई न देखना, बुरी बात न करना, जाति-पाँति का भेद न रखना और दूसरों की चार बातें सुनने पर भी अपनी एक न कहना ही मन से हिंसा दूर भगाने के लिए अनिवार्य हैं।

संदर्भ : गान्धी जी की हत्या के बाद उनके अनुयायी की भावना व्यक्त करता लोकगीत।

२७.

बापू हमें द्रिगन में भूलें, निस-बासर ना भूलें।
जुग के देव सुधारक जग के, आतीं उन बिन सूलें।
विद्रानन में साहस नईयाँ, आकें उनसें फूलें।
खेत सिंह परं दिसिया चाहें, कबै चरण हम छू लें।।१।।
बापू तुम नैनन के तारे, रहे प्रान के प्यारे।
भारत के थे हिमगिर रक्षक, खम्भा अटल सहारे।
निरधन के धन हरिजन के मन, भूतल के उजयारे।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

खेतसिंह थे हीरा जग में, वे अनमोल हमारे।।२।।
गान्धी तुम हो गुरू गुसैयाँ, परूँ तुमारी पइयाँ।
जगा दये भारत के बासी, दै दयी सत्य धनैयाँ।
तारे पूत-अछूत बिधरमी, उड़ी छूत की छैयाँ।
कहत महेश कलेश नशा कें, पालीं दिन चिरैयाँ।।३।।
मोहन देख देस में गुरखा, गरज करें दुख बरखा।
तुरत प्रगट भये आन-बान में, लग न जाय कऊँ करखा।
कर दओ ''स्याम'' चीज लयें चारऊ, पदम प्रेम में परखा।
सत्य संख हैं, गदा अहिंसा, चक्र सुदरसन चरखा।।४।।
करनी कही कर कमतर की, छाती कर बज्जुर की।
तीस जनवरी सन् अड़तालीस, श्री बिड़ला मंदिर की।
घर की एक कुरैया से भई, दुर्गति सब घरभर की।
गोली बनी मौत बापू की, बच्चई केरे कर की।।५।।

- निजी फाग-संग्रह से प्राप्त.

- इन पाँच फाग लोक गीतों में गान्धीजी की लोकप्रियता को साक्ष्य मिलता है। गांधीजी लोक की आँखों में दिन-रात झूलते रहते हैं। वे नयनों के तारे हैं। भारत के हिमालय जैसे रक्षक, निर्धनों के धन, हरिजनों के मन और क्लेशों के विनाशक हैं। उनकी तुलना विष्णु से की गयी है, जिनका शंख सत्य है, गदा अहिंसा है और चक्र सुदर्शन चरखा है। ऐसे व्यक्तित्त्व की तीस जनवरी, सन् उन्नीस सौ अड़तालीस को हत्या कर दी गयी। हत्यारा क्रूर और नीच कहा गया है।

संदर्भ : गान्धीजी की हत्या के बाद गाये गए लोकगीत।

२८.

चुनरिया रंग दइयो मोरे यार।।टेक।।
भारत के रनवीरों की हो जीमें झलक अपार।।चुनरिया.।।
चूनर ऊपर हर रेसे में, सुराज की झलक दिखा दइयो।
सुद्ध सूत की चादर मोरी, सान्ति कौ कलफ चढ़ा दइयो।।
तीन रंग की रंगा कें चूनर, झंडा रूप सजा दइयो।
गान्धी बब्बा की सूरत खों, चरखा संग छपा दइयो।।
झाँसी बारी रानी के कर, होबै नगिन कटार।।चुनरिया.।।
दादा भाई तिलक गोखले, और लाजपत से हो बीर।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अपने प्रान देस के ऊपर, जिननें अरपन किये अधीर।
देस धरम पैसरबस त्यागो, मोती लाल न मानी परी।
मौलाना आजाद पंत जू, पटेल बल्लभ भये फकीर।
बालक बीर हकीकत के गल, बहे रक्त की धार।।चुनरिया.।।
आजादी के लिये भगत सिंघ, हों फाँसी पै चड़े हुए।
डेढ़ लाख भारत सपूत हों, जेल के अंदर पड़े हुए।
मरें बहादुर साहब रूस्तम के हों बच्चे कड़े हुए।
इक लग खड़े सुभाष और फिर बीर जबाहर अड़े हुए।
हों बीर सुभाष बने सेनापत, पलटन कों करकें सिंगार।।चुनरिया.।।
जुलम भये जलियाँन बाग के नक्से ठीक बना दइयो।
डायर पापी के फ़ायर से खून की नदी बहा दइयो।
कई हजार लाल भारत के तड़पत हों दिखला दइयो।
फतेचंद जोरावर जिन्दा ईंटन सें चुनावा दइयो।
ग्यारा साल के मदन लाल पै हो रये हों गोली के बार।।चुनरिया.।।
सरोजनी कमला की चक्की, जेल में रै-रै चलती हों।
कस्तूरी बाई सोऊ बैठीं, हाँत रोष से मिलती हों।
बिड़ला मंदिर की छिड़िया पै बापू खों चढ़वा दइयो।
ई नक्सा पै भारत भर के नैनन नीर बहा दइयो।
इक पागल ने राष्ट्रपिता खों गोली दई हो मार।।चुनरिया.।।

- गया प्रसाद 'नीरस' देवरीकलाँ,
सागर से प्राप्त।

- भारतीय नारी अपनी चुनरिया रँगा कर वे दृश्य अंकित करवाना चाहती हैं, जिनमें देश के स्वतंत्रता-संग्राम के वीरों की झाँकियाँ हो। पहली झाँकी में स्वराज, शान्ति, तीन रंगों से राष्ट्रीय ध्वज का रूप, गान्धीजी चरखा के साथ और झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई नग्न तलवार लिए अंकित हों। फिर प्राण-निछावर करने वाले देश प्रेमी, आजादी के लिए फाँसी में झूलने वाले क्रान्तिकारी और देशभक्तों की सेना सजाकर नेतृत्व करने वाले नेताजी के चित्र लिखे हों। अंग्रेजों के दमन के प्रतीक जुल्मों के चिन्ह, जेलों में चक्की पीसती वेदनामयी भारतीय नारियाँ और उनका आक्रोश तथा अंत में बिड़ला मंदिर की सीढ़ी पर गान्धीजी की निश्चेत देह, जिसका श्रृंगार देश के करोड़ों नेत्रों के अगणित आँसुओं ने किया था और राष्ट्रपिता का हत्यारा एक पागल था। संक्षेप में, चुनरिया स्वतंत्रता-संग्राम और गान्धीजी के बलिदान की चित्रपटी बन गयी है।

संदर्भ : जनवरी, १९४८ ई. के बाद गाया गया गीत।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

२९.

दोहा- बापू तुम बिन हो गओ, भारत देस अनाथ।
कौन पकरहै हाय अब, हम अंधन को हाथ।।

टेक- बापू हमें भूल न जाइयो, खबर लेत नित रइयो।

छंद- सुध ना रई तुम्हारी भूल, सूरत रई नैनन में भूल,
जैसें बिना गंध को फूल, छबहीन भओ।
बुलबुल उड़ी घौंसला त्याग, सूनों पड़ो हिन्द कौ बाग,
फीको भओ सुरीलों राग, खो लाल गये।

उड़ान- लाल आज अनमोल हिरानों, कोऊ पता बतईयो।
आई है अँधयारी भारी, प्यारों भानु दिखइयो।।

टेक- अलख रूप में अपने निस-दिन, हमकों राह लखइयो।बापू.।।

छंद- तुमकों लागे हैं द्रिग तरसन, अब तौ हो गये दुरलभ दरसन,
चाहे ढूँड़त राबै बरसन, पावत नइयाँ।
अपनी सदा क्रिया की कोर, रखियों हम दुखियन की ओर,
बिनती बार-बार कर जोर, लागत पइयाँ।।

उड़ान- पईयाँ लागत सदा प्रेम की, वर्षा तुम बरसइयो।
भारतवासी प्यारे तुमरे, प्रीत टोर न दइयो।।

टेक- जैसई अबलौं न्यायँ निभाई, तैसई सदा निभइयो। बापू.।।

छंद- तुमनें चरखा-चक्र चलाओं, दुक्ख में अपनो देस बचाओ,
तोकों है आजाद कराओ, सब कष्ट सहे।
जैसो सुंदर बृच्छ लगाओं, ताके फल खों चख ना पाओ,
छोड़ो परहित हेतु दिखाओं, बस दूर रहे।।

उड़ान- अबै चाहना हती तुमारी , फिरकें तन धर अइयो।
पड़ी भँवर में डगमग होबै, नैया पार लगइयो।।

टेक- प्रबल प्रताप पुन्न से अपने, भारत सुखी बनइयो। बापू.।।

छंद- होबै देस हमारो सुख में, कबहुँ फँसन ना पाबै दुख में,
सबके मधुर वचन हों मुख में, जो गुन तुमरे।
होकें आसिष देव निहाल, राबै चिरंजीव अतिकाल,
बल्लभ भाई जवाहरलाल, नेता हमरे।।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उड़ान- आत्मशक्ति है महा तुम्हारी, सारे बिघन मिटइयों।
कोट-कोट जे खेत सिंह के, तुम प्रनाम अब लइयो।।
टेक- बापू हमें भूल ना जाइयो, खबर लेत नित रइयो। बापू।।

- सुखनंदन, मुन्ना यादव कुलपहाड़ से प्राप्त।

- महात्मा गांधी की हत्या के बाद लोक कवि के भावुक उद्गार इस लोकगीत में व्यक्त हुए हैं, जो जन-जन के भावों को बिम्बित करते हैं। गान्धीजी से सीधा संवाद है- बापू, तुम्हारे बिना भारत अनाथ हो गया, हम अंधों का अब कौन सहारा है। इसलिए आप हमारी खबर लेते रहना। भारत के बाग की बुलबुल उड़ गयी है, अंधेरा छा गया है। अब ऐसे में आप ही सूरज दिखाएँ। आपके दर्शन को आँखें तरस रही हैं, हम पर कृपा करना। चरखा के चक्र से आपने देश के दुःखों का नाश किया है और उसे स्वतंत्र कराया है। अब भी हमें आपकी चाह है कि आप इसी देश में अवतार हों और डगमगाती नौका को पार लगा दें। भारत सुखी रहे, यही बिनती है।

संदर्भ : गान्धीजी की हत्या के बाद गाया गया लोकगीत।

३०.

बंदो भारत माता तुमखों, पइयाँ परों नबाओं सीस।
माथौ टेकों तोरी देहरी पै, मइया दै देव हमें असीस।।
देई सरसुती तुमखों सुमिरों, भूले आखर देव बताय।
गनपत देवता तुमें मनाओं, भारत लरबौ देव लिखाय।।
साखौ गाओं गान्धी जू कौ, करकें बार-बार परनाम।
जिन्नै लोहा लओ गोरन सें, छेड़ो स्वतंत्रता- संग्राम।
ऐसो जुद्ध कमऊँ नईं देखों, लड़नें परै बिना हथयार।
बंदूक न मशीनगन सामूँ, खड़े निहत्थे खावें मार।।
अफरीका सें आये गान्धी, आओ स्वदेशी में नओं ज्वार।
कपड़ा जरे विदेसी घर-घर, गाँव-नगर फैलो उजयार।
खादी पैरो प्यारे भाई, खादी है गीता को ज्ञान।
चरखा लै लेब घरै चलाओ, जेई स्वदेसी की पहचान।।
रालट की रिपोर्ट पै गान्धी, दओ विरोध की झंडा गाड़।
जलियाँवाले बाग में डायर, खुल कें खेलों नरसंहार।
गान्धी जू नें करी घोषणा, फिर जनता में आओ उफान।
चलो खिलाफत को आन्दोलन, चलो असहयोग तूफान।।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गाँव-गाँव में, नगर-नगर में, उमड़े सब मजदूर किसान।
मुसलमान उर हिन्दू जुरमिल, एक भये निरधन धनवान।।
छोड़े सब सरकारी सेवा, लेबें अपनो हक अधिकार।
घबराई अंगरेजी सत्ता, साइमन आकें करें बिचार।।
नगरन में विरोध भओ जम कें, कारे झंडा दये दिखाय।
पुलिस की लाठिन से घायल हो, सरगै गये लाजपतराय।।
लाहौर मंच से भई घोषणा, नेहरू जू बोले ललकार।
छोड़ो सबई बहाने बुनबों, पूरी स्वतंत्रता देव हमार।।
दाण्डी जात्रा कर गान्धी ने, सागर तट पै करो पयान।
तोड़ दओ कानून नमक को, नओ आंदोलन भओं घमसान।।
उतै क्रांतिकारी दल जूझे, बेड़ीं माँ की काटबे काज।
भगत सिंघ सुखदेव राजगुरू फाँसी चढ़े परी जौ गाज।।
क्रिप्स मिशन नें करी रियाय, दै दओ उपनिवेस कौ राज।
कांग्रेस नें निरनै कर लओं , हम तो लैहें पूर्ण स्वराज।।
अंग्रेजी, अब भारत छोड़ो, घर-घर में गूँजी आवाज।
'करो या मरो' गान्धी दहाड़े, जन-जन में गूँजी आवाज।
टूट पड़ी भारत की जनता, रेलें रूकीं काट दये तार।
थानन पै फैराये झंडे, कउँ-कउँ जनता की सरकार।।
भओ भयंकर दमन पुलिस की गोलिन से भये कई सिकार।
संघर्षों की ऊँचाई पै, पौचों अहिंसा कौ हथयार।।
पै सुभाष नओ मोरचा खोलो, आजादी की फौज बनाय।
देशभक्त लड़-लड़ कें जूझे, अंगरेजी लागी घबराय।।
सन् छियालिस में नौ सेना ने, दई चुनौती कर बिद्रोह।
बिबस भई अंगरेजी सत्ता, त्यागों राज करन का माह।।
सैंतालिस पन्द्रा अगस्त कों, भइया भारत भओं स्वतंत्र।
बँटवारा भओ पाकिस्तान को, चल गओ अंगरेजन कौ मंत्र।।
दंगा भये जरे घर दोरे, लूटी गई भियन की लाज।
लोहू तलन में लोथें बिछ गईं, भओं भेड़ियन कौ फिर राज।।
अनसन करो महात्मा जू नें, दंगे रूकें सान्ती कौ काज।
पै भइ राष्ट्रपिता की हत्या, अंसुवन भींजी जगत-समाज।।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रै रै कलम आज तौ, कैसें भर है गैरौ घाव।
मलहम चानैं है करूना कौ, संगै रैबे को बो चाव।।

- निजी संग्रह से प्राप्त।

- भारत माता, सरस्वती देवी और गणेश जी की वंदना के बाद गान्धीजी की गौरव-कथा का वर्णन है। उन गान्धीजी की, जिन्होंने शस्त्र रहित होकर स्वतंत्रता-संग्राम लड़ा था। गान्धीजी ने अफ्रीका से लौटकर स्वदेशी आन्दोलन को नये प्राण दिए। विदेशी वस्त्र जलाये गये और खादी का प्रसार हुआ। रॉलट की रिपोर्ट पर गान्धीजी ने विरोध किया। जनरल डायर ने जलियाँवाला बाग में नरसंहार किया। खिलाफत और असहयोग आंदोलन चले। गाँव-नगर की जनता उमड़ पड़ी। सरकारी सेवा छोड़ने का संकल्प शुरू हुआ, जिससे सत्ता डर गई। साइमन कमीशन का जमकर विरोध हुआ और पुलिस की लाठियों से घायल लाला लाजपतराय स्वर्गवासी हुए। लाहौर अधिवेशन की अध्यक्षता करते हुए नेहरूजी ने पूर्ण स्वाधीनता की घोषणा की। दाण्डी यात्रा कर गान्धीजी ने 'नमक कानून' तोड़ा। उधर क्रान्तिकारी दल भी देश-प्रेम से भरकर इस जूझ में शामिल हो गया। भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरू, फाँसी पर चढ़ गये। क्रिप्स मिशन औपनिवेशक राज्य की दलील दी, पर कांग्रेस पूर्ण स्वराज्य पर अड़ी रही। १९४३ ई. में 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' का नारा तो लगा, पर गान्धीजी ने 'करो या मरो' कहकर जनता को उद्धेलित कर दिया। रेलें रुक गयीं, तार काटे गए, थानों पर झण्डे फहराये गये और कहीं-कहीं जनता का शासन हो गया, लेकिन अंग्रेजों के भयंकर दमन ने सबको हिला दिया। सुभाषचन्द्र बोस ने 'आजाद हिन्द फौज' की स्थापना की और देशभक्त स्वतंत्रता के लिए जूझने लगे। उधर नौ सेना का विद्रोह हुआ। अंग्रेजी सत्ता घबड़ा गयी और १५ अगस्त, १९४७ को भारत स्वतंत्र हो गया। लेकिन अंग्रेजों की कूट नीति ने विभाजन करवा दिया, जिससे जन-सम्पत्ति की बहुत हानि हुई। गांधीजी के अनशन से शांति हुई, लेकिन राष्ट्रपिता की हत्या कर दी गयी। सारा संसार शोक में डूब गया। यह गहरा घाव तभी भर सकता है, जब करूणा का मलहम लगे।

संदर्भ : १९४८ ई. के बाद की रचना। राष्ट्रीय आल्हा।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बघेली गीतों में गांधी

संकलन
गोमतीप्रसाद विकल
पंकज मेडिकल स्टोर्स
सिरमौर चौराहा, रीवा
म.प्र.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बघेली गीतों में- "गांधी"

(१)

कइंले याद महात्मा गांधी
रघुपति राघव राजा राम.
लाठी लिहे लंगोटी पहिरे
मुंह पर मन्द-मन्द मुस्कान
चरखा- तकली केर कतइया.
पतित पावन सीताराम
रघुपति राघव राजाराम.
मिलि जुलि सब कोउ रहां एक होय,
खून-पसीना केर फल खायं
सबका मिलै पेटभर रोटी-
मिलै हाथ का सबके काम
रघुपति राघव राजाराम.
नहीं उपर बमगोला गरजइ
धरती पर ढरकइ न लोहू
झण्डा ऊचा रहइ तिरंगा.
भारत माता का परनाम
रघुपति राघव राजाराम
पतित पावन सीताराम.

- गायिका- आशा द्विवेदी.

- "रघुपति राघव राजाराम" का कीर्तन करने वाले महात्मा गांधी का स्मरण करो। गांधी का परिधान अद्‌भुत है। उनके हाथ में लाठी, तन पर छोटी सी खादी और अधरों पर मंद-मंद मुस्कान थिरकती है। चरखा-तकली चलाने वाला महापुरुष सदा पतित पावन सीताराम का स्मरण करता रहता है।

लोकोपकारी गांधी की मंशा है कि देश के लोग एक होकर रहें। अपने परिश्रम की कमाई खायें। सब लोगों को भर पेट भोजन और हाथ के लिये काम मिले। शान्ति रहे। युद्ध न हो। आकाश से विनाशकारी बमों की वर्षा न हो। धरती पर मार-काट बन्द हो। मनुष्य के रक्त-प्रवाह से धरती लाल न हो। स्वतंत्रता का प्रतीक भारतीय राष्ट्रीय तिरंगाध्वज ऊंचा रहे। भारतमाता को नमन।

(२)

मोरे चरखा का टूटै न तार
चरखा चालू रहै.

गांधी महात्मा दुल्हा बने हां
दुलहिन बनी सरकार। चरखा......
मोरे चरखा का टूटे न तार
चरखा चालू रहै.

चंदन काठ का बना मियाना
खादी कइ पड़ी ओहार। चरखा.....
सकल सुराजी बनै हई बराती
पुलिस बनी हई कहांर। चरखा......
मोरे चरखा का टूटे न तार.
चरखा का टूटे न तार.

गायिका- आशा द्विवेदी.

- चरखा से निकलने वाला सूत टूटे नहीं। चरखा अनवरत चलता रहे। महात्मा गांधी की भूमिका बहुत महान है। गांधी जी दूल्हे की हैसियत में हैं और सरकार दुल्हन की भूमिका निभा रही है।

चन्दन के म्याने पर खद्दर का ओहार (आवरण) तना है। स्वतंत्रता संग्राम सेनानी बराती बने हुये हैं। पुलिस का अमला आजादी की डोली ढो रहा है। सावधान रहना है कि चरखे का सूत टूटे नहीं, वह निरंतर चलता रहे।

(३)

सुगनमा उड़िगा न जाने कौन देश?

सुगना बने महात्मा गांधी
पिंजड़ा हिन्दुस्तान
बनिकै बहेलिया नाथूराम
सुगना का दीन्हिस मार

सुगनमा उड़िगा न जाने कौने देश?
भूख लगे भोजन कहां पाई
प्यास लगे कहां पानी

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नींद लगे दासन कहां पाई
चरखा कउन चलाई.
सुगनमा उड़िगा न जाने कौने देश?

- ३० जनवरी १९४८ के दिन गांधी जी की मृत्यु पर देशवासी अधीर हैं। विलाप करते हैं कि गांधी रूपी नेता तोता न जाने किस देश के लिये उड़ गया। भारत देश रूपी पिजड़े में महात्मा गांधी रूपी श्रेष्ठ तोता बैठा था। निर्दयी नाथूराम गोडसे ने शिकारी बनकर तोते की हत्या कर दी।

बड़ी दुखद और विषम परिस्थिति आ गई। लोकमन चिंतित है कि भूख लगने पर तोते को भोजन कहाँ मिलेगा? पीने के लिये पानी कहाँ मिलेगा? तोते को सोने के लिये परलोक में बिस्तर भी न मिल पायेगा। लोकमन में भारत देश में अब चरखा चलाने की प्रेरणा कौन देगा? गांधी रूपी तोता तो पता नहीं किस देश के लिये उड़ गया।

(४)

गांधी आई रहे गामन मा
झण्डा लिहे सुराजिन संग
सोने कै थारी मै जेमना परोसेउं
गांधी जेमि रहे गामन मा
झण्डा लिहे सुराजिन संग.
झंझरे करोला मै जल भरि लायउं
गांधी घूंटि रहे गामन मा
झण्डा लिहे सुराजिल संग।
लंउग इलायची का बीरा लागायंउ
गांधी रचि रहे गामन मा.
झण्डा लिहे सुराजिन संग।

गायिका- आशा द्विवेदी.

- स्वराज्य प्रेमियों के साथ तिरंगा झण्डा लेकर महात्मा गांधी गांव के दौरे पर आ रहे हैं। लोक नायिका कहती है कि मैंने स्वर्ण थाल में भोजन लगा रखा है। गांधी जी स्वराज्य प्रेमियों के साथ गांव-गंमाई का भोजन ग्रहण करेंगे।

उल्लासित लोकनायिका चाँदी के पात्र में पानी भरकर रखती है जिसे गांधी जी अपने अनुयाइयों सहित गांव की जमीन से जुड़कर पियेंगे।

लोक नायिका लौंग-इलायची सहित पान का बीड़ा लगाती है जिसे भोजनोपरान्त गांधी स्वराज्य प्रेमियों के साथ मुँह में रचायेंगे। तिरंगा झण्डा लेकर गांधी स्वराजियों के साथ गाँव में आ रहे हैं।

(५)

मिलै वाली हइ सुराजि सुना भाई.
गांधी केर सन्देश सुराजी गांव-गांव पहुंचाई रहै हइ
भूखे आउर पियासे बपुरे गांव-गांव म धाइ रहे हइ,
अंगरेजन कई कजानियराइ आई.
मिलै वाली हइ सुराजि सुना भाई.
आपन होई खेत-पात सब आपन होई दाना
कारीगर सब आपन होहही बड़े-बड़े बनिही कारिखाना.
गरीबी न घरे नियराई पाई
मिलै वाली हइ सुराजि सुना भाई.
भारत मात केर दिन बहुरी हँसी खुशी घर-घर म होई
जाति-पांति म साहुति होई, दुख से कहौ केउ न रोई.
खई न बिलार-अब दूध कइ मलाई
मिलै हइ सुराजि सुना भाई.

- लोक कंठ से

- भाइयों सुनो! स्वराज्य मिलने वाला है। गांधीजी का ऐसा सन्देश स्वराज्य प्रेमी गांव-गांव में पहुंचा रहे हैं। स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भोजन पानी की परवाह किये बगैर ग्रामों में दौड़ रहे हैं। उनका देश प्रेम उत्कट है। अंग्रेजों की मृत्यु बहुत निकट आ गई है। अब अपना देश शीघ्र ही स्वतंत्र होने वाला है।

स्वतंत्रता मिल जाने पर खेतों पर अपना स्वत्व होगा। खेत की पैदावार अपनी होगी। देश में विकास के लिये बड़े-बड़े कारखाने स्थापित होंगे। जिसमें अपने ही देश के कारीगर और मिस्त्री काम करेंगे। देश की गरीबी-भुखमरी दूर हो जायेगी।

भारत माता का सौभाग्य लौटेगा। घर-घर में आनन्दोत्सव होगा। देश की सभी जातियाँ भेदभाव भूलकर एक होंगी। अंग्रेजी बिलार अब भारतीयों के हक की दूध की मलाई नहीं खा पायेंगे। अपना देश और अपना शासन होगा।

(६)

भगत

सावरमती कई सुघर मेढ़ुलिया
बिन कादौं बिन कीच होमा.

कऊन छबाबै सुघर मेढुलिया
लीपै कउन दुआर हो मा
गांधी छबाबै सुघर मेढुलिया,
लीपत रहै दुआर हो मा.

छाई मेढुलिया भई संतूले
लगिगे हइ बजुर केमार हो मा
जगर-मगर होई सुघर मेढुलिया
सेवक ठाढ़ दुआर हो मा.

मेढुली से झांकई भारत माता
सोने बरन सरूप हो मा
मांगु मांगु तैं गांधी सेवकवा
जो तोरे मन होय हो मा.

एक मगन हम मागी माता
हमका मिलै सुराज हो मा
सेवा केर फल मिली सेवकवा
धजा रही फहराय हो मा।

गायिका- आशा द्विवेदी

- सावरमती आश्रम में भारत माता का भव्य मंदिर बना है। मन्दिर का परिवेश सुन्दर और स्वच्छ है। धूल और कीचड़ का नामों निशान नहीं है।

माता के सुन्दर मन्दिर की मरम्मत कौन करायेगा। मन्दिर का द्वार कौन लीपेगा?

मन्दिर की मरम्मत गांधी जी करेंगे। वही मन्दिर का द्वार लीपेंगे। मन्दिर की मरम्मत हो गई। बनकर सम्पूर्ण हो गया। उसमें (बजरू) बज्र जैसे मजबूत किवाड़ लग गये मां का मन्दिर जगमगाने लगा। विनम्र भक्त गांधी जी मन्दिर के दरवाजे पर खड़े हैं।

स्वर्ण की भाँति देदीप्यमान भारत माता मन्दिर के भीतर से झांकती हैं। वत्सला मां कहती हैं कि श्रेष्ठ भक्त गांधी अपना मनचाहा वरदान मांग लो।

लोक कल्याण के लिये गांधी जी माता से प्रार्थना करते हैं कि मां हमें स्वराज्य का वरदान मिले। वरदायनी मां वचन देती हैं कि भक्त तुम्हें भक्ति का फल अवश्य मिलेगा। देश स्वतंत्र होगा। भारतीय तिरंगा झंडा मुक्त वायुमण्डल में लहरायेगा।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

(७)

आजादी कइ आई बहार, बहार मोरे बापू आजादी कई आई बहार.
इया आजादी सुराजी लइ आयें
अंगरेजन का दिहिन निकार
निकार मोरे बापू
अंगरेजन का दिहिन निकार। आई...

आजादी का मोल अनमोल
तिरंगा प्रानन से अधिक पियार
पियार मोरे बापू
प्रान से अधिक पियार। आई....

गोरन कई होइ गई हार
सत्य-अहिंसा औजार
औजार मोरे बापू
सत्य-अहिंसा औजार

आजादी कइ आई बहार
बहार मोर बापू
आजादी कइ आइ बहार.

गायिका- १-आशा द्विवेदी
२-विमलेन्दु.

- गांधीजी के संघर्ष और त्याग से भारत देश स्वतंत्र हो गया। देश के कोने-कोने में आजादी की बहार आ गयी। स्वराज्य प्रेमियों ने अंग्रेजों को देश से बाहर खदेड़ कर आजादी हासिल की है।

भारत वासियों के लिये आजादी अमूल्य धन है। राष्ट्रीय तिरंगा ध्वज प्राणों से भी अधिक प्यारा है।

स्वतंत्रता संग्राम में गांधीजी सत्य-अहिंसा को औजार बनाया है। संग्राम में अंग्रेजों की पराजय हुई है। अब देश में आजादी की बहार आ गई है।

(८)

सब जन बोला गांधी केरि जय
गांधी मोर महात्मा आय
दुखी गरीबन केर सग भाय

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कम पहिरै अउर थोरै खाय
बडे बिहन्ने ऊ उठि जाय.

दुनिया गाय रही है जय-जय
सब जन बोला गांधी केरि जय.

करम-धरम केर पाठ पढ़ावै
निकही-निकही बात बतावै
जाति-पाँति केर भेद मिटावै
छुआ-छूत देखि कै दुख पावै.

हरिजन गाय रहे हइ-जय-जय
सब जन गावा गांधी केरि जय.

सुनि ले गांधी केरि पुकार
गांधी देइही पार उतार
आपन-आपन लई हथियार
धावा सुनिकै गाव गोहार.

गावा रघुपति राघव जय-जय
सब जन बोला गांधी केरि जय.

- लोक कंठ से.

- देश वासियों सब लोग गांधी जी की जय-जयकार करो। गांधी जी महात्मा हैं। दुखी और गरीब लोगों के सच्चे हितैषी हैं। वे अपने लिये सस्ते वस्त्र धारण करते हैं। और सादा भोजन करते हैं। गांधीजी एक साधक की भाँति प्रात:काल उठ जाते है। उनका यश लोक में फैला हुआ। दुनिया गांधीजी की जय-जयकार कर रही है।

गांधी जी देशवासियों को धर्म-कर्म की सच्ची शिक्षा देते हैं। जीवनोपयोगी बातें बताते हैं। गांधी जी की दृष्टि में छूत-अछूत कोई नहीं है। जाति-पाँति का भेदभाव गांधी जी नहीं मानते हैं। वे उदारमना हैं। हरिजन वर्ग गांधी जी की जय-जयकार कर रहा है।

देशवासियों गांधी जी की पुकार सुनो। उनका अनुगमन करो। गांधी जी देश को स्वतंत्र करा देंगे। सब लोग अपने-अपने अस्त्र-शस्त्र लेकर स्वतंत्रता संग्राम में गांधी जी के साथ चलो। भारत माता दुखी है।। आर्तस्वर में पुकार रही है। अपने माटी की पुकार सुनकर आजादी की लड़ाई के लिये चलो ''रघुपति राघव'' गाते-गाते स्वतंत्रता समर में कूद पड़ो।

(९)

गांधी के राज मा-

चरखा चलत हइ
तकली चलत हइ
खादी बनत हइ

खादी सुराजिन का प्रान प्यारी
गांधी तोर राज बड़ा भारी
गांधी के राज मा

सब हां समान
हिन्दु-मुसलमान
सब भाई-भाई.

आपस म सबकै हबै यारी
गांधी तोर राज बड़ा भारी
गांधी के राज मा-

जाति न कुजाति
सब एक भांति
बइठा एक पाति

गामा भजन बजाइ तारी
गांधी तोर राज बड़ा भारी.

- लोक कंठ से

- गांधी की सोच का राज्य बहुत व्यापक है। गांधी के स्वराज्य में चरखा-तकली चलने की परिकल्पना है। खद्दर बनने की अर्थशास्त्रीय कल्पना है। खद्दर का परिधान स्वराज्य प्रेमियों को प्राणों से भी अधिक प्रिय है।

गांधी के लोक में समानता का समादर है। जाति-भेद का स्थान नहीं है। हिन्दू-मुस्लिम परस्पर भाई-भाई की भाँति रहेंगे। लोगों के बीच में मैत्री भाव रहेगा।

गांधी दर्शन में ऊँच-नीच जाति-पाँति का विभेद नहीं है। सब समान हैं। खान-पान में सब एक पंक्ति में बैठते हैं। ताली बजाकर सब लोग एक साथ बैठकर भजन कीर्तन करते हैं।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

(१०)

ऐ हो समरिया
जा तूं बजरिया
लाबा चुनरिया
खादी की
जय बोला महात्मा गांधी की.
रुई कई पोनी
बढ़ै दिन दूनी
मिटै अनहोनी
चरखा की जय-जय
खादी की
जय बोला महात्मा गांधी की.
बेसाहा सुदेशी
न पहिरा विदेशी
ऐसी कइ तैसी
होई गोरन कइ छय
आंधी की
जय बोला महात्मा गांधी की.

- गायिका- जमुना देवी.

- लोक नायिका अपने प्रियतम से निवेदन करती है कि बाजार से खादी की धोती ले आओ। महात्मा गांधी की जय बोलो। खादी गांधी का प्रसाद है।

खादी के लिये आवश्यक और अनिवार्य रुई की पोनी का पर्याप्त निर्माण है। हमारे दुर्दिन बीत जायं। चरखा और खादी की जय हो-जय हो।

प्रियतम मेरा आग्रह है कि स्वदेशी वस्त्र खरीदा करें। विदेशी वस्त्रों को त्याग दें। विदेशी गोरों का सत्यानाश हो। उनकी अनीति की आंधी स्वदेशी चिन्तन से थम जायेगी। महात्मा गांधी की जय बोलो।

(११)

गांधी जी अवतार लिए भारत आजाद कराने को
त्रेता में राघव राम हुए

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

द्वापर में कृष्ण कन्हैया
कलयुग में गांधी प्रकट हुये
-भारत आजाद कराने को

कृष्ण के हाथ में मुरली थी
राम के हाथ में धनुषवाण
गांधी के हाथ में चरखा था.
भारत आजाद कराने को.

राम के साथी वानर थे
कृष्ण के साथी ग्वाले-वाल
गांधी के साथी भारतवासी.
भारत आजाद कराने को.
गांधी जी अवतार लिये
भारत आजाद कराने को.

- लोक गायक.

- महात्मा गांधी का अवतार भारत देश को स्वतंत्र कराने के लिये हुआ। त्रेतायुग में श्री राम ने अवतार लेकर रावण के अत्याचार से लोक को मुक्त किया। द्वापर में श्री कृष्ण ने अवतार लेकर कंस के उत्पीड़न से युग को मुक्ति दिलाई। उसी प्रकार गांधी जी ने प्रकट होकर अंग्रेजों की गुलामी से भारत को स्वतंत्र कराया।

श्री कृष्ण ने मुरली धारण की थी। श्री राम ने धनुष बाण की सहायता से राक्षसों का संहार किया। गांधी जी ने चरखा को अस्त्र बनाकर भारत आजाद कराया।

श्री राम की सहायक सेना वानर-भालू थी। श्री कृष्ण के सहयोगी ग्वाल-वाल रहे। गांधी जी ने देशवासियों की सहायता से स्वतंत्र्य संग्राम में विजय हासिल की।

(१२)
आपन देश सुतंत्र कराबै चला.
गाँव वाले चला
शहर वाले चला
जोत वाले चला
खेत वाले चला

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मड़ई महल घरवाले चला

आपन देश सुतंत्र कराबै चला.

गांधी बाबा खेबइया
करी पार नइया
बहै गंगा मइया
कहै जमुना मइया.

गंगा मा बुड़की लगाबै चला
आपन देश सुतंत्र कराबै चला.

धरती पियारी
विपति केरि मारी
हमारि महतारी
हइ जकड़ी बिचारी.

महतारी कइ बेड़ी छड़ाबइ चला
आपन देश सुतंत्र कराबै चला.

- लोक कंठ से

- आजादी की लड़ाई चल रही है। अपना देश स्वतंत्र कराने के लिये संघर्ष में शामिल होने के लिये चलो। गांव और शहर के निवासी साथ-साथ चलो। खेत में काम करने वाले, जुताई करने वाले चलो, झोपड़ियों और महलों में रहने वाले चलो। देश सबका है। देश के लिये चलो।

गांधी जी स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व कर रहे हैं। सफलता सुनिश्चित है। गंगा-यमुना नदियों की देवी जलधार आवाहन कर रही है कि युद्ध की गंगा में अवगाहन करने चलो।

प्यारी भारत भूमि पर विपत्ति पड़ी है। धरती हमारी मां है। परतंत्रता की बेड़ी में जकड़ी है। मातृभूमि को बन्धन मुक्त कराने के लिये चलो। अपना देश स्वतंत्र कराने के लिये चलो।

(१३)

सुना गांव के भइया
जरमन अंगरेज लड़इया
बमवारी करा गोसंइया
जनता जरै घास की नइयाँ.

सुन गाँव के भइया.

हइ गांधी वीर अकेला,
समझौता करै अलबेला
गाँठी न एकौ धेला.

सुना गाँव केर भइया.

करम चन्द केर बेटवा
सुराजी बड़ा केबटवा
ताके देश केर घटवा

सुना गाँव केर भइया.

सब मिलि हथियार उठाई
अँगरेज का मारि भगाई
भारत माता केरि जय गाई.

सुना गाँव केर भइया.

- लोक कंठ से.

- ग्रामीण भाइयों सुनो जर्मनी और इंग्लैण्ड का युद्ध चल रहा है। दोनों सत्ताधीश एक दूसरे पर विनाशकारी बम वर्षा रहे हैं। देश की जनता युद्ध की आग में घास की तरह जली जा रही है।

एक मात्र महात्मा गांधी है जो शान्ति चाहते हैं। सन्धि-समझौते का प्रयास कर रहे हैं। गांधी जी त्यागी और निस्पृह महामानव हैं। उनके पास धन संग्रह नहीं है।

करम चन्द गांधी के सपूत मोहनदास स्वराज्य के पक्षधर हैं। गांधी जी देश रक्षा के लिये कृत संकल्प हैं। चलो सब लोग मिलकर अस्त्र-शस्त्र उठायें। अपने देश से अंग्रेजों को मार भगायें। सब कोई भारत माता का जय गीत गाओ।

(१४)

बच्चों का गीत

एल बेल गजबेल का डण्डा
डंडा मा झण्डा
तीन तिरंगा
चरखा खादी
खादी कइ आँधी
चजाये बाबा गांधी
पानी न बतासा

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

खेल न तमासा
पलटा हई पांसा
पान का बरेज
डेरान रंगरेज.
भगई अंगरेज.

- बालगीत

- मजबूत लकड़ी का मोटा डंडा है। डण्डे में तिरंगा झंडा चढ़ा है। चरखे से बने सूत से खादी बनती है। महात्मा गांधी खादी का प्रचण्ड आन्दोलन चलाये हुये हैं। प्रत्यक्ष रूप से कोई कारण नहीं दिखता। फिर भी स्थित अपने पक्ष में हैं। रंगों के सौदागर अंग्रेज डरे हुये हैं। वे शीघ्र हमारा देश छोड़कर चले जायेंगे।

(यह बघेली बालकों का खेल गीत है।)

(१५)
चरका घोड़ चरत हरियर घास हो,
आगे-आगे गांधी छेंकत पाछे वीर सुभास
नहरू शेखर लोहिया जुरे जय प्रकाश
रुख होई एक दिन खेत के कास

- लोक कंठ से

- गोरे अंग्रेज (चर का घोड़) देख की सम्पन्नता (हरियर घास) का शोषण कर रहे हैं। इन्हें गांधी जी और नेता सुभाष चन्द्र बोस रोक रहे हैं। मुकाबला कर रहे हैं। जवाहर लाल नेहरू, चन्द्रशेखर, राममनोहर लोहिया और जय प्रकाश नारायण भी आजादी के संघर्ष में हिस्सेदारी कर रहे हैं। कठिन संघर्ष से भविष्य में मधुर फल प्राप्त होगा।

(१६)
गांधी बाबा पतंगिया उड़ाई गये रे,
भारत माता का मान बढ़ाय गये रे.

रंग बिरंगी उड़ी रे पतंगिया
उड़ि-उड़ि आई गाँव के मड़इया,
फिरंगी का जिया घबराय गये रे.
गांधी बाबा पतंगिया उड़ाय गये रे

पहिल पतंगिया उड़ि नदी तीरे
दूसर समुन्द्र के तीर
गाँव-गाँव म पतंगिया उछाय गये रे.
गांधी बाबा पतंगिया उठाई गये हैं।
तीसर पतंगिया बंगाल माउड़इन
चऊथ चली कश्मीर
कन्या कुमारी पतंगिया उड़ाय गये रे.

गांधी बाबा पतंगिया उड़ाय गये रे.
भारत माता का मान बढ़ाय गये रे.

- गायक बिमलेन्दु.

- महात्मा गांधी ने तिरंगा ध्वज फहराकर भारत माता का सम्मान बढ़ा दिया है। तीन रंगों वाला विजय ध्वज गांव की झोपड़ियों तक पहुँच गया है। इससे अंग्रेजी हुकूमत घबरा गई है।

सर्व प्रथम पूर्ण स्वराज्य की घोषणा रावी नदी के तट पर हुई और वहीं पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया। गांधी जी ने समुद्र तट पर नमक बनाकर तिरंगे का मान बढ़ाया। अब गांव-गांव और घर-घर में तिरंगा लहरा रहा है। बंगाल, काश्मीर, कन्याकुमारी तथा देश कोने-कोने में गांधी जी ने राष्ट्रीय तिरंगा फहरा दिया है।

(१७)
अगड़ बम्म अगड़ बम्म महादेव
तरी बहै पानी ऊपर पान का बरेज
गांधी बाबा आइ रहे
धाइ रहे
गाइ रहे जय हिन्द-जय हिन्द.
काहे काल हइ खरन तइ भाग अंगरेज
सोने चिरइया
मोरि माटी पियार
भाग-भाग अंगरेज
निकरू छोड़ मोर देश.
मोर बाग-बगिया का फूल न उजार
भाग अंगरेज भाग-भाग दइउ मार
नेता सुभाष देइही खोंपा उजार.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अगड़ बम्म अगड़ बम्म महादेव
तरी बहै पानी ऊपर पान का बरेज.

- लोक कंठ से.

- अगड़ बम्म, अगड़ बम्म महादेव, की टेक पर बघेली वीर बालक कहते हैं कि गांधी जी दौड़ते हुये चले आ रहे हैं। वे ''जय हिन्द'' जैसा गीत गा रहे हैं। बच्चे कहते हैं कि अंग्रेजों तुम क्यों अपने को काल के गाल में डाल रहे हो। हमारे देश से भाग जाओ। हमारा देश अतीत में सोने की चिड़िया रहा है। हमारी मातृभूमि हमें प्यारी है। अंग्रेजों हमारा देश छोड़कर भाग जाओ।

हमारे भारत देश के बाग-बगीचों के फूल मत उजाड़ो। अभागे अंग्रेजों भाग जाओ। नेता सुभाष चन्द्र बोस तुम्हारा सर्वनाश कर डालेंगे।

(१८)

भगत

देवी के दुआरे बसा अंगरेजवा
चुनरी रंगाबै अनमोल हो मा.

एक-एक चुनरी का लख-लख मोल हइ
अब को रंग उकाठै हो मा.
रंग उकठिही महतिमा गांधी

जेनकर अरझे हइ काम हो मा.
अब को रंग उकाठै हो मा.

रंग उकठिही जवाहर चाचा
जेनकर अरझे हइ काम हो मा.
अब को रंग उकाठै हो मा.

रंग उकठिही भारतमाता
जेनकर रंग बदरंग हो मा.
अब को रंग उकाठै हो मा.

गायिका- आशा द्विवेदी.

- देवी के दरवाजे पर अंग्रेज रंगरेज बसेरा डाले हैं। वह कीमती चुनरिया रंगता है। एक-एक चुनरी का मूल्य लाख रुपये तक है। दगाबाज व्यारी के इस शोषक व्यापार का सत्यानाश कौन करेगा मां?

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अंग्रेजों के इस शोषक व्यापार का सर्वनाश महात्मा गांधी करेंगे, जिन्हें अपनी मातृभूमि से अटूट प्यार है। जो आजादी के लिये संघर्ष कर रहे हैं।

शोषक व्यापार का सर्वनाश जवाहर लाल नेहरू करेंगे जो आजादी के संघर्ष में जूझ रहे हैं।

अंग्रेजों के कुटिल व्यापार से भारत माता का शोषण हो रहा है। इसलिये भारतमाता ही इस शोषक व्यापार का अन्त करेंगी अर्थात देश स्वतंत्र होगा। दिव्य शक्तियां अनुकूल हैं।

(१९)

झूला गीत

छतवा दइले रे सुरजिहा
बदरी घेरे आबइ ना

उमड़ि-घुमड़ि घन गरजै लागे
घेरि आई अंधियरिया ना। छतबा.....

बड़े-बड़े बूँद बदरिया बरसै
लपकै बजुर बिजुरिया ना। छतवा.....

कउने बिरिछ तर भींजत होइही
गांधी लिहे लकुटिया ना
बदरी घेरे आवइ ना। छतवा.....

दादुर मोर पपिहरा बोले
झींगुर सोर मचाबै ना
बदरी घेरे आबई ना. छतवा........

गायिका- जमुनी देवी

- लोक नायिका गाती हैं, स्वराज्य के आकांक्षी अपना छाता चढ़ा लो, बादल घिरे आ रहे हैं। आकाश में बादल उमड़-घुमड़ रहे हैं अँधेरा घिर रहा है। देखो न बड़े-बड़े बूंद टपकने लगे। बीच-बीच में बिजली भी चमक जाती है। इसलिये सुरक्षा के लिये छाता चढ़ा लो। तुम्हें स्वराज्य हासिल करना है।

अरे मैं तो चिन्तित हूँ किस वृक्ष के नीचे गांधीजी लाठी लिए हुये भीग रहे होंगे। वे तो छाता लेते ही नहीं हैं।

जोर-जोर से वर्षा होने लगी मेंढक, मोर और पपीहा बोलने लगे। झींगुर भी शोर मचाने लगे। सुराजी, अपनी रक्षा के लिये छाता चढ़ा लो।

(२०)

धरती लाल पलाश है धुआं-धुआं आकाश है।
भारत माता का अनमन गांधी बिना उदास है।।

आंचल आंसू से है गीला,
पोर-पोर में पीर है।
ढरके गई धीरज की छाती,
व्यथा बहुत गंभीर है।।

चीख-चीख चौराहे में सिसक रहा विश्वास है।
भारत माता का अनमन गांधी बिना उदास है।।

औंधे मुंह लेटी है बेसुध,
निर्बल असहायों की टोली
मानवता की छाती में,
हत्यारे ने मारी गोली।।

'हे राम' प्रार्थना की बोली-गोली में द्वन्द समास है।
भारत माता का अनमन गांधी बिना उदास है।।

हर आंगन में अंधियारा है,
द्वार-द्वार आतंक है।
अखण्डता का अंग-भंग है,
धर्म मारता डंक है।।

कैकेयी का राज तिलक कौशल्या का वनवास है।
भारत माता का अनमन गांधी बिना उदास है।।

- गोमती प्रसाद विकल.

- धरती पर आतंकवाद का बोलवाला है। चारों ओर मार-काट मची है। मनुष्य का लाल रक्त इतना अधिक बहा है कि सारी पृथ्वी पलाश के लाल फूल-सी प्रतीत होती है। समूचा अंतरिक्ष बारूदी धुएं से भर गया है। गांधी के अभाव में भारतमाता उदास हैं। मनुष्यता का आंचल पीड़ा के आंसू से भीगा हुआ है। देह के अंग-अंग में कसक है। कष्टों के दबाव से धैर्य की छाती दरक रही है। विश्वास चौराहे पर चीख-चीख कर रो रहा है।

असहाय और निर्बल लोग औंधे मुंह लेटे पड़े हुये हैं। कोई उनकी खोजं खबर लेने वाला नहीं है। वह घड़ी कितनी क्रूर और निर्मम थी जब हत्यारे गोडसे ने मनुष्यता की छाती में गोली दाग दी। गांधी की करुणा फूटी पड़ी थी, महात्मा

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

के मुंह से हे राम....निकला। हत्यारे की ओर से गोली और गांधी की ओर से प्रार्थना की बोली। गोली-बोली के बीच कितना कारुणिक द्वंद है।

आज हर आंगन में भय का अंधकार फैला है। हर दरवाजे पर आतंकवाद की दस्तक है। अखण्डता खण्डित हो रही है। धर्म मानवता को देह में विषैला डंक चुभा रहा है। स्थितियां सर्वथा विपरीत हैं। साध्वी कौशल्या के पुत्र राम वनवास के लिये बाध्य हैं। षड़यंत्रकारी कैकेयी, पुत्र का राजतिलक कराने की योजना के संलग्न है। ऐसी विषम परिस्थिति में बापू के बिना भारतमाता दुखी और उदास हैं।

(२१)

बापू अपने भारत को तुम पहचान नहीं पाओगे।

हरित क्रांति की हरियाली है,
नदियाँ, नहर बनी।
लेकिन तुलसी के गमलों में
उग आई नागफनी।।

अन्धकार का पहरा है तुम दिनमाल नहीं पाओगे।
बापू अपने भारत को तुम पहचान नहीं पाओगे।

नहीं मिलेगा चरखा-तकली
खद्दर हैं बदनाम,
राजनीति के मकड़जाल में,
उलझ गया हे राम।।

मन्दिर-मस्जिद के भीतर तुम भगवान नहीं पाओगे।
बापू अपने भारत को तुम पहचान नहीं पाओगे।

झोपड़ियों के दिये दब गये
महलों की बुनियाद में।
संसद में हो रहा कीर्तन,
डंकल जी के याद में।।

गिरह कटो का लोक तंत्र है तुम, सम्मान नहीं पाओगे।
बापू अपने भारत को तुम पहचान नहीं पाओगे।।

- गोमती प्रसाद विकल

- दुनिया बहुत बदल गई है। बापू जी ने अपने चिर परिचित भारत क्री तस्वीर नहीं पहचान पाओगे। नदियों से

नहरें निकाली गई हैं। कृषि के क्षेत्र में हरित क्रांति आ गई है। किन्तु गमले की पवित्र तुलसी को उखाड़कर नागफनी का कंटीला पौधा रोप दिया गया है। सर्वत्र अनीति का अन्धकार पसरा है। बापू न्याय का दिनमान अपने देश में नहीं पाओगे।

चरखा-तकली का यज्ञ बन्द हो गया है। खादी की पवित्रता कलंकित हो गई है। सम्प्रदायवाद का अजगर मर्यादापुरुषोत्तम राम को राजनीति के जंगल में घसीट ले गया है। बापू, अब मन्दिर-मस्जिद में ईश्वर-खुदा की उपस्थिति का बोध तुम्हें नहीं होगा।

पूंजीवादी सोच ने निर्धनों को कुचल दिया है। झोपड़ियों को उजाड़कर उच्च अट्टालिकाओं का निर्माण हुआ है। भारतीय संसद में डंकल की अर्थनीति का गुणगान हो रहा है। तस्करों, दलालों और घोटाला वालों का अपना लोकतंत्र देश में जड़ जमा लिया है। बापू आपको इस प्रदूषित परिवेष में सम्मान नहीं मिलेगा।

(२२)

आओ बापू फिर से तुमको साबर मती पुकार रही है।

दीन हीन हरिजन को देखो,
कैसे सिसक रही है छाती।
परवश महिलाओं को देखो,
जिनकी मांग जलायी जाती ।।

भारत माँ की कोख दुबारा फिर तुमको अनुहार रही।
आओ............................रही है।।

उजड़ गया है वर्धा आश्रम,
सत्याग्रह हो गया अनाथ।
अधियारे में बढ़ा रही है,
हिंसा अपने खूनी हाथ।।

खादी शहजादी की चाकर राई लोन उतार रही है।
आओ.............................रही है।।

पनघट फोड़ रहे है मटकी,
उठा-पटक है छीना-छपटी।
राधा वृन्दावन में भटकी,
जोर-जबरई लपटा-छपटी।।

शिर पर चढ़कर काली नागिन कान्हा पर फुफकार रही हैं।
आओ बापू.............................पुकार रही है।

- गोमती प्रसाद विकल

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

- बापू, साबरमती आपको स्मरण कर रही है। एक बार फिर से भारत में आकर देखो दीन-दुखी हरिजन कितने पीड़ित और असहाय हैं। महिलाओं के साथ अत्याचार हो रहे हैं। दहेज लोभी वर्ग बहुओं को निर्ममता से जला रहे हैं। बापू एक बार फिर से भारत में जन्म लो। भारत माँ की कोख तुम्हें गर्भ में धारण करने की आतुर है।

बापू, आपका साधना स्थल वर्धा आश्रम श्री हीन हो गया है। सत्याग्रह की चेतना नेतृत्व विहीन है। अन्याय के अन्धकार में हिन्सा का खूनी नंगा नाच हो रहा है। स्वतंत्रता की प्रतीक खादी सत्ता की गुलामी कर रही है। खादी के परिधान में सत्ताधारी काला बाजारी कर रहे हैं। शुभ्रता और शुचिता का गला घोंट रहे हैं।

रक्षक ही भक्षक बन गये हैं। कुर्सी के लिये उठा-पटक और छीना-झपटी मची है। आजादी की राधा संशय के वन में भटकी हुई है। असामाजिक तत्व आजादी की अस्मत लूटने पर उतारू हैं। आपस में जोर जबरदस्ती और लड़ाई झगड़ा भी कर रहे हैं। विपत्ति की काली विषैली नागिन लोक मंगल के सिर पर चढ़कर फुफकार रही है। बापू, एक बार फिर से भारत में अवतार लो। साबरमती स्मरण कर रही है।

(२३)

बापू

बिड़ला मन्दिर के आंगन का धुला अब तक खून।
बापू तेरे भारत माँ की गोद पड़ी है सून।।

चौराहे पर जब लुटती है महिलाओं की चीर।
बापू याद बहुत आते हो बढ़ी बहुत है पीर।।

जिस दिन गिरा विवादित ढांचा धर्म हुआ बदनाम।
याद बहुत आया है उस दिन बापू तेरा नाम।।

जिन मूल्यों के लिये महत्मन दियाकरुण बलिदान।
खो दिया तुम्हारे चेलों ने बापू उसकी पहचान।।

अपनी-अपनी ढपली सबकी अपना-अपना राग।
मानवता की पर्ण कुटी में बापू लगी है आग।।

आजादी का हाल न पूछो कितनी है बर्बादी।
रेशम से कर लिया सगाई बापू तेरी खादी।।

धूल उड़ाती चीख रही है गाँवों की पगडंडी।
संसद में बैठे हैं बापू खद्दर छाप शिखण्डी।।

- गोमती प्रसाद विकल

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

- बिड़ला मंदिर के परिसर में गोडसे ने महात्मा गांधी की हत्या कर दी। लगता है रक्त के छींटे अभी धुले नहीं हैं। गांधी जैसा सपूत भारत मां की कोख से स्वतंत्र भारत में पैदा नहीं हुआ। मां की कोख सूनी पड़ी है। चौराहे पर जब महिलाओं का चीर हरण होता है। पीड़ा असहनीय हो जाती हैं। बापू की याद तब बहुत आती है जिस दिन अयोध्या में बाबरी मस्जिद का विवादित ढांचा ध्वस्त हुआ, धर्म की मर्यादा लुट गई। बापू का नाम उस दिन बहुत-बहुत याद आया।

बापू जिन मानवीय मूल्यों के लिये तुम शहीद हुये, तुम्हारे अनुयायियों ने उसकी चूलें हिला दीं। राजनेताओं में मतेक्य नहीं है। सब अपने-अपने स्वार्थ सिद्धि में लगे हैं। बापू, मानवता की पर्ण कुटी में आग लगी हुई है। सब कुछ स्वाहा हुआ जा रहा है।

आजादी के नाम पर निहायत बर्बादी हो रही है। बापू, सादगी और शचिता की संवाहक खादी, रेशमधारी धन पतियों से तालमेल बैठा लिया है। गांव की गलियों में धूल और कीचड़ है। क्रन्दन और हाहाकार है। बापू, दिल्ली की संसद में खद्दरधारी शिखण्डी बैठे हैं।

(२४)

बिरहा

ऊपर सरग म बदरा गरजै,
धहर-घहर घहराय।
घर-घर गरजै माल गुजारी,
भूख पेट अकुलाय।।

गोरन केर सिपाही गरजैं,
घोड़ रहे कुदड़ाय।
गांधी बाबा कहां हेराने,
धाबा करा सहाय।।

सूरज जइसन गांधी बाबा,
जोति रही छहराय।
आजादी कइ सोन चिरइया,
गंगा रही नहाय।।

मूड़ पकड़ि कइ गोरा रोमा,
लन्दन का घबड़ाय।
गांधी बाबा दिहिन तिरंगा,
भारत म फहराय।।

सोने कइसन अब दिन होइही,
चांदी कइसन रात।
जुग-जुग जिइही गांधी बाबा,
सजी सुराजि बरात।।

गायक- ददई अहीर.

- आसमान में बादल गरज रहे हैं। गरीबों के दरवाजे पर लगान वसूली की अंग्रेजी हुक्म गर्जना कर रही है। घोड़े पर सवार अंग्रेज सिपाही लगान वसूली के लिये चारों ओर दौड़ रहे हैं। भूखे, गरीब किसान बहुत दुखी हैं। असहाय किसान स्मरण करते हैं कि गांधी जी आप कहां हैं? शीघ्र आकर हमारी रक्षा करें।।

गांधी जी सूर्य के समान तेजस्वी हैं। उनके नैतिक चरित्र भी आभा चतुर्दिक फैली है। आजादी की स्वर्ण चिड़िया गंगा स्नान कर रही है। अर्थात स्वराज्य मिलने ही वाला है।

गांधी जी के त्याग एवं संघर्ष के फलस्वरूप भारत स्वतंत्र हो गया। इससे अंग्रेज दुखी हैं। सिर पकड़कर रो रहे हैं। समूचा लन्दन गांधी के सत्य-अहिंसा के चमत्कार से चकित है। गांधी जी ने स्वतंत्र भारत में राष्ट्रीय ध्वज फहरा दिया।

अब भारत में खुशहाली आयेगी। सुनहले दिन और रूपहली रात का आगमन होगा। गांधी जी कीर्ति युगों-युगों तक अमर रहेगी। स्वराज्य प्रेमी बारात जैसा सुखद उत्सव मनायेंगे।

(२५)

भोला दनिया

तिरंगा प्यारे ऊंचे उड़ै हो, भारत माता का पुलकै शरीर।
तिरंगा प्यारे.....
तिरंगा प्यारे ऊंचे उड़े हो, गंगा मइया का निरमल नीर।
तिरंगा प्यारे.........
तिरंगा प्यारे ऊंचे उड़ै हो, कन्याकुमारी, कटक, कश्मीर
तिरंगा प्यारे.........
तिरंगा प्यारे ऊंचे उड़ै हो, गांधी बाबा संभारे हइ डोर।
तिरंगा प्यारे.........
तिरंगा प्यारे ऊंचे उड़ै हो, ऋतु आई हइ बसन्त बहार।

- गायक बिमलेंन्दु

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

- लोक मानस की कामना है कि राष्ट्रध्वज तिरंगा खूब ऊँचाई में लहराये जिसे देखकर भारत माता आह्लादित हो। तिरंगा खूब ऊँचाई पर लहराये.......

गंगा नदी की निर्मल जलधार की आकांक्षा है कि भारतीय राष्ट्र-ध्वज खूब ऊँचाई में लहराये। काश्मीर से कन्याकुमारी और कटक से गुजरात यानी भारत की सीमा परिधि में तिरंगा खूब ऊँचाई में लहराये। राष्ट्र ध्वज तिरंगे की डोर गांधीजी के सबल हाथों में हैं अतः खूब ऊँचाई से लहराये। किसी प्रकार का आसन्न संकट नहीं है। भारतदेश में बसंत ऋतु का आगमन हुआ है। पर्यावरण प्रफुल्लित है। ऐसे सार्थक परिवेश में राष्ट्र ध्वज ख़ूब ऊँचाई में लहराये।

- गोमती प्रसाद विकल

गांधी चालीसा

मात भूमि की चरण रज भारत की जय गीत।
राष्ट्रपिता की विमल यश वर्णों परम पुनीत।
बुद्धिहीन तन जानिकै, सुमिरौ महा महेश।
स्वतंत्रता का स्तवन लिख दो श्री गणेश।।

आजादी का अमर उजाला। चक्र सुदर्शन चरखा वाला।।
सत्य अहिन्सा-समता वाला। असहयोग-आन्दोलन वाला।
युग को राम-रहीम पढ़ाया। दया प्रेम का दीप जलाया।।
विपुल वासना का विष पायी। सत्विक जीवन का अनुयायी।।
लाठी और लंगोटी का धन। दीपक-बाती जैसे तन-मन।।
काले-काले घन घिर आये। व्यापारी बन गोरा आये।।
कूटनीति का जाल बिछाया। अपना पांव अधिक फैलाया।।
कच्चामाल गया बिल्लायत। पक्का बनकर आया भारत।।
चौपट हुआ स्वदेशी धंधा। भारत हुआ आखों का अंधा।।
अपना घर हो गया पराया। नहीं नमक तक भी मिल पाया।।
रोटी कपड़ा की मजबूरी। बढ़ी बहुत आपस में दूरी।।
शिक्षा हुई नौकरी वाली। खेत की उजड़ी हरियाली।।
लूट पाट की मारा-मारी। मूड़ पकड़ रोते व्यापारी।।
कर्जा और लगान बढ़ गया। पानी शिर से ऊपर चढ़ आया।।
धरम-करम पर साढ़े साती। नीति हो गई ठकुर सोहाती।।
बढ़ा लगान खेत का भारी। कृषकों की हो गई निकारी।।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गोरों के कानून थे काले। कांटे जैसे चुभने वाले।।
विश्वबन्धु बन बापू आये। दुनिया को संदेश सुनाये।।
जिया और जीने दो सबको। भाग दूसरे का मत लपको।।
मानव-मानव को पहचानो। सबको अपने जैसे जानो।।
सत्य अहिंसा को फैलाया। राम राज्य का अर्थ बताया।
चरखा-तकली यज्ञ चलाया। खादी का व्यापार बढ़ाया।।
वस्त्र विदेशी फूंक जलाया। छूत अछूत का भेद मिटाया।।
हरिजन को हंस गले लगाया। महिलाओं को ऊपर उठाया।।
समता का सत् पाठ पढ़ाया। मानवता का मान बढ़ाया।।
अपनी बोली अपनी बानी। अपना देश अन्न और पानी।।
सबको मिले पेट भर रोटी। तन ढकने के लिये लंगोटी।।
रहे सदा जो भूले भटके। अपने अवरोधों में अटके।।
अलग-अलग थे भाई-भाई। बनी पराई थी परछाई।।
सबको अपना बोध कराया। स्वतंत्रता का ध्वज फहराया।।
गई गुलामी बीती रात। आया अरुणिम नया प्रभात।।
जन-गण-मनः ज़नजीवन गाया। सुख का महा उदधि लहराया।।
अपना घर आंगन सब अपना। पूर्ण हुआ आखों सपना।।
धन्य हो गई भारत माता। गाती भारत भाग्य विधाता।।
बारी अब न खई तरकारी। ग्राम स्वराज्य करी रखवारी।।
घर-घर में पंचायत चर्चा। वस्त्र स्वदेशी समिति खर्चा।।
राम राज्य का स्वप्न सलोना। दुख सुख सबका अपना होना।।
किन्तु दाल में दिखता काला। है इतिहास बदलने वाला।।
युग का मानस धुआं-धुआं है। इधर है खाई उधर कुआं है।।
दुनिया एटम बम पर ऐठी। सर्वनाश के तट पर बैठी।।
एक बार फिर बापू आओ। दुखी विश्व की आग बुझाओ।।

कर में लाठी, घड़ी कमर में,
उर में हिन्दुस्तान।

खादी के तारों में लिपटी,
बापू की पहचान।।

सत्य-अहिंसा-सत्याग्रह की जय.

- गोमती प्रसाद विकल.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गांधी चालीसा (भावार्थ)

मातृभूमि की चरण धूल से निस्सृत चेतना भारत के जय गान में स्पन्दित हो। राष्ट्र पिता महात्मा गांधी के निर्मल पुनीत कीर्ति के वर्णन का प्रयास है। ज्ञान के अभाव में सहायतार्थ वागीश महेश का स्मरण करता हूँ। सिद्धि दायक श्री गणेश स्वतंत्रता का स्तुति गान स्वयं लिख दें।

चरखा रूपी सुदर्शन चक्र धारण करने वाले महात्मा गांधी स्वतंत्रता के अमृत प्रकाश हैं। गांधी जी ने स्वातंत्र्य समर में सत्य-अहिंसा-असहयोग को अस्त्र-शस्त्र के रूप में प्रयोग किया। लोक को राम-रहीम की एकता का उपदेश दिया। मानवता के हृदय में दया-प्रेम का दीप प्रज्जवलित किया। नीलकंठ की भाँति वासनाओं का विषपान कर सात्विक जीवन जिया।

अपरिग्रही गांधी जी मात्र लाठी और लंगोटी के धनवान थे। उनके तन-मन में दीपक और लौ जैसा अन्तरावलम्बन रहा है।

गौरांग अंगरेज व्यापार के निमित्त भारत में आये किन्तु भारत देश के लिये विपत्ति के काले-काले बादल बन गये। कूट नीति के बल पर अंगरेजों ने समूचे भारत में अपना विस्तार कर लिया।

भारत देश का कच्चा माल इंग्लैण्ड से रूपान्तरित होकर भारत में ही महंगे मूल्य पर विक्रय के लिये आने लगा। स्वदेशी रोजगार धन्धे नष्ट हो गये। भारतीय जन मानस के सम्मुख घनान्धकार था। भारतवासी अपने ही देश में पराये जैसे हो गये। उन्हें नमक तक के भी लाले पड़ गये।

भारतीय शिक्षा प्रणाली दूषित हो गई। शिक्षा सिर्फ सरकारी नौकरी के लिये उपयोगी रह गई। कृषि कर्म चौपट हो गया। व्यापारियों की दुर्दशा थी। मार-काट और लूटपाट मच गयी। भारतीय जनमानस के धर्म-कर्म भ्रष्ट कर दिये गये। नैतिकता में चान्नाकी और चापलूसी आ गई। भूमि का लगान बढ़ गया। कृषक अपनी जोत भूमि से बेदखल हो गये। उन पर कर्ज चढ़ गया। गौरांगों के कानून काले थे। जनमानस में कांटों की भाँति चुभकर पीड़ा पहुँचाते थे।

ऐसी विषम परिस्थिति में विश्व बन्धू बापू भारत में अवतार लेकर दुनिया को संदेश दिया कि- दुनिया के लोगों, सब कोई जियो और दूसरे को भी जीवित रहने दो। एक दूसरे का मौलिक हक मत छीनो।

मनुष्य, मनुष्य का मूल्य पहचाने। अपनी ही भांति दूसरे के मान-सम्मान का ध्यान रखें। सत्य अहिंसा के दर्शन का विस्तार किया। रामराज्य का अर्थ दुनिया को समझाया।

चरखा-तकली से सूत निकाला, खादी को जीवन व्यवहार से जोड़ा! विदेशी वस्तुओं की होली जलाई। छूत-अछूत की भावना को दूर किया। हरिजनों को प्यार-दुलार दिया। महिलाओं को समानता की हैसियत प्रदान की।

जन मानस को समानता का पाठ समझाया। मानवता को गौरवान्वित किया। अपने देश की आंचलिक बोलियों और हिन्दी भाषा को श्रेष्ठता दी। अपने देश की माटी, पवन, पानी और अन्न को स्वीकारा, आदर किया।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ऐसा उपक्रम किया कि देशवासियों को पेट भर भोजन और वस्तु मिल सके। देशवासी जो अपने कर्तव्य पथ से भटक गये थे। अपने दुराग्रहों में उलझे थे। उन्हें कर्तव्य बोध कराया।

भाई-भाई अलग-थलग थे, आपस में अविश्वास था। विचलित लोक मानस को आत्म बोध कराया। भारत देश को अंगरेजों से स्वतंत्र कराया।

परतंत्रता की स्याह रात्रि व्यतीत हो गई। आशा और उल्लास का अरूणिम प्रभात आ गया है। लोक मानस जनगणमन का जय गीत गाने लगा। सुख-समृद्धि का सागर लहराया था। लोगों की चिरपोषित आकांक्षा साकार हुई। देश स्वतंत्र हो गया। अपनी धरती, घर और आंगन का मालिकाना हक मिल गया। भारत वसुन्धरा निहाल हो गई। प्रमुदित मन भारत माता ''भारत भाग्य विधाता'' का गान गुनगाने लगी।

लोक विश्वास जाग उठा कि अब रक्षक भक्षक की भूमिका नहीं निबाहेंगे। ग्राम स्वराज्य से लोक रक्षा होगी।

लोग परस्पर पंचायती राज्य की संरचना और संचालन की चर्चा करने लगे। स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग से दैनिक जीवन का खर्च सीमित और संतुलित हो गया।

स्वतंत्र देशवासी रामराज्य के आदर्श को चरितार्थ करने की चेष्टा करने लगे। एक दूसरे के दुख-सुख में सहभागी और सहयोगी होने लगे।

किन्तु मनचाही स्थिति नहीं बन पाई। इतिहास बदलने के लक्षण उभरने लगे। सफलता में कुछ खोट दिखाई पड़ने लगी। सम्प्रति युग मानस अशान्त और बुझा-बुझा है। बिखराव की स्थिति है। पूंजीवाद और साम्राज्य वाद का शिकंजा कसता जा रहा है। दुनिया की मानसिकता आणविक आयुधो के दर्प से उत्तेजित है, जीवन सर्वनाश के तट पर बैठा है।

लोक कल्याण के आकांक्षी मानवता के शुभ चिन्तक बापू एक बार फिर से धरती पर आओ, दुखी दुनिया का संकट दूर कारो। सर्वनाश की आग बुझाओ।

गांधी का परिधान और व्यक्तित्व विलक्षण है। हाथ में लाठी और कमर में घड़ी लटकी हुई है। हृदय में हिन्दुस्तान का निरन्तर स्मरण है। खादी के पुनीत धागों से बापू का विराट रूप परिवेष्टित है। सत्य-अहिंसा- सत्याग्रह की त्रिधार संसार में प्रवाहमान हो।

संकलनकर्ता
(गोमती प्रसाद विकल)
पंकज मेडिकल स्टोर्स,
सिरमौर चौराहा, रीवा.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बघेली लोकगीतों में गांधी

संकलन
डॉ. भगवती प्रसाद शुक्ल
२६/१६, द्वारिकापुरी रीवा, (म.प्र.)

पृष्ठभूमि

''महात्मा गांधी १२५वाँ जन्म वर्ष'' के उपलक्ष्य में लोकजीवन में व्याप्त गांधीजी पर केन्द्रित लोकगीतों एवं आंचलिक गीतों का सर्वेक्षण और संकलन करने के उद्देश्य से समूचे बघेलखंड का भ्रमण किया गया। सांमती जन-जीवन से प्रभावित रीवा स्टेट में गांधी जी के व्यक्तित्व और स्वातंत्र्य संग्राम में उनके योगदान के लोकगीत संभ्रांत परिवारों में लगभग नहीं के बराबर मिले किंतु मध्यवर्ग में तथा उनसे भी अधिक आदिवासी जन-जातियों में गांधीजी पर केंद्रित अनेकानेक लोकगीत मिले। उनमें से करमा, शैली, गैलहाई गीतों में गांधीजी पर केन्द्रित अनेक गीत हैं। स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान पर तथा गांधीजी के व्यक्तित्व पर बिखरे हुए लोकगीतों को संकलित किया गया है। उनके व्यक्तित्व के संकलित गीत मध्यवर्गीय जातियों और व्यक्तियों में प्रचलित हैं। कुछ गीत लोक वाचिक परंपरा के हैं किन्तु कुछ रचित गीत हैं जो समय की धारा में घिसे लोकगीत की रंगत में ढल गये हैं। उनका आस्वाद संभ्रांत सांस्कृतिक रंगत का है। कुछ गीत लोक गाथा का स्वाद और रचित गीतों की शैली का सुख देते हैं।

कुल मिलाकर विभिन्न विधाओं, छंदों और रागों के पच्चीस गीत इसमें संग्रहीत हैं, उनमें करमा, बनरा, सोहर, भगत, कोलदहका, गारी, कजरी, हिंदुली आदि प्रमुख हैं। उनमें भी बघेली का आस्वाद, भगत, गारी, कोलदहका में अधिक है।

(१) बघेली करमा गीत

(लोकवाचिक परंपरा का गीत)

रेल मांगई कोइला पानी, मोटर मांगई गा तेल,
दउआ, मोटर मांगइगा तेल।
ठेला मांगइ लाल झंडी, भागइगा मुड़पेल,
दउआ, भागइ मुड़पेल,
मोटर मांगइगा तेल ।
गांधी महतमा मांगइ सुराज कै झंडा गजबेल
जवाहिर भागई मुड़पेल,
तिलखे पाछे भागई, पटेल
गांधी मांगइ सुरज कै झंडा गजबेल।
भारत बासी बड़े सूरमा, कठिन जात बलवानगा
मरना, जीना नहीं डेरामंइ, तेगि देंइ परान गा।
गांधी मांगइ राज पाट अउ मनसब मांगई सरदार
जवाहर छीनइ अंगरेजन से, सलगै कारोबार।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

धीरे बनाबा, बिगड़ी बन जइया रे-
बिगड़ी बन जाइगारे, तैं धीरे बनाबा
गांधी महाराज धीरे चलाभई रेल, भागइ मुड़पेल।

(जमुना, द्दी, जइभुनिया, लांवी आदि कोल ग्राम व्योहारी
जि. शहडोल से संकलित)

टीप - करमा गीत हर्ष-उल्लास, सुख-दुख सभी अवसरों पर गाया जाता है। करमा (कर्म) का परिवर्तित रूप है ऐसा भी कहा जाता है कि ''करम'' एक वृक्ष होता है जो भाग्य का प्रतीक होता है, इसे लगाकर पूरा करने, करमा गाने से भाग्य जागृत होता है। सुख समृद्धि मिलती है।

(२) यह गीत व्योहारी जिला शहडोल से संकलित है जमुना की उम्र ४० साल, दद्दी की उम्र २५ वर्ष, जइमुनिया की २८ वर्ष और लापी की १९ वर्ष है इनमें से लापी गोंड़ जाति का है, शेष कोल है। नाम का अंतर छोड़ दें तो यह गीत समस्त आदिवासी जन-जातियों में मिल जाता है।

(३) इससे महात्मा गांधी के आदिवासी जनजातियों के लोक-जीवन में प्रभाव का ज्ञान होता है।

- रेल कोयला पानी मांगती है। मोटर तेल (पेट्रोल) मांगता है भाइयों (दउआ) मोटर तेल मांगता है। रेल मार्ग का ठेला लाल झंगी मांगता है, तीव्रता से रेल अपने मार्ग पर चलना चाहती है। इसीलिए तेल पानी मांगती है। महात्मा गांधी स्वराज्य मांगते हैं, जिससे स्वराज्य का शानदार (गजबेल) झंडा चारों ओर दौड़े। जवाहर लाल नेहरू और पटेल भी स्वराज्य मांगते हैं। भारत वर्ष के रहने वाले बड़े सूरवीर हैं। बलवान हैं। मरने-जीने को नहीं डरते प्राण का त्याग कर देते हैं।

महात्मा गांधी स्वराज्य मांगते हैं। सरदार पटेल मंत्री पद मांगते हैं, जवाहर लाल अंग्रेजों से राज्याधिकार छीनना चाहते हैं।

धीरे-धीरे बनाओ। काम बन जायेगा। स्वराज्य मिल जायेगा बिगड़ी बात बन जाएगी। महात्मा गांधी धीरे-धीरे स्वराज्य के पथ पर चल रहे हैं- लेकिन उनकी आंदोलन की रेलगाड़ी तीव्रता (मुड़पेल) से चल रही है।

(२) बघेली बनरा

गांधी नीति तोंहार, देश का आजाद करायो रे,
चाल, ढाल, आचार नियम, जन गन मन भायो रे।
सरबस होम किहा आपन, पै सत्य साधना ना छोड़ेया।

समय मां धाक जमायो रे
जन गन मन भायो रे।।
कमर कसे तइयार, न मानइँ हार, अहिंसा केर शस्त्र चलायो रे
बरबस आगी मां कूदे जब, अपुनइ गई जुड़ाइ,
शीश कबहूँ न झुकायो रे,
समय मां धाक जमायो रे।
सत्‌आग्रह, उपास धरना धरि, दाण्डी यात्रा किहेन
गजब कइ चाल चलायो रे
महतारी कइ लाज बची, घिउ केर दिया लायो रे,
मोर जल्दी लड़ आयो रे
समय मां धाक जमायो रे
गांधी नीति तोंहारि देस आजाद करायो रे।

- (श्रीमती कलावती मिश्र ३० वर्ष सरोज कुमार मिश्र ४५ वर्ष)

- गांधी, आपकी नीति ने देश को स्वतंत्र करा दिया। आपका रहन-सहन, रीतिनियम भारत के जन-जन को अच्छा लगा। आपने अपना सर्वस्त्र होम कर दिया किंतु सत्य की साधना नहीं छोड़ी समय पर अंग्रेजों के ऊपर धाक जमाई। इसीलिए जन गण के मन को अच्छे लगे।

- आजादी के आंदोलन में, अहिंसा का शस्त्र लेकर तैयार हो गए। हार नहीं मानी। आग में कूद पड़े सिर कभी नहीं झुकाया। इसलिए गांधी की धाक बनी रही।

सत्याग्रह किया, अनशन किया। दाण्डी यात्रा की-सभी रणनीतियाँ-सभी चालें श्रेष्ठ रहीं। भारतमाता की लज्जा रख ली। जल्दी ही स्वतंत्रता के विहान को ले आए। गांधी की नीति के कारण देश शीघ्र आजाद हो गया।

(३) बघेली गीत

(गांधी केर संदेश)

देसवा अबइ ना संभरी तो फिर,
देस संभल न पाई कबहूं.
गांधी कै संदेश न कउनउ फिर,
गामन मां पहुँचाई कबहूँ।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तुम जौ नहीं भर पाया अबहूँ
जाति पाँति केर खाई का,
गाँधी कै संदेश न कउनउ फिर
गामन मां पहुँचाई कबहूँ।
कइसे नमन् करी कोऊ फिर कबहूँ,
गांधी कै परछाई का,
मजहब कइ धधक रही आगी
कइसे कउन बुझाई कबहूँ
गांधी केर संदेश न कउनउ फेर,
गामन मां पहुँचाई कबहूँ।
जरी अगर फेर से बहनें।
पापी दहेज के र आगी मां
जुरां नहीं रहत है भारत जो
एक सूत्र केर माला मां
अउर रही जो गंगा मइली
कउन नहामइ अइँहइँ कबहूँ
गांधी कै संदेश, न कउनउ फिर
गांमन मां पहुँचाई कबहूँ।

- (साबिर असलम खान, (२८ वर्ष)
अनुराधा तिवारी २४ वर्ष
ग्रा. पो. मऊगंज जिला रीवा से प्राप्त)

- अगर देश अभी न संभल सकेगा, तब फिर कभी न संभल पायेगा। फिर कोई महात्मा गांधी के संदेश को ग्राम्य तक पहुँचाने वाला भी न बचेगा तुमने अभी तक जाति-पाँति की खाई को नहीं भरा, फिर गाँवों तक गांधी के संदेश को कैसे पहुँचा सकोगे। गाँधी के परछाई को कोई कैसे प्रणाम करेगा अगर मजहब की आग धधकती रही। उसे बुझाया नहीं गया। फिर गांधी के संदेश को गाँवों तक कौन ले जाएगा?

अगर फिर से बहनें दहेज की चिता में जलेगी, अगर भारत एक माला के सूत्र में नहीं बांधा—अभी भी तो। अगर अभी भी गंगा मैली बनी रही तो फिर गांधी के संदेश को गांवों तक कौन पहुँचायेगा?

(४) बघेली बनरा गीत

जब जब उठी बड़ेरा जोरगर देस मां छाई रे
तव तव मानउता गइ कचरी, दया न आई रे
हइ इतिहास गवाही, जनमें गाँधी-नेहरू रे
हाथ कड़ोरन एक मां तवहिन, आंधी-भागी रे।
जब जब अपने अंतस जागी, इरखा आगी रे
कोसन रहा सुपास, कहिन गांधी आपनि बानी रे
फुट्ट फैलि तौ देस के अपने, खोंखल कीन्हिस रे-
एखे बदले रकत मांगि, धरती जब मांगिस रे-
जे-जे गरम विचारेन केर, बारूद बिछावाइन रे
तें तें भारत माता केर, सपूत कड़बाइन रे
जब जब विपति केर नाग, डसईका हीं मुंह बाइस रे,
तव तव गांधी खड़े भइन, सब विख पी डारिन रे
जब जब उठी बड़ेरा जोरगर, देस माँ छाई रे
तव तव मानउता गई कचरी, दया ना आई रे।
हइ इतिहास गवाही, जनमें गांधी नेहरू रे
हाँथ करोड़न इक मां तवहिन, आँधी भागी रे।

- (सरोज कुमार मिश्र ४५ वर्ष
उर्रहट पी.के. स्कूल के पीछे गली, रीवा से प्राप्त)

- जब-जब देश में आंधी-तूफान जोरों से उठा मानवता निर्ममता पूर्वक कुचली गई। इस बात का इतिहास साक्षी है कि तभी गाँधी-नेहरू ने जन्म लिया। करोड़ों हाथ उनके साथ हो गए। तूफान छँट गया।

जब-जब हम लोगों के भीतर ईर्ष्या की अग्नि प्रज्वलित हुई, तब-तब स्वराज्य दूर होता गया। गाँधी की वाणी ने तब शीतल जल छिड़का।

आपसी विरोध ने देश को खोखला कर दिया। उसको शांत करने के लिए देश की धरती ने खून माँगा। उस समय कुछ गर्म दल के क्रांतिकारियों ने भी बारूद फूंकी और भारत माता के सपूत कहलाए।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जब-जब विपत्ति के सर्प ने देश को डसने के लिए मुँह फाड़ा, तब-तब महात्पा गाँधी ने विषपान किया। विपत्ति दूर की।

जब-जब देश में आंधी तूफान उठा, मानवता निर्ममता से कुचली गई। इतिहास साक्षी है कि महात्मा गांधी नेहरू ने जन-जन के करोड़ों हाथों का समर्थन लिया। तूफान छंट गया।

(५) बघेली करमा

चार सौ बरिस मां, सुराज मिला हो, सुराज मिला
आगे-आगे गांधी लड़ै, पाछे लड़ा थे सुभाष
चार सौ बरिस मां सुराज मिला हो, सुराज मिला।
ना तो लिहेन भाला-बरछी, ना लिहेन तरवार
उंय तो अहिंसा मां कइ दिहेन बेड़ा पार,
सुराज मिला हो— चार सौ बरिस मां सुराज मिला
हांथी चढ़ि के आमइ जवाहर
घोड़वा चढ़ि के आमइ सरदार
द्नउ उदकत जाइ
पइदल पइदल आंमइ महात्मा गांधी, दिहिन बोझा उतार
चार सौ बरिस मां सुराज मिला हो, सुराज मिला।

- (ग्राम कपुरी, जिला सीधी से राम बहोर, रामावता ४५ वर्ष, रामसुमिरन ३२ वर्ष, छोटकामन ३० वर्ष, बड़की २५ वर्ष, ललिता २० वर्ष आदि से संकलित समूह गीत.)

- चार सौ वर्ष की लड़ाई के बाद स्वराज्य प्राप्त हुआ। स्वराज्य की लड़ाई के अगुवा महात्मा गांधी थे, पीछे-पीछे सुभाषचन्द्र बोस थे। चार सौ वर्ष की लड़ाई में स्वराज्य मिला।

लड़ाई तो महात्मा गांधी ने लड़ी किंतु आजादी की इस लड़ाई में न तो भाला-बरछी का प्रयोग हुआ, न तरवार का— महात्माजी ने तो अहिंसा के बल पर स्वराज्य का बेड़ा पार लगा दिया।

जवाहर लाल हाथी (सत्ता) पर चढ़ कर आ रहे हैं, घोड़े पर चढ़कर सरदार पटेल आ रहे हैं, दोनों उछल रहे हैं किंतु महात्मा गांधी पैदल-पैदल (सत्ता विहीन) आ रहे हैं। सत्ता के बोझ को उन्होंने सिर से उतार कर फैंक दिया है। चार सौ बरस में स्वराज्य मिला। स्वराज्य मिल गया।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

(६) बघेली लोकगीत

हमका निकही लागइ गांधी केरि चलनिया,
ओढ़निया उनकरि खादी कइ रही।
साबरमती नदी के तीरे आसरम सुघर बनाइनि
भजन कीर्तन सांझ सकारे, चरखा खूब चलाइनि, .
भिनसारे कइ पहरा ताजी बहइ बयरिया
आदतिया उनखर जांगई कइ रही।
लाल चुंदेया बाला मुरगा, भोर भए जब बोलइ
बरहम महूरत आबा ओही बीचन मां डोलइ,
राम राम जपि जग्गि करा अंहि बीचन,
एगल उमिरिया खोट बचाइन उनके एकउ नहीं।
निकहीं देह उहइ जउन मां, निकहे मन केर बास,
मीलन घूमि टहलि कइ निशि दिन करत रहे अभ्यास

कउनउ अरझरान मसलन का लखड़ नजरिया
.दया त रोम-रोम उनखे मां रही।

चाकल रहा लिलार, लगाए तन पर सदा लंगोटी,
उनखर कद देखि बैरी कांपई, झुंकइ हिमालय केर चोटी।
माटी खाति र छोड़िन मखमल केर सेजरिया,
गोरन केर उंइ कइ दिहिन तेरही
गीता जइसन पोथी पढ़ि पढ़ि, अमल फुरिन फुरि कीन्हिन
करम जोग कर हिनसाधना, फल कइ आसन कीन्हिनि
आई शांति देश मां भागी सकल विपतिया
ऐहिन से सब खुसहाली होइ रही।
हर धरमन के आदर्शन केर सार सार गहिलीन्हिन
परहित सबसे बड़ा समझि कइ, सेवा व्रत लइ लीन्हिनि

गांधी कै जन सेवा केरि कहनिया
गांमइ कइ होड़ गइ देस मां सही।

केतनी केतनी जेल यातना भोगिनि हार न मानिनि
इया मेरि संकलप शक्ति प्रभु के मनशा से पाइनि,

रस्ता रोकि ने पाइसि ऊंची बड़ी पहरिया,
सरल होय कठिन हई सही
बारिनि खेत खाइ जब कउनउ जुगुति न सूझय भाई
आंखी सगली दुनिया देखई, खुद काना लखि पाई,
एक ठे पापी गोडसे मारिस चलत डगरिया
राम उंइ जिमिया से कह ।
हमका निकही लागइ गांधी केरि चलनिया
ओढ़निया उनखर खादी कै रही।

- हमें गांधी जी का रास्ता अच्छा लगता है। उनकी वेशभूषा खादी की है, वह भी अच्छी लगती है। उन्होंने साबरमती नदी के तट पर सुन्दर आश्रम बनाया है जिसमें सुबह-शाम भजन-कीर्तन होते हैं। चरखा चलता है। सुबह ताजी हवा बहती है। सुबह उठने का उनका अभ्यास अच्छा रहा है। भोर होते ही जब मुर्गा ब्रह्म मुहूर्त में बोलता है, तब गांधीजी राम-राम जपते हैं। सारी उम्र वे बुराईयों से बचे रहे।

अच्छा मन, अच्छे शरीर में निवास करता है। गांधीजी इसके लिए सुबह मीलों टहलने जाते। उलझे मसलों को सुलझाते दया पूर्ण व्यवहार करते। गांधीजी का मस्तक चौड़ा था, शरीर में वे लंगोटी लगाए रहते। उनका ''कद'' देखकर दुश्मन डरते, हिमालय की चोटी झुक जाती। गांधी ने देश की मिट्टी के लिए मखमली शय्या छोड़ दी। गोरों का कर्मकांड कर दिया।

गीता जैसी पवित्र पुस्तक को रोज पढ़ते। उस पर आचरण करते। सदैव कर्म योग की साधना की पर कभी फल की आशा नहीं की। इसलिए देश में शांति आ गई, विपत्ति भागी। प्रसन्नता छा गई। प्रत्येक धर्म के आदर्श और उसके तत्व गांधी ने ग्रहण कर लिये। ''परहित'' को सबसे बड़ा धर्म माना। सेवा का व्रत लिया। गांधीजी की सेवा भाव की कहानियाँ देश में कहने सुनने पढ़ने के लिए हो गई।

जेल में कितनी यातनाएँ सहीं पर पस्त नहीं हुए। प्रभु कृपा से अपार संकल्प शक्ति उनमें थी। ऊँचे-ऊँचे पहाड़ भी उनका रास्ता नहीं रोक सके। सहजता जीवन में आना कठिन है, पर उनमें सब कुछ था।

बारी खेत खा जाय तो क्या उपाय करें? अपने देश के नाथूराम गोडसे ने ही उनकी हत्या कर दी। राम राम कहकर वे स्वर्ग धाम चले गए। उनकी दिखाई राह हमें अच्छी लगती है।

(७) बघेली ''कजरी'' गीत

हरे रामा, गांधी केरि सुकृति, जन जन मां छाई रेहारी,
ग्राम सुराज केर सपना, बापू के मन का घेरे रामा,

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हरे रामा, पढ़ंई, लिखंइ सब होंय, सुमति छाई रे हारी।
शिक्षा सगले देश मां जब तक एक ना होई रामा
हरे रामा, तब तक करम पवित्र न आपन होई रे हारी।
आज देस आजाद त हंई पइ मन नहिं मानई रामा
हरे रामा, अपने देस कइ चीज जो सब अपनाई रे हारी।

- (सरोज कुमार मिश्र, सुदामा मिश्रा श्रीमती कलावती मिश्र,
शकुंतला मिश्र, नीरजा शुक्ल से प्राप्त)

टीप - (कजरी के प्रारंभ में ''हरे रामा'' तथा पंक्ति के अंत में ''रे हारी'' लगाते हैं। दूसरी पंक्ति में ''रामा'' का प्रयोग होता है। यह गीत पावस ऋतु में प्रायः गाया जाता है।)

- गांधी के कार्यों की कीर्ति जन-जन में व्याप्त है। ग्राम स्वराज्य का स्वप्न उनके मन में व्याप्त था, वह देश में फैल गया है। ''पढ़ लिख कर लोगों में सुमति व्याप्त हो गई है। शिक्षा जब तक पूरे देश में नहीं होगी, तब तक लोगों के कर्म पवित्र नहीं होंगे। समझ न बदलेगी। देश स्वतंत्र हो गया है पर अभी मन नहीं मानता। जब तक गांधीजी का स्वप्न ''स्वदेशी'' का उपयोग पूरे देश में पूरे मन से नहीं हो जाता।

(८) बघेली कोलदहका गीत

जहँ जहँ गांधी सम्भारि पग ढारिन हो-
उंह उंह धूधुरि बनति गइ रे सोनमा हो
जहँ जहँ गांधी सम्भारि पग ढ़ारिन हो-
कहिन गुलामी केर घिउ मा रहइ हलाहल
आजादी के चारा निकहा, इहेन मां देय धत्ल हो
जहँ जहँ गांधी सम्भारि पग ढारिन हो-
धार क बदलि बदलि के गांधी चेतना जगाइनि
जुगनबा लइ आंइन, सुदेश. ता बचाइन हो।
जहँ जहँ गांधी सम्भारि पग ढारिन हो-
देश प्रेम इनके सुभाउ मां बसा रहा,
सत्य अउ अहिंसा के रूप मां धंसा रहा हो,
जहँ जहँ गांधी सम्भारि पग ढारिन हो-

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अंगरेजी दांव पेंच, बार न किहिस बांक़ा
सत्याग्रह गोरन के दान नीति केर मा हांका, हो
जहँ जहँ गांधी सम्भारि पग ढारिन हो-
तहँ तहँ धूधुरि बनति गइ रे सोनमा हो
आगी मां घिउपरा त क्रांति केरि होली,
धधकि धधकि जरि उठी, उठाइ दिहिस डोली हो
जहाँ जहाँ बापू सम्भारि पग ढारिनि हो-

-(द्दी कोल, समना कोल, बुद्धि, चम्पी से संकलित)

- जहाँ जहाँ गांधीजी के चरण पड़े, धूल भी सोना बन गई। जहाँ गुलामी के घी को देखा, हलाहल हो गया। आजादी की घास भी चमकदार बन गई। आन्दोलन की धार को गांधीजी ने बदल-बदल कर प्रयोग किया और स्वदेश की परिकल्पना को साकार किया।

गांधीजी के कारण देश प्रेम जन-जन का स्वभाव बन गया। सत्य-अहिंसा के भीतर धँस गया। अंग्रेजों के दाँवपेंज नहीं चल सके। सत्याग्रह सफल हुआ। दमन नीति विफल हो गई। आग में घी की भाँति क्रान्ति की होली धू-धू करके जल उठी।

(९) बघेली दादरा

जब से आई अनीति केर आंधी
जनम लिहिन तब नेहरू गांधी
गांधी केर आई बहार
जूझि गे हंइ सैनिक हजार
भारत मइया दह दे दया केर दान
मनवा झूमि झूमि जाय, देसवा झूमि झूमि जाय।
हिमगिरि शीश मकुट भल सोहइ
संत मुनिन आसमन मन मोहइ
रूप केर छवि हइ अइसन अपार
मनवा झूमि झूमि जाइ,
भारत मइया दल दे दया केर वरदान
गांधी केर आई बहार

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जूझि गे हंइ सैनिक हजार।

पतित पामनी गंगा तोहसे,

निकरी सींचि सींचि जल बरसें,

पग पछारिन हइ सागर तोंहार,

भारत माता ददे दया केर दाव

जब से आई अनीति केर आंधी

जन्म लिहिन तब नेहरू गांधी।

गांधी केर आई बहार

जूझि गे हंइ सैनिक हजार।

- (श्रीमती कलावती मिश्रा, श्रीमती मंजूला मिश्रा तथा साथी)

टीप - दादरा स्त्रियों का समूह गीत है। घर में विभिन्न उत्सवों के अवसर पर तथा बाहर गैलहाई दादर के रूप में देवी पूजा के समय गाया जाता है। भोजन बनाते या पूड़ी बेलते समय बेलनहाई दादर गाया जाता है। यह गैलहाई दादर (देवीपूजा के ढंग का गीत है-जो आजादी के आंदोलन के समय स्त्रियों द्वारा गया जाता रहा है।

- जब से अन्याय का बवंडर उठा, इस देश में तभी नेहरू गांधी ने जन्म लिया गांधीजी ने रास्ता दिखलाया, उनके रास्ते में भीड़ चर पड़ी हजारों सैनिक (स्वतंत्रता संग्राम सेनानी) जूझ गए।

''हे भारत माता'', हमें दया, का ऐसा दान दो जिससे हमारा मन देश के लिए झूम उठे। पूरा देश ही (गाँधी की राह पर) झूम उठे।

भारत माता के उत्तर में हिमालय मुकुट की तरह शोभा देता है। संत मुनियों के आश्रम है, जो मन को मोह लेते हैं। सौंदर्य की छटा ऐसी छाई है कि मन झूम-झूम उठता है। भारत मां दया का दान दो। गांधी के अपने रास्ते पर चल सके। हजारों सैनिकों की भाँति जूझ सके।

भारत माता, पापियों को पवित्र करने वाली गंगा तुम्हीं से निकली है, वह अपना पावन जल सींच-सींच कर सभी को पवित्र करती है। समुद्र तुम्हारे चरण प्रक्षालित करता है। भारत माता दया का दान दो, जिससे मन झूम उठे। गांधी के मार्ग पर हम चल सकें। सैनिकों की तरह जूझ सकें।

(१०) बघेली भगत

(लोक वाचिक परंपरा का गीत)

जौने दिन गांधी जनम लिहिनि तइ, कुहरी छिटिकी संसार-होमा।

मातउ खुसी मनाइनि तवहिन, गाइनि मंगलचार-होमा।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आमा, महुआ गाइनि फुगुआ, भले लागि बाड़ेदार-होमा।
क्रांति केरि जब दमरी नधि गइ, रफ से रंगा लिलार-होमा।
कांकर पाथर, सब एक जुट होइ, मंगगिनि तइ अधिकार-होमा।
गांधी दिहिन मंहग आजादी, मन्नुख कर अउतार-होमा।
कुइनी, कमल, मोगरा, दुपहरिया, महकइ लागि बयार-होमा।
अमराई फूलन से लदि गइ, बहुरी बसंत बहार-होमा।
अस कइ महकी देश कइमाटी, जल्दिन भा उद्धार-होमा।
गांधी रहे फुरिनि जादूगर, किहे सपन साकार-होमा।
जेका कोउन छुअत रहा तेखर, पामन किहे विचार-होमा।
प्रीति-मंत्र कानेन मा फूंके, साधन किहे अपार-होमा।
मन से वचन करम से पामन, बने से होइ सुधार-होमा।
साक्षरता कर बढ़ई अक्षयवट, छपइ शान्ति अखबार-होमा।
फूलां फरां गांउ घर सगले, होइ नवा भिनसार-होमा।
जो एकौटि कइसव जन चलते, लफि-लफि जाइ पहार-हो।

- (सरोज कुमार मिश्र, लीलावती मिश्र, मंजुला मिश्र, गिरीश झा के गायन से संकलित)

- जिस दिन गांधीजी ने जन्म लिया, संसार में कुमुदिनी का उजास छिटक गया। माता प्रसन्न हो गई, मंगल गान होने लगे।

आम, महुआ ने फाग गाया, चाहे देर लगी हो पर गांधी का जन्म मंगलमय हुआ। क्रांति की जोड़ी जब कस गई तो रक्त से माथे पर टीका लगाया गया। मनुष्य की तो बात ही क्या कंकड़-पत्थर भी गांधी के नेतृत्व में एक जुट हो गए। गांधी ने आजादी दी, मनुष्य के रूप में वे अवतारी पुरुष थे।

कुमुदिनी, कमल, चमेली, दुपहरिया के फूलों की सुगंध हवा में मिलकर महकने लगी। अमराई फूलों से लद गई। बंसत की बहार देश में फिर लौट आई। देश की मिट्टी महक उठी। देश का शीघ्र उद्धार हो गया। गांधी सचमुच जादूगर थे, उन्होंने देश के स्वप्न को साकार कर दिया। जिसे अस्पृश्य मानते रहे लोग, उनके लिए प्रेम का मंत्र फूँक दिया। सभी एक दूसरे से मिल गए। सुधार हो गया। साधन एकत्र हो गया। साक्षरता का अक्षयवट बड़ा हुआ, शांति के समाचार पत्र छपे। गाँव फूल फल से लद गए। सब जन एक होकर चलें, तो पहाड़ भी झुक जाते हैं।

(११) बघेली भगत

सोवति जन चेतना जे कोउ जगावइ हो—
गांधी के रस्ता पर चलि जे आवइ हो-

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ओही केर इं देश ओही कइ धरती हो–
ओही केर ई नदी, पहार अउ परती हो–
गनी-बरीबन से जे हांथ मिलावइ हो–
भ्रष्टाचार अनिति कइ जरि कटवावइ हो–
आजु समय कुछु टेढ़ मेढ़ अस आवा हो–
मंहगाई, भुखमरी क कोउ बुझावा हो–
खेत अउर खरिहान वंटे अब भाई हो–
गांधी लागइ ऊबि खूब सुधि आई हो–
सांप छूंछूदर कस गेति अइसन आई हो–
आजादी कइ घेंमनि मची लुटाई हो–
हम सब लागेन देह तोंहार दोहाई हो–
खद्दर के भितरे अन्तस लुकवाई हो–
धूप दीप कइ मची हइ सांसति भारी हो–
धरम-करम सब चढ़े आकाश-अंटारी हो–
गांउ शहर जे आएं. गली न पाइनि हो–
''नइ चमक मां लोक रीति बिसराइनि हो''
ग्राम सुराज सुधि तवहिन आई
गांधी होते आजु त होति निकाई हो–
गांधी होते आजु त होति निकाई हो–
गांउ समस्या गामइ जब सुलझाई हो–
पंचाइती राजि पाई अगुआई हो–
सरकारउ सुविधा सकेलि पहुँचावइ हो।
सब जन जो एकौटि कइ हाथ बढ़ामा हो।
भेद-भाउ मिटि जाइ न दुश्मन आमा हो।
लड़ी पहारन से हम सीना ताने हो-
कुलुकि उठी धरती सब फर सिरहाने हो–
नन्दवन महकी तव गामन-गामन हो।
बहुरी तवइ बसंत हंसी तव सामन हो।।

- (श्री सरोज कुमार मिश्रा, श्रीमति करुणा शुक्ला, नीरजा शुक्ला से संकलित)

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

- गांधी के रास्ते पर जो चलेगा, वही सुसुप्त जन-चेतना को जागृत करेगा। उसी का यह देश होगा, उसी की यह धरती होगी। उसी की ये नदियाँ होगी, पहाड़ और धरती होगी। जो गरीबों से मिलकर चलेंगे, उनसे हाथ मिलायेंगे, वही भ्रष्टाचार तथा अन्याय की जड़ें काट सकेंगे।

आज का समय जटिल है। टेढ़ा-मेढ़ा है। मंहगाई, भुखमरी, बढ़ी है। खेत-खलिहान बंटे हैं। ऐसे अवसर पर गांधीजी की याद बहुत आई है। सांप-छछूंदर की गति के समान हम सब जनता की स्थिति हो गई। आजादी में भी कष्ट है। इसलिए हम सब गांधी की दुहाई देने लगे। खादी के भीतर मन का संकट छिपाए हुए हैं। धूपदीप (सुगंधि) का संकट है, धर्म-कर्म आकाश में टंगे हैं। गाँव (लोग) उठ कर शहर आ गए पर उन्हें वहाँ रास्ता नहीं मिल रहा। नई चमक में खो गए, सब-लोक रीतियाँ विस्मृत हो गईं। तभी गांधी तुम्हारे ग्राम स्वराज्य की याद आई। गाँव की जनसमस्या गाँव में सुलझाने की याद आई, पंचायती राज्य की याद आई। सरकार गाँवों में शहर की सुविधा टुकड़े-टुकड़े में पहुँचा रही है। पर जब यह सुविधा आती है तब सभी हाथ उठ पड़ते हैं। भेदभाव मिट जाता है। धरती कुलक उठती है। ''फल'' की आशा जग जाती है। गाँवों में नंदन वन महक उठता है। बंसत आ जाता है। सावन हँस उठता है।

(१२) बघेली भगत

हिरदय केरि बनी हइ मेढुली, मन है खुला केमार—
परछांही फफकति हइ घर मा, कउन सजावइ थार—
कउन कउन अब काम होई रहें, देखतिउ नैन उधार—
गांधी कस बेटवा पुनि जनमइ, देश कइ करइ सुधार—
मन्नुख मन्नुख पर सवार हइ, मची भितरही रार—
मन-मन फूटि रहें कंकरी कस, जुरते जो एकदार—
कहाँ गए बापू अउते, दिया तरे अंधियार—
बारिन खेत जाति हइ खाए, करतिउ कुछु उपचार—
दुखः दरिद्र हरा तू गांधी, घटाटोप अंधियार—
इया शहीदन कइ हइ धरती, मारे हउइ गोहार—
सब कुछु भरा हिंयन मांगत मां लागति लाजि हजार—
आमा महुआ जमती कहुआ, तुलसी अउ कचनार—
गोंहू, धान, तिली, कोदौ, काकुन सामा कइ बहार—
जोन्हरी, बजरी, सरसो, राई केरी हवइ भरमार—
ओड्डा, टमस मजीरा लिन्हे, करति हमा झंकार—
है कैमोर कहेंजुआ, केकल विंझ क अगम पहार—

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कजरी, हेंदुली, फगुआ, बिरहा गामन कर गलहार–
कालदहका अउ भगत बघेली गीत है भरे हजार
लोह, ताम् कोइला हीरा कस दउलत कर भण्डार–
सीत सकारोपातन पर गति जाइ नौलखा हार–
कढ़ी, रसाजि, इन्दरहरि, सेंमई वगजा अउर अचार–
बरी, फलौरी, बरा, मगौरा, हिंयन केर जेउनार–
बरी कोंसि जहां जब वनि मां फूलइ, धरती कर सिंगार
कोइली जब बंसत मा कुहकइ बहति हबइ रसधार–
उज्जर शेर केरिई धरती सबका दिहिस उधार–
समय आजु लंगड़ात हवइ कोहिरा घेरे भिनसार–
पुखइया रहि रहि कइ खांसई फिरइ दुआर-दुआर–
जब से गए गांधी तूं नींद क टुटिगें तार–
दुसरेन कइ जरि खोदवा एतनइ बना हबइ व्यउपार–
चारिउ कैत गड़ी हइ आंखी, मिलति रहति फटकार–

-सरोज कुमार मिश्र,
(प्रमोदवत्स लीलावती मिश्र से संकलित)

- हृदय की मेढुली, मन का किंवाड़ बन गए पर शरीर की परछाई सिसक रही है, कौन थाल सजाकर स्वागत करे। कैसे कैसे काम हो रहे हैं। क्या क्या हो रहा है– देश में? अब फिर से गांधी जैसा बेटा पैदा हो, तब कहीं देश का सुधार हो-उद्धार हो।

आज मनुष्य मनुष्य पर ही सवारी गांठ रहा है। भीतर ही भीतर संघर्ष है। प्रत्येक मन में कंकड़ फूट रहे हैं। एका नहीं है। बापू, तुम कहाँ हो, आओ, देखो, यहाँ दिया तले अंधेरा है।

यहाँ तो बाड़ी ही खेत खाये जा रही है। कुछ उपाय करो। दुख-दरिद्रय मिटाओ, गांधी जी आइए। यहाँ घना अंधकार है। शहीदों की यह धरती चीत्कार कर रही है। अब तुमसे कुछ मांगते हुए लज्जा लगती है। आम, महुआ, कहुआ (अर्जुन वृक्ष) तुलसी, कचनार, गेहूँ, धान, तिली, कोदौ, काकुन, सामा (छोटा चावल) की बहार है। मकाई, बाजरा, सरसों, राई प्रचुर मात्रा में है। नदियों में टमस, ओड्डा, झरनों के मजीरा लिए झंकार करती है। कैमोर, केहुंजुआ, मेकल के विन्ध्यांचल अगम है।

यहाँ कजली, हिंदुली, फगुआ, बिरहा, गाँवों में गलबाही डाले घूम रहे हैं। कोलदहका (गीत) भगत लोकगीत हजारों,

हवा में तैरते हैं। लोहा, ताम्र, कोयला, हीरा के भंडार बघेलखंड में हैं, सबेरे पत्तों पर ओस के नौलखा हार बन जाते हैं। कढ़ी, रसाज, इन्दरहर, सैमई, बगजा, अचार, बरी, फलौरी, बरा, मुगौरा, के ज्योनार हैं।

कांस बन में फूलती है, धरती का शृंगार कर देती है। बसंत में कोयल बन में कुहुकती है तो रसधारा बहने लगती है सफेद शेर की यह धरती सब को कुछ न कुछ लुटाती है। आज यहाँ भिनसार को कोहरे ने घेर लिया है, समय लंगड़ा रहा है, पुरवइया (हवा) घर-घर खांसती है– रोगिणी की तरह।

गांधीजी जब से आप गए, नींद के तार ही टूट गए हैं, दूसरों की जड़ खोदने में लगे हैं सब। दूसरों की दृष्टि हमारे, देश पर लगी है चारों ओर से फटकार मिल रही है। उस आए।

(१३) बघेली सोहर

गांधी भे अइसन लाल, अहिंसा केर लइ के ढाल,
अहिंसा केर ढाइ हो।
(आबा)नींदि से सबका जगाइन, गोरा भगाइन,
गोरा भगाइन हो।
जब भइ भारत भुंइया बेहाल, हिमालय छाल,
हिमालय घालइ हो।
(आबा) उपजी हइ गुलामी केर पीरा, धरइ न मन धीरा,
धरइ न मन धीरा हो।
हइ कोउ बंधन काटइ, जे दुख में बांटइ,
जे दुक्ख कें बांटइ हो।
(आबा) छावा हइ घन अंधियार, देखाइ न अंजियार,
देखाइ न उजियार हो।
गांधी में अइसन लाल, अहिंसा केर लड़ के ढाल,
अहिंसा के लईके ढालइ हो।
कीन्हिन देस के आजाद, बहुत धन्निवाद, बहुत धन्निवादउ हो।
(आबा) गांधी के कइल परनाम, गये सुरधाम,
गए सुरधामहि हो।
फुदकइ सोन चिरइया, हंसइ गंगा मइया,
हंसइ गंगा मइया हो।
(आबा) ताने हैइ छाती हिमाला, पहिरि गिरिमाला
पहिरि गिरिमाला हो।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लहरइ लहर तिरंगा, रहइ मन चंगा,
रहइ मन चंगा हो।
(आबा) बोला भारत माता केर जय हो,
सादा विजय हो।
गांधी भे अइसन लाल, लइ के अहिंसा केर ढाल,
अहिंसा केर ढालइ हो।
(आबा) नींदि से सबका जगाइन, गोरा भगाइन,
गोरा भगाइन हो।

- (श्री रामनरेश तिवारी ग्राम तिवनी जिला रीवा से प्राप्त)

- गांधी ऐसे सपूत पैदा हुए कि अहिंसा का अस्त्र लेकर, भारत माता के सभी पुत्रों को जगाया, अंग्रेजों को देश से भगाया। जब भारत माता व्याकुल हुई, हिमालय घायल हुआ, देश में परतंत्रता की पीड़ा व्याप्त हुआ, तब उनका मन अधीर हो गया। बंधन काटने के लिए दुख बांटने के लिए वे प्रस्तुत हो गए। घन घोर अंधकार के बीच गांधी जी ऐसे पुत्र हुए जिन्होंने चेतना का प्रकाश फैलाया।

- गांधी ने देश को आजादी दिलाई, उन्हें अत्यधिक धन्यवाद है। उन्हें प्रणाम करें। अब तो देश की ''सोनचिरई'' फुदकती है, गंगा है सती है, हिमालय छाती ऊपर कर प्रसन्न है। तिरंगा लहरा रहा है। सभी का मन प्रसन्न है।

- अब, भारत मां की जय बोलें। वह सदा विजयी रहे। गांधी ऐसे लाल सदा उसकी कोख में जन्में। अहिंसा को हथियार बनाएं। देश को समृद्ध बनाएं।

(१४) बघेली भगत

भारत माता के पूत भे गांधी, काटिनि कठिन कलेश, होमा
गोरा हटाबा लाजि बचाबा, देश क दिहिन संदेश होमा
सत्य से हारे, अहिंसा से मारे, भागे हैंइ छोड़ि के देश होमा
लाठी मोटी, कमर लंगोटी, चप्पल चसमा भेख होमा
ई चरखा, गूंजइ देसबा उन्हीं पूजइ, लाखन नमन देय होमा।
भारत माता के पूत भे गांधी, काटिनि कठिन कलेश, होमा

- (श्री राम नेरश तिवारी तिवनी ग्रा. जि. रीवा म.प्र.)

- भारत मां के सुपुत्र गांधी हुए जिन्होंने मां के कठिन कष्टों को काट डाला। परतंत्रता की बेड़ियों को काटा, गोरों को भगाया, देश का सम्मान बचाया, देश को सत्य अहिंसा का संदेश दिया। इन हथियारों से अंग्रेज हारे और भागे।

मोटी लाठी, कमर में लंगोटी, चप्पल पांव में आंखों में चश्मा यही उनका भेष था, चरखा की धुन देश भर में गूँजी, पूजा गया। वह देश ने गांधी को प्रणाम किया। नमन् किया। ऐसे भारतमाता के एक पुत्र महात्मा गांधी हुए जिन्होंने, कष्ट हरण किया।

(१५) बघेली गीत

धरती क सरग बनाइगें बापू,
नेह के नगरी बसाइगे बापू।
घटाटोप घेरिस गुलामी केर बादर,
आंसू से भींजइ भुंइया के चादर।
आजादी के सुरुज उगाइगें बापू,
धरती कर सरग बनाइगें बापू,।
बिना तोप तरवार थान मनंगा,
लाल किला लहराइन तिरंगा।
माता केर मुक्ति देबाइगे बापू,
धरती के सरग बनाइगें बापू,।
सीना मं गोली खाइगें बापू,
जिनगी केर अरथ बताइगें बापू।
पीर पराइ गाइगें बापू,
जीवन अमर बनाइगें बापू
धरती केर सरग बनाइगें बापू,।

- (श्री रामनरेश तिवारी से संकलित)

- गांधी ने भारत की धरती को स्वर्ग बना दिया। प्रेम का संसार बसा दिया। जब गुलामी के बादलों के घटाटोप घिरे आंसू की बूंदों से धरती की चादर भींग गई तभी आजादी का सूर्य बापू ने उदित किया। धरती स्वर्ग बन गई।

तोप तलवार के बिना लाल किले में तिरंगा फहरा दिया। भारत माता को मुक्ति दिलाकर. धरती को स्वर्ग बनाकर बापू चले गए।

बापू ने अपनी छाती में गोली खाई और जिंदगी को अर्थ दे गए। जीवन का मर्म समझा गए। पर दुख को निज दुख समझने का मंत्र दे गए।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जीवन को अमर बना गए गांधी। धरती को स्वर्ग बना गए थे।

- (श्री रामनरेश तिवारी द्वारा प्राप्त)

(१६) बघेली गीत

कइले परनाम जोरि दूनउ बाहीं।
मोहन दास करम चंद्र गांधी कांहीं।
पिता तो तन मां शक्ति भरिन
माता तो मन मां मस्ती भरिन।

कीरतन भजन धरम के गाहीं।
कइले परनाम जोर दूनउ बांहीं।
मोहन दास करम चंद गांधी कांहीं।

देउतउं से बढ़ि के मन्नुख रहा,
दूसरे के खातिर उन्मुख रहा।

निन्च बादे बिरबा मां अउचट छांही,
कइले परनाम जोर दूनउ बांहीं।
मोहन दास करम चंद गांधी कांहीं।

बागत रहा बस लगाए लंगोटी
बोलइ तौ हांइ पहाड़न कै चोटी।

गोड़े मां परवत ढकिलत जांही,
कइले परनाम जोर दूनउ बांहीं।
मोहन दास करम चंद गांधी कांही।

गुलामी से मन शरमिंदा रहा,
देश के खातिर जिन्दा रहा।

कूदा आजादी के आगी मांही,
कइले परनाम जोर दूनउ बांहीं।
मोहन दास करम चंद गांधी काहीं।

- (ग्राम खटखरी, जिला सीधी से प्राप्त मोती लाल और उनके साथियों से)

- दोनों हाथ जोड़ मोहनदास करमचंद गांधी को प्रणाम करो उनके पिता ने तन में शक्ति और माता ने मन में भक्ति भरी। वे कीर्तन भजन में रमते रहे। उन्हें प्रणाम करो।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

देवताओं से बड़े वे रहे हैं। दूसरों के लिए सदा उन्मुख रहे। छोटे से कद के वृक्ष में विपुल छाया थी। दोनों भुजाओं को जोड़कर प्रणाम करो उन्हें।

लंगोटी लगाकर घूमते रहे, पर बोलते तो बड़े-बड़े पहाड़ हिल जाते। बड़े-बड़े पहाड़ चरण में लोटते, ऐसे महात्मा गांधी को प्रणाम करो।

हमेशा देश की परतंत्रता के लिए लज्जित अनुभव करते रहे। इसलिए आजादी की आग में कूद पड़े। उन्हें प्रणाम करो। दोनों हाथ जोड़कर प्रणाम करो।

(१७) बनरा गीत

गांधी कै इतिहास बना सब झुकि झुकि बांचइ हो।
पढ़ि पढ़ि जांचइ हों, जना सब अंगुरी मां नांचई हो।
जना सब अंगुरी मां नांचइ हो, जना सब अंगुरी मां नांचइ हो।
गांधी कै इतिहास बना सब झुकि झुकि बांचइ हो।
''बा'' से बापू केर बिआह बना सब झुमि के नांचई हो।
जना सब अंगुरी मां नांचई, पगड़ी का झांकइ हो।
मोहन मोह न जाई सिखाइन सबका सोंचइ हो,
सिखाइन सब का सोचई हो, सिखाइन सब का सोंचई हो।
बापू कै इतिहास बना सब झुकि झुकि बांचई हो।
करमचंद के घोल मिटाइन मन केर आंचई हो।
मिटाइन मन कै आंचई हो, मिटाइन मन कै आंचई हो।
हइ होरी कजरी तीजि, सदा नगमांचइ हो।
सदा नगमांचइ हो, सदा नगमांचइ हो।
बापू कै इतिहास बना सब झुकि झुकि बांचई हो।

- (राम नरेश तिवारी, रीवा वंशमणि तिवारी रीवा।)

- गांधी के जीवन चरित्र और उसके इतिहास को सभी बार-बार झुक झुक कर बांचते हैं, पढ़कर जांचते हैं। सभी अंगुलियों में नाचते हैं।

- ''बा'' से बापू का विवाह हुआ तो सभी झूम-झूम कर नाचने लगे। सभी जन नाचने लगे। उनकी पगड़ी में अपना भविष्य पढ़ने लगे।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

- मोहनचंद गांधी ने मोह से मुक्ति और चिंतन के नये द्वार खोल दिए। सभी को सोचना सिखलाया।

- गांधी के बोल ने सभी के मन की पीड़ा को हरण कर लिया।

- होली, कजली, तीज, नागपंचमी को पर्व का रूप दिया, हमेशा पर्व होते रहे, यह शक्ति दी। बापू इतिहास को सभी झुक-झुककर बांचने लगे।

(१८) बघेली गीत

ए माटी कै मन-कन माही गांधी केर सुबास हो।
उनके करम केर गीता बांचइ धरती अउ आकास हो।
आंखी केर पुतरी कस पालिस मइया पुतरी बाई
मोह किहिस मोहन केर बहुतउ छाया बनि के धाई।
भारत माता के गोड़े मां सौपि दिहिस कइ दास हो,
ये माटी के कन कन मांही गांधी केर सुबास हो।
नदी तलाए जन बगार मां जहां बइहरा डोलई,
उनके जीवन के किनारि के पन्ना पन्ना खोलई
उनेक बिना बसंत अनमना रोबत हय चउमास
ए माटी कै कन-कन मांही गांधी केर सुबास हो।
गांव गली चउपाल बिचारे, किहनी रोज बुझामइ
रामराज के सपन सोचि के आंखी मांहि सोबामइ।
रटइ पपिहरा कस सब उनका, हमहूँ लगाए आस हो।
ये माटी कै कन-कन माही बापूर केर सुबास हो।
गांधी के करम केर गीता बांचइ धरती अउर आकासही।

- (रामनरेश तिवारी से प्राप्त)

- इस धरती के कण कण में गांधी की सुगंधि रची-बसी है। उनके कार्यों की गीता धरती से आकाश तक पढ़ी जाती है। गांधी की मां ने उन्हें आंख की पुतली की तरह पालन-पोषण किया। वे छाया की तरह रही। फिर उन्होंने भारत मां के चरणों में सौंप दिया। इसलिए मिट्टी के कण कण में गांधी की सुबास व्याप्त है।

नदी, तालाब, जंगल-बंजर सब में बयार डोल रही है, तथा गांधीजी के जीवन की पुस्तक के पन्ने-पन्ने खोलकर उनका यश गाती है किन्तु गांधी के न रहने से मन अनमना हो गया, चौमासा आंसू बहाने लगा। इस मिट्टी के कण-कण में गांधी की सुबास फैली है।

- गाँव, रास्ते चौपाल सभी गांधी की पहेलियां बुझाते हैं। रामराज के स्वप्न आंखों में बसाते हैं। पपीहा उनका नाम लेकर आशा लगाए है।

- इस धरती के कण कण में गांधी की सुबास रची बसी है। गांधी के कार्यों की गीता धरती से आकाश तक पढ़ी जाती है।

(१९) बघेली गीत

दिहिस देह केर कतरा-कतरा गांधी देशभक्त मतवाला
सत्य अहिंसा केर पुजेरी, संत लंगोटी वाला।
मातृभूमि के गोड़े मां ही, तन के फूल चढ़ाइस
सांसि-सांसि सेवा मां दीन्हिस,छाती का छेद बाइस।
चीर दिहिस अंधियार गुलामी, तप के तेज उजाला
दिहिस देंह केर कतरा-कतरा, गांधी देसभक्त मतवाला।
मन्नुख केर वा मान सरोबर, सरग लोक से अलाहइ
आजादी के फूल सुगंधित, खून से सींचि के लावा तइ।
कठिन प्रतिज्ञा किहिस मान गा हार, तोप अउ भाला
दिहिस देह केर कतरा-कतरा, गांधी देशभक्त मतवाला।
देश के खातिर जिया शानि से, देश के खातिर मारिगा
जपत रहा दिन राति देश का भला के भला देश के करिगा।
जनम भूमि का अमिरित दइ खु पिइस मौति कै प्याला
दिहिस देह केर कतरा-कतरा, गांधी देशभक्त मतवाला।

- (रामनरेश तिवारी से प्राप्त)

- देशभक्त मतवाले गांधी ने शरीर के रक्त की एक एक बूंद देश के लिए दे दी। सत्य अहिंसा के वे पुजारी-संत थे। मात्र लंगोटी धारण करते थे। अपने शरीर के पुष्प को मातृभूमि के चरणों में अर्पित कर दिया। हर सांस पर वह देश के लिए जिया और फिर देश के लिए मर मिट गए।

- गांधी मानसरोवर थे। स्वर्ग से उतरे थे। आजादी के सुगंधित फूल को अपने खून से सींच कर ले आए। उनकी अहिंसा की प्रतिज्ञा के सामने भाले और तोप पराजित हो गए। गांधी ने देश के लिए अपने खून की हर बूंद अर्पित कर दी।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

- रात दिन देश के लिए शान से जिए, शान से मर गए। देश की माला जपते-जपते वे चले गए। जन्म भूमि को अमृत दिया। खुद मौत के विष का पान किया। देश भक्त गांधी ने अपने खून का एक एक बूंद मातृभूमि के लिए दे दिया।

(२०) बघेली गीत

जे जेल मां जियादा बस किहिस,
आधे दिन उपास किहिस
आजादी केर तोहफा दइगा
हमरे हाथ तिरंगा धइगा

नच चिन नहीं दुलार किहेन-
हम गांधी का गोली मारि दिहेन।

अप फोटो रोज मढ़ाइथे,
माला फूल चढ़ाइथे
अंगारा बनि दहकत ते
फूल गमागम महंकाते

पकरि के पेड़ उखार दिहेन
हम उनका गोली मार दिहेन

रंगी खून से धोती हइ,
कालिख मुंह मां पोती हइ,
अब कस के मुंह क देखाई रे,
करिया करतूत लुकाई रे।

मरजादा मूंदि उघार दिहेन,
हम उनखा गोली मारि दिहेन।

हम जागि मां पूज महान रहेन,
पढ़ावत् वेद पुरान रहेन
जब से गांधी का मारेन हम,
जंग हजारन हारेन हम।
अब इया पीढ़ी का समझाबा हो,
पुरखाती बाति बताबा हो-
भा जउन कबउ दोहराए ना,
फूंकि के दिया बुताए ना।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

खुद का खूब सम्हार लिहेन
हम उनका गोली मार दिहेन।

- जिन महात्मा गांधी ने अपने जीवन का अधिकांश समय बंदी गृह में व्यतीत किया, जिन्होंने जीवन के आधे दिन व्रत में व्यतीत किए। जिन्होंने आजादी का उपहार दिया हमारे हाथ में तिरंगा रख दिया, उनको हमने थोड़ा भी प्यार नहीं दिया, सत्कार नहीं किया, गोली मार दी।

- अब हम उनकी फोटो मढ़वाकर माला फूल चढ़ाते हैं, अंगारे उनके पास दहकाते हैं, फूल महकाते हैं पर हमने देश का मूल वृक्ष उखाड़ कर फेंक दिया, गांधी को गोली मार दी।

- उनकी धोती खून से लथपथ हो गई। हमारे मुंह में कालिख पुत गई। अब हम विश्व को कैसे मुंह दिखलाएं। कैसे अपनी काली करतूत दिखलाएं। अपनी मर्यादा खो दी, उन्हें गोली मार दी।

- हम संसार में महान और पूज्य कहे जाते रहे। हमी ने विश्व को वेद-पुरान पढ़ाया। पर जब से महात्मा गांधी को हमने मारा जैसे हम हजारों युद्ध हार गए। अपने हाथों अपना घर उजाड़ दिया। हमने गांधी को गोली मार दी।

- अब आने वाली पीढ़ी को समझाओ पुरानी बातें बतलाओ समझाओ कि यह घटना न दुहराएं। फूंक कर अपने दिए को न बुझाएं, स्वयं को संभालें। हमने तो उन्हें गोली मार कर अपना ही अहित कर लिया।

(२१) बघेली गारी

पहिलै तो फिरंगी आंए, बनिकै रहै व्यवपारी,
सुना मोरे भाई
हीरा लूटिन, मोती लूटिन, सोना, चांदी सब कुछ लूटिन
गांधी केर होइगै लुटाई, सुना मोरे भाई।
नील केर खेती करवाइन
पका पकाबा बल भर खाइन
जनता कै मति छितराईन
सुना मोरे भाई–
गांधी केर होइगै लुटाई, सुना मोरे भाई–
फूट डारि के राजचलाइन
पाक साफ बनि नाउ कमाइन

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कीन्हिन बड़ी चतुराई
सुना मोरे भाई–
गांधी केर होइगै लुटाई, सुना मोरे भाई।

- (श्रीमती करुणा शुक्ला, नीरजा शुक्ला, रश्मि शुक्ला से प्राप्त)

- अंग्रेज पहले तो व्यापारी होकर आए। भाई मेरे सुनो। फिर हीरा, मोती, सोना, चांदी सब कुछ लूट लिया। इस पर गांधीजी से झगड़ा हो गया। वे अन्याय कैसे सहते?

अंग्रेजों ने नील की खेती करवाया, पका पकाया खाया, जनता को दगा दिया। मेरे भाइयों सुनो, तभी तो गांधी जी से झगड़ा हो गया।

फूट डालो और राज्य करो? का सिद्धांत अपनाया। लेकिन दुनिया को दिखलाने के लिए न्याय प्रिय बने रहे। बड़ी चतुराई से काम लिया, इसीलिये गांधीजी से उनका झगड़ा हो गया।

(२२) बघेली बिआह

सात बरिस केर गांधी सगाई होइ गई हो-
तेरहे बरिस के कसतूरबा से विआह रचाइन हो–
खूब निबाहिन धरम-करम पति सेवा हो
बापू केरे साथ निभाइन पाइन मेवा हो।
जीवन बाग-बंसत विआह केर आबइ हो,
डारि डारि तव फूल समागम लागई हो।
अठरह सउ सत्तासी मां दस भी पास किहिन हो,
बड़ेन केर रही हइ मंसा कि कालेज जाइ पढ़िन।
भाव दबे परिवार के ओनके हितुआ हो
ओइ त दिहिन सलाह बिलाइत जाइ कइ हो
जहां पढ़िन कानून विचार बनाइन हो–
काका केरि सलाह जहां गठियाइन हो
महतारी कइ असा शर्त कराइन हो
कबहू न कीन्हे नारि संग मदिरा न पिए हो
कीन्हे निकहा साथ संग, मछरी न छुए हो।

जीवन धारा बंसत बिआह केर आबइ हो
डारि डारि तव फूल समागम हो।

- गांधी सात वर्ष के थे, तभी उनकी सगाई हो गई। कस्तूरबा उस समय तेरह वर्ष की थी। किंतु कस्तूरबा ने जीवन भर धर्म-कर्म, पति सेवा का निर्वहन किया। वे सेवा का मेवा पाती रहीं। जीवन की बगिया में विवाह का बसंत आ गया। जीवन के अंग प्रत्यंग रूपी डाल-डाल में फूल दिखाई देने लगे। अठारह सौ सत्तासी में कक्षा दस उत्तीर्ण करने के बाद कालेज पढ़ने की योजना बनी। कानून की शिक्षा देने के लिए उनके चाचा ने विलायत भेजने का निर्णय लिया। मां ने शर्त रक्खी परनारी, मदिरा का परित्याग करना। मांस का सेवन न करना। गांधी जी ने वचन दिया और उसका जीवन भर पालन किया।

(२३) बघेली गारी-गीत

गांधीजी आंदोलन् छेड़िन, जन चेतना जगाइन
शंका मां सरकार जो पकरै, भा विरोध तव जाइ।
अमरितसर के गलियन गलियन, धूम मची तकरार
सुलुग उठा पंजाब सगल, आन्दोलन भूत सवार।
जालिया वाले बाग मा एक ठे, सभा किहिन सब जाइ,
बीस हजार लोग तब जुटिगे, भा विरोध बरिआइ,
शांतिपूर्ण ओहि चलत सभा मां, डायर पहुंचा जाय
साथ सिपाही लिहे सड़कड़न, गोली दिहिस दगाइ।
सभा निहत्थे लोगन कइ जब, गोली बरसन लागि।
केतनेन के प्रान केर पंछी उड़िगे, तवउदया नहीं जागि।
केतनेन घायल भुंइ लइलीन्हिन, केतनेन चलें पराइ,
लुका-छिपी जब कइना पाइनि, मउत कुकुर कस पाइ।
फउजी शासन लागू होइगा, नीति दमइ केर आइ।
क्रांति केर जब लपट बढ़ी, कोने कोने गइ छाइ।
गांधी जी आन्दोलन छांडिन, जन चेतना जगाइ।

- (व्योहारी, जिला-शहडोल से रुकमिनी, छोटि आदि से प्राप्त)

- गांधीजी ने देश में जन-चेतना जागृत की और आन्दोलन छेड़ दिया। ब्रिटिश सरकार ने लोगों को शंका में पकड़ना आरंभ किया तो उनका विरोध और बढ़ गया। अमृतसर की गली रास्ते में झगड़े उठ खड़े हो गए। सारा पंजाब जल उठा, आंदोलन का भूत सवार हो उठा।

सभी लोगों ने पंजाब के जलियाँवाला बाग में सभा की। लगभग बीस हजार जनमानस एकत्र हो गया। विरोध का निश्चय हुआ। सभा शांतिपूर्वक चल रही थी, तभी जनरल डायर पहुंच गया। साथ में सैकड़ों फौजी सिपाही थे। गोली दाग दी गयी कितनों के प्राण पखेरू उड़ गए। तभी भी उन्हें दया नहीं आई। कितने घायल हो गए। कितने कुत्ते की मौत मारे गए। फौजी शासन लगा दिया गया। दमन की नीति आ गई।

तब क्रांति की चिंगारी, लपट बन कर। कोने कोने में छा गई। जन चेतना जागृत हो गई। गांधी ने आंदोलन छेड़ दिया।

(२४) भगत

गांधी बने जूड़ आगी, महिमा रही अपार होमा,
जय जय जय हे भारत माता, तोंहका को दिहिस त्रास हो मां।
देश मा हमरे अंगरेजन कइ बनी रही सरकार हो मा,
मानवता सब होम होइ चली, बढ़त रहा तकरार हो मां।
किहिन उधुम, राक्षसी करम, पय पाइन न कउनउ पार हो मां
दुरगति आखिर होइ गइ ओखर, बची न कउनउ आस हो मां।
गांधी बने जूड़ आगी, महिमा रही अपार हो मां।
जय जय जय हे भारत माता, तोंहका को दिहिस त्रास हो मां।
गांधी बने जूड़ आगी, महिमा रही अपार हो मां,

- (कुन्नी, नीतु, बेटू, तिवारी मैहर जि. सतना से प्राप्त)

- गांधी की महिमा अपार है, वे ठंडी आग की तरह धीरे धीरे जल कर शत्रु को नष्ट करते हैं। भारत माता को जिसने भी कष्ट दिया। उसका नाश गांधी जी ने किया।

हमारे देश में अंग्रेजों की सरकार बनी मानवता नष्ट होने लगी। झगड़े बढ़ने लगे। अंग्रेजों ने नाना प्रकार से उपद्रव किए, पर गांधीजी से पार न पा सके। अंततः उन्हीं की दुर्गति हुई। देश छोड़ कर भागना पड़ा।

गांधीजी ठंडी आग की तरह धधके। उनकी महिमा अपार थी। भारतमाता को त्रास देने वाले नष्ट हुए।

(२५) बघेली गीत (गारी)

गांधी कै जब आई आंधी
जन जन केर खली तब आंखी
देस भगति के जागे पांखी

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

खोदी भमरि भिन्नाई,
सुनि रे मोरि भाई।।

जगह जगह झुरसी अमराई
केतनेउ में शहीद तव भाई

आंखिन मारकती भाई
खोदी भमरि भिन्नाई
सुना मोर भाई–
गांधी कै जब आई आंधी

चारिउ कइत लगी जब आगी
गोरेन केरि जुगुत नहीं लागी।

बीचड़ मची धुनाई निकही कचराई
सुना मोर भाई–
गांधी कै जब आई आंधी

माटी आपन बदली लीन्हिस
आजादी अपने बस कीन्हिस

पुनि कइ महक देस मा आई
सुना मोर भाई–
गांधी कै जब आई आंधी

जन जन केर खुली तब आंखी
देस भगति के जागे पांखी

- (सरोज कुमार, प्रमोद कुमार, अम्बिकाप्रसाद से संकलित)

- जब गांधी के आंदोलन की आंधी आई जन-जन की आँखें खुल गईं, देश भक्ति के पंछी जागृत हो गई- जैसे भ्रमर के छत्ते को कोई खोदे, वे काटने दौड़े, देश की जनता भी वैसे ही हो गई मेरे भाइयों सुनो।

स्थान स्थान में अमराई झुलस गई कितने ही शहीद हो गए। जनता की आँखों में क्रोध की लालिमा आ गई। जनता क्रुद्ध भ्रमर की तरह भन्ना गई। जब गांधी की आंधी आई।

चारों ओर जब आंदोलन की आग भड़की, गोरों का कोई उपाय नहीं चला। उनकी अच्छी पिटाई हुई— भाइयों सुनो। गांधी की आंधी आंई तब ऐसा ही हुआ।

धरती ने देश ने अपना बदला ले लिया। आजादी ले ली। देश में पुनः आजादी की महक आ गई। भाइयों सुनो, गांधी की जब आंधी आई, लोगों की आँखें खुल गईं, देशभक्ति के पक्षी जग गए।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मालवी लोक जीवन में गांधी जीवन के विविध प्रसंग

संकलन
डॉ. प्रहलादचन्द्र जोशी
दुर्गा निवास, सुसनेर, जिला शाजापुर
म.प्र.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मालवी लोक जीवन में गांधी जीवन के विविध प्रसंग

❑ डॉ. प्रहलाद चन्द्र जोशी

पूज्य मोहन दास करम चन्द गांधी-जिन्हें आम जनता बड़े लाड़ से ''बापू'' के नाम से जानती है का जन्म गुजरात प्रांत के पोरबंदर नगर में २ अक्टोबर १८६९ को हुआ और ३० जनवरी १९४८ को एक हत्यारे की गोली ने गांधी के रूप में देश के उस चिराग को बुझा दिया-जिसकी ''लौ'' से समग्र भारत प्रकाशमान हुआ था।

गांधीजी- एक युग पुरुष के रूप में इस देश की धरती पर अवतरित हुए। उन्होंने अपना समग्र जीवन भारत माँ की परतंत्रता रूपी बेड़ियों को काटने में लगा दिया। ''सादा जीवन और उच्च विचार'' उनके परिवेश का प्रति रूप था। वे एक साथ कर्मठ व्यक्तित्व, कुशल संगठक, राजनीतिज्ञ बहुपाठी, आध्यात्मिक एवं धर्म सहिष्णु वैष्णव जन थे। ''वैष्णव जन तो तेने कहिये जे पीर पराई जाणे रे'' वाली सुक्ति के वे जन्म दाता थे। जनता के हृदय में उनकी छबि ''दीनानाथ'' के रूप में अंकित हो चुकी थी। उनका लिखा आध्यात्मिक साहित्य इस बात का सबूत है। लोक मानव के उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व को अपने गीतों में अभिव्यक्ति दी है। भारत की अनेक लोक भाषाओं एवं बोलियों में उन पर गीतों की संरचनायें की गई। यद्यपि जितना लिखा जाना चाहिये था उतना सुशृंखलाबद्ध कार्य तो नहीं मिलता। तथापि समग्र रूप में प्राप्त साहित्य का आकलन किया जाय तो एक महत्वपूर्ण संदर्भ ग्रंथ की संरचना हो सकती है। यदि ऐसा हो सका तो उस महामानव, क्रांति के अग्रदूत, सत्य और अहिंसा के अद्‌भुत प्रयोगी राष्ट्र पिता बापू को सच्ची श्रृद्धान्जलि होगी। गांधीजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर उनके समकालीन साहित्यकारों ने- हिन्दी साहित्य में- श्रद्धा सुमन चढ़ाये हैं। किन्तु ऐसा काव्य विरल है। आधुनिक काव्यकारों की लेखनी इस विषय में विराम लेती प्रतीत हो रही है। जबकि उनकी वाणी की आज के युग में महती आवश्यकता है। फिर भी जो काव्य प्राप्त है उसे यहाँ प्रथमतः संकलित किया जा रहा है। जिसमें मालवी लोक जीवन में रचे-बसे गांधी के जीवन चरित्र का उद्‌घाटन होता है।

गांधी का जन्म गुजरात के पोरबंदर में हुआ था। उनके जन्म की खुशी में घर-घर आनंद बधाइयाँ बजने लगीं। उनकी माता की कोख उजली हुई। भारत माता बड़ भागी हुई। वर्षा ने रिमझिम की झड़ी लगाकर हर्ष व्यक्त किया। क्योंकि ''मोहन'' के रूप में श्री कृष्ण का पुनर्जन्म हुआ। उस समय फिरंगियों का भारत में राज्य था। किन्तु ''मोहन'' के जन्म लेते ही उनके सितारे गर्दिश में डूब गये। गांधीजी के सत्याग्रह रूपी अस्त्र तथा गीता के कर्मयोग ने भारत में आनंद की वृष्टि कर दी।

गीत-१

जनम लियो मेरे मोवन भाई,
पोरबन्दर में बहार आई,
पुतली बाई की किस्मत जागी।
भारत माता हुई बड़ भागी।

रिमझिम ने बहार लाई।
जनमलियो मेरे मोवन भाई।
फिरंगी तब यां राज करत थे,
उनकी किस्मत ने गरदिश खाई,
पोरबंदर में बहार आई,
सत्यागिरे को वणने सस्तर बणायो,
गीता को बी ग्यान सुणा थी।
केक सतकरम करया गांधी भाई,
पोरबंदर में बहार आई,
भारत माता पे बहार छाई।

- गायिका माता अबंती बाई जोशी एवं श्रीमती कुसुम वर्मा सुसनेर।

- इसी भाव को व्यक्त करता एक और कवित्त प्रस्तुत है जिसे सुसनेर के ही स्व. भेरूलाल शायर ने अपने ''तुर्रा'' ग्रंथ में लिपिबद्ध किया है।

गीत-२

गांधी सो भारत लाल हुवो तब,
भारत देस थी गुलामी में जकड़यो।
देस सुराज को ग्यान बताइके,
गांधी सो लाल अंगरेजन झपट्यो।
भारत की मरजात के कारणे,
सत्याग्रे को थो सस्तर बणायो।
कांग्रेस की नीत उचारी के,
देस के यूं आजाद करायो।

मालवा की ग्राम वधूटियों ने अपने लोकगीतों में पूज्य महात्मा गांधीजी को अवतारी रूप में ही प्रस्तुत किया है। एक लोकगीत में उनके कपड़ों की तुलना श्री कृष्ण के कपड़ों से की है। जहाँ श्रीराम के हाथों ने दुष्टों को संहार करने के लिए धनुष उठाया, वहीं श्री गांधीजी ने भारतियों की खुशियाली के लिए चरखे को शस्त्र बनाया। जहाँ श्रीराम ने रावण को एवं श्रीकृष्ण ने कंस जैसे दुष्टों का वध किया, वहीं गांधीजी ने दुष्ट अंग्रेजों को भारत भूमि से मार भगाया। यदि श्रीराम की सेना वानर थे और श्रीकृष्ण की सेना में ग्वाल थे तो गांधीजी की सेना में ''पब्लिक'' (जनता) प्रमुख थी। जन आन्दोलन

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

की ऐसी भव्य तुलना लोक हृदय की धड़कन में ही सुनी जा सकती है। प्रस्तुत गीत की गायिका श्रीमती दुर्गावती जोशी (धर्म पत्नी) तथा माताजी अंवती बाई जोशी सुसनेर हैं।

गीत-३

अवतार महात्मा गांधी का,
भारत का भार उतारन को।
सिरी राम के कपड़े पीले हैं।
सिरी कृष्ण के कपड़े नीले हैं।
गांधीजी के वस्तर खादी के,
भारत का भार उतारन को।।१।।
सिरी राम के हाथों धनुस है।
सिरी कृष्ण के हाथ में बंसी हे।
गांधीजी के हाथ में चरखा हे।
भारत का भार उतारन को।।२।।
सिरी राम ने रावण मारा हे।
सिरी कृष्ण के कंस पछाडा हे।
गांधी जी ने अंगरेज भगाया है।
भारत का भार उतारन को।
अवतार महात्मा गांधी का,
भुमि को भार उतारन को।।३।।
सिरी राम की सेना वानर हे।
सिरी कृष्ण की सेना ग्वाले हे।
गांधीजी की सेना पब्लिक हे।
भारत का भार उतारन को।

गांधीजी का व्यक्तित्व बहुरंगी था। लोक जीवन में उनके विविध आयामी चित्र भरे पड़े हैं। एक लोक गीत में गांधी जी के व्यक्तित्व को चित्रात्मक शैली में उकेरा गया है। प्रस्तुत गीत मोहन लाल, विजय कुमार एवं बालूसिंह, भजन मंडली में कायरा से सुनकर लिपिबद्ध किया है।

गीत-४

हात लकड़िया,पांव पावड़िया,
आँख पे चिस्मा चांदी को।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुबे-सवेरे हरिजन मंदर,
नत उठ पिराथना पे जावे।
गीता पे राखे ध्यान अने,
कस्तूरबा के भजन हुणावे।
ईस नाम की करे बंदगी,
जनता को दुख गावे।
जेल जावे पण उपास नी तोड़े,
नंगा भूखा केज ध्यावे।
भारत मां की करे बंदगी,
नत उठी दरसण पावे।
भारत मां को नाम लई ने,
रूखी सूखी पावे।
ऐसो कूण हे अजब महान।
योतो गांधी प्यारो इन्सान।
भारत की आजादी वाते,
देवे अपणी जान
ऐसो गांधी बड़ो महान।

अंग्रेजों के राज में पाठशालाओं की बड़ी दुरावस्था थी। पढ़ने लिखने के उतने साधन नहीं थे जितने आज हैं। समग्र भारतीय ''जनजीवन'' में निरक्षरता व्याप्त थी। ऐसे में लोक गीतकारों ने गांधीजी से पाठशालाएँ खुलवाने का आग्रह एक लोक गीत में किया है। इसके गायक हैं कायरा ग्राम वासी दुलेसिंह जी सरपंच और इनके साथी।

गीत-५

सुणलो दुखियों की आवाज,
दयालू गांधी बाबा दों ध्यान।
बालक म्हांका कोसों दूर हे भणवाजावे।
स्कुल फीस वी दई नी पावे,
नगर-गाँव मांस स्कुल कोइनी,
तम देन्ओनी ध्यान।
दयालू गांधी बाबा महान॥१॥

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अंगरेजां का राज में म्हां की सिट्टी-पिट्टी होवे।
गिटर-पिटर अंगरेजी बोलता-हेड मास्टर आवे।
हे बापू! तम हिन्दी-उरदू का मदरसा खोलो।
फीस कमी करवाई दो गांधी बाबा महान।।२।।
तीस दिनां नित नई फीस दे।
हुई गया मात-पिता हेरान
गांधी बाबा हो बड़ा दयालू।
रखो म्हांका तम भणवा पर ध्यान।
दयालू गांधी बाबा महान।।३।।

- उन दिनों गोरे लोग भारत को क्रिस्तान में बदलना चाहते थे। और अपने धर्म तथा खान-पान को भारत वासियों पर लादनें की कोशिश करते थे। वे पान चबाते विलायती कंद खाते थे। विदेशी दवाइयों का आम जनता में प्रचार करके भारतीय मुद्रा को इंग्लैंड में ले जाते थे। इस पर व्यंग्य करती एक रचना ''विलायती कंद'' मुझे गोगांव निवासी शायर पं. शोभारामजी ब्राह्मण को हस्तलिखित तुर्रा पोथी से प्राप्त हुई है।

गीत-५

(विलयती कंद)
लाट साब ने किरस्तान करने को बता कब चखता पान।
अपने आपी किरस्तान सब होता चला ये हिन्दुस्तान।
(टेक)
देख गोर कर इधर ध्यान धर, गांधी सत्त समझावे हे।
अपनी समझ से नावाकिफ कुल बेईमान बन जावे हे।
किरसतान किसकूं बतलावो-यो अंगरेज बनाते हें।
कंद विलायत से आवे हे अपणी खुशी सब खावे हे।
(मिलान)
नहीं किसी का कसूर इसमें समझो जो तुमहो इन्सान,
(चोक-१)
डाक्टरों की खास दवइयां-लंदन की बनी हे दिलजानी।
उसे मजा में खावो हो तुम-बडा बनी ने चतर ग्यानी।
क्या वो तुमें खिलाते हें-तुम अपने आप खावो आनी।
बईमान ओरां के बतावो-गांधी भी केवे बईमानी।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

(मिलाप)

दवाई से खली कूण रह्यो-खवाती जग में हो नादानी।

(चोक-२)

खुराक दवाई खीवीली आपने-फेर अरक की ठेराई।

चल्या डागदर से लेवाने-एक मोल की सीसी मंगाई।

बीमारी जद बडे तो पीली-दवा खुश्क ऊपर खाई।

जदी दरद मिंट गयो तो केवा लाग्यो घणी उत्तम भाई।

(मिलपन)

जमी एक ने खाई सबने-जात वाला ने खाई आन।

(चोक-३)

चन्दण की चुटकी हे मली-किस काम का गाड़ी भरा कबाड़।

तूने अपणा इस खयाल में-झूठी करी उखाड़-पछाड़।

तीन चोक धडील्या हे नाहक, दुनियां में करवाने राड़।

सात चाक में मतलब तेरा म्हांनेसारा दिया उखाड़।

(मिलान)

जंग करी अगरेजां से गांधी-थोंय दियो नाहक खफखान।

गांधी के हिन्दू सोई मुसलमान उठे मुसलमान सोई ईसाई।

खावा पीवा का बिचार में कूण बचइदे बतलाई।

हिन्दू मुसलीम के संग में गुपत मुंसलमां हो भाई।

जो हे आपके सामिल डूबी चतर तामारी चतराई।

बंदोबसा नी हुवा अंचके घर में नीचका गडा निसाण।

(चोक-४)

मगर धरम वो ओर चीज हे खावा पीवा सेन्यारा।

गांधीजी केवे उणे बी समजो-जाणेगा जानन हारा।

नाहक बम बम बम करते हो-खेल के ठाकुर गुर द्वारा।

मुसलमान मज्जित में जाके-अल्ला-अल्ला करे पुकारा।

(मिलाप)

दया धरम को छोडा जिसने उसको समझो वो हे बेइमान।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

(चोक-५)

गांधी केवे कहूँ ये दोहे नादान लोग झूठा मत के।
सच को समझो, झूठ-झूठ को, कहे वचन ये हें सत के।
गुनी लोग के अग्यानी लागे हे इज्जत हुरमत के।
इसी सबब गांधी से लोगना रसिया इनकी उल्फत के।

(मिलाप)

जिस चोक का ख्याल किया सुख लाल ने सुणलो गांधी गुणगान। तुर्रा की एक और हस्तलिखित पोथी, इस लेखक के संग्रहालय में सुरक्षित है। जिसमें प. शोभारामजी ने ''गांधीजी का पुवाड़ा'' नामक ख्याल लिखा है। भाषा उर्दू प्रधान मालवी ही है। रचना काल सन् ३२ से ३४ का है। इसमें पूज्य बापू के दीर्घायु होने की कामना के साथ, कर्तृत्व पर भी प्रकाश डाला है। गांधीजी के परोपकारी रूप, भाषण कला, क्षमा भाव, चरखा, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार आदि विषयों का सुन्दर चित्रण किया है यथा-

गीत- ६

(गांधीजी का पुवाडा)

सुनो भारतीयों सब मिलके नमो सदा विश्वंभर को।
हे जगदीश करो दीर्धायु गांधी धर्म धुरन्धर को।

(टेक)

परोपकार पे कमर जो कसके सदा खड़े रेते तइयार।
भासण सबसे करें मनोहर, गंभीरता हे तन में अपार।
गर जो कोई करके अनीत, देते तरास उनको बदकार।
तो लेकर वो छमा खड्ग, करते बेग ही उसे लाचार।

(शेर)

कहता जिन्होंका भारतियों से दिल यही हर बार हे।
बंधुओं अब जागिये, सोने में कुछ ना सरार हे।
चरखा चलावो सब यही ही एक उन्नति का द्वार हे।
जिसके बिना कुछ ओर सें ना देश का उद्धार हे।

(मिलान)

देसबको यों सिच्छा प्यारी ऐसे ग्यान समुंदर को।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

(चोक-१)

ओर उनी के कहे मुताबिक बढा के आपस में सब प्यार।
जोर शोर से इस भारत में करो खादी का खूब परचार।
ओर तन पे जो ठाठ विदेशी होय तो उसको देय उतार।
ओर करो प्रन विदेसी वस्तु करांगांनी कभी स्वीकार।

(शेर)

जात करोडों हे रूपये इस देस से परदेस को,
बुद्धि तुमारी हेनकोडी आनी पर लव लेस को।
था सिरोमणि देस जो वो टिक चुका अंदेसको।
मगर तजते हो न तुम तो जेंटलमेनी भेस को।

(मिलाप)

ग्यान जोत से करो परकासित साफ हिरदा से निज मंदर को।

(चोक-२)

देखो कितनी मारचुके गो, बूचड इस भारत अंदर।
रूक जाती हे कलम गरचे, हिसाब करे जो एकन्दर।
रेम जरासानी खाते मन में, चलारये झरझर खंजर।
विलाप कर सब रो इई गउवें- दुख से होकर के पंजर।

(शेर)

इस दुःख से ही तो देसहित-अहमद अली, शोकत अली।
ओर गांधीजी की गई थी जेल कोस्वारी चली।
हाल जिनका कहते होती हे खड़ी ये रोमावली।
आंसू बहते आंखियान से अर दिल में मची हे खलबली।

(मिलान)

हे मंगल सूरत क्या प्यारी पड़े तेज ज्यौं चंदर को।

(चोक-३)

सच हे जननी जने कदाचित सो गांधी सा लाल जनें।
धरमवान वो नीतवान ग्यानी जन भगत दयाल जनें।
नीतो रेवे जनम निपुतरी ज्यूं केसू फूल घनें।
होते भी सुंगधना देवे क्या ऐसा उनसे कार बनें।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

(शेर)

जन्म ले निज देस की सेवानजिसने की खरी।

जगत में उसने बिरथाही देहमानव की धरी!

मातृभूमि ही हे तारण सिरफ एक परमेसरी।

जिसकी सेवा में तिलक, गांधी ने देह खुद अरपन करी।

(मिलाप)

कहते शोभाराम इन्हों को दे ऐश्वर्य पुरन्दर को।

स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त लिखा गया एक ख्याल प्रस्तुत है जिसे सुसनेर के स्व. शायर भेरूलाल ने अपनी तुर्रा की पोथी में लिखा है। इसमें तिरंगे का वर्णन, स्वतंत्रता प्राप्ति की खुशियाली, हिन्दुस्तान के विभाजन का सेहरा जिन्ना के मस्तक पर बांधते आदि विषयों का सुंदर चित्रण मिलता है।

गीत-७

(सखी)

आनंद भारत में हुआ रवि,

तो प्रगट हर इंधेरा गया।

झन्डा तिरंगा हिन्द में,

आजाद हो लेहरा गया।।१।।

भारत हमारा सोंपकर,

पश्चिम को उठ डेरा गया।

पर फूट डाली रूठ मन,

ओर दुवेश भर गेरा गया।।२।।

विभाजन थे हिन्दुस्तान का,

जिन्ना के सर सेरा गया।

दिल की तसल्ली ना हुई,

लालच कुजाल पेना गया।।३।।

धन्य हो श्री गांधीजी जग में,

सब का प्रकाश हो चेहरा गया।

जयकार भी श्री नेहरू की हो,

पंदरा अगस्त ढेरा गया।।४।।

(दौड़)
प्रेम से सज्जन बन फिर रहे।
कपटतज सदा सत्य को गहे।
कभी ना मिथ्या मद में बहे।
हिन्द में वंदे मातरम सब कहे।
शकुन शंकर के तो सुभ जान।
रखो जग दम्बे जग का मान।।५।।

तुर्रा के एक और हस्तलिखित ग्रंथ में शायर पं. शोभाराम ने गांधीजी का जीवन चरित्र उनके मरणोपरांत रंगत खडी में इस प्रकार वर्णित किया है—

गीत-८
राम भगत हो गया मातमा गांधीजी सा वर ग्यानी।
गांधी दरसन ओर सत्य पे गिरंथ रचदिया सास्तर छानी।
(ठैक)
गुजरात सेर का पोरबंदर गाम में इनका था ओतार हुवा।
मां पुतलीबई पिता करमचंद गांधी का उच्चार हुवा।
पति बरता कस्तूरबा इनकी पतनी थी वा केलाई।
सुतंतरता की ज्वाला बनी कस्तूरबा इनके संग आई।
भणवाने इग्लेंड गया जब मां ने उणके दीवी सीख।
मांस मदिरा कदी नी पीना पर नारी के मात वत दीख।
(मिलाप)
अंगरेजां की रीत से गांधी बाबा हुवा नाराज।
अपणा देस में अपणे ही घुटतां हरल्या उणने सबी साज।
देस दसा लख वी रोता था कियो नमक सत्याग्रह को।
आजादी के खातर कांगरेस संगठन जोड्यो भारत को।
गरम-नरम दल दो दल में उणकों नरम दल के लातो थो।
दिल गोली बन्दूक उणोने सत से जोड्यो नातो थो।
(चोक)
अध्यात्म रामायण ओर गीता के उनने श्रवण करी।

संकाऐं जो उंका मन में थी गुरू ने सबज हरी।
अपढ़-पड्या हरजन के उणने ऊंचो नेम धरयो।
खुद की गंदगी साफ करन का नवा परयोग कर्यो।
(छुटकड़ी)
केवे गांधी दास सुनो बल कारी।
सनमुख दरसन की इच्छा नाथ हे भारी।
भारत की जनता भूकी पडी बिचारी।
देव दया कर भारत भूमि ऊबारी।

मालवी लोक साहित्य में श्री गांधीजी पर पहेली जैसा साहित्य भी मिलता है। इसमें उनका नेहरूजी के प्रति प्यार, पंचशील का सिद्धांत। उनकी सादगी, व्यक्तित्व एवं भारत को उनकी देन का चित्रण मिलता है। इसे शरद जोशी एवं दिनेश जोशी निवासी सुसनेर से सुनकर लिपिबद्ध किया है।

गीत-९

भारत मां को लाल दुलारो-जग की अंखियन को हे तारो।
भारत का हित सब त्यागन वारो, देस भगत ऊ कूण हे।
गांधीजी हे अटल सहारो, ''बा'' के भी ऊ भूलन हारों।
देस कामनखां के ऊ प्यारो, बतलावो ऊ कूण हे।
देस जवाहर उण के प्यारो, पंचसील को उणे सहारो।
गोरा मनखां के भगावा वारो, गांधी सो मग दूत हे।
हाथ में लकडी, पांव पवड़्यां, घड़ी कमर में लटके हे।
आंखां पे चस्मो, कमर में पंचो उणको योज सरूप हे।
राम नाम को सत हे प्यारो, बडा छोटा को घणो दुलारो।
देस के यो आजादी दई ने चल्यो गयो ऐसो गांधी दूत हे।

- गांधीजी के सत्याग्रह के संबध में लोकगायकों ने अपनी वाणी दी है। वे मन के बड़े संकल्पी थे। ओर संकल्पित कार्य की पूर्ति न होने तक उसी के पीछे पड़े रहते थे। सन १९३० की १२ तारीख को आपने साबरमती आश्रम छोड़कर दांडी यात्रा की थी। उन्होंने अपने अनुयायियों के साथ रावी के तट पर गोरों की हुकूमत को उखाड़ फेकने का संकल्प किया। २९ दिसंबर, ३० को लाहौर अधिवेशन में घूम-घूम कर यह संदेश प्रसारित किया कि जब तक भारत स्वतंत्र नहीं हो जाता, उसका स्वतंत्रता दिवस २६ जनवरी को ही मनता रहेगा। विदेशी सत्ताधीशों से हिंसा के बजाय अहिंसक तरीके से उनका

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मन परिवर्तित करना होगा। इन घटनाओं को संक्षिप्त लेखा जोखा लोक गीत गायक श्री मोती लाल पटेल एवं उनकी मंडली में सुनकर लिपिबद्ध किया है।

गीत-१०

गांधी मातमा ने जदी करी सत्यागिरे की तइयारी।
खई कसम ने कमर कसीली-साबरमती आस्रम नीजउवां।
चाये मोत मरूँ कुतरा बिल्ली की तोबा हूँ वां नीरउवां।
जेल करेगी बंद गोरी सरकार तो वां जइने म्हँ रउवां।
सन तीस की बारा तारीख के आस्रम छोउ दांडी कूँ ग्या।
रावी कनारे भेलावइने गोरा होण भगावा कासंकल्प व्या।
गुणतीस दिसंबर आयो तो अधिवेसन था लाहोर किया ।
सारा देस में घूमी घूमी ने कागरेस का संदेसा दया।
सुतंतरता जद तलक नी मले छब्बीस जनवरी मनती रेगी।
नमक सत्याग्रे करवाकी भी जोर शोर से त्यारी वेगी।
आगे आगे गांधी बाबा पाछे हुवो सत्याग्रे दल।
माथे कंकू गले सूत की माला हाथ में लाठी लइके पल।
शराब बंदी को बीड़ो तोक्यो दारू की दूकान पे दूयो पेरो।
बिदेसी वस्तर की होली बालदी चरखा को लागग्यों डेरो।
वणी टेम मायां-बायां ने तिरंगो हाथ उठायो थो।
केसरिया साड़ी बांधी ने कस्तूरबा को साथो थो।
भारत का इतिहास की घटना ने यो रस्तो बतलायो थो।

- गांधीजी का सत्याग्रह रूपी अस्त्र देश में विख्यात हुआ। ३१ दिसंबर १९२९ को रात्रि १२ बजे तिरंगे की छत्र छाया में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेताओं, कार्यकर्ताओं और लाखों भारतीयों ने लाहोर में रावी नदी के तट पर जो संकल्प लिया था उसमें कहा गया था कि भारत को जब तक संपूर्ण स्वायत्तता नहीं मिलेगी, वह ब्रिटिश हुकूमत से जूझती रहेगी। इसी भाव को संजोया है बामन्या खेड़ी ग्राम के मांगीलाल बारोठ ने इन पंक्तियों में।

गीत-११

यो देस गुलामी का पंजा से हुईग्यो आंको बांको थो।
यां उनी टेम पे बिदयारथी ने गांधी को पकइयो नाको थो।
उज्जेणी कापुस्तकेजी ने सन इक्कीस में चरखा संघ सजायो थो।।

सन तेंतीस में याँजे बेठके हरिजन संघ बणायो थो।
कृष्णराव दाते बण्या था सेवक, खादी पे रंगलछमी नाराण चढायो थो,
गोखले जी ने खोल्यो भंडार खादी को जो सबका मन के भायो थो।
सन तेंतीस में लीलाधर ओर तखतमलजी ने राजनीति को पकड़यो पायो थो।
गांधी का केणा में इनने उणकोई पकडयो सायों थो।
देस सुतंतर होणे पर गांधी ने लीलाधर के मुख मंत्री बणायो थो।

- ऐतिहासिक घटनाओं का सुरुचिपूर्ण चित्रण मिलना लोक मानस में व्याप्त धारणाओं का द्योतक है। ऐसी ही एक घटना रायपुर में घटी होगी। वहां के किसानों ने गांधीजी से प्रेरणा प्राप्त करके ''लगान मत दो-पट्टा मत दो'' नारी के माध्यम से अपना आंदोलन प्रारम्भ किया था। यह आंदोलन कांग्रेस के''करबन्दी'' का एक अंग था। सैकड़ों किसानों ने इसपर अपनी गिरफ्तारियां दीं। सन ३० की इस घटना का वर्णन तुर्रा गायक लक्ष्मी नारायण सुबरणकार ने अपने एक ख़याल में किया है।

गीत-१२

हे यतन लाल जी मुनिजो कहिये,
संग रहे प्रभुलाल महाराज।
सब मिलिके यो नगर सम्हालो,
समर भूम को जाते आज।
ऐसो भार भरोसो सोंय्यो,
कुछ पड़ो रण प्यारे लाल।
करे तयारी कर बन्दी की,
माल गुजार बुलाये हाल।
बीच गोल में प्यारे लाल जी,
निधडक डंका रह्यो बजाय।
बीडा लइके प्रण ठानो है,
मदिरा सबरी देऊं नसाथ।
करे पिकेटिंग चेन न लेवे,
वस्त्र विदेसी देय जलाय।
बूंद सराब न लेने पावे,
ठेकेदार रहे घबराय।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

- स्वतंत्रता संग्राम की बलिदानी परंपरा पर एक बहुत ही सुंदर वीर काव्य ''तुर्रा'' की एक और पोथी में अंकित है। जिसके शायर शोभारामजी है। इसमें शहीदों की उत्सर्गी भावनाओं का गुंफन हुआ है। स्वतंत्रता संग्राम की बलिदेवी पर कई क्रांतिकारियों ने अपने जीवन का उत्सर्ग किया है। उनमें से अनेकों का वर्णन इस काव्य में गुंफित हुआ है।

गीत-१३

सिरपे बांध के कफन चली थी जांवे सहीदों की टोली।
तडफ उठयों पंजाब नी मूल्यों जलियांवाला की गोली।
भगतसिंग की बुझी चिता पे राख लुटावा आयो हूँ।
हुआ देस का खंड-खंड बस याज सुणावा आयों हूँ।।१।।
बरमा का मेदान के नीचे सिंगापरती जई बुझो।
कितरा सोयालाल तरई में नेताजी से जई पूछो।
याज दुहाई बार बार दइरी हे लाल किला की दीवारां।
देखी लो फिर जंग न लागे नेताजी की तरवारां।
कितरा ने माथा काट काट भरदी मां की खाली झोली।
होटां पर वण के हंसी खेलती जब लगी कलेजापे गोली।
अमर सहीदों की समाध पे फूल चढावा आयो हूँ।
हुवा देस का खंड-खंड बस याज सुणावा आयो हूँ।
लुटी गया कितराई स्वाग इणां विदेसी तुफानां में।
विधवा ओण का दुखीनाद चारी मेर दिखा वीराणा में।
जलीरयो अपणो स्वर्ण देस छइरी चारी मेरू ती बरबादी।
टपकायो खूनी आंसू मां, जद आज मली हे आजादी।
सच्ची सुतंतरता की ज्वाला के हूँ फिर भड़कावा आयो हूँ।
हुआ देस का खंड खंड बस याज सुणावा आयों हूँ।।३।।
सिक्खा, गोरखा, जाटां की हुंकार घणी हे पाणी पाणी क्यूँ।
आज मराठा की तरवारां को उतरयो हे यो पाणी क्यूँ।
राजपूतनी का जोहर की आज रईनी निसाणी क्यूँ।
मोर्य ओर समराट गुप्त की भूलां आज कहानी क्यूँ।
जदी वी जली क्योंनी तडफी इन आर्य वीर संतानो में।
लछमी बाई कों गई जो मरदबनी मरदानां में।
गांधी को यो देस जगत में यो सिर मोर के वायो हे।
बापू काही इना देसको मनख मनख बिलमायो हे।

- सन १९४७ में पूज्य बापू के अथक प्रयासों से भारत को आजादी मिली। मालवी के ख्यात कवि जुगल किशोर द्विवेदी ने 'छल्ला' के माध्यम से बड़ी सुन्दर अभिव्यक्ति दी है।

गीत-१४

भारत मां की बेडी टूँटी अपणा जाग्या भाग रे।
अब तो कोई परदेसी को- नी लगवा दां लाग-के छल्लो भोलो रे
गांधीजी ने स्वराज लइल्यो पर करनो नी याद रे।
ऐसी पडीरिया चक्कर में के दन पर दन बरबाद- के छल्लो भोलो रे।
छल्ला त्याग ने तपस्या का अब नी भुनावां चेकरे,
ई से कोई भी फल नी पायो हुईया एक का अनेक-के छल्लो भोला रे।

एक और गीत में गांधीजी द्वारा भारत को स्वतंत्रता दिलवाये जाने का चित्रण उपलब्ध होता है। इसमें उनके त्याग एवं बलिदान का मोहक रूप दृष्टिगत होता है।

गीत-१५

गांधी बाबा के वाणो यो-इकलंगी धोती वारो।
जीं ने अपणा देस के वाते आजादी को दयो नारो।
गांधी बाबा सीदो सादो पण थो सच्चा कोसाथी।
जीतो रियो हिन्द केवाते मरयो तो गोली छाती।
जीवन दरसन पइयोंई कोनी-राजनीति में उनको।
त्याग तपस्या कदीनी देखी तोई तो पायोठन को।

- गांधी बाबा के गृहस्थ जीवन के लोक रंग में रंगे हुए चित्र कुछ गीतों में उपलब्ध हैं। ऐसे चित्र मालवा के मध्यम वर्गी परिवारों में मिलते हैं। प्रस्तुत लोक गीत श्रीमती दुर्गावती जोशी से सुनकर लिपिबद्ध किया है। इसमें गांधीजी को जिन वस्तुओं से परहेज था- उन्हीं को मनुहार के रूप में चित्रित किया है। एक ''चवन्नी'' सिक्के पर गांधीजी का चित्र अंकित देखा, मालव नारियां सहज गा उठती हैं।

गीत-१६

छोटी सी चवन्नी चांदी की,
जे बोलो महातमा गांधी की।
तम्बे के हंडे में ताता सा पानी,
न्हा वे वामे ''बा'' ओर गांधीजी।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जब तत्ती जलेबी दूधन के लडडू,
जी में वामें ''बा'' ओर गांधीजी।
जब सोने की झारी गंगाजल पानी,
पीवेगा ''बा'' ओर गांधीजी।
जब पाके री पान कलाई का चूना,
खावेगा ''बा'' ओर गांधीजी।
जब चुन चुन कलियां सेज बिछाई,
सोवेंगा ''बा'' ओर गांधीजी।
छोटी सी चवन्नी चांदी की,
जय बोलो महातमा गांधी की।।

- एक और लोकगीत में पत्नी कस्तूरबा अपने प्रियतम गांधीजी को उपदेश देती हुई उन्हें विदेश में पढ़ने जाने से रोकती हैं। पत्नी का यह प्रेमभरा उपदेश गांधीजी अपने जीवन में उतारते हैं और वर्जनाओं का पालन करते हैं। इस गीत को श्रीमती कुसुम बाई वर्मा एवं दुर्गावती जोशी से समवेत रूप में सुनकर लिपिबद्ध किया है।

गीत-१७

केवे बापू से नाथ तम देसावर मत जाव।
भंवर पर नारी मत ताकजो जी।
छेल, पर नारी मत ताकजो जी।
घर की सुंदर नार छोंड थें,
पर कोटां नी डाको जी।
उपर से वी मीठी घणीज लागे,
मन मांय छल को झेर भर्योजी।
उण से बचके रेवणो जी,
थें भूली ने मती पइजो कोई फेर में जी।
नेन पराई नार से नी लगाणा,
तन मन धन हर लेय भंवर जी।
सगती, बुद्धि अर बल के वातो,
जलई ने भसम कर देवेजी।
धन बी जावे नें इज्जत घटे भंवरजी,
तम तो बिदयारे लईके ही आ जोजी।

- एक और लोकगीत में नागरिक और ग्राम्य जीवन की तुलना की गई है। ग्रामीण जन बापू को संबोधित करते हुए उनके सामने अपनी वास्तविकता प्रकट कर रहे हैं। वे नागरिक जीवन की आराम देह वस्तुओं से परिचित नहीं हैं। उन्हें तो ग्राम्य जीवन में जो भी वस्तुएँ सहज लभ्य हैं, उसी से संतुष्ट हैं और जो कुछ उनके पास है उसी को वे अपने राष्ट्र पिता की सेवा में प्रस्तुत कर उनका सम्मान करना चाहते हैं। नगर में तो चारों ओर ऐश्वर्य और सम्पति के चिन्ह दिखाई देते हैं, किन्तु ग्राम्य जीवन में दीनता और अभाव का सर्वत्र साम्राज्य दिखाई देता है। यह गीत काव्य कांकरिया पाल (इंदौर) की भजन मंडली की प्रमुख श्रीमती मैना बाई, आसी बाई, अहिल्या बाई से सुनकर लिपिबद्ध किया था।

गीत-१८

हो बापू यो राज तमी ने पलटायो साबरमती का रेवा वारा।
म्हां गानो बजानो कंई जाणा-जंगल का रेवा वारा।
म्हां झारी-लोट्यो कंई जाणा तुमड़ी से पीवा वारा।
म्हां पान सुपारी कंई जाणा जंगली फल खावा वारा ।
यो रात तमी ने पलटायो साबरमती का रेवा वारा।
म्हां गादी तकिया कंई जाणा गोदड़ी का बिछावा वारा।
म्हां मेल अटारी कंई जाणा टापरी का रेवा वारा।
म्हां मोटर सायकलां कंई जाणा हां हल हांकवा वारा।

- एक और गीत में कस्तूरबा जैसी पत्नी के नियम धर्म की चर्चा मिलती है। वे पोरबंदर की महारानी सदृश हैं। मोहनदास गांधी उनके लिए राजा हैं। देश को स्वतंत्र करवाने में ''बा'' ने भरपूर सहयोग दिया। वे छाया की भांति अपने प्रियतम के संग रहीं। उनका साथ पाकर ही पूज्य बापू ने देश के लिए अपने प्राणों का उत्सर्ग किया तथा उनकी पति भक्ति के कारण ही बापू ने मरते समय ''राम'' नाम का उच्चारण किया। इन्हीं भावों को गायिका जतन बाई दुलेसिंह ने इन शब्दों में व्यक्त किया है।

गीत-१९

कस्तूरबा माता जगरानी,
नेम धरम से पूजा करे।
वा पोरबंदर की महारानी,
मोहन लाल महाराज अलीजा,
संग रहे वाके सेलानी।
देस सुतन्तर करवा में वा,
पाछे नी रे दानी।

इकलंगी धोती पेरे ने,
हाथ लकुटिया लासानी।
इनकलाब के खातर वणने,
कदीनी की नादानी।
बा को पइके साथ,
दइ सक्या गांधीजी कुरबानी।
कस्तूरबा माता जगरानी,
''राम'' नाम मरती बगतां,
मुख से निकल्यो हे प्राणी।

- स्वतंत्रता पूर्व का एक और गीत उपलब्ध है, जिसे ग्राम सुधार साप्ताहिक ने १.३.४२ को प्रकाशित किया। इसमें चरखे का वर्णन आया है। ''चरखा कातना'' एक महत्वपूर्ण उपदेश सा लगता है। एक चंचल मन वाले ''बनाजी'' चरखा कातना छोड़कर इधर उधर मंडराते दिखाई दे रहे हैं।

गीत-२०

सड़कों सड़कों टेलो बनाजी,
सड़कों पे लग रया ग्यास।
टेसन टेसन टेलो बनाजी,
टेसन पे लग रया ग्यास।
बनाजी चरखा कातो जी।।१।।
बागों बागों टेली बनाजी,
बागों में लग रया ग्यास।
कलियों में लग रया ग्यास,।
बनाजी चरखा कातो जी।

- श्री नरहरि पटेल मालवा एवं मालवी के प्रसिद्ध गीतकार हैं। आपने ''मालवा की रात'' काव्य में गांधीजी के चर्खे का गुणगान किया है। खेतों में उजला-उजला कपास पैदा होता है। घर की दादी गांधीजी वाले चरखे से अपने लिये खादी का अंगरखा तैयार करती है। काली गाय उजला दूध देती है-उसकी तुलना कपास के उजले रंग से की गई है। उस दूध को काले मटके में रख कर चूल्हे पर उबाला जाता है। फिर गृहिणी दोहनी में रख कर छप-छप की ध्वनि में छाछ बिलोती है। घमड़-घमड़ की आवाज करती वह दोनों हाथों से बिलोई हिलाती है, तब उसके वक्षस्थल परसुशोभित कंचुकी चिपक जाती है। वह भी उसी चरखे पर बनी होती ।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गीत-२१

चरर मरर चरर मरर चरखो वाले।
गांधीजी वारो दादी थारो चरखो वाले।
खेत में वायो ऊजरो ऊजरो कपास रे भई।
हांक्यो जोत्यो मोखरो मोखरो कपास रे भई।
आछो आछो कातल्यो दादी ये कपास रे भई।
गांधी बारो दादी थारो चरखो चाले।
दादी थारी खादी को अंगरखो सुवाय रे भई।
कारी कारी गाय को धोरो धोरो दूध रे भई।
भरया भरया मोटला तायो तायो दूध रे भई।
मच मचाती माटली ने छप छपाती छाछ रे भई।
कस मसाती कांचरी चम चमाती खांच रे भई।
धमड़ धमड़ धमड़ जामण वाजे।
भाभी थारो बेरको हाले।
मीठा मीठा बोल पे गीत जाग्या जाय रे भई।
म्हारी प्यारी माथड़ी कूकडा बोलाय रे भई।
जागो सूरज देवता म्हारी मां जगाय रे भई।
सोना केरी जिदंगी चमचमाती आय रे भई।
घुमर घुमर घुमर घुमर धट्टी चाले।
मइया थारी घट्टी चाले।
दादी थारी छाया में जनम बीतयो जाय रे भई।
गांधीजी वारो दादी थारो चरखो चाले रे भई।
भाभी थारो चूडलो चम चमातो जाय रे भई।
म्हारा आंगण कोई भी नजरनी लगाय रे भई।
मइया थारो गोद में सबे सुख समाय रे भई।
ढमक ढमक ढमक ढमक नोबज बाजे।
म्हारे घर नोबत बाजे।

- इधर ग्राम वधूटिया चंदन के चरखे पर गांधी से कातने वाले और बाह्य वस्त्रों की अपेक्षा स्वदेशी वस्त्र धारण करने की प्रेरणा दे रही हैं। वे उसके चलने की आन-बान पर न्यौछावर हैं। गांधीजी ने चरखे को आध्यात्मिक मार्ग का प्रतीक

बनाकर देश से जाने वाली वैदेशिक मुद्रा के प्रसार को रोकने के लिए तथा स्वावलंब की शिक्षा के लिए, कबीर की आध्यत्मिकता से इसका रूपक साधा है। इसमें रूई, सुरति, तांत, ताकलियो, चमर, भंवर, झिण-झिण और गुड़ी जैसे शब्द चरखा शास्त्र के पारम्परिक शब्द प्रयोग है। जो आध्यात्मिकता की ओर ले जाते हैं। गांधीजी ''सत'' के प्रयोग कर्ता थे। स्वावलबंन की शिखा के साथ आपने चरखे के माध्यम से आध्यात्मिक गंगा प्रवाहित की है। जीवन भी एक चरखे के समान है। इसमें भी कई ताने-बाने बुने गये हैं। गांधीजी का चरखा कबीर के इस लोक प्रचलित पद से भी साम्य रखता है, किन्तु गांधीजी ने आध्यात्म के साथ स्वतंत्र भारत के निरूद्यमी और आलसी मानवों को स्वावलंबन से जोड़कर नया प्रयोग किया है।

गीत-२२

में वारी जाऊँ चंदन चरखाने,
में वारी जाऊँ कारीगर गांधी करतार ने।
में वारी जाऊँ रामजी की रचना ने,
म्हारो चरखो चले सवायो म्हारा राम।
में वारी जाऊँ भंवर भनकता ने
में वारी जाऊँ चंदन चरखाने,
भावभगति की रूई मंगाई,
सुरति पिंजावण वाली म्हारा राम।
गांधी पिंजारो पींजण बेठ्यो,
विरह की तांती झणकाई म्हारा राम।
ताकलियो म्हारो तत्व नाम को,
चमर कियो चतराई म्हारा राम।
में वारी जाऊँ कारीगर गांधी के।।२।।
इणा चरखा के पांच पांखडी,
गांधीजी भणकाई म्हारा राम।
पांची सखी मिल कातन लागी,
काते हरि की प्यारी म्हारा राम।
झिण झिण कातूँ बाई गुडी नी पाडूँ।
टूट्यो तार संवारूँ म्हारा राम।
बारा बरस में पिउजी पधारया।
एक रूपइयो लाया म्हारा राम।
नणदल बई के दियो मुकलावो।
छोटो देवर परणायो म्हारा राम।

म्हारो चरखो बडो गुणकारी जी।
जदी हिवडे हार घडायों म्हारा राम।
कबीरा को जदी चरखो चाले,
गांधीजी चलावे इक धारा म्हारा राम।
राम नाम लइ गांधीजी सूत काते,
लागी राम झणकारा म्हारा राम।

- एक और गीत में श्री पटेल कहते हैं हे मन! मेरी बात का हुँकारा देते जाना। मन में उसको समझते भी जाना। एक लंगोटी वाला बाबा जिसका कि नाम गांधी है, वह यद्यपि शरीर से कमजोर है, तथापि मन का सच्चा है। वह सब के काम आता है काले गोरे में भेद नहीं समझता। वह रहीम को चाहता है इसलिए उसे राम भी चाहते हैं- जो सब के घर में उजियारा चाहता है-ऐसा सूर्य एक ही है। वह पराये दोष नहीं स्वयं के देखता है। मन में एकता रखने से ही सारे कार्य हो सकते हैं। एकता प्रतीक वह ''एकतारा'' बनाता है। धूप-छाँव में ही उमर बीत जाती है। इसलिये हे मानव! तू क्लेश, ईर्ष्या को छोड़कर प्रेम की रखवाली क्यों नहीं करता?

हे गांधी पुत्रों! गांधी का नाम उच्चरित करो और धरती मां का भार उतारने का संकल्प लो। ऊँच-नीच का भेद इस पृथ्वी से मिट जाये तो सुख की गंगा प्रवाहित होने लगे। और गांधीजी का बलिदान व्यर्थ न होने पाये।

गीत-२३

हुंकारा देता जाजो हो हुंकारा भिड़ता जाजो हो।
म्हारी भी सुणता जाजो हो कुछमन में गुणता जाजो हो।
एक लंगोटी वारो बाबोजी जिन को गांधीजी नाम।
तन को काचो मन को सांचो आइग्योसब के काम।
कारा गोरा मनखां में क्यों करे भेद रे भइया।
ओरहीन ने चावे वी ने राखे राम रमइया।
सबके करे उजारो ऐसो सांचो सूरज एक।
कई पराया दोस टटोले खुद की सूरत देखा।
काम सबे आसान बणे जो मन में एको धारो।
धनन् धनन् धन धनन् संप को बाजे जो एकतारो।
धुप छाव को खेल उमरिया बीती जाये थारी।
क्लेस, जलन ने छोड़ प्रेम की क्योंनी करे रखवारी!

गांधीजी का पूत सुणो गांधी को नाम उचारो।
धरती मां को भार अरे भरतारां आज उतारो
ऊंच नीच को भेद मिटे तो सुख सिरने लेरावे।
गांधीजी को खून अवरथो सुण भाया नी जावे।

- चरखा श्रम का प्रतीक माना जाता है। उस समय जबकि भारत में विदेशी वस्त्रों का आयात अंग्रेजों द्वारा किया जा रहा था। यह आवश्यक हो गया था कि हम उनका बहिष्कार करें और श्रम के प्रतीक चरखे को अपनाकर अपनी बिगड़ी हुई अर्थ व्यवस्था को सुधारें। इस विषय पर अनेकों लोकगीत उपलब्ध हैं, जिसमें कहीं चरखा जीवन का आध्यात्मिक संदेश वाहक बना हुआ है तो कहीं श्रम का प्रतीक। चरखे से संबंधित श्री शिव उपाध्याय ''तराना'' द्वारा रचित गीत सन ६० में ग्राम सुधार पत्रिका में प्रकाशित है।

गीत-२४

सीली सीली हवा चली री,
बरखा में चरखा चाले।
कोई रस्सी बंटे बुने या,
ताना में बाना डाले।
ईका स्वागत सारू मोहन,
अपनी बीन बनाता था।
रोम रोम में पुलकित हुई ने,
राग मने मन गाता था।
गांधी भी आंधी पानी में,
अपनो मारगनी भूल्या,
थारा सरका गेर गंभीरा,
काम करीने नी फूल्या।
तू हे पानी वाली रानी,
तू हे खूब भरी पूरी।
थारा सरने जो जो आया,
भागी दिन की मजबूरी।

- गांधीजी ने समाज सुधार का व्रत लिया था। लोक गीतों में इसी तथ्य को रेखांकित करने वाले भाव भरे पड़े हैं। एक राजस्थानी लोक गीत ''फगुन की लहर'' जन चेतना पैदा करते हुए गांधीजी के सपनों को साकार करने का आव्हान

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

किया गया है। छोटे छोटे खेतों की चकबंदी करके सहकारिता के माध्यम से कृषि की पैदावार बढ़ाने का इसमें चित्रण मिलता है।

गीत-२५

करसों सारा जागो भाइयों भार देश रो आयो रे।
गांधी बाबा का सपनां रो टेम घणो सरसायो रे।
अन्न री तकलीफमटी-व्हैंगों कायो रे करसों चेतजो।
हाँ रे करसों चेतजो।
सहकारी खेती हाथां झेल जो करसों चेत जो।
छोटा-छोटा खेत थारे दूणो खरचो लागे रे।
रोजरी लडाई होवे धरती छीजे करसो चेतजो।
हां रे करसों चेतजो।
फूट में फजीती थोंरी रे करसों चेत जो।

- सहकारी गीत माला से साभार.

- श्री पी.डी. व्यास ने वर्षों पूर्व कुछ प्रेरणात्मक गीत लिपिबद्ध करवाये थे। प्रथम गीत में देश के नौजवान को एकता के सूत्र में बांधने, कदम मिलाकर चलने और भारत माता के लिए अपनी अवाज बुलंद करने का आव्हान किया है। विश्व शांति के लिए दुश्मनों से टक्कर लेने, शत्रु की ललकार पर कमर में तलवार बांध लेने और रण भूमि से दुश्मन को मार भगाने के लिए कटिबद्धता पाई जाती है।

गीत-२६

आवो सब मिलकर कदम बढई दो रे।
मां का खातर अपणी आवाज उठई दो रे।
बिस्व सान्ति फेला-वांगां ने दुस्मन से टकरावां गां।
अब सतरू की हुई ललकार कमर में बांधीली तलवार।
रणभूमि में मारा मार, दुश्मन कर दांगां बेकार।
सीस हतेली परलइ के हम प्राणों की आहुति दांगां।
रणभूमि में खून बहई के दुश्मन से टकरा वांगां।
शेर शिवाजी की शान लईने परताप को मान लइने।
गांधी सुभास की आन लइके म्हां दुश्मन से टकरा वांगां।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

- दूसरा लोक गीत भी लोक धुन पर आधारित है। यह भी एक अनुकरणात्मक आव्हान गीत है। जो राष्ट्र के नौजवानों में प्रेरणा का संचार करता है।

गीत-२७

भारत की तकदीर बनइ दो
उठो जवानो भारत की तकदीर बनई दो।
फूलां का इन गुलसन से कांटा के हटइ दो।
तोड़ी के सारो जाल विदेसी करो देस के अपनो।
री-नी जाये देखो कंई अधूरो अपणो सुंदर सपनो।
अपने साथे रेगा बड़ा बड़ा बलवानां की सक्ति।
श्री जवाहर लाल की हिम्मत बापूजी की भगती।
हे नोजवानों इठो ने भारत की तकदीर बनइ दो।
फूलां के इनी गुलसन सें कांटा के हटइ दो।

- एक और बाल गीत में इंदौर के मनस्वी नागर ने गांधीजी को भावांज्जलि के रूप में प्रस्तुत किया है। एक बार जवाहर लाल नेहरू पूज्य महात्मा गांधी से मिलने साबरमती आश्रम पर आये। वहां कुटिया में उन्हें एक लाठी पड़ी हुई दिखाई दी पूछा हे बापू! बतलाइये अगर हिंसा करना भयानक पाप है तो आप लाठी लेकर क्यों चलते हैं। आप इस हिंसा के प्रतीक को अपने साथ क्यों रखते हैं? गांधी बाबा व्यंग्य समझकर हंसकर बोले-तुम जैसे शैतान बच्चे जब शैतानी पर उतारू हो जावें तो ऐसे समय में यही लाठी जान बचा देती है। नेहरूजी निरूतर हो गये थे।

गीत-२८

गांधीजी से मिलने आए साबरमती जवाहर लाल।
बापू की लाठी देखी तो सूझी एक बात तत्काल।
कहा जवाहर ने गांधी से हिंसा अगर भयानक पाप।
तो लाठी लेकर क्यों चलते हिंसक को क्यों रखते आप।
हंसकर बोले गांधी बाबा लाठी खूब बचाती जान।
जब शैतानी करने लगते तुम जैसे लड़के शैतान।

- आदिवासियों में भील जनजाति का विशेष महत्त्व है। ये लोग विंध्य और सतपुड़ा के पहाड़ी भागों में नर्मदा तथा माही नदी के किनारे पर बसे हैं। भीली इनकी बोली है। इसका बड़ा समुद्र लोक साहित्य है। भारत में गांधी वादी आंदोलन चला, तब देश व्यापी लहर ने मालवा के भीलों के मानस् को भी उद्वेलित किया। स्वतंत्रता आंदोलन ने जब सारे देश को

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मथ दिया था, तब भील भाई भी इससे अछूते न रह सके। गांधी आंदोलन से प्रभावित इनके दो लोक गीत यहां प्रस्तुत किये जा रहे हैं। इनकी प्राप्ति का स्रोत दत्त महाराज कृत भिलोडी रामायण एवं फूल जी भाई भील हैं।

गीत-२९

रई ने केवँ बोले रे गांधी हंई आवे।
धोली ने टोपी रे गांधी हंई आवे रे।
लावों ने कुरतो पेरियो गांधी हंई आवे रे।
एक धोतरी यूँ पेरियां गांधी हंई आवे रे।
अंगरेजां नुँ राज गांधी हंई आवे रे।
गुलामी नहीं करवी गांधी हंई अवे रे।
ऐम के तो आवे गांधी हंई आवे रे।

- एक और भीली गीत जिसे फूलजी भाई भीलने गाया है, यहां प्रस्तुत है। इसका भाव यह है कि मनजी नामक भील सचमुच बड़ी दुविधा में पड़ गया है। उसने सोचा बड़ा असमय है और कुआ टूट-फूट गया है। असमय (दुर्भिक्ष) पड़ गया है और ऐसे ही बुरे समय में पिता का देहान्त हो गया है। इधर दुष्काल का पड़ना, उधर पिता का मरना उसे दोनों तरफ मौत दिखाई दे रही थी कि पिता का देहावसान और कुए का गिरना एक साथ हुआ। मनजी ने फिर शान्ति और धैर्य धारण करते हुए कहा। कुआ खोदूँ या मरण भोज करूँ। पर उसने गांधीजी का उपदेश मानकर मन ही मन कहा-मनजी मेरी बात सुन। भोज करेगा तो बाल बच्चे भूखों मर जावेंगे। पशु संपदा नष्ट हो जावेगी। इसलिए भोज का विचार छोड़ और कुआ खोद उसकी मरम्मत कर। इससे बाल बच्चे भी जीऐंगे और पशुधन भी बचेगा। समय बदलेगा तो भोज भी कर लेगा। ऐसा सोच उसने मृत्यु भोज का विचार त्याग दिया और कुआ खोदने लगा। प्रस्तुत गीत में गांधी वादी विचार धारा को पोषण मिला है।

गीत-३०

हांसु राईने केवें बोले मनजी नाळ मांय रे।
समीयू ने पडज्युँ ने कूडो धरीयो मनजी नाळ मांये रे।
सभीयू रे पडीयू ने बापू मरीयू मनजी नाळ मायं रे।
काल तू परनार ने बापन मरनार मनजी नाळ मांये रे।
बापू रे मुओ ने कुडो धरीयो मनजी नाळ मांये रे।
नीयाते करू के कुडो खोदुँ मनजी नाळ मांये रे।
गांधी को केणो हांचल मारी वातां मनजी नाळ मांये रे।
नीयाते करीने सोरां मरहैं मनजी नाळ मांय रे।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सोरां रे मरतां हाँ पल मरहँ मनजी नाळ मांये रे।
नीयाते सोडी ने कुडो खो दी मनजी नाल मांये रे।
कूडो खोदो हाँ ते सोरां जीवहँ मनजी नो मांये रे।
सोरां रे जीवहँ ते नामरे है मनजी नो मांये रे।
समीयू रे वळ हें ते नीयाते कर हूँ मनजी नाल मांये रें।
रे मनजी भाई कुडो खोदवे लागो मनजी नाल मांय रे।

- (फूलजी भाई भील राजस्थानी भीली लोकगीत से)

- गांधीजी का बहु आयामी व्यक्तित्व था उनका अपना लिखा विशाल साहित्य है। उनकी अपनी विपुल आध्यात्मिक देन है। बापू ने शिक्षा दी थी बुरे मनुष्यों का साथ न करना, पर अपनी बुराई दूर करना, अंधविश्वासों को दूर भगाना, मृत्यु भोज न करना आदि। इन्हीं भावों की अभिव्यक्ति में श्री भावसार बा जैसे ख्यात गीतकार एवं व्यंगकार ने अपने गीतों में की है।

गीत-३१

सुन रे नाना सुन रे कान्हा सुन ओ नानी धापू।
बडा काम की बात बतइग्या-अपने अपना बापू।
बुरा मनक को साथ नी करनो-ऐसी रीत चली हे।
पण अपना में से बुरई के हेड़ो-तो जादा बात भली हे।
अबके पानी खूब पइयो तो आखों कुवो भरइग्यो।
कालूजी का कुवा में कुतरो पइयो ओर मरी ग्यो।
सभी लोग ना बंद करीदयो उनमें पानी भरनो।
सुक्कलजी का पास गया के सुद्धिकेसे करनो।
सुक्कल बोल्या-सो दो सो बालटी पानी हेडो।
सुद्धि तो जद होय,जरा सो गंगा जल भी रेड़ो।
यो सब काम करयो कालू ने।
फेर सुक्कलजी से बोल्यो-अब भी नी पीवे हे कोई,
नवरो पानी ढोल्यो।
सुक्कल पूछे-बताओ, कुतरो कां हेडी ने फेंक्यो।
कुतरो! कुतरो तो कुआ में होगा।
कीं-ने हेडयो देख्यो।
जो मन कुआ में बिसन-कुतरा पइया गले जूँहार।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इनके जद जक नी हेडो-तो केसे हो उद्धधार।
खिचड़ी के पंगत में परसों कँस्या पेट में टापू।
बडा काम की बात बतइग्या अपने अपना बापू।

- समाज सुधार आंदोलन में गांधीजी के बहुतेरे उपदेश भरे पड़े हैं। जिस देश की माटी से हमारा तन विकसित हुआ जिसका फल मेवा और अन्न खाकर हम पुष्ट हुए- उसी के गीतों का गुणगान कर हम गौरव का टीका अपने मस्तक पर क्यों न लगावें। जिस देश में गंगा, यमुना, सोना और चांदी बरसाती है और जिस देश में गौतम और गांधी की वाणी शांति के पुष्पों की वर्षा करती है। उसकी महिमा का हम क्यों गुण गान न करें। ऐसा ही एक सुमधुर समाज सुधार वादी गीत मालवी की एक विधा ''तुर्रा किलंगी'' की तर्ज पर प्रस्तुत है; जिसे स्वर दिया है ख्यात मालवी कवि ''शिवनारायण उपाध्याय'' तराना ने।

गीत-३२

जिना देश की माटी से यो बन्यो हमारो तन मोटो।
जिना देश की माटी से तन्यो हमारो तन मोटो।
जिना देश का फल मेंवा ओ फसल खेत की खाई ली है।
जिना देश की गोरव गाथा रोज जवानी गइरी हे।
के-प्यारो प्राण से जादा-बडी भारी है मरजाद।
के गइलां गीत हमईका, लगइलां गोरव का टीका।
जिना देस की गंगा जमना सन्नो चांदी बरसावे।
जिना देस का गोतम गांधी शांतिसुमन के सरसावे।
जिना देस में गोफन वाली मतवाली रानी रे वे।
जिना देस में नई नवेली खड़ा खेत सगला सेवे।
मेहनत करने वाला लोग भगइ दे जड़ से सारा रोग।
सभी के वी तो सुख देवे केई से कंई भी नी लेवे।
जिना देस में कोयल तोता मोर पपीहा भी गावे।
जिना देस की शोभा सामें नंदन सदा लजइ जावे।
जिना देस का जंगल में हे भांत भांत का पाना।
जिना देस का पेटा में हे भरी पूरी सब खानां।
कुदरत को हे ऐसो ठाट लगावे सदा सरग की बाट।
सुहानो सूरज भी जागे चांदनी चंदा भी जागे।

जिना देस में तानसेन स्वर की देवी पूजा थी।
जिना देस को साधन कुभीने सारी दुनिया धूजी थी।
जिना देस में सपना कीभी बात निभाने वाला हे।
जिना देस में प्राण चढाने वाला भी मतवाला हे।
सत्य की जीत सदां होवे हरिचंद अपनी सब खोवे।
बतावें ऐसी उजली बाट झूठ के जड़ से दे वी काट।

- ३० जनवरी, १९४८ को पूज्य बापूजी को एक हत्यारे की गोली ने सतत् चिर निद्रा में सुला दिया। देश पर वज्रपात हुआ। इस प्रकार भारत भाग्य विधाता दोंनों का सहायक,आध्यात्मिकता का पुजारी, हरिजन का उद्धारक, दलिता का देवता, हमसे हमेशा के लिये बिछुड़ गया। गांधी आज हमारे बीच में नहीं रहे तथापि लोक मन में हमेशा समाये हुए हैं। वे तो अजर-अमर हैं। अविनाशी है। जब तक यह धरती रहेगी, उनका नाम पच्चीसवें अवतार के रूप में जाना जाता रहेगा। लोक मानस उन्हें कभी नहीं भुला सकता, वह तो उन्हें आज भी विष्णु रूप में समझ वैकुन्ठ वासी के रूप में जानता है। वह कलिकाल के घोर अंधकार में हमारे लिए प्रकाश स्तंभ का काम करता रहा है। तभी तो लोक गायक श्री मोहन लाल वर्मा अपनी मीठी धुन में गा उठता है—

गीत-३३

वेकुण्ठ करो विसराम, गांधी भगवान,
यई समझाना, भारत में फिर से आना।
अब कांगरेसी इतरा भला नंई,
यां आपरी नीती चली नंई।
सब हुवा स्वारथी कुरछांपद ही थागे।
कांगरेस की बगडी गई हे आगे।
अब गइयां इतरी रई नई।
मधुबन को कंई भी पतो नई।
अबे कांगरेस का आपा नया जमाना।
हे गांधी देवता फिर भारत में आना।
अब पर-नार मां के समान नई।
छेडे रे कोई बी नारी को।
ललना बरसाने वाली को।
अब पुलिस पकड लई जाय बसाये थाना।
हे गांधी देवता रक्षा को भारत आना।

- गांधीजी के विष्णु लोक में जाने पर भी लोक मानव उनके कर्ज से मुक्त नहीं हो पाया है। आज भी गांधीजी के सुराज की चर्चा करता है। उनके सिद्धांतों की दुहाई देता है। उनके राम राज्य की परिकल्पना को साकार होते देखना चाहता है। पर अधिकांश लोग गांधीजी के सिद्धांतों पर अमल नहीं करते। उनके त्याग और तपस्या को भूल गये। अब तो ''घर भरो और मौज करो'' जैसा राजनीति का सूत्र बनता जा रहा है। इससे आम जनता खिन्न है। देखिये गांधीजी द्वारा प्रणीत राम राज्य के सपने की आज क्या दशा हो रही है। इसका सुंदर चित्रण एक काव्य में मिलता है। इस गीत काव्य का सृजन आज से २५ वर्षों पूर्व कायरा ग्राम वासी श्री मोती लाल पटेल ने एक परचा छपवाकर किया था।

गीत-३४

केवे थां के किरसाण सुणो रे नेतागण जन प्राण।
राम राज को सपनो रइग्यो जो केता गांधीजी जाण।
अबे चल्यो सिल सिलो बोट को सभी केवे किरसाणा।
थांका बल पे जीतांगा ने और करां खरताणा।
थीं तो म्हांका अन्दाता हो कांगरेस या केवे रे।
ने बेल जो थांका अन्दाता है बोट वाणी मैं डालो रे।
अणी बात के सुणी सुणी ने म्हांको मर हरखाणो रे।
वणी टेम पे जनसंघ वारो सईकल लईने आणो रे।
केबा लाग्यो बोट हमें दो कांगरेस के मत मानो रे।
म्हीं तो थां के जादा सुख दांगां ओ म्हांका सिरताज रे।
कांगरेस के बोट देवां के दवांगा संघवारा के।
याही वातां सोच सोच के म्हां को मन थो न्हावा के।
कुण झूठ हे। कूण सांच हे। या ते करी नई पाया।
भोला भोला किरसाणां के अणने यूं ई लूटी खाया।
गांधी तो चल्या गया उणरा भी केणा बिसराया।
खावो पीवो गला काटके केवे हम सेवक भाया।
यूं ही पारटयां करीने खाली ही दुखडा गाया।
करतब अपणा भूल भाल के लगा जुटाने वो माया।
करसाण तो पेलां जो देता ''कर'' आज भी ऊही देवे रे।
पणई लोग झूठी कई कई के अपणाही पापड बेले रे।
अपणो घर तो टूटी ग्यो यो रईग्यो छपर पुराणो रे।
नवी योजना बणा बणा के मन के यूं बिल माणो रे।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

केवे थां के किरसाणा सुणो रे नेता गण जन प्राण।
करोवणी सूचना के पूरी जो केता गांधीजी जाण।

- अंत में लोकगीतों की इस गंगा में अवगाहन करके अपना कलिमल धोने के लिए हम प्रयासरत रहें। तो गांधीजी को यह हमारी कर्ज अदायगी होगी। सच्ची श्रद्धांजलि होगी। गांधी का जीवन दर्शन आज भी हमारे जीवन में ''देहिक-दैविक, भौतिक ताप राम राज नहिं काहुहि व्याया'' वाली पंक्ति रोशनी दे सकती है। जिन भौतिक मूल्यों के विरूद्ध वे आजीवन लड़ते रहे, वे ही विद्रूपताएँ और विसंगतियाँ हमारे जीवन को अब भी लील रही हैं। ऐसी स्थिति में गांधीजी के उज्जवल विचार और चरित्र का आदर्श ही भारत का नैतिक आधार हो सकता है।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गांधीजी पर केन्द्रित लोक शैली के गीत

संकलन
चन्द्रशेखर दुबे
२४२, तिलकनगर इन्दौर
म.प्र.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

-रामदंगलीय रचनाएं-

-१-

अहिंसा परम धर्म है मूल मंतर. (मंत्र)
जपा कर इसे तू देशबन्धु निरन्तर.
जो पूछा किसी ने कि महाराज गांधी.
गुलमी में जकड़े हैं हम आज गांधी.

मिलेगा हमें कैसे स्वराज गांधी.
तो बोले यूं भारत के सरताज गांधी.
अहिंसा परम धर्म है मूल मंतर.
अगर देश सेवा की अच्छी लगन है.

तुम्हारा यही देशबंधु परन (प्रण) हो.
स्वेदशी ही वस्तु का घर-घर चलन हो.
जियो तो सदा खादी का ही ये पतन हो.
मरे पर कफन ओढ़िये शुद्ध खद्दर.

था परकार (प्रकार) जब कि आसुरी बलव्या. (बलवान)
हरसू सताई गई जब कि राजा से परजा. (प्रजा)
सितम से जमीं कांपी आकाश लरजा.
ले औतार (अवतार) भारत में गौतम गरजा.

घुमाऊँगा अब मैं अहिंसा का चक्कर.
दुखी ''वर्मा'' जो थे महा दुख पाकर.
किया संगठन उनका समझा बुझाकर.
महान आत्मा भगवान बुद्ध आकर.

हरा देश संकट, ये मंतर (मंत्र) बनाकर.
अहिंसा परम धर्म है मूल मंतर.

-२-

गांधी बिगुल बजायेगा.
जो देश बंधु सुन पायेगा।
बन वीर जवाहर धायेगा.
होगा सो देखा जाएगा.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

खतरा जरूर वो खायेगा.
जो अपनी टेक चलायेगा।
रोवेगा और पछतायेगा.
न देश बंधु कहालायेगा।

तहरीर है वीर जवाहर की.
जो बात न माने रहबर की.
होती है हंसी उस लीडर की.
जो दुनिया को बहकायेगा.

दिल एक हो दोनों अरमां के
हिन्दू के और मुसलमां के.
सरमे फक्रे हिन्दुस्तां के.
सौदाये वतन कहलायेगा।

दो एक बना स्कीम चले.
एक हिन्दू एक मुसलीम चले.
जब राम के साथ रहीम चले.
है कौन जो कान हिलायेगा.

साधन का ''वर्मा'' टेम रखो।
हिन्दुस्तानी नित नेम रखो.
नेहरू आजाद सा प्रेम रखो.
आजाद वतन हो जायेगा।

-३-

सुनो वीरों हौले हौले.
गुजरात से बूढ़ा बोले.
हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी, बंगाली और मराठी.
मेवाड़ी और गुजराती, पंजाबी व मदरासी.

सब भाषा के बोल टटोले रे.
भारत के चांद सितारों माता के वीर दुलारों.
नैया के खेवन हारो, भड़का दो बन अंगारों.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आजादी आग के शोले रे।
धनवान सुनो और निर्धन, क्षत्रिय, शूद्र, वैश्य.
ब्राह्मण अपना जीवन धन कर दो अर्पण.
सब छोटे, बड़े, मझोले रे.

अमरीका, रूस, बर्तानी, इटली, जर्मन, जापानी.
कर रहे सभी मनमानी, पर तुमने ऐ हिन्दुस्तानी.
ना नैनन के पट खोले रे.

है जब से चली बम बाजी.
रहे तीर न तीरन्दाजी.
सब पंडित, पादरी, काजी.
दिखे वन वन के नाजी.

बरस रहे बम के गोले रे.
''वर्मा'' कहे भारत वालो.
बेकस अब होस संभालो.
हो जाओ फौलाद के मतवालो.

घर में से इन्हें निकालो.
ये चोर घुसे दिन धोले (दिन दहाड़े) रे.

-४-

तेरे त्याग से मेरे त्यागी.
भारत की दुनिया जागी.
तूने फूका शंख अहिंसा.
ध्वनि जिसने सुनी वो जागा.
तूने रास्ता अमर बतलाया.
उठा हाथ ले कर तिरंगा.
चला देश भक्त अनुरागी.

तूने गूढ़ भेद बतलाया.
इस हिन्द की पलटी काया.
अनजानों को समझाया.
सदाचार का पाठ पढ़ाया.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दुराचारी कहें तुम्हें बागी.
तूने न्यायाधीश की पदवी.
सेवा में देश के लगा दी.
तूने फैला दी चिनगारी.
जला भारत विरोधी की टोपी.

बनो देश के तुम फरयादी.
अनमोल बात बतादी.
लेना है अगर आजादी.
कातो चरखे, पहनो खादी.

जा पाक साफ बेदागी.
सी.पी. का है सावरकर.
यू.पी. का है ''वर्मा'' जवाहर.
बंगाल का सुभाषचंदर.
बिहार का है राजेन्दर.
गुजरात का बेकस त्यागी.

-५-

जोशे वतन आंधी बन जा.
आंधी बन भारत पर छा.

जोश बबूला बन, सभी अन्धेर उड़ा.
गफलत के मतवालों को होश में ला.
कानों में आजादी का संदेश सुना.
जोश हेतु हर बुलबुल को जांबाज बना.

जोशे वतन आंधी बनजा.
वक्त यही कर के दिखता फर्जे अदा.
भूले हुए गुमराहों को राह बता.
मंत्र अहिंसा का सिखला दे जल्वा.
हिंद के रहने वालों खादी बेकस पहना.

जोशे वतन गांधी बन जा.
गांधी बन आंधी फैला.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

-६-

जागे चले भारती, जब में मचा डाले शोर.
पैगाम आजादी का लाये हैं गांधी.
चरखा करे जग में शोर.
देखो अहिंसा का सूरज उग कर.
जग किया फिर से भोर.
कब तक गुलामी में दबकर पलोगे.
अब बनो सीना जोर.
अगर नौजवानी है तुममें कुछ भी.
जो दे जवानी का जोश.
कैदे गुलामी की बेड़ी वीरो.
फेको अभी तोड़ फोड़.

पंजाब, बंगाल, यू.पी. और सी.पी.
सारा वतन बंगलौर.
हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई.
ठाकुर चले राठौर.
स्वराजी सिपाहो ले कर तिरंगा.

लहरा दो चारों ओर.
अब इन्कलाबी और जिन्दाबादी के.
नारे का जग में है शोर.
भारत के ऊपर जुल्म की बदली.
छाई है काली घटा घनघोर.
माया का दामन पकड़े है दुश्मन.
''वर्मा'' करे अब गौर.

-७-

मेरे बापू से निराला, मेरे गांधी से निराला.
कोई और नहीं।
जिसने जग की माया तजकर.
और अपनी काया तजकर.
ऐसा वचन निभाने वाला, कोई और नहीं.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

धीरे-धीरे हौले-हौले.
जिसने सब के बंधन खोले.
ऐसा जनता का रखवाला.
कोई और नहीं।

हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई.
आपस में सब भाई-भाई.
ऐसा द्वेष मिटाने वाला.
कोई और नहीं.

''वर्मा'' जो है करना कर ले.
दुनिया आनी जानी समझ ले.
फिर तो तुम को कहने वाला.
कोई और नहीं।

-८-

बापू तुम्हारा हिन्द में गमगी तराना हो गया.
नाज था जिस पर हमें वो सुरपुर रवाना हो गया.
बिड़ला भवन में प्रार्थना करने सभा में आये तुम.
पिस्तौल हत्यारे का जहाँ तुम पर चलाना हो गया.
एक दम दनादन तीन वार तुम पर चलाई गोलियाँ.
पेट पर दो और एक सीना निशाना हो गया.
तीस एक अड़तालीस को साढ़े पांच का टाईम था.
छोड़ कर देहली में देह अब हंसा रवाना हो गया.
जालिमों का जाल था, मौत का ये काल था.
परियो से आन कर कहां चलिये जमाना हो गया.

अफसोस है कि ये कलंक हिन्दू कौम पर लगा.
बेदार अहिंसा से ये सारा जमाना हो गया.
किसको सुनाये जाके हम टूटे दिलों की आरजू.
बापू तुम्हारे कौल का अब हम को निभाना हो गया.
बापू तुम्हारा गमगीं तराना ''वर्मा'' हमेशा गाएंगे.
दुश्वार वाणी आपकी अब सुनना सुनाना हो गया.

-९-

हो नहीं गुमराह गम में हम न मनमानी करें.
जैसा बापू ने किया, वो त्याग कुर्बानी करें.
सीख न उनकी भुला दें, जो हमें सिखला गये.
रास्ता जो कि अहिंसा का सदा सत्य का बतला गये.

मरते-मरते जो हमें आजाद हैं करवा गये.
उसको कराने पूरा हम खून का पानी करें.
माना ये कि बापू हो गये हम से जुदा.
वो हुए मर कर अमर हम को जीना सिखा.

दोरहा कर याद जिनकी हिन्द और पाकिस्तान.
और विदेशों में भी जिनकी याद में अपनी जां निशां.
थे किये नीचे कन्होसी, हम कदर दानी करें.
उस पूज्य बापू को हम यही श्रद्धांजली अर्पित करें.
मरते दम तक हम तुम्हारी बात की पूर्ति करें.
हिन्दू मुसलिम एकता भारत में स्थापित करें.
चल उसूलों पर यही हिन्द को गर्वित करें.

यूं अदा हर एक इन्सा फर्जे इन्सानी करें.
खूब मातम कर लिया अब क्या है करना यह सुनो.
संघ हमारी राष्ट्रीय सरकार को ये देना सुनो.
परचार (प्रचार) हर मैफिल में हो यह रंगीले का सुनो.
आप भी एस्लाई के मेहमां गुरू वर्मा सुनो.
हम न जाएं गलत रस्ते, आप अगवानी करें.

-१०-

संताने हिन्द सपूत कहां है अछूत.
देश पर तारी अब आई बारी हमारी.
जो हम से अछूत रखेंगे बसर.
हम उनसे होके कहेंगे निडर.
ये गांधी का जमाना है.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आखिर तुम्हारी कहे पंत, हरिजन गांधी का.
है फर्ज हर हिन्दुस्तानी का.
गफलत की जगह बेदार करें बेदारी.
अब छुवाछूत को भंडारें.
सुनो देश के दुश्मन गद्दारों.
भारत में तुमने बहुत करी गद्दारी.

जिसने हमको ठुकराया है.
अब समय हमारा आया है.
हम भक्त हैं उसके.
जिसके तुम हो पुजारी.

-१२-

हिन्द के राष्ट्रवाद पर ये बनाखी गोलियां.
है सुर्ख नक्शा बन गई घर ही की गोलियां.
बोलो ये कैसे जायगी दिल से भुलाई गोलियां.
चलवा के जो बटवा रहे मिठाई-गोलियां.
कर सकेंगी देश की ये क्या भलाई गोलियां.

हिन्द के मर्मस्थान पर इसने चलाई गोलियां.
जिसने कि इज्जतो शान से झुका लिया सारा जहान.
बूढ़ी ७८ साल की देह पर चलाए नौजवान.
हिन्द कौम के लाल आज कह रहे हैं यू असंख्य.
पागलपन से एक की जाति को लग गया कलंक.
कर रही इस कौम पे जग हंसाई गोलियां.
गुल हों जहां एक रंग के जगमगाता है न वो गुलसितां.
गुल सब तो वो ही कहाएगा, जिसमें हो रंगी क्यारियां.
खाना पड़े जिनकी वे करते हुए चाहे सिंचाई गोलियां.

बापू न कुछ जफा रूहों से तेरी वफा को भुला दिया.
फूले नहीं समा रहे तुम को जहां से मिटा दिया.
लेकिन मिट सकती नहीं तेरी सिंचाई गोलियां.
जिसका अहिंसा धर्म पर आरूढ़ था सब कारभार.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कई गुमराह अब तलक इसका नहीं पाये पार.
हंस-हंस के खाना सीने पर जिसने सिंचाई गोलियां.

बेकस जो हर पौधे को खून से सींचता हुआ.
''वर्मा'' ये सब्ज बाग वो छोड़ कर माली चल दिया.
हंस कर के जिसने सीने पर खा कर दिखाई गोलियां.

- श्री पूनमचन्द कौशल, २६/१०, परदेसीपुरा.
इन्दौर, वर्मा रामदंगल पार्टी के सौजन्य से प्राप्त।

-राम दंगली रचना-

गांधी ने किए जो-जो ऐलान जिन्दगी में.
होंगे कभी तो पूरे अरमान जिन्दगी में.

तरकशों कमां कांधे पे रखे.
कस दिए सभी हथियारों को.
ले कर बलाएं मां ने कहा.
तू तोड़ न व्यूह के द्वारों को.
बेकार काटना फौजों का.
ये पेट के खातिर लड़ते हैं.
तू मारना जा कर मैदां में.
चुन चुन के सिपहसालारों को.

-२-

जब कंस का बढ़ा था अन्याय कातिलाना.
भक्तों से हो रहा था आबाद जेल खाना.
नेता हमारे अपने जेलों में सड़ रहे हैं.
हर रोज नए उन पर हर जुल्म बढ़ रहे हैं.
अहिंसा के पुजारी हैं हम ने नहीं ये जाना.

-३-

जमाने की नजर से ये जमाना जाने वाला है,
हमारा वो जमाना हुक्मरान आने वाला है,

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ये झंडे लाल-पीले और काले रह नहीं सकते,
तिरंगा प्यारा ही देहली पे फहराने वाला है,
लड़ाना चाहते हैं आपस में वो, हम लड़ नहीं सकते,
हमारा महात्मा गांधी भी बड़ा गम खाने वाला है,
हमारे देश भारत से इन्हें जाना ही है ''ज्ञानी'',
वह बहकेगा हम को आज जो बहकाने वाला है।

-४-

पैगाम आ चुका है रुखसत का अब तुम्हारा,
अब हो नहीं सकता हरगिज यहां गुजारा.
आजाद हिन्द वाले आजाद ही रहेंगे.
आजादी के लिए ये दुख दर्द भी सहेंगे,
अहिंसा का कर्म ले कर फिरते हैं हम दुधारा,

- श्री लक्ष्मण सिंह ब्रह्मचारी,
लोक-नायक नगर, ज्ञान पार्टी इन्दौर, के सौजन्य से प्राप्त।

-बिरहा गीत-

-१-

गांधी कहूँ कि अब मैं तुमको नाथ त्रिपुरारी कहूँ,
की कहूँ गोकुल का ग्वाला या कि बनवारी कहूँ.
लाल लव-कुश से जवाहर-बोस ये दो थे पिसर.
या अयोध्यावाले तुम को अवधबिहारी कहूँ,
कि कहूँ गोकुल................

राज दिलाया पांडवों को और जवाहर को रतन,
या सुदर्शन चक्रवाले कृष्ण अवतारी कहूँ,
बढ़ाया मान गोकुल का और शान रख ली भारत की,
नंद के लाला कहूँ या गिरधर गिरधारी गांधी कहूँ।
एक दिन तो कर त्रिशुल था, अब तिरंगा है ध्वजा,
कैलाश के वासी कहूँ या भोले भंडारी कहूँ गांधी.
हटाया भार भूमी (भूमि) का बदल-बदल हर वार ऐ गांधी,
भक्तों के वत्सल कहूँ या देश हितकारी कहूँ गांधी,

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

-२-

प्यारे बापू का मैंने हुनर देखा,
भारत में नए सा पिसर देखा,

१- चरखा चला कर खादी बनाया,
तिरगें में भी वही चरखा लगाया,

२- हुआ हिन्द में ऐसा महान गांधी,
हिटलर बोला अब जाओ मान गांधी,
हिम्मत न हारा निडर देखा प्यारे गांधी.

३- हिमालय से ले कर कन्याकुमारी,
भारत मां की लाज उनको प्यारी.
करते सब का आदर देखा प्यारे,

४- जैसे लाज द्रोपदी की बचाया,
कृष्ण ने सभा बीच था चीर बढ़ाया.
बुधईलाल गांधी सा नटवर देखा प्यारे.

-बिरहा-

झड़प- आया गांधी का पैगाम
करो अपना-अपना काम.

पलटा- चरखा चलाओ बनाओ खादी भारत के सब नरनारी.
भेदभाव सब मिटा देओ, बनाओ सुन्दर खादी प्यारी.
हिलत-मिलत सब में राखो, खतम करो ईर्षाप्यारी.
हिन्दू मुसलिम सिक्ख ईसाई मिटा देओ जमीदारी.
खेती करने वाले किसानो, न करो अब किसी की बेगारी।

कदम मिला कर चलो सभी, आई है अब अपनी बारी,
संगठन से सभी झुकते, पहाड़ जैसे अहंकारी.
कदम हमारा कभी हटे ना, हिम्मत है हमें भारी.
जोर लगा लो हिटलर चाहे, मानें न तुमसे हारी.
बुधईलाल ले कर तिरंगा बिता दी उम्र सारी.
गांधीजी की जय जय बोल कर जग जीवन ने ललकारी.
अंगरेजों भारत छोड़ो, गांधीजी किया इजहार जारी।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

-बहरतबील-

गांधीजी का सुन कर इजहार भागे.
हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई जागे.
रही मर्दों से नारी सभी आगे.
भड़की आग भागे गोरे भागे.
भाग गये गोरे सभी जगह कहीं नहीं पाया।
बदलदास हैं गुरूवर हमारे, सही सही है फरमाया.
आजाद हुआ सन सैंतालिस में, क़िले पे तिरंगा लहराया.
खुशी छाई भारत वर्ष. गांधीजी क्या मुस्काया.

दोहा- ३० जनवरी ४८ को आया ऐसा तूफान.
नत्थूलाल गोड़से ने लिए बापू के प्राण.
गोली मारी तीन हुई सीने के पार.
लहू लुहान हुए बापू बही खून की धार.

-दादरा-

हिन्द मां का प्यारा गांधी सुमन जा रहा है.
खादी का चादर ओढ़े, तिरगें का बांधे कफन जा रहा है.

१. हत्यारे ने सीने में गोली चलाई.
हरे कृष्ण हरे राम की आवाज आई.
सूना हुआ मन्दिर, सूना कर के भवन जा रहा है.

२. बापू-बापू सभी नर नारी पुकारें.
कहाँ छोड़ चले भारत मां को दुलारे.
छोड़ कर के गांधी, प्यारा वतन जा रहा है.

३. जाति धर्म का भेद है मिटाया.
जमीदारी राज सब खत्म कराया.
आंखों का तारा गांधी, मोहन मदन जा रहा है.

४. अहिंसा का पुजारी बेखबर सो रहा है.
जनता रोती, भारत भी रो रहा है.
बुधईलाल राम से लगाये लगन जा रहा है।

-पलटा-

लगन लगा के भगवन की ऐसी उनकी दाया है.
गांधीजी की मृत्यु सुनकर भारत में गम छाया है.
हम को तो मझधार में छोड़ा, अपना स्वर्ग बसाया है.
बुधईलाल और रतीपाल ने सही दर्शाया है.
प्यारे चलाओ चरखा बनाओ खादी.

-पलटा-

बापू कर गये दुनिया में नाम.
बिड़ला मन्दिर जाते सुबह शाम.
मारा गांधीजी को औसरवादी.

- श्री बुधईलाल बौरासी, सरखलीफा.
गोमा की फेल, हरिओम टेन्ट हाऊस, इन्दौर
से सौजन्य से प्राप्त.

बिरहा गीत

भरा कमलापति का दरबार, लक्ष्मी कर सोलह सिंगार.
देवता बैठे आसनमार, बैठे मन में करें विचार.

सुनी रोने की तभी आवाज.
रोने की आवाज सुनी, भगवन का सभी निहार रही.
गमगीन शब्दों में अबला, व्याकुल हो चिंध्धार रही।

हिचकी भर-भर रोय रही, नैनों से आंसू ढ़ार रही.
सिसक-सिसक कर रोदन कर, दुख भरे शब्द उच्चार रही.
असमंजस में डूबे देवगण, वह करूणा की धार रही.
उठी लक्ष्मी गले मिली, बेटी कह कर पुचकार रही.
भगवान उठे बोले, तुम काहे हमें पुकार रही.
कौन से दुष्ट ने घेरा या वहां किसी से रार रही.
या कोई जुल्मी जुल्म गुजारा, जिसको तू धिक्कार रही.

पलटा- धिक्कार रही हो जिसको, ऐसा कौन है शैतान.
भारत से कह रहा है कमलापति भगवान.
रोती सिसकती कह रही है लक्ष्मी संतान.
आये समुद्र पार से अंग्रेज बेईमान.
सब माल धन लूटा, और बन गये सुल्तान.
सोना व चांदी लूटा, मुझे कर दिया वीरान.
बेटों ने मेरे रोका, तो किये लहूलुहान.
उस प्यारे भगतसिंह की बेईमानों ने ली जान.
उस लाजपत को पीटा, जो था मेरी शान.
मारे गये बेटे मेरे हिन्दू व मुसलमान.
आँखों के सामने है मेरे बाग वो जलियान.
लाखों की क्या गिनती नितरोज हों बलिदान.
सुखदेव गुरू बिस्मिल उठते हुए जवान.
आजाद चन्द्रशेखर बोस थे लड़े मैदान.
झांसी की रानी मरमिटी रखने को अपनी आन.
कैसे रखूं मैं धीरज, कहो आप ही श्रीमान.
माता के दिल से पूछो किये लाखों हैं कुरबान.

पलटा- कुरबान किये लाखों बेटे, आखिर तो मै भी माता हूँ.
भगवान कहें धीरज रक्खो, अवतार मैं लेकर आता हूँ.
स्वयं भारत में आ कर तेरे सारे दुख मिटाता हूँ।
नाश करूँ दुष्टों का, सारे बंधन तेरे छुड़ाता हूँ।
आजाद करूँ तुझ को बेटी, दुष्टों का नाश कराता हूँ।
मानव तन धर कर प्रभु को गांधी रूप में लाता हूँ।
पोरबन्दर गुजरात में शुभ दिन, उनका जन्म सुनाता हूँ।

-६-

-गाना-

प्रभुजी खुद आये हैं, देश भारत में धर अवतार.
मानवता का पाठ पढ़ाने, भूले मानव को राह दिखाने.
सत्य अहिंसा का ले कर प्रचार रे।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

देश भारत में धर अवतार.
दीन हीन को देने सहारा, दलित समाज को आन उभारा.
निज प्राणों के प्राण से कर संचार रे.

बनकर दरिद्र नारायण आये, समय बाद संदेसा लाये.
भेदभाव से लगा अंगार रे।
सन १८६९ दो अक्टूबर, गांधी रूप में प्रकटे हैं ईश्वर
बाजी बधाई करमचंद के द्वार रे.

देश धर्म की रक्षा करने, ताप शाप संताप को हरने.
गांधी बन कर स्वयं करतार रे।
पोरबन्दर गुजरात में शुभ-दिन, देश के आये महान पुरखिन.
जिनको जाने सकल संसार रे।

चलत- जिनमें हैं संसार विदित, वो मोहनदास कहाये हैं.
कर्मचन्द के पुत्र बने, माता पुतली के जाये हैं.
बचपन में खेले कूदे, भई लीला बहुत दिखाये हैं.
युवक हुए इग्लैण्ड गये, बालिशटर बन कर आये हैं.
फिर देख दशा भारत भू की, वो मन ही मन सकुचाये हैं.
भाई से भाई लड़वाने के, कैसे जाल फैलाये हैं.
वो जान गये, अंगरेजों ने भारत में जुल्म जो ढाये हैं.
हर चाल को उनकी भांप गये, जुल्मी शासन के साये हैं.
अबलाओं पर गोली दागी, कई फांसी गये लटकाये हैं.
नव जवान बूढ़े बच्चे, कई गोली से उड़वाये हैं.

चलत- उड़वाया उन्हें गोली से, गांधी ने निहारा.
इस जुल्मी हुकूमत ने, जुल्म कैसा गुजारा.
जलियान बाग का वो, खूनी नजारा.
देखा न गया गांधी से, तो यही उचारा.
ऐ हिन्द के वासी, लगा दो यही नारा.
ये देश हमारा है, हमें जान से प्यारा.
ऐ हिन्दियों इस हिन्द को अब दे दो सहारा.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

एका करो आजाद होगा देश तुम्हारा.

पलटा- देश आजाद करूँ मैं ही, धुन बापू लगे लगाने.
वतन के कोने-कोने में लगे सन्देश सुनाने.
जो नींद में गाफिल सोये हुवे, उनको लगे जगाने.
ले सत्य-अहिंसा शस्त्र, चले साम्राज्य को ढहाने.
नरतनधारी परमेश्वर को, लागे अंग्रेज सताने.
जेलों में उनको बंद किया, अन्याय लगे आजमाने.
लाठी डंडों से प्रहार किया, पर उनको न पहचाने.
वह सत्य अहिंसा शस्त्र लिये, गाता रहा तराने.
वह अग्नि-पथ पर निकल पड़ा, दिल में यही था ठाने.
हमदर्द गुलामों का बन कर, आजाद चला करवाने.
सुनी रोने की तभी आवाज.

ये है भारत देश हमारा, ये तो हमें बहुत ही प्यारा.
हैगा सब दुनिया से न्यारा, भारतमाता के सिरताज रहो।

- श्री रामअवतार यादव,
१६/३, छोटी ग्वालटोली, इन्दौर के सौजन्य से प्राप्त।

-बिरहा गीत-

टेक- देश के खातिर जियें मरेंगे.
नव निवार्ण वतन का करेंगे.
जीवन में न किसी से डरेंगे.
जन-जन की यही है पुकार.

पलटा- जन जन की पुकार यही आजादी जिन्दाबाद.
देन शहीदों की हमको, क्यों कोई बरबाद रहे.
सदा-सदा के लिए गुलामी बिदा हुई है याद रहे.
जमीं हमारी, गगन हमारा, सत्य-अहिंसा नाद रहे.
हम ही शोषित हम ही मालिक भारत में आजाद रहे.
आजादी पाई है यूं हर मुल्क की हम पे दाद रहे .
दिल की मुरादें पूरी हों, स्वदेश सदा आबाद रहे.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पलटा- देश रहे आबाद रहे, धर्म को भी कायम रखना.
फर्ज समझते हैं अपना, आजादी कायम रखना .
अपने वतन की रक्षा करना, इतना तो दमखम रखना.
जो भी हो भारत के दुश्मन, उनको तो चकरम रखना.
तिकड़म करने वालों से बरताव भी तुम तिकड़म रखना.
आन लगी है कश्ती किनारे, पार इसे पैहम रखना।
बूढ़े बापू की है ये अमानत, याद इसे हर दम रखना।

गजल- हम को आजाद बना गए, बूढ़े बापू सन्यासी.
गीता का पाठ सब एकताई को छोटे बड़े सभी सुनो भाई-भाई
अहिंसा की तेग गहाय गयो, हम को आजाद बनाय गयो.
राम कहें कि हम कहें कन्हैया, बोलिए तुम सुदर्शन चर्खा चलइया.
उजड़े गुल को खिलाय गयो, हम को आजाद बनाय गयो।
भारत की बाग डोर, नेहरू को सौंप कर, आप चले गये बापू कूचकर
ध्वज विजय का फहराय गयो, हमको आजाद बनाय गयो।

पलटा- आजादी दिलवाई हम को, रोशन किया सितारा है.
क्यों गफलत में सोये हो, अब हिन्दुस्तान हमारा है.
जागो-जागो उट्ठो, अब जयहिन्द ही अपना नारा है.
बढ़े चलो मजदूर-किसानों, समय सुहाना प्यारा है.
रांणा का है खून रगों में, शिवा का नाम उबारा है.
अपने साथ हैं नेहरू, फिर क्यों हिम्मत हारा है.
बोस, भगतसिंह, चन्द्रशेखर का तुमने नाम बिसारा है.
वतन के खातिर इन लोगों ने तन-मन-धन सब वारा है.

पलटा- वारा है तन-मन-धन सब कुछ, पी कर प्रेम का प्याला है.
दहल उठी दुनिया की भूमि, पलक पे चक्कर हाला है.
सुन्दर राग बना है अपना, इसका बोल बाला है.
सुस्त न रहना प्यारे वीरों, दिल की बुझाना ज्वाला है.
आती है आवाज दिलेरों, उठो निविष विषाला है. (हर क्षण विष भरा है)
कम्यूनिजम भाई को डसले, ऐसा सांप ये काला है.
खुद का चमन बरबाद करे, इनका रंग निराला है.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वीरों इनकी बात न सुनना, ढोंग इन्होंने निकाला है.
भारत मां की शान बढ़ाओ, जिसने दूधों पाला है.

देवी दीन उस्ताद कहें, अब काशी महंत संभाला है।

पलटा- काशी महंत का कहना मानो, मजदूरों-किसानों उठो.
चिकनी-चुपड़ी में मत आओ, सीना अपना तान उठो.
जय बोलो भारत मां की, लो नेहरू का फरमान उठो.
बंदा के जौहर को जांचो, बच्चे बूढ़े-जवान उठो.
शान करो भारत की ऊँची, राणा की संतान उठो.
वतन के खातिर सर भी दे दो, लेकर कुछ अरमान उठो.
'मिसरी' अपना देख बचाओ, करने कुछ बलिदान उठो.
जन-जन की यही है पुकार.

समय ये नया अंदेशा भाई.
कुछ तो सोचो-समझो भाई.
छोड़ो आपस की रूसवाई.
देखता है तुम्हें संसार.

- श्री सुखलाल यादव खलीफा.
रामदुलारे उस्ताद के चेले,
४००/१, भागीरथपुरा, इन्दौर के सौजन्य से प्राप्त.

विरहा

(कहें किससे फसाना गम का)

टेक- वतन में छाया है अन्धेर, हुए हैं भाई भी गैर
समाया है दिल अन्दर बैर, दिनों का आया ऐसा फेर.
कहें किससे फसाना गम का.

चाल- किसे सुनाएं गम का फसाना, कोई नहीं सुनने वाला.
आजादी मिलते ही हमने खून भाई का कर डाला.
मां-बहनों की अस्मत लूटी, पिया लहू का भर प्याला.

आदम हो कर बने भेड़िये, बच्चों तक को चबा डाला.
किया अभागिन मां-बहनों को, रोय रही नव बाला.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अलवर और भरतपुर में बहा खून का था नाला.
सिंध और पंजाबी रोया, रोय रहा था पटियाला.
और कमसिन लड़कियों संग, किया है अपना मुंह काला.
छेदा बच्चों को बरछी है, नाजों से जिसको पाला.
पड़ा फफोला दिल में अन्दर नहीं फूटने का छाला.
लाखों बेघरबार बनाये, लगा दिया मुंह पर ताला.
बने भेड़िये वतन के दुश्मन, लिये हाथ बरछी भाला.

रेखता- लिये बरछी वा भाले, कि बुरे अन्जाम करते हैं.
ये भारत देश को अपने, यही बदनाम करते हैं.

१. जलाया आंशिया अपना, मिटाया अपने भाई को.
चलाई तेग गर्दन पर, बुरे अंजाम करते हैं.

२. वतन में रहने वाले, ये सभी हम भाई-भाई हैं।
क्यों लड़ते हैं हम आपस में, क्यों कत्लेआम करते हैं.

३. बड़ी मुश्किल से ये भाई, मिली है हमको आजादी.
क्यों आपस में ही लड़-लड़ कर इसे नीलाम करते हैं.

४. है राजा और नवाबों की, ये धन वालों की चालाकी,
लड़ाते हमको आपस में, ये खुद आराम करते हैं.

ये भारत देश को बदनाम करते हैं.

पलटा- लड़वाते हम को ये, ये शैतानी करते हैं.
कमाई मजदूरों की अपने खजाने भरते हैं.
बिन कपड़े रोटी के यारों, हर दिन आहें भरते हैं.
बिना अन्न के लाखों प्राणी भूखे यहां बिलखते हैं.
पत्थर दिल ये रखने वाले पीर ना उनकी भरते हैं.
ये मजदूर किसान विचारे नहीं मौत से डरते हैं.
अब जागो मजदूर, यहां के धीर न दिल में धरते हैं.
किये हैं जो जुल्म आज तक, वह अब नहीं बिसरते हैं.
दाग दिया है जो सीने में, दिल से नहीं मिटरते (मिटते) हैं।

पलटा- नहीं है मिटते दाग, जो दिल अन्दर है खाया.
पूंजीपति गद्दारों ने ही वतन टुकड़े करवाया.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पत्थर दिल हैं धनवालों के मजलूमों को तड़पाया.
हिन्दू मुसलिम भाई को आपस में कैसे लड़वाया.
खून के प्यासे बने हैं दोनों, ऐसा उनको बहकाया.
कटे जंवा जो इस झगड़े में, उठा बुजुरगों को खाया.
लोथ के ऊपर पड़ी थी खून लाशा नहलाया.
हाहाकार मची भारत में अंधकार हियां छाया.
किया प्रदर्शन मां-बहनों को, नंगी जिनकी थी काया.
इज्जत लुटी मां-बहनों की, लुटी सारी धनमाया.
मचा दिया कोहराम वतन में, हाथ में जालिम क्या आया.

दादरा- अजी लूटे मजे धनवान, अपने पराये हो गये.

१. हुये भाई उग्र हत्यारे, जो अस्मत बिगारे.
ना कुछ भी विचारे, लाड़ा लुटे सरे मैदान.

२. खुसी खेलन लगे वो तो होली, आवत है गोली.
है गुन्डन की टोली, बने भारी आज शैतान.

३. आज अपने हुए हैं पराये, हां खूं से नहाये.
कहा नहीं जाय, भाई भाई की लेता जान।

पलटा- भाई की लेता जान, आडा क्या ये सच्चे अफसाने,
बीच सड़क पर अस्मत लूटें खूं से लगे नहाने.
किसी को मारें पेट में बरछी, किसी की छाती ताने हैं.
अबलाओं के तन के उपर जोहर लगे दिखाने हैं.
हिन्दू तो यों डर के मारे चोटी लगे कटाने हैं.
और मुसलमां हिन्दु बन कर लगे हरिगुण गाने हैं.
धरती कांपी, अम्बर कांपा, बिगड़ा भी दस्ताने हैं.
आग लगा दीनी दुश्मन ने, लगे खुसी मनाने हैं.
अबलाओं पर हाथ उठाते, ऐसे ये परवाने है.
अल्ला अकबर के नारों से आसमान दहशाने है.
हर-हर महादेव कह लागे, अब ये शीश उठाने हैं.
सत्य अहिंसा बड़ा व्रत धारी, लागा पाठ पढ़ाने हैं.

रसिया- बापू सत्य अहिंसा वाला, डट कर लड़ा मैदान.

१. हिन्दू-मुसलिम खूने के प्यासे सड़कों पर बिछा रहे हैं लाशें.
हर एक भारतवासी देखो बन बैठा शैतान.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

२. हिन्दू-मुसलिम को समझाया, दोनों को आपस में मिलाया।
पूंजीपती गद्दारों के तब बिगड़ गये हो शान.

३. खून से होली खेलने वाले, डसते हैं ये विषधर काले.
धर्म की आड़ में इन गुंडों ने ली लाखों की जान.

४. बापू दिल में यूं अकुलाने, बड़ गए देश अहिंसा ताने.
बन्द करो कोहराम हिन्द से, क्यों बनते हैवान.

पलटा- क्यों बनते हैवान, जवानों खून बहाना ठीक नहीं.
देख किसी की दौलत को, मन को डिगाना ठीक नहीं.
हत्या कर अपने भाई की पाप कमाना ठीक नहीं .
आदम हो कर बने भेड़िये, मांस चबाना ठीक नहीं.
और दरिन्दों की नस्लों में नाम लिखाना ठीक नहीं.
नई दुल्हन आजादी की, अब इसे भुलाना ठीक नहीं.
आज हिन्द में यूं घर-घर कोहराम मचाना ठीक नहीं.
बहन-बेटी को भाई से जुदा कराना ठीक नहीं.
भाई के खातिर भाई को जाल बिछाना ठीक नहीं
मानवता का इस दुनिया से यूं निशां मिटाना ठीक नहीं.
हरे भरे इस गुलशन में अब आग लगाना ठीक नहीं.
सत्य अहिंसा को हिंसा से यार झुकाना ठीक नहीं.

दादरा- दिल सब का दुखाना ना चाहिए.
दुखियों को सताना ना चाहिए.

१. मार रहे निर्बल को कटारी, छूट रही खूं की पिचकारी.
यूं जुल्मों को ढाना ना चइए.

२. काहे बनें पापी हत्यारे, भारत मां रो-रो कर पुकारे.
हाथ खूं से रंगाना ना चइए.

३. काली घटा भारत पर छाई, हुए वतन वाले दुखदाई.
यूं बिजली गिराना ना चइए.

४. होश में आवो अब ए शराबी, करते हो क्यों जुल्म जवाबी.
पत अपनी गमाना ना चइए.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पलटा- नहीं गमाना पत अपनी, बस कहना यही हमारा है।
समृध्दशाली देस बना तब, होगा यार गुजारा है.
डूब रही है देश की नैया मिलता नहीं किनारा है.
सत्या अहिंसा व्रतधारी बापू ने यही पुकारा है.
दे दूं अपनी जान एक दिन, दिल में यही विचारा है.
निर्बल और कमजोरों को तु दे दो जरा सहारा है.
धर्म के ठेकेदार कह उठे ये दहक उठा अंगारा है.
तभी गोड़से ने बापू का सीना जाय बिदारा है.
कहते जग्गू लुट ले गया दौलत को हत्यारा है.
बच्चू सुन्दरलाल कहें क्या टूट गया सहारा है.
रतन कहे मन्नू को खोया, बहे नयन जलधारा है.
कहते छोटू यादव ने ही हमको यार उभारा है।

कहे किससे फसाना गम का.
मिटा दो दुनिया से अंधेर, भुला दो आपस के सब बैर.
सुनो अब दीनों की तुम टेर, लगाना चाहिए अब ना देर.
जोहर देखें तुम्हारे दम का.

- किशनलाल ''भगत'' यादव गणेश चौक के पास,
आजाद नगर, इन्दौर के सौजन्य से प्राप्त।

विरहा का अंश

भारत में वीरों के गुणगान, जिन्होंने रक्खी हिन्द की शान.
हुए यों ऐसे वीर महान, सुनाऊँ मैं ग्रन्थों को छान.
हुए भारत में जो सिरमौर.

पलटा- तुम्हें सुनाऊँ उनके नगमे, प्यारा हिन्दुस्तान सुनो.
सत्या अहिंसा का व्रतधारी, बापू था भगवान सुनो.
दीन दुखियों का था वो वाली, ना करता अभिमान सुनो.
यही तमन्ना थी दिल अन्दर, सब का हो कल्याण सुनो.
वीर जवाहर चमक रहे हैं, जो हैं गुन की खान सुनो.
मान रही है दुनिया लोहा, अमरीका-जापान सुनो.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लाखों हुए शहीद वतन पर, दे दी अपनी जान सुनो.
भगत सिंह गेंडासिंह जूझा समर भूमि मैदान सुनो.
तीन रोज तक लड़ा अकेला, गेंडासिंह वो जवान सुनो.
आग लगा दीनी दुश्मन ने, दीन्हा जला मकान सुनो.
जिन्दा कोई पकड़ न सका, ऐसा था ऐलान सुनो.
पूने का चांफेकर बन्धू जिसका कहूँ बयान सुनो.
फांसी पर हंस कर के झूला, जिसका खानदान सुनो.

- श्री किशनलाल भगत यादव,
आजाद नगर, इन्दौर के सौजन्य से प्राप्त.

विरहा

टेक- भरा कमलापति का दरबार, लक्ष्मी कर सोला सिंगार.
देवता बैठे आसन मार, बैठे मन में करें विचार.
सुनी रोने की तभी आवाज.

चाल- रोने की आवाज सुनी, भगवान की सभी निहार रही.
गमगीन स्वरों में कोई अबला, व्याकुल हो चिंघार रही.
हिचकी भर-भर रोय रही, नैनों से आंसू ढार रही.
सिसक-सिसक कर रोदन कर, दुख भरे शब्द उच्चार रही.
असमंजस में हुये देवगण, वहां करूणा की धार बही.
उठी लक्ष्मी गले मिली, बेटी कह कर पुचकार रही.
भगवान उठे, बोले बेटी- तुम काहे हमें पुकार रही.
कौन से दुख ने घेरा है या कहो किसी से रार रही.
या कोई जुल्मी जुल्म गुजारा, जिसको तू धिक्कार रही।

पलटा- धिक्कार रही जिसको ऐसा कौन है शेतान.
भारत से कह रहे हैं कमलापति भगवान.
रोती सिसकती कह रही है लक्ष्मी की संतान.
आये समन्दर पार से अनेक बेईमान.
सब माल-धन लूटा, मुझे कर दिया वीरान,
बेटों ने मेरे रोका, तो कर दिया लहू लूहान.

उस प्यारे भगतसिंह की बैईमानों ने ले ली जान.
उस लाजपत को लूटा, जो कि था मेरी शान.
मारे गये बेटे मेरे, हिन्दू वा मुसलमान.
आँखों के सामने मेरे बाग वो जलियान.
लाखों क्या गिनती, नित रोज हों बलिदान.
सुखदेव भगतसिंह बिस्मिल उठते हुए जवान.
आजाद चन्द्रशेखर बोस थे लड़े मैदान.
झांसी की रानी मर मिटी रखने को अपनी शान.
कैसे रखूं मैं धीरज कहो आप ही श्रीमान.
माता के दिल से पूछो, किये लाखों कुरबान.

पलटा- कुरबान किये लाखों बेटे, आखिर तो मैं भी माता हूँ.
भगवान कहें धीरज रक्खों, अवतार मैं लेके आता हूँ.
स्वयं भारती आ कर तेरे सारे दुख मिटाता हूँ.
नाश करूँ दुष्टों का, सारे बंधन तेरे छुड़ाता हूँ,
पोरबन्दर गुजरात में शुभ दिन उनका जनम सुनाता हूँ।

गजल- प्रभुजी ही खुद आये हैं, देश भारत में धर अवतार.

१. सन १८६९ दो अक्टूबर
गांधी रूप में प्रकटे ईश्वर.
बाजी बधाई करमचन्द के द्वारे.

२. दीन हीन को देने सहारा.
दलित समाज को आन उभारा.
निज प्राणों से प्राणों का कर संचार.

३. बन कर दरिद्र नारायण आये.
समय बाद संदेशा लाये.
तो भेदभाव में लागा अंगार रे.

४. पोरबन्दर गुजरात में शुभ दिन.
देश के आये महान ये दुरभिन.
जिनको जाने है सकल संसार रे.

पलटा- जिनमें है संसार विदित ये मोहनदास कहाये हैं.
करमचन्द के पुत्र बने, माता पुतली के जाये हैं.
बचपन में खेले कूदे भई लीला अजब दिखाये हैं.
युवक हुए इंग्लैंड गए, बालीस्टर बन कर आये हैं.
फिर देख दशा भारत भू की, जो मन ही मन अकचाये हैं.
वो जान गये अंग्रेजों के जितने भी ठीये-पाये हैं.
हर चाल को उनकी भांप गये, जुल्मी शासन के साये हैं.
वो जाने गये अंग्रेजों ने भारत पर जुल्म जो ढाये हैं.
अबलाओं पर गोली दागी, फाँसी गये लटकाये हैं.
नवजवान बूढ़े बालक, कई गोली से उड़वाये हैं।

पलटा- उड़वाया उन्हें गोली से गांधी ने निहारा.
ये जुल्मी हुकूमत ने जुल्म कैसा गुजारा.
जलियान वाले बाग का ये खूनी नजारा.
देखा गया न गांधी से, तो यही विचारा.
ऐ हिन्दियों इस हिन्द को अब दे दो सहारा.
ये देश हमारा है, हमें जान से प्यारा है.
ऐ हिन्द के वासी लगादो बस यही नारा.
एका करो, आजाद होगा देश हमारा.

पलटा - एका करो, आजाद करूँ धुन बापू लगे लगाने हैं.
देश के कोने-कोने में लगे सन्देश सुनाने हैं.
ले सत्य-अहिंसा शस्त्र, चले साम्राज्यवाद को ढाने हैं.
नरतन धारी परमेश्वर को लागे अंग्रेज सताने हैं.
जेलों में उनको बन्द किया, अन्याई लगे अजमाने हैं.
लाठी-डंडे से प्रहार किया, पर उनको ना पहचाने हैं.
वो सत्य-अहिंसा शस्त्र लिये, गाता रहा तराने हैं.
अग्नि-पथ पर निकल पड़ा, दिल में यही था ठाने हैं.
हमदर्द गुलामों का बन कर आजाद चला करवाने हैं.

सुनी रोने की तभी आवाज.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ये है भारत देश हमारा, ये तो हमें बहुत ही प्यारा.
हैगा दुनिया से ही न्यारा, भारत माता के रहे सिरताज

- श्री किशनलाल यादव गणेश चौक के पास, आजाद नगर,
इन्दौर के सौजन्य से प्राप्त।

शेर- साबरमती आश्रम से निकले पूजा करन की आड़.
३० अक्टूबर ४८ को गम का गिरा पहाड़.

नाथूराम ने गोली मारा.
गांधी बाबा किया किनारा.
दुखरा फेल गया संसारा.
छाया भारत पुरी में अंधियारा.
तीन फैर नाथू ने कीना मन में नहीं बिचारा जी,
लिखे अंक विधना के पाजी जब पिस्तोल निकारा जी,
मार दिया सीने पर गोली बहा खून का धारा जी.
देख दशा गांधीजी की सब नेता किया पुकारा जी.
हाय-हाय कर रोय उठे दुश्मन ने गोली माराजी
पकड़ हाथ कहने लागे अब चलादो इस पर आराजी.
कहा है गांधी सुन लीजे तुमसे हम हुये किनारा जी,
इसके हाथ मौत थी मेरी लिखे मुझे करतारा जी.
चुगुल खोरों के कहने से मुझ पे जुलुम कर डारा जी.
कर संतोस सभी नेतों का चले गये मुक्ती द्वारा जी.
अयोध्या वस्ताद कहा सुन सबकी हिम्मत हारा जी.

पलटा- क्या सबकी हिम्मत हार गई कोई बचा नहीं कर धीर सुनो.
हाहाकार मचा दुनिया में रोये गरीब अमीर सुनो.
किया जुलुम हत्यारे ने मारा होकर बेपीर सुनो.
लागी थी पिस्तोल कलेजे जस अर्जुन का तीर सुनो.
महाबीर रघुबीर कहा ये सुमर के साधू फकीर सुनो.
धर ईश्वर पर ध्यान लिखा आयोध्यादास अहीर सुनो.

गाना- सुयस दुनियां में हुवा जस गांधी का रहा सुनो हराय-टेक.
जबसे कांग्रेस का दुनिया में सुनो नाम चला.

मांगे स्वराज्य तो अंग्रेज दोनों हाथ मला.
दिया भारत में झंडा गड़ाय=सुयस
महतमां गांधी नेता जवाहर लाल हुवा.
भारत वासियों का राम अंग्रेजों का काल हुवा.
हिन्दू मुसलिम को रहे समझाय = सुयस =
अपना सुरधाम गये सबको आजाद किया.
हिंद की राज बादशाह से छोड़ाय लिया.
जिसकी महिमा बरन ना जाय=सुयस.
हमारे लिये श्रीकृष्ण रामचन्द्र रहे.
कैद में जेहेल के अंदर वो सुनो बंद रहे.
किया लघंन ग्रहा खूब बनाय = सुयस-
क्या=हुवा सुयस दुनियां में यारों बोलो जय अब हिंद की.
भागा था अंग्रेज थाह नाहीं पाया सिंध की.
लागा ऐसा खौफ मानों भारी जैसे जिंद की,
मचा जय जयकार लोग बोले जय गोविंद की.
पुरबी-जय गोविंद की जय घनश्याम की जय श्रीकृष्ण मुरारी राम .
जग में गांधी जवाहरलाल भये भक्तों के हितकारी राम.
शोभा शील रूप गुन आगर पुरूष सितम अवतारी राम.
लिया हिंद का तख्त सूरमा उपजे वीर बलधारी राम.
रहे सम्हाल भारतवासिन का किया हुकुम अस जारी राम
बाबा महातमा गांधी जी रहे ऐसे सुनो ब्रह्मचारी राम.
दै खिराज जवाहरलाल को अपना सुरपुरसिधारी राम.
गाना-गये खेल गांधी आजादी की होली. = टेक.
गीता पढ़न हित मंदिर जात रहे.
पापी ने खेला मार कर गोली = गये.
निकला प्रान गया अमर लोक को.
पड़ी रही काया कुछो ना बोली-गये.
अबीर गुलाल उड़ाया सभी ने.
बिड़ला भवन से निकाला जब डोली =गये.
जमुना किनारे पर जाके उतारा.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

फूंक दिया जिनको सुरत बड़ी भोली =गये.
बलंभ पटेल जवाहर से कहते.
चले गये बापू रह गई खाली झोली=गये.
हिंदू मुसलमां सब भाई रहो मिलके.
महाबीर अपनी बिगाड़ो ना टोली=गये.
क्या=अपना सुरपुर सिधार गये बैकुंठ धाम को.
बढ़ाया भारत सिंह में अपने वो नाम को.
भज लीजे रामनाम ये सुबा शाम को.
चली ये वक्त जाती है देखो बेकाम को.
आयोध्या सूचित करते हैं भजो सियाराम को.
छाया भारत पुरी में अंधियार.
अस्तुती करो धार सब ध्यान.
रक्षा कीन श्री भगवान
फते कर लीना हिंदुस्तान.
मचा घर घर में जय जयकार=

- रामेश्वर खलीफा.
नेहरू नगर, ६७५/९, इन्दौर के सौज्जन्य से प्राप्त.

-दोहा-

जब वीरों ने खून बहाया.
हंस के अपना शीश कटाया.
फिर इतिहास ने पलटा खाया.
ऐसा इक दिन सुन्दर आया.
यज्ञ पूरा हुआ उस रोज.

पलटा- यज्ञ अनेक सुनो ॠषियों ने पहले भी ठहराया था.
तिल और जौ नोवेद मिलाकर अग्नि भेंट चढ़ाया था.
फूल का अर्पण जल का तर्पण हरी से ध्यान लगाया था.
मन इच्छा फल खातिर प्यारे स्वाहा शब्द सुनाया था.
ऐसा ही यज्ञ महात्मा गांधी भारत में रचवाया था.
बलिदानी का यज्ञ था प्यारे बिना अग्नि करवाया था.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बनी मोहब्बत वतन की ज्वाला आहुती को चाया था.
आहुती प्राणों की देना वीरों के मन भाया था.
पंजाब से और बंगाल से कोई यू.पी.से चल आया था.
क्रांति का कोई वीर सिपाही मालव से उठ धाया था.
किसी ने झूला फाँसी झूला किसी ने गोली खाया था.

कोई तले शमशीर जुल्म के अपना शीश कटाया था.
कोई शान्ति कोई क्रान्ति अलग-अलग अपनाया था.

पलटा- अलग-अलग अपनाया था शुरू हुआ बलिदान सुनो.
भारत मां की बल बेदी पर हंस के भये कुर्बान सुनो.
तेग गुलामी में माता की तड़प उठी संतान सुनो.
झूल गया था झूला फाँसी देख भगत सिंह ज्वान सुनो.
वतन पे मरने वालों का ये अमर हुआ निशान सुनो.
चिता शहीदों पर हमेशा जुटेगा मेला आन सुनो.
जलीयांवाले बाग को देखो तीरथ बना महान सुनो.
आजादी के कई देवता वहां किया अस्तान सुनो.
नया पृष्ठ इतिहास का खुलता शायर धर के ध्यान सुनो.
१५-अगस्त-४७ सन में तिरंगा लहरान सुनो.

ठप्पा

मोरे देसवा कै सुघर निशान तिरंगावा लहराया.

१. एटोमिक ओर तोप, कई हिंसा बेकार गई.
तोड़ा-तोड़ा अहिंसा ने मान तिरंगवा लहराया.

२. सन सेतालिस की बात नई, पन्द्रह अगस्त की रात मई.
रात आधी हुआ ऐलान तिरंगवा लहराया.

३. रेडियो से ऐलान हुआ, आजाद हिन्दुस्तान हुआ.
आजादी के भोर बिहान तिरंगवा लहराया.

४. जर्मन इटली ओर जापान देखें, रसीया हो हेरान देखें.
धन-धन रे हिन्दुस्तान तिरंगवा लहराया.

५. खादी के बुनियादी बापू, अहिंसा के वादी बापू.
बापू का दिली अरमान तिरंगवा लहराया.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

६. धन-धन हेगा बापू तुमको, आजादी दिलवाई हमको.
करते ''दिलवर'' किशन गुणगान तिरंगवा लहराया.

शेर

लहराया तिरंगा देश में आजाद है वतन.
देहली के लाल किले पे उम्दा सी है फबन.
पन्द्रह अगस्त और ईस्वी सेंतालिस का साल सन
आजाद किया मुल्क को बापू तुम्हें धन-धन
खुशी से बुलबुल गा रही आजाद पा चमन.
पारस थे अगर गांधी जवाहर भी है रतन.
जवाहर का बड़ा मान है धन-धन, वतन-वतन.
भारत वर्ष महान है धन-धन, वतन-वतन .
सदियों के बाद जागा सोया हुआ नाहर.
हेरत में कुल जहान है धन-धन, वतन-वतन.
यतीन्द्र-नाथदास चन्द्रशेखर आजाद का.
पूरा हुआ अरमान है धन-धन, वतन-वतन.
गांधी की रहनुमाई जवाहर का त्याग है.
सुभाष का बलिदान है धन-धन, वतन-वतन.

-पलटा-

वतन के अन्दर देख महात्मा ऐसी हालत पैदा की.
सदियों से खामोश पड़े थे उनमें हरकत पैदा की.
एक नई आवाज उठाई नई जागृति पैदा की
चादर खेंच जगाए सोते सच्ची सेहत पैदा की.
सोतों को बेदार किया क्या खूब इनायत पैदा की.
छुआ-छूत का भूत मिटाया बढ़के मिल्लत पैदा की.
साबरमती का संत चला जब गेब की कुदरत पैदा की.
तोड़ दिया कानून नमक कानून से नफरत पैदा की.
बने हुए कमजोर ये जो दिल उनमें हिम्मत पैदा की.
निडर और बेखोफ बन विद्रोह की आदत पैदा की.
आजादी का दिया सन्देशा देश मोहब्बत पैदा की.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हिन्दू मुस्लिम एकताई की पुखता कुब्बत पैदा की.
हिर फिर करके मिलीजुली मजबूत सदारत पैदा की.
गोलमेज उस क्रांन्फ्रेस में अजब शिकायत पैदा की.
हटो विदेशी भारत छोड़ो आग बगावत पैदा की.
ब्रिटिश कॉमनवेल्थ लाया सही सियासत पैदा की.
बहुत कहा जब नहीं हटा तो जंग की सूरत पैदा की.
तेग अहिंसा हाथ उठाई सबकी ताकत पैदा की.
सत्याग्रह संग्राम लड़े स्वदेश हुकूमत पैदा की.
दुनिया के इतिहास के अंदर नई कैफियत पैदा की.
गुरू लाला उस्ताद हमारे ऐश राखुन्नत पैदा की.
मोतीलाल बिहरो में ''दिलवर'' गा के रंगत पैदा की.
यज्ञ पूरा हुआ उस रोज.

''दोहा''

सन बयालिस का जंग, देखा कांग्रेस का रंग .
भौचक खड़ा हुआ चौरंग, युक्ति मन ही मन में रहा खोज.

- नत्थूप्रसाद दिलवर.
४८८, विनोबा नगर, इन्दौर- ४५२००१.
लालाजी उस्ताद के अखाड़े के सौजन्य से प्राप्त ।

बिरहा गांधीजी के जन्म का

सुदामापुरी देस गुजरात पोरबन्दर है विख्यात.
है ये अठारहसौ उन्हत्तर की बात, जन्में बापू गांधी के कुल आप,
कहूँ जनम मैं बापू का गाम-टेक

ख्याल- जन्म कहूँ बापू का प्यारे, सुनिये ध्यान से भाईजी.
ईसवी सन अठरासौ उन्हत्तर का ये जिकर सुनाई जी.
है तारीख तो दो अक्टूबर, ये बातें तुम्हें जमाई जी.
पिता इनके कर्मचन्द काठियावाड़ कहलाई जी.
माता उनकी पुतलीबाई फूली नहीं समाई जी.
गर्भ से उनके जन्म लिया, ये जनता में दरसाई जी.

पंडित आये वैद विचारे राषी वर्ग बताई जी.
नामकरण संस्कार हुआ, ये वेद के अन्दर पाई जी.
मोहनदास नाम पड़ा, पंडित कहा समजाई जी.
पुरवासी सब खुशी भये, वह शोभा बरनी न जाई जी.
वाह बधाई बाज रही, आनन्द लहर गाई छाई जी.
गुरू रघुवीर के पल्टों ने ये कीरत कहां है गाई जी.

-गाना-

पोरबन्दर में बाजी बधाई आली-टेक।
करमचन्द घर बाजी बधाई, पुतली मन में फूली न समाई.
वहां सखियां गावत हैं गीत बजाय ताली.

२. नेगी लोग सब सोहर हैं गाईन, करमचन्द सब का नेग चुकाईन.
अरे रूपया और पैसा से भर कर थाली.

३. मोहन की नानी बधावन आई, झुलिया औ ताखी पैंजनिया.
बारलाई अरे जच्चा को सरी गुजरात वाली.

४. रेशम की डोरी से बांधा है झूला, यह देख अन्य सभी कुछ भूला.
जब रोवे झूला में गांधी, माता दौड़े हाली.

५. कहे रघुवीर लोग मुबारक है दीना, जुग-जुग जिये ये बालक लै लीना.
पुतली मां के बाग का हुआ माली.

पलटा- पुतली मां के बाग का माली, होनहार लखाई है,
जस अकास में दूज कां चंदा, रसे रसे बढ़जाई है.
वर्ष तीन के भै गांधी, चलने का पैर उठाई है.
दौरें गिरें उठें फिर दौरें, आंगन में खेलराई है.
माता हाल देख बालक के दिल में खुसी मनाई है.
पांच बरस के भै गांधी, जब करने चले पढ़ाई है.
गुरू जै कुछ पाठ पढ़ावें, पढ़े लोग हरसाई है.
वर्ष सात में गोकुलदास फिर करने आये सगाई हैं.
तेरह वर्ष जब पूरा हुआ, तो दुलहिन घर का आई हैं.
वर्ष पन्द्रह न बीते, संकट की घटा गई छाई है.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करमचंद सुरधाम गये, जब रोवें पुतली बाई है.
गुरू रघुवीर धरधीर कहा जब, गम की बदरियां ताई हैं.

गाना

रोवें माता पुतली लाल तो मोरे बारे-टेक।

१. पतिदेव सुरधाम सिधारा, ये ही जग कोई न रहा हमारा.
यै नैया हमारी पड़ी है मजधारे,

२. गांधी समझावे माता धीरज को धरना.
एक दिन होयगा सभी को मरना.
काहे होत नाहक नैनां से नीर डारे.

३. एक दिन सब ही वही लोकवा का जाई.
तुम बिरथा काहे को रोवत हो माई.
जहां लाखों सूरज अनेकिन हैं तारे..

४. कहें अवधप्रसाद कैसे होगा बचना.
मिट जाये जहान फिर से होय रचना.
काल छोड़े न बुढ़वा, ज्वान न कुंवारे.

पलटा- ज्वान होय चाहे कुंवारे, एक दिन काल सभी को खायेगा.
जो कोई आया मृत्युलोक में, अवस एक दिन जायेगा.
धन दौलत औ माल खजाना, छोड़ चला पछतायेगा.
महल अटारी छूट जाय सब, सारा कुटुम्ब गंवायेगा.
काया भी ये साथ न जाये, अंत में तू मुँह बायेगा.
जमदूत जब ठोकेंगे, कर हाय हाय चिल्लायेगा.
नेकी-बदी रहेगी संग में, और कछू न पायेगा.
कामताप्रसाद, रघुवीर, सुमेर, दंगल अन्दर गायेगा.

पलटा- मैफिल अन्दर गाता हूँ, आगे का किस्सा जारी सुन.
करमचन्द सुरधाम गये, बापू को मुसीबत भारी सुन.
पुतली मां क्या करे, बिचारी भाग से अपने हारी सुन.
वर्ष पन्दरा बीते थे सोलह की भाई उनवारी सुन.
आठवां दरजा पास किया, नौवें की तैयारी सुन.
राजकोट में पास किया इन्टर परीक्षा सारी सुन.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पलटा- इन्टर परीक्षा पास किया, अब आगे कदम बढ़ाये हैं.
विलायत की किया तैयारी, विद्या पढ़ने जायेंगे.
इंगलिस विद्या सीख के यारों, भारत तो हम आयेंगे.
नाम लिखाया कालेज में, अब आगे हाल बतायेंगे.
ऐम.ऐ. पास कर पढ़ा वकालत, गोरों से टकरायेंगे.
बारिस्टर बन कर आये ब्रिटिस बगावत उठायेंगे.
सहर बम्बई हाईकोर्ट में वकालत जमायेंगे।
हिन्द की अपने लाज कहा बापू हम अवस बचायेंगे.
अब छूटे गुलामी अंगरेजों से, जनता को समझाएगें.
एकता पालन करो, हिन्द को सीधी डगर लखायेंगे.
गांधी कहा है बार बार हम यही आवाज उठायेंगे.
है अवधप्रसाद लिया लेखनी, नया-नया छंद बनायेंगे.
पियारे कहूँ जन्म बापू का मैं गाय.
वकालत चली है थोड़ेक रोज, कचहरी जाय वहां लागी फौज.
करने लगे नौकरी की खोज, बन गये साधू लंगोटी लगाय.
बापू ने देश भारत को लिया है बजाय.

- रचयिताः श्री कामताप्रसाद यादव गार्डनर

दि. ५-३-६४ ई. स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय, मोती तबेला, इन्दौर के सौजन्य से प्राप्त.

(विरहा आजादी का- अंतिम अंश)

बड़ी मुसकिल से गांधीजी किश्ती लाये छोड़ाई है.
है बच्चों संभाल के रखना, बापू कहा समझाई है.
जाय न पावे दीगर हाथ मां, इसीमें यार भलाई है.
गांधी का उपदेश यही है, कामताप्रसाद रहे गाई है.

पल्टा- गाता हूँ ये ज्ञान अब पंचो, आगे का बयान सुनो.
भारत वर्ष को जीता बापू, जाने सकल जहान सुनो.
अंग्रेज सब छोड़ भगे हैं, मेरा हिन्दुस्तान सुनो.
लाल किलां पर छब्बीस जनवरी का झंडा फहरान सुनो.
क्या कहूँ छवि इस दिन की जब हिन्द के किसान सुनो.
हिन्दुस्तान के बूढ़े बच्चे, नारी और जवान सुनो.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मातृभूमि के लिये लड़ो, चाहे चली जाय जान सुनो.
बीस जनवरी सन छप्पन में लिखा निराला ज्ञान सुनो.
श्री गुरू रघुवीर की चेला कर तो दिया बखान सुनो.
कामताप्रसाद कहें सभा में, ये ही मेरा फरमान सुनो.
मातृभूमि की रख ली लाज.
नेता लोगों ने कोशिश किया भारी.
जाऊँ मैं उन पर बलिहारी.
स्वतंत्र मैं भारत भूमि हमारी.
खुशियाली बड़ी है अपरम्पारी.
सुनोजी ऐसा बापू ने कर गये काज.

रचयिताः कामताप्रसाद यादव

विरहा गांधीजी के अंतकाल का

गांधीजी भारत का उजियाला, अंग्रेजों का मुंह कर दिया काला.
औ पहिरा शांति रूप का माला, आजादी को दिलाने वाला.
जिनका गुंडा लिया एक जान, पियारे कैसी घटना हुई ये आन.

ख्याल- घटना हुई ये आन, चतुर ये गम से भरा फसाना है,
ऐसा कभी हुआ नहीं, ये जाने सकल जहाना है.
जिनकी सोहरत दुनिया करती, पिता जगत ने माना है.
ऐसे हीरा के ऊपर वो दुष्ट ने गोली ताना है.
शुक्रवार का दिन था प्यारे, करूँ मैं यही बयाना है.
तीस जनवरी सन अढ़तालिस शाम कै ये तूफाना है.
बिरला भवन से चले महात्मा, होनी को अनजाना है.
अवधप्रसाद सोच समझ के, बात सही ये छाना है.

पलटा- बात सही ये छान, जब बापू का दिल बेजार रहा.
जनसमूह था उभर रहा, न जिसका पारम पार रहा.
वहां भीड़ लगी थी रस्ते में, जैसे कोई त्योहार रहा.
सभामंच पर पहुँचे थे की, एक गुंडा बदकार रहा.
था वरदी खादी पहने, औजार छिपाये हथियार रहा.
नाथूराम गोड़से जो महाराष्ट्र का एक सरदार रहा.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रहने वाला पूने का, छल-बल बेसुम्मार रहा.
आर.एस.एस. का मेम्बर और एडीटर अखबार रहा.
महासभा का था सेक्रेटरी, देश पर उसका प्यार रहा.
पचपना करोड़ दिया जब गांधी, इसी से उसको खार रहा.
लिये रिवाल्वल था छोटा, जो गोली खाता यार रहा.
नाथूराम गोड़से गुंडे ने, जब छोड़ा पहिला वार रहा.

पलटा- छोड़ा पहिला वार यार जब जखम आर पार सुनो.
गोली घुसी जिगर के अन्दर दिया कलेजा फार सुनो.
लगे हाथ नाथू ने तुरत किया दूसरा वार सुनो.
पकड़ लिया पबलिक उसको और किया बहुत बेजार सुनो.
हुई कुटाई खूब उसकी जब लोहा गढ़ात लोहार सुनो.
किया तुरत चालान पुलिस ने, भेजा कारागार सुनो.
इधर हाल बापू का देखें, रोवत सब संसार सुनो.

पलटा- रोवत सब संसार सुनो जब नाथू गोली दागीजी.
एक कदम की दूरी से नाथू ने खेला था फागीजी.
प्राण तो उनके निकल गए, थे जो भारत के अनुरागीजी.
गिरे धरती पर बापू जब इतउत से पब्लिक भागीजी.
जब दौड़ उठाया बापू को, ने देर जरा भी लागी जी.
अवधप्रसाद कहें नाथू ने बोया है आगी जी.

पलटा- नाथू ने बोया आगी, जब बिरला पहुँचाना बापू को.
पंडित जवाहरलाल ने आ कर शीश झुकाया बापू को,
पटेल साहब ने आ कर अदब बजाया बापू को.
लार्ड माउन्ट बेटन ने आ कर माथ नवाया बापू को.
थे नेता जितने सब आये चद्दर वो चढ़ाया बापू को.
छोटे बड़े सब घर से आये, दर्शन पाया बापू को.

पलटा- दर्शन पाया बापू का, फिर पंडित आगे बढ़कर के.
समझाया प्यारी पबलिक को आंखों में आंसू भर के.
बापू तो अब चले गये हैं, काम अधूरा सब धर के.
हम को जो कुछ करना है, वो करो सभी न रहो टर के.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सोच किये से क्या होता है, न मिलेगा कोई मर जर के.
बेहतर है कि सबर करो, न आंखों से आंसू दर के.

गाना-

मत रोओ जार-बेजार होवा दिल्ली के बसवैया.
बापू तो गये सिधार हो तो दिल्ली के बसवैया-टेक.

१. जालिम ने गोली दागी, नहीं दया उसे कुछ लागी.
नाथू किया अत्याचार हो वो दिल्ली के बसवैया.

२. बापू तो गये हैं सुरधाम, कर के खूब मेहनत का काम.
भारत पर भये निसार हो तो दिल्ली के बसवैया.

३. दुनिया की मुसीबत लादी, भारत को दिला दिया आजादी.
ब्रिटश को भगाया पार हो वो दिल्ली के बसवैया.

४. लाजिम यही है हम सब का, छोड़ो न अहिंसा औ सत्य का.
बापू कह गये पुकार हो वो दिल्ली के बसवैया.

५. सब हिन्द के वासी आवो, बापू की अरथी उठाओ.
यही कहना है हमारा है वो दिल्ली के बसवैया.

पलटा- कहना यही हमारा है, ये पंडितजी फरमाते हैं.
खबर हुई है तारों से, सब नेता जन तो आते हैं.
इस्पेशल छूटी चहुँ दिशा से, हवा विमान उड़ाते हैं.
सब नेताजन मिल कर के अस्नान-तिलक करवाते हैं.
हार फूल चढ़ा कर के, खादी का कफन बढ़ाते हैं।
फौजी मोटर के ऊपर बापू की अरथी सजाते हैं.
घुड़सवार आगे-पीछे, अरथी के कदम मिलाते हैं.
तिन के पीछे फौजी दस्ते, संगीन दोष चमकाते हैं.
गुरखा पलटन साथ में है, झंडी जिनका लहराते हैं,
जनता लाखों आगे-पीछे आंसू लोग बहाते हैं.
चली बरात जब राष्ट्रपिता की, अवधप्रसाद कथा गाते हैं.
एक गुंडा लिया जिनका प्राण.
प्यारे कैसी घटना हुई ये आन,

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अरथी जमुना तट का जाई, रोवें लोग औ लुगाई.
भारत माता हा हा खाई, जनवरी इकतीस को दिया जलाई.
आठों नेता थे अरथी के निगहबान.
जिनका जमना घाट पर बना है स्थान.

रचयिता- श्री कामताप्रसाद खलीफा. गार्डनर
दि. १२-२-६६ ई. के सौजन्य से प्राप्त
स्तानातकोत्तर कन्या महाविद्यालय मोती तबेला इन्दौर

महात्मा गांधी की जयन्ती पर

ऐ बापू तुम अजर-अमर हो तुम भारत की शान हो,
नाज है दुनिया भर को तुम पर, तुम्ही अमन की जान हो.
मोहनदास करमचंद गांधी भारत भूमि पर जन्मे,
तुम्ही बताओ दुनिया वालो हमें न क्यों अभिमान हो.
रहेगी दुनिया जब तक कायम, यही कहेंगे सारे लोग.
शंख बजाया आजादी का, तुम्ही तो वो इन्सान हो.
महावीर स्वामी का तुमने मंत्र अहिंसा अपनाया.
इसी मंत्र के अपनाने से, जग में आज महान है.
बनता है नर से नारायण करनी करने वाला है.
दीन दुखी लोगों के सचमुच बापू तुम भगवान हो.
परस्वारथ के लिए ही बापू तुम जनमे थे भारत में.
एक ही धुन रहती थी कैसे जन जन का कल्याण हो.
कोटि-कोटि जनता के मन में यही लालसा है.
रहेंगे चंदा सूरज जब तक बापू का सम्मान हो.
जज्बाते -जख्मी.

''शमीम'' किरहानी.

जगाओ न बापू को नींद आ गई है

अभी उठके आया है बज्मे दुआ से, वतन के लिये लौ लगाकर खुदा से.
टपकती है रूहानियत-सी फिजां से, चली आती है राम की धुन हवा से.
दुखी आत्मा शान्ती पा गई है.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

-२-

नहीं चैन से रहने देती है हलचल, जो हैं आज दिल्ली तो बंगाल में कल,
ये पीरी ये दिन रात की दौड़ पैदल, सदा कौम बापू को रखती थी बेकल.
तड़प जिन्दगी की सुकूं पा गई है.

-३-

ये घेरे है क्यों रोने वालो की टोली, खुदारा ना बोले ये मनहूस बोली.
भला कौन मारेगा बापू को गोली, कोई बाप के खूं से खेलेगा होली.
जमी ऐसी बातों से थर्रा गई है.

-४-

सभी को है प्यार उस अजीजे वतन से, फिरंगी ने जेलो में रक्खा जतन से.
वतन पे वो कुरबान है जानो तन से, वतन उसको मारेगा पिस्तोलो गन से.
अबस मादरे हिन्द शर्मा गई है.

-५-

वो सोएगा क्या जो है सब को जगाता, कभी मीठा सपना नहीं उसको भाता.
वो आजाद भारत का है जन्मदाता, उठेगा ना आंसू बहादेशमाता.
उदासी ये क्यों बाल बिखरा गई है.

-६-

वो गम अपना खाता वो खूं अपना पीता, वतन पे ही मरता वतन पे ही जीता.
जो एक बात कुरआं तो एक बात गीता, सितमगर वो हारे ये मजलूम जीता.
जमाने पे मज़लूमियत छा गई है.

-७-

वो हक के लिये तनके अड़जाने वाला, निहत्था हूकूमत से लड़ जाने वाला.
निशां की तरह रन में अड़जाने वाला, बसाने की धुन में उजड़ जाने वाला.
बिना जुल्म की जिससे थर्रा गई है.

-८-

वो बादल जो खेती पे बरखा को उट्ठे, वो सूरज जो धरती के सेवा को उट्ठे.
वो लाठी जो दुखियों की रक्षा को उट्ठे, वो हस्ती बचाने जो दुनिया को उट्ठे.
वो कश्ती जो तूफां में काम आ गई है.

-९-

मोहब्बत के झंडे को गाड़ा है उसने, चमन किसके दिल का उजाड़ा है उसने.
गरेबान अपना ही फाड़ा है उसने, किसी का भला क्या बिगाड़ा है उसने.
उसे तो अदाऐ अमन भा गई है.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

-१०-

कोई उसके खूं से ना दामन भरेगा, बड़ा बोझ है सर पे क्यों कर धरेगा.

चराग उसका दुश्मन जो गुल भी करेगा, अमर है अमर वो भला क्या मरेगा.

हयात उसकी खुद मौत पर छा गई है.

-११-

वो सुकरातो ईसा की जुरअत भी उसमें, श्रीकृष्ण गौतम की शफकत भी उसमें.

मोहम्मद के दिल की हरारत भी उसमें, हुसैन इबने हैदर की हिम्मत भी उसमें.

अहिंसा तरदुस से टकरा गई है.

-१२-

वो सुमरन वो भक्ती वो चाहत की माला, सदाकत की गंगा खिरद का हिमाला.

वो बूढ़ों में बूढ़ा वो बालों में बाला, एक अन्धेर नगरी का तन्हा उजाला.

खिरद जैसे बादल में लहरा गई है.

-१३-

न दिलकश तमाशे नरंगी नजारे, ना राहत की कलीयां न इश्रत के तारे.

बोहत थक गया था मुसीबत के मारे, जरा लग गई आंख जमना किनारे.

थकन आज ठन्डी हवा पा गई है.

-१४-

अभी सिन्ध बा चश्में नम तक रहा है, लिये दिल में पंजाब गम तक रहा है.

वो वर्धा अभी दमबदम तक रहा है, अभी रास्ता आश्रम तक रहा है.

मुसाफिर को रस्ते में नींद आ गई है.

-१५-

वो पर्बत वो बहरे खां सो रहा है, वो पीरी का अज्मे जवां सो रहा है.

वो अमने जहां का निशां सो रहा है, वो आजाद हिन्दोस्तां सो रहा है.

उठेगा सहर मुझको बतला गई है.

- जगजीवन सिंह परिहार.

''जख्मी'' से प्राप्त.

१६/२, किले कम्पाउन्ड इन्दौर.

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गांधी पर केन्द्रित

हिन्दी, निमाड़ी एवं कोरकू गीत

संकलन एवं अनुवाद
राधेश्याम बिहारी लाल शांडिल्य,
हरदा

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

१. गांधी श्लोक

१

आदौ मोहन, इंग्लैंड गमनं,
विद्या विशेषार्जनम्।
अफ्रीका गमनं, कुनीति दमनं,
सत्याग्रहान्दोलनम्॥१॥

२

धृत्वा भारत मुक्तये प्रयतनं,
शस्त्रं त्वहिन्सामयम्।
अस्पृश्योद्धारणं स्वतंत्रकरणं,
पारतन्त्र्य विनाशनम्॥२॥

मोहन दास कर्मचंद गांधी विशेष विद्या का अध्ययन करने के लिये इंग्लैण्ड गये। अफ्रीका जाकर कुनीति का दमन किया, सत्याग्रह आन्दोलन प्रारम्भ किया।

उसी प्रकार भारत वर्ष को अंग्रेजों से मुक्त करने का प्रयत्न अहिंसा रूपी शस्त्र से काम लिया। छुआछूत मिटा कर हरिजनों का उद्धार किया। ये सब देश को स्वतंत्र करने के लिये तथा पारतन्त्र्य को विनाश करने के गांधी जी के कार्य थे।

२. गांधी वर्णमाला गीत

अ- से अभय कर गये बापू,
भय का भूत हर गये बापू।

आ- से आश्रम-का आधार,
सादा जीवन उच्च विचार।

इ- से इलाज किया माटी से,
हवा रोशनी से पानी से।

ई- से ईश्वर अल्लाह सबका,
मस्जिद सबकी मंदिर सबका।

उ- से उका जाति का मेहतर,
मोहन का था पक्का सहचर।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ऊ- से ऊँच-नीच छुड़वाया,
टूटे हृदयों को जुड़वाया।

ऋ- से ऋषि कहा या सन्त,
दिल्ली में हुआ बापू का अन्त।

ए- से एका हमें सिखाया,
भेद-भाव सब दूर हटाया।

ऐ- से ऐनक खूब लगायी,
आजादी की राह दिखायी।

च- से चरखा चलता जाता,
बढ़िया सूत निकलता आता।

छ- से छड़ी बड़ी रखते थे,
बापू तेज चाल चलते थे।

ज- से जल को वैद्य बताया,
माटी का गुण भी समझाया।

झ- से झंडा शान हमारी,
आन हमारी बान हमारी।

ञ- वर्ण है पर कहीं शब्द बन जाता,
'ञ' का अर्थ कोरकू में, मैं हो जाता है।

ट- से टमटम पर वे चढ़कर,
चले कुली बैरिस्टर बन कर।

ठ- से ठंड से न घबराते,
तड़के रोज टहलने जाते।

ड- से डण्डा पकड़े कस कर,
मुन्ने के संग दौड़े जी भर।

ढ- से ढक्कन रखते बापू,
खाना-पीना, ढँकते बापू।

ण- से णमो-णमो महावीर,
भारतवासी बने कर्मवीर।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ओ- से ओझा को समझाया,
बकरे का बलिदान बचाया।

औ- से औषधि कम लेते थे,
रोग भगा कर दम लेते थे।

अं- से अंडा-माँस न खाये,
दूर विलायत तक हो आये।

अः- से बहुत पड़ेगा काम,
रघुपति राघव राजाराम।

३. व्यंजन

क- से करमचंद के घर में,
मोहन हुए पोरबंदर में।

ख- से खादी के क्या कहने,
बिछावें,ओढ़े कातें पहने।

ग- से गर्व संत ने छोड़ा,
और प्रेम से नाता जोड़ा।

घ- से घड़ी लगाते बापू,
काम समय पर करते बापू।

ङ- से ङे. वा ङे. इधर आओ,
तेलगु में ये अर्थ बताओ।

त- से तकली को दे चक्कर,
ली आजादी सूत कात कर।

थ- से थकन नहीं आती थी,
उन्हें काम की धुन भाती थी।

द- से दया दिखाई सब पर,
छोटे-बड़े सभी जीवों पर।

ध- से धुनकी मचल रही है,
रूई फुही-सी निकल रही है।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

न- से नमक-बनाते गांधी,
पैदल चलकर पहुँचे डाण्डी।

प- से पगड़ी सदा लगाई,
अफ्रीका में ज्योति जगाई।

फ- से फल का गुण समझाया,
फलाहार से रोग भगाया।

ब- से बकरी, अच्छी पाली,
गई साथ जो नोआखाली।

भ- से भजन-भाव करते थे,
दुखियों के अभाव हरते थे।

म- से मन्दिर सबका तन है,
पीर पराई जाने मन है।

य- से यरबदा चरखा आया,
दुखियों को जीना सिखलाया।

र- से रस्सी कूद-कूद कर,
अफ्रीका में खेले खुल कर।

ल- से लड़कों के संग दौड़े,
पीछे रहे साथ कब छोड़े।

व- से वतन दुलारा सबका,
यही हमारा काशी मक्का।

श- से शांति उन्हें थी प्यारी,
नहीं लड़ाई, मारा मारी।

ष- से षड-विकार को जीता,
जीवन में अपनायी गीता।

स- से सत्य यही ईश्वर है,
सच्चे जन को किसका डर है।

ह- से हरिजन बड़े दुलारे,
बापू की आँखों के तारे।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

क्ष- से क्षमा सदा सिखलायी,
राह अहिंसा की दिखलायी।

त्र- से त्रास दूर ही रक्खा,
और प्रेम से जीवन चक्खा।

ज्ञ- से ज्ञान कहीं भी पाया,
विनय प्रार्थना से अपनाया।

रचियता- राधेश्याम शांडिल्य, हरदा

४. भारत वंदना

१
जन-जन थारा गुण गावऽमईया, जन-जन थारा जस गावऽ।।टैक।।
'भारत माता' नाम छे थारो, सुण सुण मन हरखावऽ हो मईया।।

२
गंज बड़ो री मइया, थारो अंगणा, ओमऽ गंगा जमना लयरावऽ हो मईया।
डोंगर को तू मुकुट लगावऽ बरखा जो बरखावऽ हो मईया।।२।।

३
पोथी-पतरा थारा जस गावऽ, रिसि मुनि मन भावऽ हो मईया।।
किशनचंद थारा, धूल मऽ लेट्या, जसमत गोद खेलावऽ हो मईया।।३।।

४
गांधी महात्मा, हुआ अवतारी, ऊतो नाम कमावऽ हो मईया।
गंज बरसा तुखऽ, परबस राखी, गोरा नखऽ मार भागावऽ हो मईया।।४।।

५
काईसऽ थारी, करां आरती, काईसऽ, जोत जलावऽ हो मईया।
सिख्छा स थारी करॉ आरती, ग्यान की जोत जलावऽ हो मईया।।५५।।

- निमाड़ी रचना

५. गांधी थारी, जोत स जोत जली

१
गांधी थारी, जोत से जोत जली ।।टैक।।
जोत से थारी, जगमग हुई गई,

गाँव होण की, हर गली-गली।
गांधी थारी, जोत स जोत जली।।१।।

२
सत, अहिंसा, प्रेम शांति अरू,
मानवता का धाम तुमई।
बुद्ध, मसीहा, मोहम्मद तुमई,
कृष्ण तुमई था राम तुमई।।२।।

३
करूणा का अवतार तुमई न,
दीन का उद्धार करी।
हिंसा की तलवार खऽ तून,
फूल का ये हार करी।।३।।

४
थारी याद, अम्मर रयेगी,
अम्मर थारी, बलिदानी।
सब खेऽ, मन मऽ, खिल्या करेगी,
अम्मर जोत, की अम्मर कली।।४।।

- निमाड़ी रचना

५. म्हारा चरखा को टूटऽनी तार

१
म्हारा चरखा को टूटऽनी तार, चरखो चालू रहऽ ।टैक।।
२
गांधी महातमा दूल्हन बण्या छे, दूलेण बणी सरकार।।१।।
३
चंदन काटी नऽम्याना बनाड़यो, ओमऽ खादी की भरमार।।२।।
४
सगळा सूरा बण्या छे बराती, पुलिस बणी छे कहार।।३।।

मेरे चरखे का तार नहीं टूटे, मेरा चरखा चलता रहे। महात्मा गांधी दूल्हा बने हैं और दुल्हिन अंग्रेज सरकार बनी

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

है। चंदन की लकड़ी काट कर पालकी बनाई है। उसमें खादी के छत-परदा लगे हैं, सभी वीर ''स्वतंत्रता सेनानी'' बराती बने हैं। स्वतंत्रता रूपी पालकी को पुलिस कहार बनकर काँधे पर उठा कर चल रही है।

६. म्हारा, चरखा को टूटऽनी तार

१

म्हारा चरखा को टूटऽनी तार, चरखो चालू रहऽ ।।टैक।।

२

गांधी महात्मा, दूल्लव बण्या छे, दूलेण बणी, सरकार।।१।।

३

सबई स्वयं सेवक बण्या बराती, नाई बण्यो, थाणेदार।।२।।

४

सबई पटवारी गावऽ गाळई, पूरी बळऽ तहसीलदार।।३।।

५

गांधी महातमा नेग मऽमचल्या, दायजा मऽ माँगऽ सुराज।।४।।

६

सरकार खड़ेल विनती सुणावऽ, जीजा गौणा मऽ देवाँ सुराज।।५।।।

- निमाड़ी रचना

मेरे चरखे का तार नहीं टूटे, मेरा चरखा बराबर चलता रहे। महात्मा गांधी दूल्हा बने हैं और सरकार दुलहिन बनी हुई है। सभी स्वयं सेवक बराती बने हैं तथा थानेदार नाई बना है। सभी पटवारी गीत-गाली गा रहे हैं, तथा तहसीलदार रसोई पूरी बना रहा है। महात्मा गांधी नेग माँगने के लिए मचल रहे हैं। वे दहेज में स्वराज्य माँगते हैं। सरकार खड़ी-खड़ी विनती कर रही है कि जीजा, गौने में स्वराज्य अवश्य देवेंगे।

७. गांधी इक महातमा हुई गया

१

गांधी इक महातमा हुई गया, कळजुग मऽअवतारी रे।
जेकि तिरिया पतिबरता छे, कस्तूरी जग नऽ जाणी रे ।।१।।

२

चरखा संग रमाई धुणी, दुई मनखऽ उपकारी रे।
सच्ची बात धरम की जाणी, अरू अहिंसा ठाणि रे।।२।।

३

धणी-लुगई लड़ी-जड़ी न सत्याग्रह खऽ जाणी रे।

अंगरेज होण सु जबर जोर हुई, हार उन्नई नऽ माणी रे।।३।।

- निमाड़ी रचना

कलयुग में मोहनदास कर्मचंद गांधी नाम के एक महात्मा अवतारी महापुरूष हो गये हैं। उनकी पत्नि कस्तूरबा गाँधी बहुत पतिव्रता है। यह संसार को भली प्रकार से ज्ञात हुआ है। ये दोनों पति-पत्नि मानव हित में परोपकार की भावना लिये कार्य कर रहे हैं। चरखा, सचाई और अहिंसा इनके प्रमुख मंत्र व साथी हैं, जिनके बल पर अंग्रेजी हुकूमत से लड़ रहे हैं। अंत में अंग्रेजी शासन की हार हुई और महात्मा गांधी की विजय हुई।

८. यो खोटो पईसो नी हईं, खरी चांदी आय

यो खोटो पईसो नी हईं, खरी चांदी आय

यो हवा अंधवाळ नी हईं, गांधी बाबा आय।।१।।

यो आसमानी बादली नी हईं, सत्याग्रही नऽ की टोळई आय।

ये तो गरीब का लेणऽ, फैलायेल गाँधी बाबा की झोळई आय।।२।।

ये मरनाऽ की नी कैता, मरना की बात करजऽ।

एखई लेण ओखा सऽ, अंग्रेज भी डरजऽ।।३।।

यह खोटा पैसा नहीं है, खरी (सच्ची) चान्दी है। यह हवा आंधी भी नहीं है, ये गाँधी बाबा हैं। ये आसमानी बादल नहीं हैं, सत्याग्रहियों की टोली है। यह तो गरीबों के लिए फैलाई गई, महात्मा गांधी की झोली है। ये मारने की नहीं, किन्तु मरने की बात करता है। इसीलिए इससे अंग्रेज भी डरता है।

९. मल्हार

कवि-पं. बाबू राम दोनेरिया ''स्वतंत्र''

अजी प्रिया, हाथ में जाऊँ रख शीश।

गाँधी की प्यारी फौज में ।टैक।।

१

मरने की परवाह मुझको है नहीं।

अजी प्रिया, पहिले कटाऊँ निज शीश।।१।।

२
मर के दिखावें अपनी आन पर
जरा देखे वहाँ कोई न्यायाधीश॥२॥

३
यह भी क्या उनकी न्याय बहादुरी।
चढ़ते इक पै रिपु दस-बीस॥३॥

४
पीठ जो दिखाऊँ धर्म-युद्ध से।
प्रिया देखेगा मुझे जगदीश॥४॥

५
घर में घुसूँगा रण को कर विजय।
वरना होऊँ 'स्वतंत्र' जग को त्याग॥५॥

१०. महात्माजी का सिंहनाद

कवि-'भीम'

१
भारत स्वतंत्र का शंखनाद, बजवाया गांधी बाबा ने।
गंभीर बनो, स्वाधीन बनो, समझाया गांधी बाबा ने॥१॥

२
जिस भांति लखन थे दिये पत्र-ऐ दशकंधर अब समझारखो।
यह राजनीति का नीति-धर्म, चितलाया गाँधी बाबा ने॥२॥

३
तस वाइसराय महोदय को लिख, अंतिम पत्र चिताय दिया।
यह जन्म-सिद्ध-अधिकार मेरा, बतलाया गाँधी बाबा ने॥३॥

४
यह थाती मेरा पहले का, मत देर अब देने में।
हम इस लायक सब भाँति हुए, सिखलाया गांधी बाबा ने॥४॥

५
दे दो स्वतंत्रता भारत को, हम कब से आश लगाए हैं।
जब इस पर भी नहीं कान दिया, रिसिआया गांधी बाबा ने॥५॥

६

तब प्रलय काल का कोप महा कर, सिंहनाद सम गर्ज किया।

अब गवरमेन्ट का कर तोरो, सिखलाया गांधी बाबा ने।।६।।

७

ले सत्याग्रह का शस्त्र साथ, हर जगह नमक तैयार करो।

फिर वसन विदेशी विदा करो, फरमाया गांधी बाबा ने।।७।।

८

भई हलचल नौकरशाही में, जिस समय नमक तैयार हुआ।

जो पाँच सहस में दो तोले, बिकवाया गांधी बाबा ने।।८।।

९

भारत माता को मातु समझ, नवयुवक सपूतों डटे रहो।

नहीं उठो एक छन-समर छोड़, जतलाया गांधी बाबा ने।।९।।

१०

सरकारी आज्ञा तोड़-तोड़, सारे जेलोंको भर दीजे।

है कृष्ण-जन्म भूमि-पवित्र, दरसाया गांधी बाबा ने।।

११

इस भारत सत्याग्रह-रण में, सैनिक बन तन जो दिया नहीं।

जननी सन्मुख निज मुख कैसे लावेगा गांधी बाबा ने।।११।।

१२

अब अतः सुजन जन जाग जाग, सेनापति 'भीम'सरिस बन कर।

माता की शान बढ़ओं,कह हर्षाया गांधी बाबा ने।।२।।

भगवान गाँधी नजर-कैद!

कवि-'माधव'

१

गांधी तू आज हिंद की, इक शान बन गया।

सारी मनुष्य जाति का, अभिमान बन गया।।१।।

२

तू सत्य अहिंसा, दया निस्स्वार्थ त्याग से।

इस आज मृत्युलोक का, भगवान बन गया ।।२।।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

३
तेरा प्रभाव, सादगी, हस्ती को देखकर।
दुश्मन भी बेज़ुबान हो, हैरान बन गया।।३।।

४
तेरी नसीहतों में, वह जादू का असर है।
जिसको लगी हवा तेरी, इन्सान बन गया।।४।।

५
तू दोस्त है हर कौम का, हर-दिल-अज़ीज़ है।
सारा जहान तेरा, कदर-दान बन गया।।५।।

६
गो आज हिंद उठ ने सके, बायसे तक़दीर।
फिर भी स्वराज्य लेने का, समान बन गया।६।।

७
धिक्कार है 'माधव' हमें, तैंतीस कोटि को।
तुझ-सा फ़कीर जेल का, मेहमान बन गया।।७।।

महात्मा गांधी नज़र-क़ैद!

कवि-'बिस्मिल'

१
दूर आँखों से हो यह कब है गवारा गाँधी।
बैठते-उठते करें तेरा नजारा गाँधी।।१।।

२
दिल से जी से, यही अब कहते हैं दौलत वाले।
है गरीबों की गरीबी का सहारा गाँधी।।२।।

३
क्या तमाशा यह तमाशा है कि नश्तर बनकर।
उनकी आंखों में खटकता है हमार गांधी।।३।।

४
आफतें आई तेरे सर पै बलाएँ आई।
है वतन के लिये सब तुझको गवारा गाँधी।।४।।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

५
दिल से, जी से, वह हमेशा के लिये दास हुआ।
कर लिया जिसने कभी, तेरा नज़ारा गाँधी।।५।।
६
जिसको देखो यही कहता है बड़े दर्द के साथ।
हो गया आज नज़र बंद पियारा गांधी।।६।।
७
सारी दुनिया में, जमाने में पड़े एक हलचल।
तू जो कर दे किसी जानिब को इशारा गाँधी।।७।।
८
क़ैद ख़ाने के अँधेरे में पड़ा है 'बिस्मिल'।
देश भारत का चमकता हुआ तारा गाँधी।।८।।

कव्वाली (चेतावनी)

कवि-'योगी'

१
जागो हुआ सबेरा, गांधी जगा रहा है।
यह आत्म-बल-प्रबर्द्धक, शुभ काल जा रहा है।।१।।
२
अन्याय की निशा से, अन्धेर से न डरना।
सूरज-स्वराज्य अपनी, लाली दिखा रहा है।।२।।
३
सुस्ती के बिस्तरे से, फुरती से उठ खड़े हों।
सब जग चुके तुम्हीं पर, दरिद्र छा रहा है।।३।।
४
हो नौजवान तुमको, जग जाना चाहिए अब।
सोने दो वृद्ध जन को, आलस्य आ रहा है।।४।।
५
यह दासता तो सुख का सपना है भग्न 'योगी'।
स्वाधीनता के सुख का, अवसर ये आ रहा है।।५।।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

खादी का डंका आलम में

कवि- 'दिनेश'

१
खादी का डंका आलम में , बजवा दिया गाँधी बाबा ने ।
मेनचेस्टर लंकाशायर को, हिलवा दिया गाँधी बाबा ने।।१।।

२
देशी वस्त्रों को पहनो तुम दो छोड़ विदेशी कपड़ों को।
यह पाठ भली विधि से हमको, पढ़वा दिया गाँधी बाबा ने।।२।।

३
देशी धोती गाँधी टोपी, खादी का कुरता औ धोती।
ओढ़ना बिछौना खादी का, करवा दिया गांधी बाबा ने।।३।।

४
मनहूस विदेशी कपड़ो की, जलवा दी भारत में होली।
शुभ चलन स्वदेशी खादी का चलवा दिया गांधी बाबा ने।।४।।

५
जो पहन साड़ियाँ परदेशी, चलती थी भारत की नारी।
खादी से उनका सुंदर तन, सजवा दिया गांधी बाबा ने।।५।।

६
सिर से पैरों तक है खादी, खादी के श्वेत समुंदर से।
हे आज जमाने के दिल को, दहला दिया गाँधी बाबा ने।।६।।

७
खादी की भक्ति बम से भी, है अधिक काम करने वाली।
खादी का गोला भारत को, दिलवा दिया गांधी बाबा ने।।७।।

८
अब त्याग विदेशी वस्त्रों को, पहनों 'दिनेश' देशी खादी।
खादी का झंडा भारत में, गड़वा दिया गाँधी बाबा ने।।८।।

गाँधी बाबा, ने भारत जगाय दिया है

कवि- 'माधौ'

गाँधी बाबा ने भारत जगाय दिया है।
हमें चरखे का मंतर बताया दिया है।।टैक।।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

१

शेर- जब से घर-घर में चरखे का चलाना छटा,
बस उसी रोज से भारत का नसीबा फूटा।
आके परदेशियों ने खूब खसोटा लूटा
धर्म छूटा सभी इन्सान का पौरूष टूटा।
आँखों से पट्टी गुलामी की हटा कर,
मारग पुराना दिखाया है।। गाँधी बाबा ने।।१।।

२

शेर- कौन सा घर था जहाँ चरखे नहीं चलते थे,
लाखों मन सूत इन्हीं चरखों से निकलते थे।
महीन मोटे कपड़े हर तरह के बनते थे,
शुद्ध मजबूत थे, सुख से उन्हें पहनते थे।
विलायत से आ के, राज जमा के,
हाय गोरों ने वह सुख नसाय दिया है।। गांधी बाबा ने।।२।।

३

शेर- ब्याह-शादी में था दहेज में चरखे का चलन,
नारियाँ हिन्दू-मुसलमान समझती थी सगुन।
नेम से नित्य वे चरखे को चलाती थीं पुन,
सुख से भरपूर रहो, उससे निकलती थी धुन।
धर्म से हमने कैसे विमुख हो,
पापों में मन को लगाय दिया । ।। गांधी बाबा ने।।३।।

४

शेर- विदेशी साड़ियाँ क्रेप व अद्धि मलमल,
हिन्द के लोग गिरे देख उन्हें मुंह केबल।
नारियाँ लाज से घूँघट न जो उठाती है,
पहन के उनको साफ नंगी नजर आती हैं।
डूब मरो तुम्हें लाज न आतीं,
पैसा व इज्जत गँवाय दिया है।।गांधी बाबा ने।।४।।

५

शेर- कुछ अभी गौर करो हिन्दू औ मुसलमानों,
तलाक दे दो इन्हें अपनी दशा पहचानो।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चलाओं चरखा तजो शौक वह दिन आएगा,
स्वराज्य दौड़कर कदमों में सिर नवाएगा।
सूत के धागे में सारी है ताकत,
'माधो' ने तुमको सुनाय दिया है ।। गांधी बाबा ने।।५।।
गांधी बाबा ने भारत जगाय दिया है।
हमें चरखे का मंतर बताय दिया है।।

यह गाँधी टोपी क्या हुई?

१
यह गाँधी टोपी क्या हुई? पिस्तौल हो गई।
लख कर इसे सरकार डाँवा डोल हो गई।।१।।
२
जहाँ देखों वहाँ ही करते हैं इसे, बंद टोपी को।
है मौत की निशानी या लाहौल हो गई ।।२।।
३
हम तो कभी डरते नहीं तलवार तोप से।
बेड़ी भी पहिन कहते कि रमझोल हो गई।।३।।
४
पर पेट में क्यों दर्द है इस गाँधी केप से।
है जादू या सरकार ही बगलोल हो गई ।।४।।
५
क्या जुर्म इसका पहनना स्वतंत्र हो गया।
कानून भी है या कोई मखौल हो गई।।५।।

मेरा गांधी करेगा सुनाई रे

कवि-'प्रताप'

१
मेरा गांधी करेगा सुनाई रे (चल) मत सुने फिरंगिया ।।टैक।।
तेरी करे न अब कोई पुछाई रे (चल)मत सुने फिरंगिया।।१।।
२
दिन धौले बिस्तर बाँध ले रे फिरंगिया।
तेरी गाड़ी की टेम हो गई रे (चल)मत सुने फिरंगिया।।२।।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

३
दुःखी फरियादी को दे, गाँधी का तू ताना।
तूने अच्छी यह धौंस जमाई रे (चल)मत सुने फिरंगिया।।३।।
४
चौड़े घड़े घृत बिकता, चर्बी और घास का।
कभी इधर नजर न उठाई रे (चल) मत सुने फिरंगिया।।४।।
५
पड़ती है डकेती चोरी, छूरे बाजी रात दिन।
तेरी पुलिस का रहे नींद छाई रे (चल)मत सुने फिरंगिया।।५।।
६
'प्रताप' स्वतंत्र बिन हाय हाय करे लोग।
तब गाँधी ने करी चढ़ाई रे (चल)मत सुने फिरंगिया।।६।।

महात्मा गांधी ने, हिला दिया संसार

महात्मा गाँधी ने, हिला दिया संसार ।।टैक।।
१
वह भोली भाली शकल वाला,
दुनिया में बड़ी, अकल वाला।
अन्याय में है वह दखल वाला,
जिससे काँपे है सरकार।।१।।
२
वह दुबला पतला एक नर है,
जिसको अति प्यारा खद्दर है।
न जग में उसको कुछ डर है,
रहता है बिन हथियार।।२।।,
३
एक चरखा उसकी मशीन गन है,
कुछ खद्दर धारी पलटन है।
कोई मोटा कोई सुखे तन है,
ले सत्याग्रही तलवार।।३।।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

४
नहीं ताज-साज वह वाला है,
नहीं नखरे नाज़ वह वाला है।
एक खाली लंगोटी वाला है,
जिस पे चढ़ते हथियार।।४।।

५
वह कहता मुल्क न गारत हो,
हाँ बेशक नेक तिजारत हो।
और कहे स्वतंत्र भारत हो,
बस चाहता निज अधिकार।।५।।

भारती होजा रे खुल गया, गाँधी का दरबार

कवि- आर.एस.दास ''त्रिवेदी''

१
भारती होजा रे खुल गया, गाँधी का दरबार।
जो तेरे मन में, देश लगन है, बन जा सत्याग्रही यार।।१।।

२
आजादी की जंग में कूदो, कहता गाँधी सिपहसालार।
जेलों से घबराओं ने यारों, भर दो सारे कारागार।।२।।

३
खद्दर पहनो, चरखा काते, हो भारत का बेड़ा पार।
गर गाँधी का कहना मानो, भागे ये जालिम सरकार।।३।।

४
हिन्दू-मुस्लिम दोनों भाई छोड़ो आपस की तकरार।
आपसी भेद भुलाकर, मिल जाओ सारे नर-नार।।४।।

५
भारत में ही सब रहते हैं, सबका ही है अधिकार।
संदेह न कर 'त्रिवेदी' इसमें हैं गाँधी जी अवतार।।५।।

प्रीतम चलूँ तुम्हारे संग

प्रीतम चलूँ तुम्हारे संग, जंग में पकडूँगी तलवार।।टैक।।

१

भारत को आजाद करूँगी, नहीं जेल से बालम डरूँगी।
मारूँगी और वही मरूँगी, करूँ नमक तैयार।।१।।

२

चरखे की मैं तोप बनाऊँ, बना सूत के गोले चलाऊँ।
मेनचेस्टर के किले को ढाऊँ, पाँऊ फतह भरतार।।२।।

३

गाँधी जी का हुकम बाजाऊँ, घर-घर में उपदेश सुनाऊँ।
अपनी बहनों को समझाऊँ, करूँ खूब प्रचार ।।३।।

४

नहीं पीछे को कदम हटाऊँ, नही माता का दूध लजाऊँ।
रजपूती का हुनर दिखाऊँ, कस पांचौं हथियार।।४।।

५

अपना पहनूँ कता सुदेशी, नहीं खरीदूँ माल विदेशी।
सुलह करेगें तब तक परदेशी, हुआ गरम बाजार।।५।।

६

खादी के सब वस्त्र बनाओं, सारी जनता को पहनाओ।
घर-घर-घर-घर चरखा चलाओं, मैं करूँ सूत तैयार।।६।।

(भारत) माता का संदेश

१

उठो भाईयो, चलो आज,
मात ने तुम्हें बुलाया है।
कर्मवीर गाँधी के द्वारा,
यह संदेश पठाया है।।

२

उठा के रख दो, पुस्तक-वीर,
गुलामी की तोड़ो जंजीर।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सत्य, अहिंसा, चरखा, एकता,
इनका बल पठाया है।।२।।

३
न हो भारत जब तक स्वाधीन,
न हो विश्राम, न हो श्रम-हीन।
हो जाओ बलिदान देश पर,
यह संदेश पठाया है।।३।।

ज्ञान ज्योति

कवि-मुंशीलाल पटेरिया 'शशिधर'

१
होनहार बच्चों के मन में, ज्ञान-ज्योति निशिदिन जगती है।
साधारण सी बात मध्य वह, सूक्ष्म तत्व को भी लखती है।।१।।

२
कर्तव्य परायण करमचंद थे एक दिवस बाजार गये
औ श्रवण नाम नाटक क्रय कर,वे मन में अति ही मुद्रित हुये।।२।।

३
गाँधी को योग्य समझकर औ, उनको समुदित वह दे डाला।
पाकर पदार्थ अधिकारी कर, क्यों भला नहीं शोभा वाला।।३।।

४
श्री गाँधीजी पे पढ़ा सरुचि, वह नाटक श्रवण कुमार जभी।
हो गये प्रभावित भली भांति, सो निकल पड़े ये वचन तभी।।४।।

५
अहो! उच्च कितना उदार शुचि, श्रवण कुमार चरित तेरा है।
करूँ उसी का शुद्ध अनुकरण, चाह रहा यह मन मेरा है।।५।।

६
जननी और जनक की सेवा सुत के हित पहली सेवा हे।
सब विधि मन रखने से उनका, मिल सकती अभिमित मेवा है।।६।।

७
निज मातु पिता की अभिलाषा को, पूरी सदा करूँगा मैं।
सब कार्य-काल उनकी रूचि का नित पूरा ध्यान धरूँगा मैं।।७।।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

८

इस विधि भावी जीवन के हित, नाटक के नाटक खिलवाया।
औ भारतीय आदर्शवाद का, सुन्दरतम पथ दिखलाया।।८।।

सत्य

कवि- मुंशीलाल पटेरिया 'शशिधर'

१

बन गई रात्रि थी एक दिवस, थी कृष्ण शुक्ल का काम किया।
अवसर ने अब श्री गाँधी को, था सत्य पाठ भी पढ़ा दिया ।।१।।

२

जग में प्रसिद्ध हरिश्चंद्र तुल्य, नृप हरिश्चन्द्र नाटक देखा।
फिर सत्य मूर्ति को कर प्रणाम भारत भू को अनुपम लेखा।।२।।

३

तू ने ही हे भारत माता, ऐसे भाई उपजाये हैं।
क्या मैं हूँ तेरा लाल नहीं? फिर क्यों न पूत गुण भाये हैं।।३।।

४

दो शक्ति मुझे भी हे माता, मैं वचन सदा ही सत्य भनूँ।
वरूँ मार्ग त्याग दें हरिश्चन्द्र, पर हरिश्चद्र मैं अटल बनूँ।।४।।

५

था सत्य सत्य संकल्प हर्ष, आँखों से जो कुछ अश्रु गिरे।
फिर साथ सत्य साथी लेकर, निज सदन सुचित सुख फूल फिरे।।५।।

६

जो जिसका होता अधिकारी, होता है उसको प्राप्त वही।
उस सत्य मूर्ति में समा सत्य, हो गया स्वयं निर्भय अति ही।।६।।

चेतावनी

कवि- अनाम

१

अब रोक सके गति कौन भला, मुट्ठी भर हड्डी वाले को।
वह मूर्तिमान आराध्य अहिंसा, सत्य कवच गल डाले को।।१।।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

२

विश्वास विश्व-सा विस्तृत है, रण भेरी सुन मुँसकाता हे।

है एक तृप्ति उर में उसके, वरमाला की स्वर भाले को।।२।।

३

लोहा लेता है जो, उसके आगे वह शीश झुकाता है।

फिर कौन डिगा सकता है, ऐसे शांति लाने वाले को।।३।।

४

जो भारत को अति प्यारा है, है जग में धाक जमा जिसका।

क्या कर सकता है कोई, नजर-कैदी बन जाने वाले को।।४।।

५

आखिर जो जालिम, जुल्म मचा डाला है, भारतवासी संग।

सो पटकेगा सिर अपना अब चरणों पै भारत लाले को।।५।।

६

या पटको शीश अभी अपना या तोप मशीनों के बल से।

इस भारत को श्मशान बनाकर राज्य करो बस घाले को।।६।।

अरी बहनों, गांधी की मानो अब बात

कवि- आर.आर. दास त्रिवेदी

१

अरी बहनों, गांधी की मानो अब बात,

झंडा तो लीजे हाथ में।

अरी सत्यवती री बहनों कह गई,

एरी बहनों, जेल में आओ एक साथ में।।१।।

२

वस्त्र विदेशी री बहनों फूँक दो,

अरी बहनों, लुट गई भारत माता।

जेल तो प्यारी बहनों मंदिर है,

अरी बहनों, हुआ जनम गोपीनाथ।।२।।

३

जेल मंदिर में बहनों चल बसा,

एरी बहनों, महेलों को, मारो अब लात।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तोप-गनों से बहनों मत डरो
    एरी बहनों, मरदों को कर देवो मात॥३॥

४

सत्य-ग्रही बहनों हो चलो,
    अरी बहनों, छोड़ो पिता और मात।
जुल्म तो गोरे, प्यारी कर रहे,
    अरी बहनों किये बहुत उत्पात॥४॥

५

सत्यवती सी बहनों सब बनों,
    अरी बहनों 'त्रिवेदी' ये ही गात ॥झंडा तो...॥५॥

बापू का संदेशा आया रे

कवि-राधेश्याम बि. शांडिल्य

मन नाचा ओर कुछ गाया रे।
बापू का संदेशा आया रे।टैक॥

१

खुश होकर टोलियों नाच रहीं ।
और काली घटाये छाय रहीं ।
सत्याग्रह बापू अपनाया रे॥१॥

२

हम आगे ही बढ़ते जायेंगे।
मुश्किल से, ना घबरायेंगे।
आजादी सबको, भाया रे॥२॥

श्री गांधी वंदना

कवि-राधेश्याम बि. शांडिल्य

१

निज देश पर, गाँधी ने निछावर,
    कर दिया तन-मन सभी।
आगे बढ़े, पीछे न पाँव,
    जिनने उठाया, था कभी॥१॥

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

२
हँसते हुए, स्वाधीनता की,
(भेंट में) सीने में, गोली खो गये।
मर-कर हमें, जीना सिखा,
भव-सिन्धु से, वे तर गये।।२।।

३
दुनिया रहेगी, जब तलक,
गाँधी का, रहेगा नाम है।
'शाडिल्य' श्रद्धा-सहित उनको,
बारम्बार मेरा, प्रणाम है।।३।।

विश्व वंद्य बापूजी को, कर नमस्कार

कवि स्व. रामसिंह चौहान 'बेधड़क'

भारत स्वाधीन हो गया है, साम्राज्यवाद हो गया पस्त।
हे धन्य धन्य सन् सैंतालीस, पन्द्रह अगस्त पन्द्रह अगस्त।।
आई शाताब्दियों बाद तेरा, स्वागत स्वतंत्रते महारानी।
जीवन में नवजीवन भर दो, बन जायें सभी स्वाभिमानी।।टैक।।

अब विश्ववंद बापूजी को, कर नमस्कार शत बार-बार।
निकला चरखे से वज्र तार, दिया फोड़ दास्ता का कपार।।
दिखलाई ऐसी करामात, एटम बंब भी खा गया मात।
शक्ति थी वह अनुपम शक्ति, जो असत्य अहिंसा में जानी ।।१।।

गीता कुरान इंजील और है, विश्वंभरीय वेद वाणी।
'बेधड़क' बनाया हमें और, दिलवाई आजादी प्यारी।।
उसके बदले में हमने ही, उस बापू को गोली मारी।
हम लज्जित हैं निज करनी पर, दिखलाकर अपनी नादानी।।
आया था मोहन, मोहन बन, उसकी कदर नहीं जानी।।२।।

क्रांतिमय शांति से जिसने, यह स्वतंत्रता दिलवाई है।
कर्तव्य हमारा है ये ही, इसको रखे स्थाई है।।
निर्माण राष्ट्र का करें और जीवन में नव जीवन भर दें।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आदर्श उपस्थित करें नया, विश्व की विषमता को हर दें।।
गुजिंत हो जगती पर फिर से, बापू की अजर अमर वाणी।।३।।

ग़ज़ल

कवि- 'गाफिल'

१
शौहर ए आफ़ाक हो गाँधी का सितारा चमके।
दाग़ धुल जायें ये सब आँख का तारा चमके।।१।।

२
बैठने वाले हैं नौ नाव है सत्याग्रह की।
ना खुदा खुद है खुदा, क्यों न किनारा चमके।।२।।

३
तुम सा खुश किस्मत अब होगा कौन अहिले हिन्द।
बेड़ा मंजधार में, गांधी सा सहारा चमके।।३।।

४
बाग फूले व फले, सैयाद तरसता ही रहे।
बुलबुले हिन्द की माता का सितारा चमके।।४।।

५
मुल्क आजाद रहे सैयाद भी आजाद रहे।
दिल में कुढ़ता ही रहे, भाग हमारा चमके।।५।।

६
दिन गुजर हो तो गये, सहके मुसीबत आखिर।
अब जरा सर भी उठाया तो दुधारा चमके।।६।।

७
सर झुकाते ही रहे, आँखों पै लेते ही रहे।
हाथों पै रखा है सर, क्यूँ न शरारा चमके।।७।।

८
है ये हर वक्त दुआ, दिन ये हमारे भी फिरें।
भाग दुश्मन का और हमारा चमके।।८।।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

९

देखे 'गाफिल' न बर आती हैं मुरादें कब तक।

बाँधे बैठे हैं कमर, हिन्द दो बारह चमके।।९।।

ग़ज़ल (राष्ट्रीय गान)

कवि- 'देशकिंकर'

१

सोते भारत को जगायेगा हमारा गाँधी।

विपद के पद से बचायेगा हमारा गाँधी।।१।।

२

देश दुखिया ये बिकल है न पल इसे कल है।

दुःख दुस्तर से तरायेगा हमारा गाँधी।।२।।

३

काट कर देश की, परतंत्रता की बेड़ी को।

हार स्वातन्त्र्य पिन हायेगा हमारा गाँधी।।३।।

४

ये न समझो फ़क़त अब है न होगा फिर गाँधी।

सैकड़ों बार यह आयेगा हमारा गाँधी।।४।।

५

जब जब देखेगा विपत भारतीय जनता पर।

आप से आप चला आयेगा हमारा गाँधी।।५।।

६

शांति से युक्त असहयोग सच्चे दिल से हो।

स्वराज्य जल्द दिलायेगा हमारा गाँधी।।६।।

७

सीधे जाँयगे, न मरने की कुछ भी है परवा।

जिस तरफ हमको ले जायेगा हमारा गाँधी।।७।।

८

'देश किंकर' की है सेवा में विनय हे भुवनेश।

चिरायु सर्वदा करियेगा हमारा गाँधी।।८।।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गाँधी आबा, चोय माण्डीयेन

चोय माण्डीयेन, गाँधी जी आबा, चोय माण्डीयेन।।टैक।।

१
इंधार-धोंधार, राज सुबानकेन।
गाँधी जी आबा, चोय माण्डीयेन।।१।।

२
कोरो नो भोया वे, राजो रटीवेन।
गाँधी जी आबा, चोय माण्डीयेन।।२।।

३
इंगरेजो लिजाऐन, बाँग उरीयेन।
गाँधी जी आबा, चोय माण्डीयेन।।३।।

४
आले टोटरा माये, पचना गाड़ा आड़ीयेन।
गाँधी जी आबा चोय माण्डीयेन।।४।।

- कोरकू गीत

- हे भाई! गाँधी जी बाबा, क्या कह रहे हैं? उन्होंने हमें पुकारा है। हमें आजादी की लड़ाई में जाना है। आजादी की यह पुकार इधर-उधर सब दूर से उठ रही है। सभी मनुष्यों को इस लड़ाई में चलना है। हम अपनी आजादी को पाने के लिए अपना सर्वस्व लुटा देंगे। विदेशी कपड़े छोड़ देंगे, चाहे हमारा गला कट जाये, चाहे सिर पर डंडे पड़ें, लेकिन हम भरी हुई गाड़ियों के समान हमारे रास्ते पर अड़े रहेंगे। गाँधी जी ने हमें पुकारा है।

गांधी आबा, जय माण्डीयेन

१
टाला टालाटेन, भारत आन्टे जय माण्डीयेन।
टाला टालाटेन, गाँधी आबा जय माण्डीयेन।।१।।

२
सेबेयकू मिलाटिंज-टेन, डेसो सिरिंज सीरिंजवेन।
आजादी जड़ाई लडाटिंजवेन, गोराकू हराटिंजयेन।।२।।

३
डिजखे जोर जुलुम नाका बांग डाडायेन।
आले आलेका डेसोन आजादी घटायेन।।३।।

- कोरकू गीत

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

- गली गली में भारत माता की जय बोलो। गली-गली में गाँधी बाबा की जय बोलो। सब हिलमिल कर वीर गर्जना के गीत गाओ। आजादी के लिए लड़ाई करो और गोरों को भगाओ। उनका जोर-जुल्म, अत्याचार नहीं चलेगा। हम अपनी आजादी लेकर ही रहेंगे।

गाँधी संगोएन सोप्टी

१

डोंगरेन कूला बीडे, डोगरि कूला बीडे।
आलेका ओटे इंगरेज आरागेज-बा।।१।।

२

इंगरेज जांगड़ी-कू बांग संगोएन सोप्टी।
डोंगोरन सत्याग्रह गांधी संगोएन सोप्टी।२।।

३

भाला बल्लम डो आखे दातरोम।
कोरा-जफाय सब्बोकू बो संगोम।।३।।

४

इंगेरज-कू गोजखे एटा कखब्बे।
आलेका ओटे आन्टे लियेन आलेबी गोचखे।।४।।

-कोरकू गीत

- हे जंगल के शेर वीरों जागो। अपनी धरती से अँग्रेजों को भगाओ। हे साथी, अंग्रेजों का साथ मत दो। जंगल सत्याग्रह में गांधीजी का साथ दो। भाला, बल्ल्म, कुल्हाड़ी और हँसिया (दराती) उठाओ। अंग्रेजों से लड़ने चलो। अंग्रेजों को मारो और भगाओ। अपनी धरती की रक्षा के लिए अपना बलिदान करा दो।

गांधी बाबा

गाँधी बाबा, गाँधी बाबा,
आले आरजो आयुमे।
आले सेबेय कोरकु नी,
माण्डी आम आयुमे।
आमका आले आयोम बाबा,
डोंगरेन सत्याग्रह सेबेय कू।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

झट्टो-पट्टो इंगरेज कू नी,
आले डेसोन नामा हातरे।

- कोरकू गीत

- गांधी बाबा, गाँधी बाबा-हमारी विनती सुनो। हम सब कोरकूओं की बात तुम सुनो। हम सभी तुम्हारे साथ हैं। हे गाँधी बाबा! जंगल सत्याग्रह में सभी एक साथ है। झटपट अंग्रेजों को अपने देश से अब भगाना है।

बापूयेन खोबोर हेजेबा रे

१
जीव-उरा सुसुन एटा जेका सिरिंग रे।
बापूयेन खोबोर हेजेबा रे।।१।।
२
आनंदोटेन कोयोके सुसुन-जा रे।
एटा केण्डे बदड़ायेन डडाल-जा रे।।२।।
३
आले सब्बोकू सड़पेबा रे।
हिम्मटो कामू डायूबा रे।।३।।

- कोरकू गीत।

- हे भाई! हम सब कोरकूओं का मन नाच उठा है। आओ, रण-भेरी के गीत गाओ। गाँव-गाँव में, घर-घर में बापू का संदेशा आया है। यह संदेशा अपने देश को अंग्रेजों से मुक्त कराने का है। हम सब एक जुट होकर स्वतंत्रता आन्दोलन में गाँधी जी का साथ दें।

अंग्रेज रूपी बादलों को भगाकर ही रहेंगे। तब कहीं खुशी की हवा बहेगी। तब अपना देश स्वतंत्र होगा। अपना ही राज्य होगा। हम सब कोरकू आगे बढ़ें, गाँधी जी का साथ दें। हिम्मत से काम लें।

❋ संदर्भ गीत ❋

- गीत क्र. १-२-३-२७-२८ स्वयं संकलनकर्ता के रा. बि. शांडिल्य
- गीत क्र. ४-५ श्रीमती गोदावरी बाई बालमकुंद आसनगायें खिड़की वाला
- गीत क्र. ६-७-२१-२६ श्री श्रद्धेय पू.ग.तु. माताजी श्रीमती त्रिवेणी बाई बिहारीलाल शांडिल्य द्वारा गाये गये गीत सन् १९९० ई. में.
- गीत क्र. ८-९ श्रीमती कमलाबाई भागीरथप्रसाद काशिव ग्राम सामरधा द्वारा गाये गये गीत

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

- गीत क्र.१० से लगातार २० तक एवं२५ श्री श्रद्धेय पू. पिताजी श्री बिहारीलाल गनपत राम जी अवकाश प्राप्त पटवारी ह. नं. ७५ टेमलावाडी माल. की सन् १९३२ ई. की गंगा डायरी से संकलन किया है।
- गीत क्र.२२-२३-२४ श्री सिरोठिया जी, रेंजर रहटगांव रेंज से संकलन।
- गीत क्र.२९ श्री राधेश्याम जी गंगाविशन जी गीते ग्राम भोनखेड़ी (हरदा) से संकलन।
- गीत क्र.३०-३१ श्री मोहम्मद युसुफ खां ग्राम हंडिया से संकलन।
- गीत क्र.३२-३३-३४ श्री भाऊ कोरकू ग्राम मीरपुर।
- गीत क्र.३५-३६ श्री रींगा कोरकू ग्राम टेमलाबाड़ी।

- संकलनकर्ता के हस्ताक्षर

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लोकगीतों में गांधी

रामनारायण उपाध्याय
साहित्य कुटीर ब्राह्मणपुरी,
खण्डवा (म.प्र.)

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लोकगीतों में गांधी

जिन्होंने महाकाव्यों की रचना की, उनका नाम तो साहित्य के इतिहास में अंकित है। लेकिन जिन्होंने अपने नाम को जनगंगा में विसर्जित करके जन-जन की भावनाओं की वाणी देने का प्रयास किया, उनकी कृतियों ने लोकगीतों के नाम से मानव हृदय में अपना अमिट स्थान बना लिया है। लोकगीत समय की सीमा से बन्धे नहीं होते, फिर भी उनमें युग को प्रतिविंबित करने और युग-युग तक मार्गदर्शन करने की क्षमता होती है।

जिस तरह धरती में दबा हुआ बीज, धरती की परतों को तोड़कर अंकुरित होता है और ऊपर से ऊपर उठता चला जाता है। उसी तरह गुलामी से दबी जनता की मनोभावनायें, दमन की दीवारें तोड़कर लोकगीतों के माध्यम से व्यक्त होती आई है। किसी भी देश की आजादी को लाने में स्थान अपने नाम की परवाह न करने वाले असंख्य कार्यकर्ताओं का होता है, वही स्थान अपने नाम और रूप को होम कर जन-जन में आजादी की अलख जगाने वाले लोकगीतकारों का भी होता है।

स्वंतत्रता के आंदोलन में सन् ५७ की तलवार को नई चमक देने वाले साहित्यकार का जितना महत्व है, उतना ही महत्व उन हरबोलों का भी है, जिन्होंने उस तलवार की चमक को मशाल की तरह अपनी जुबान के हाथों देकर उसे सुरक्षित रूप से नए युग के हवाले कर दिया। सुदूर रामायण काल के लोकगीतों ये यदि ईख के खेतों में काम करने वाली महिलाओं के मुख से महाराजा रघु की लोकप्रियता के गीत सुने जा सकते हैं, तो आधुनिक युग के लोकगीतों में भारतीय आजादी के जनक ''**महात्मा गांधी**'' का यशोगान सुना जा सकता है।

सदियों से शोषित पीड़ित, पद्दलित और उपेक्षित ग्रामीण जनता के सामने जब गांधी की नाम पहुंचा, तो उसने उगते सूरज की पहली किरण की तरह उसका स्वागत किया, और उसे धरती के सूखे होठों की प्यास बुझाने वाली वर्षा की पहली बूंद की तरह प्यार किया।

गांधी के आने और चले जाने के बाद लिखी गई कविताओं की अपेक्षा उन लोकगीतों का अधिक महत्व है, जिन्होंने स्वातंत्रता संग्राम का उद्घोष किया और गांधी के जीवन-काल में उनका संग-साथ निभाया। देश के प्रत्येक भाग और इसके प्रत्येक लोकभाषा में इस तरह के गीत पाये जाते हैं। पहली बार जब फैजपुर जैसे एक छोटे से गाँव में अखिल भारतीय कांग्रेस का अधिवेशन आयोजित किया गया तो, लोकगीतों की तलाश में गाँव-गाँव घूमने वाले सुप्रसिद्ध लेखक देवेन्द्र सत्यार्थी ने लिखा है कि सुदूर महाराष्ट्र के एक ग्रामीण अंचल में, गरमी की चिलचिलाती धूप में, गांव के कच्चे रास्ते पर धूल का बादल उड़ाने वाला एक गाड़ीवान तन्मय होकर गा रहा था-

''गाड़ीवान ओ गाड़ीवान
तेरे हाथों में रूखी सी रोटी है
क्या यही है तेरी कमाई
गांधी का नाम तो तूने अवश्य सुना होगा।''

मानों गांधी का नाम एक मात्र सहारा था, उस गरीब आदमी के अच्छे दिन आने का। वह प्रतीक था-लंबे अर्से से भोगे जाने वाले कष्टों से मुक्ति दिलाने का। वह आश्वासन था ईमानदारी से कमाई गई रोटी पर कमानेवाले अधिकार का। इसीलिये तो वह मराठी लोकगीतकार इसे बार-बार गुनगुना रहा था।

''ओर रे किसान, तेरे हाथ में रूखी सी रोटी है
क्या तूने गांधी का नाम नहीं सुना।''

जंगल की आग की तरह गांधी का नाम शहरों और गांवों की सीमाओं को लांघते हुए उनके दिल में अपना घर बना चुका था, जिनको रहने के लिये झोपड़ी भी नसीब नहीं। तभी तो एक गोड युवक मस्ती से अपनी लोकभाषा में गा उठता है-

''बादल गरजता है
मालगुजार गरजता है
फिरंगी के राज का सिपाही भी गरजता है
हे राम, गांधी का राज आने वाला है
हो हो राम, गांधी का राज आने वाला है।''

कोई माने या न माने, गोड युवक का यह दृढ़ विश्वास था कि जुल्म जितना बढ़ेगा, गांधी का राज्य उतनी जल्दी आएगा।

हरियाणा के एक लोकगीत में, अंग्रेजों की विवशता और गांधी की तेजोस्विता का सजीव चित्रण है-

''लंदन में घर-घर में रो रहीं है,
गांधी हमारे गले का हार बन गया।
सरकार घुटनों के बल झुक गई,
अब उसके हथियार थोथे पड़ गए।
मधु-मक्खियों की भांति लोग अंगरेजों पर टूट पड़े हैं
अब अंगरेजों का कौन बेड़ा पार लगाएगा।
लंदन में हाहाकार मच गया।
बहन, अब तो हमारा करतार भी रूठ गया
इस लंगोटीवाले से हम बाजी नहीं लगा सकते।''

महाकवि वल्लतोल ने गांधीजी के निधन पर कहा था कि ''आज, दो सूर्य अस्त हुए। इनमें से एक तो कल पुनः

उदय होगा, लेकिन दूसरा शताब्दियों के बाद, यदि धरती का भाग्य हुआ तो।'' एक पंजाबी लोकगीत में भी गांधीजी की सूर्य से तुलना की गई है, और एक सूरज से दूसरे सूरज को देखने का अनुनय करते हुये गीत के बाले यों चलते हैं-

''हमारे आंगन में सूर्य उदय हुआ है,
सूर्य देखने के लिए आओ।
हे गांधी तुम भी सूर्य देखने के लिए आओ।
आओ ना।''

निमाड़ अपनी उबड़-खाबड़ जमीन की ही तरह मटमैले, गेंहुवें रंगवाले किसान और मुसीबतों में भी मुस्कुराने वाले पलास के फूलों के लिए प्रसिद्ध रहा है। जिस तरह कठोर चट्टानों को चीरकर झरनों का निर्मल जल झरता आया है, उसी तरह निमाड़ की लोकभाषा में भी राष्ट्रीयता के प्रखर गीत गूंजते आए हैं। धीरे-धीरे बहने वाली बयार से नहीं, बल्कि प्रचंड आंधी से गांधी जी की तुलना करते हुए एक गीत में कहा गया है-

''ई खोटो पैसो नी खरी चांदी आय
ई हवा आंधोळ नी, गांधी आय
ई आसमानी, बादलों नी
सत्याग्रहीन को टोळई आय
ई तो गरीब का लोण ड फलायेल
गांधी बाबा की झोळई आय।
ई मारन, की नी, मरन ड की बात करज।
ये काजसी एख अंगरेज भी डरज ड।''

आजादी का आन्दोलन जब चिंगारी बनकर सामने आया तो लोकगीतों ने उसे हवा देकर शोला बनाने में मदद की। ऐसे समय में जब अंग्रेजी राज्य के खिलाफ ऊंगली उठाना भी जुर्म था, नौजवानों की टोली प्रातः चार बजे उठकर राष्ट्रीयता के ओजस्वी गीत गाते हुए जनता को जगाने और जागने का मंत्र सुनाती थी। ब्रम्ह मुहूर्त में जब लोग अपनी रजाईयों में दुबके, उठने का साहस नहीं जुटा पाते, तब सुदूर क्षितिज से उठते हुए गीतों से स्वर समीप आकर सोनेवालों को झकझोरते हुए कहते थे-

'' भैया, सोवण को नहीं हंई जमानो,
देश आजाद अपणों वणावणु।
जुल्मी डायर न गोळई चलई थी।
बूढ़ा-बच्चा की कर दी सफई थी।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दूध माता को हंई नी लजाउणु
देश आजाद अपणो वणावणु।''

एक गीत में जन-जन को जागने का आव्हान करते हुए कहा गया है-

''जागो रे किरसान भाई,
ई जागण की बेला छे।
जोका साथ म गांधीजी होय
कूण कयेज उ अकेला छे।
गांधी बाबा न अलख जगई दी
सत्याग्रह की धूम मचई दी
हरिजन न ख गळ लगई न
दारू बंद करई दी।
सत्य अहिंसा को व्रत धारो
जोर जुलूम सी कदी नी हारो
मातृभूमि का लेण अपने तन मन बारो रे।
जागो रे किरसाण भाई,
ई जागण की बेला छे।
जेका साथ म गांधी जी होय
कूण कयेज उ अकेला छे।

लोकमानस त्रिकालदृष्टा रहा है। गांधी जी को पहचानने में शिक्षित वर्ग ने भले ही देर की हो, लेकिन आम जनता ने तो उनके जीवन काल में ही उनमें अवतार के दर्शन कर लिये थे। एक निमाड़ी लोकगीत में द्वापर युग में जन में कृष्ण से गांधी की तुलना करते हुए कहा गया है-

द्वापर म मोहन हुआ
कलयुग मोहनदास
एक था जलम्या जेल म ड
एक रहे कारावास।
एक न बंशी मधुर बजाई
एक न चरखो सुधर चलायो।
एक न चक्र सुदर्शन फेक्यो

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

एक न गोरान ख ड घेन्यो।
एक न गोवर्धन ख ड उधान्यो।
एक न जन-जन ख ड उबान्यो।
एक न जुल्मी कंस पछाड़यो
एक न जालिम राज उखाड़यो।
एक न मोही द्वारका
एक न सेवाग्राम
एक को बल थो गीताराम
एक को बल थो राम।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लोक जीवन और साहित्य में बापू

संकलन व अनुवाद
बाबूलाल सेन
१०२, लक्ष्मीबाई मार्ग
महेश्वर (म.प्र.)
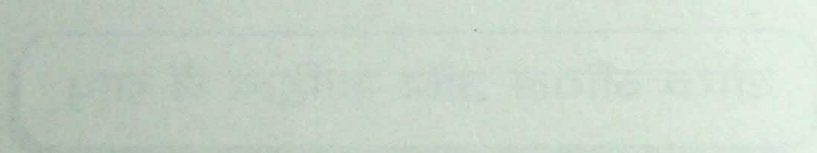
लोक जीवन और साहित्य में बापू

- बाबूलाल सेन

बीसवीं सदी के इतिहास में जितने भी नेता एवं राष्ट्रनायक हुए हैं, उनमें हमारे राष्ट्रपिता बापू से बढ़कर कोई नहीं हुआ बापू के चरित्र की यह विशेषता रही है कि उनकी कथनी और करनी में रंच मात्र भी अन्तर नहीं होता था। वे जो कुछ भी कहते थे, वह उनके विचार मंथन से निसृत नवनीत होता था और जो कुछ कहते थे, उसे स्वयं के आचरण द्वारा प्रस्तुत करते थे। आचार और विचार के समन्वय का ऐसा उदाहरण कहीं भी देखने को नहीं मिलता है।

भारत की प्राचीन परंपरा सादा जीवन उच्च विचार का निर्वाह वे पूरे मनोयोग और सजगता से करते थे, उनकी इन्हीं विशेषताओं को दृष्टिगत रखकर विश्वकवि गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने उन्हें महात्मा की उपाधि से विभूषित किया था।

महात्मा गांधी ने अपने व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन में जिन सिद्धांतों का प्रतिपालन कर उनका प्रचार-प्रसार किया था वे सिद्धांत थे- सत्य, अहिंसा, प्रेम स्वावलंब और विश्व बंधुत्व की भावना के ये सिद्धांत वही सिद्धांत थे जिनके बल पर राजकुमार सिद्धार्थ गौतमबुद्ध बने, ईसा महात्मा ईसा और मोहम्मद साहब पैंगबर कहलाये, इसी परंपरा में मोहनदास करमचंद गांधी महात्मा गांधी के नाम से प्रसिद्ध हुए हैं।

भारत माता को गुलामी की जंजीरों से मुक्त कराने में पूज्य बापू का महान योगदान रहा है, उन्होंने हमें सार्वजनिक जीवन में पाक साफ रहने की प्रेरणा प्रदान की। साथ ही परिश्रमी एवं स्वावलंबी जीवन व्यतीत करने के लिए भी प्रोत्साहित किया।

गांधीजी के स्वावलंब को दृष्टिगत रखकर अमेरिका के लुईफिशर ने कहा था ''संत महात्मा गांधी के लिए राजनीति कोई बहुत बड़ी चीज नहीं और मूंगफली कोई मामूली चीज नहीं, एक ओर यदि आप उन्हें विश्व के सम्मुख भारतीय आजादी और अहिंसात्मक आंदोलन की व्याख्या करते पाएंगे तो दूसरी ओर आप उन्हें आश्रम में हाथ की चक्की के आटे और हाथ के बने गुड़ का प्रयोग करते और उसका महत्व समझाते पाएँगें।''

जिस दिन पूज्य बापू एक हत्यारे की गोलियों से शहीद हुए, उस दिन सारा संसार शोक सागर में डूब गाय, यह दुखद समाचार सुनते ही एक विदेशी महाकवि बल्लौल ने कहा-

''आज दो सूरज अस्त हुए, इनमें से एक तो कल फिर उदय होगा, लेकिन दूसरा सूरज शताब्दियों बाद, यदि धरती के भाग्य हुए तो।''

गांधीजी के संबंध में विश्व के बड़े लोगों ने उनकी प्रशास्ति तथा निर्वाण के पश्चात् श्रद्धांजलियाँ अर्पित की हैं। हमारे देश का प्रत्येक व्यक्ति यहाँ तक कि उनके विरोधी भी उनके निर्मल निश्छल व्यक्तित्व के जादू से प्रभावित थे। इन्हीं लोगों में निमाड़ के कुछ लोक कवि शायर भी थे जिन्होंने कलगी-तुर्रा गायकी के ख्यालों में अपने विचार व्यक्त किये हैं।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

(१)

कलगी गायकी के शायर मेहराब साहब महेश्वर वाले की गजल

फरमाया जो बूड़े बापू ने व्यौहार ने टुटे ए साथी।।
हिन्दू-मुस्लिम दो फूलों का ये हार न टूटे ऐ साथी।।
हे ईश्वर-अल्लाह नाम अलग, दोनों का एक ही मतलब।
मंदिर का कलश चाहे मस्जिद की मीनार न टूटे ऐ साथी।।
जिस सूत से ये तसवीह गुथीं, उस सूत से ही जनेऊ बनी।
तसबीह के दाने बिखरे नहीं, जुन्नार[१] न टूटे ऐ साथी।।
बातों में बड़े लासनी[२] हो, कोई माक्लवी हो कोई शानी हो।
बात करो ऐसी मिठी, गुफ्तार[३] न टूटे ऐ साथी।।
दुश्मन जो हमारे मुर्कविल हो, तो हम भी उनके मुकाबिल हों।
बिजली की तरह समसीर चलें, झनकार न टूटे ऐ साथी।
सायर जो लिखे एकता की गजल, पढ़कर के सुनाये करे मेहफिल
मेहराब कहे यों समझा कर आसार[४] न टूटे ऐ साथी।

- श्री प्रह्लाद सिंह ठाकुर-ग्राम चोली के सौजन्य से प्राप्त

- शायर मेहराब खाँ अपने देश के साथियों से- कहते है कि साथियों बूढ़े बापू ने जो कुछ फरमाया है, उसे अपने आचरण में, व्यवहार में लाओ, यह व्यवहार टूटे नहीं। उन्होंने हिन्दू मुस्लिम एकता की जो माला गूँथी है, वह टूटे नहीं।

उन्होंने फरमाया है कि ईश्वर और अल्लाह ये दोनों नाम कहने के लिए अलग-अलग हैं, लेकिन दोनों का मतलब एक ही है, इसलिए चाहे मंदिर का कलश हो या मस्जिद की मीनार ये कभी टूटे नहीं।

जिस सूत के तागे से तसवीह (माला) गुँथी हुई है, उसी सूत से यज्ञोपवीत भी बनी है, इसलिए ऐसा प्रयत्न करो कि न तो तसवीह के दाने बिखरें और न ही यज्ञोपवीत का कोई तार टूटे।

हे मुल्ला मौलवी और ज्ञानी पंडित जन, आप लोगों का ज्ञान मशहूर भी, इसलिए ऐसी मीठी बातें करों कि आपकी वाणी का तार टूटे नहीं।

हे वीरों! अगर दुश्मन हमसे लड़ने के लिए आमादा ही है तो हमें भी उससे लड़ने को तैयार रहना चाहिए हमारी क्रांति की तलवार ऐसी चले कि उसकी झंकार टूटे नहीं।

---

१. जुन्नार- यज्ञोपवीत २. लासानी-अद्विितीय ३. वाणी आवाज ४. आसार-लक्षण-चिन्ह

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

(२)

पूज्य बापू तमन् माया दया तोड़ी रे प्रीत माया तोड़ी।
चड़ी गयी निरमळ धाम गैल वैकुण्ठ की सीधी पकड़ी।।

हँऊ तो बापू का गुण वरणन करता हो जी गुण वरनणन करता।
ऊ अपणा देस की सेवा में सदा व्यस्त रयता।।
अमन चयन क छोड़ दुख सयता हर वक्ता।
देस सेवा का खातीर जेल गया कई वक्ता।।
बापू जी हँस मुख हर बखत रयता था।
ऊ दुखीजन की सदा सुद लेता था।।
उनका दुख हरदम हरता।

आजादी का लेणऽ वो करता मयनत जीव तोड़ी ।
चड़ी गयी निरमल धाम गैलवै कुण्ठ की सीधी पकड़ी।।१।।

सन् ४२ में आजादी को आंदोलन हुयो बड़ो भारी।
नरनारी सब जेल मँ गया था, अंगरेज बड़ा अत्याचारी।।
देस प्रमे में सब डटी रया, नी करी जरा भी ख्वारी।।
देखी न बुलंद हौसला, अंगरेज गयो हारी।।

सबनऽ आजादी का नारा लगाया।
पंदरह अगस्त ४७ का दिन आया।
भारत छोड़ी नऽ अंगरेज बड़ा भागी गया।।
घर घर मँ तिरंगा लहराया।।

आई आनंद की घड़ी, गुलामी की बेड़ी दी तोड़ी
चढ़ी गया निरमळ धाम गैलवै बैकुंठ की सीधी पकड़ी।।२।।

तीस जनवरी अड़तालीस खऽ एक दुष्ट नऽ गोळी मारी।
राम राम हा राम करी नऽ जान बिसारी।।
हुयो देस में अंधकार भारत को सूरज अस्त हुयो।।
मची गई हाहाकार जगत मँ सब कऽ दुख हुयो।
बूढ़ा जवान नऽ बाळक बाळक रोवऽ जसा पाणी बिना मच्छ हुआ।
सुध-बुध तन की भुली गया नऽ भोजन पाणी जहर हुआ।।
बापू भी तमनऽ हमारा सी प्रीत जोड़ी।
काइ कसुर हुयो हमारा सी क्यों माया तोड़ी।।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सरदार जवाहर कऽ बीच मँ क्यों गया छोड़ी।
चड़ी गया निरमल धाम गैल बैकुण्ठ की सीधी पकड़ी।।३।।
हत्यारा तू नाग काळियो काळ रूप काँ सी आयो।
ली बापू की जान तूनऽ जनता खऽ भरमायो।।
अपणा स्वारथ का लेण तूनऽ दूसरा नऽ कऽ रड़ायो।
निरदयी हत्या करनऽ मँ तू जरा नी सरमायो।
अरे दुष्ट तूनऽ दगों करयो अति भारी।
तू जनम जनम होयगा नरका चारी।
अरे हत्यारा तूनऽ दया नी दिल मँ धारी
काँ की मंथरा आई नऽ थारी मती गई मारी।।
अपणी काळी करणी सी तू-चड्‌यो नरक पयड़ी।
बापूनऽ निरमळ धाम गैल बैंकुंठ की सीदी पकड़ी।।४।।

मार्या करूणा का बाण, हिया मँ तीर गया फसी।
बाण को घाव नजर नी आवऽ अंतर भाल धसी।।
दवा-दारू तो काँ लगाऊ नऽ कॉ बाँधू दोरा दसी।।
करूणा रस को जयर गयो, रग रग मँ फसी ।।
बापू जी तमारी याद आवगऽ हमकऽ ।
गरीब का मसीहा, हम ऊसांस लेवा दम-दम पऽ।।
हमारी पऽ बड़ी रहम-फिकर थी तम कऽ।
अवँ धीरज देगऽ कुण हमकऽ ।।
हा हमकऽ एकदम छोड़ी गया नऽ गया मुंडो मोड़ी।
चड़ी गया निरमळ धाम गैलऽ बैकुण्ठ की सीदी पकड़ी।।५।।

म्हारो कसो प्रेम थो बापू सी, हऊँ जाणूँ कि ईश्वर जाणऽ।
आग जाण कि लुहार जाण वो धम्मण वाळो काइ जाणऽ।
झुठ बणइ न बात करूँ तो भगवान मखऽ ताणऽ।
वो तीन लोक का करता धरता, घट-घट की जाणऽ।
बापू जी एक सोक समुंदर भरयो डोळा का कोना।
जसो धरती मऽरम सूम को सोना।।
बापूजी जनता पुकारऽ जवाब देता जाणा।
हमकऽ रस्तो बतावण ख फिर सी तुम आणा।।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हाथ जोड़ी अरदास करूँ पाँय धरूँ पागड़ी।
चढ़ी गया बैकुण्ठधाम गैलऽ बैकुण्ठ की सीदी पकड़ी।।६।।

- ज्योतिषाचार्य श्री बलवन्त डालके- ग्राम जोसपुर-धार से प्राप्त

- दिनांक ३० जनवरी १९४८ की सांध्य प्रार्थना में जब बापू शहीद हुए तो लोक कवि की वाणी इस प्रकार प्रस्फुटित हुई। हे पूज्य बापू! आपने हम सभी से माया ममता तोड़कर 'निर्मलधाम बैकुण्ठ' को जाने वाली राह पकड़ ली है, मुझे आपके गुणों का स्मरण आता है उनका वर्णन करता हूँ।

आप सुख चैन की जिंदगी से दूर रहकर दुःखो को सहते हुए भी देश सेवा में सदा व्यस्त रहते थे, आप हर स्थिति में प्रसन्न चित्त रहते थे - और दूसरों को सुख प्रदान करते थे आपने देश को गुलामी की जंजीर से मुक्त कराने के लिए जी तोड़ प्रयत्न किये ।।१।।

सन् १९४२ में आजादी के लिए बड़ा भारी आन्दोलन (भारत छोड़ो) हुआ तब अत्याचारी अंग्रेजों ने अनेकानेक देश प्रेमियों को जेलों में ठूँस दिया, आपकी प्रेरणा से देशवासी अपने उद्देश्य के लिये डटे रहे, किसी ने भी थोड़ी सी भी उपेक्षा नहीं की। आपके बुलन्द हौसले देखकर अंग्रेज चकित हो गये- हार गये। सभी आजादी के नारे लगाते रहे, इसी प्रकार संघर्ष करते हुए १५ अगस्त १९४७ का शुभ दिन आजादी लेकर आ गया आपने गुलामी की जंजीरें तोड़ दी, हम विदेशी दासता से मुक्त हो गये, अत्याचारी विदेशी शासक भाग गया, उस दिन देश भर में घरोघर तिरंगा झंडा लहराया गया ।।२।।

-३-

बाद में ३० जनवरी १९४८ का वह काला दिन आया, जब एक दुष्ट ने आपको गोली मारी थी और आपने राम हे राम का उच्चारण करते हुए नश्वर देह त्याग दी थी, आपका आवसान क्या हुआ मानों भारत का सूर्य अस्त हो गया और अंधेरा छा गया , सर्वत्र हाहाकार मच गया। सारा संसार दुखी हो गया, आबाल वृद्ध रोते हुए 'जल बिन मीन' की भाँति तड़पने लगे। सभी लोग तन-मन की सुध भूल गये, भोजन-पानी सभी के लिए जहर हो गया, सभी कहने लगे कि बापू आपने हमसे अपनी, प्रीत क्यों तोड़ दी हमसे क्या कसूर हुआ जो आपने माया-ममता तोड़ दी आप जवाहर लालजी और सरदार वल्लभ भाई पटेल को मझदार में छोड़कर निर्मल धाम बैकुण्ठ की राह पर चले गये।।३।।

(हत्यारे के प्रति आक्रोश व्यक्त करते हुए लावणीकार कहता है) अरे हत्यारे! तू कलिया नाग के समान काल बनकर कहाँ से आ गया! तूने बापू की जान ले ली, तुझे जरा भी दया नहीं आई! तूने अपने स्वार्थ के लिये दूसरों को रुलाया है, दुष्ट तूने बड़ी भारी दगाबाजी की तू जन्म जन्मातर तक नर्क भोगेगा, यह तो बता कि वह कौन मंथरा थी जिसने तेरी बुद्धि पलट दी थी, अपनी काली करतूत के कारण तूने नर्क़ की राह पकड़ी है, हमारे बापू तो निर्मलधाम बैकुण्ठ की राह पर चले गये हैं ।।४।।

(अंत में लावणीकार कहता है) हमारे हृदय में करूणा रस के तीर ऐसे धंस गये हैं, कि ऊपर से घाव नजर नहीं आते हैं, परन्तु हृदय, में भाले की तरह चुभ रहे हैं, हृदय के इस घाव को भरने के लिए में कौन सी दवा दारू या दोरे-गंडे करवाँऊ, हमारी रग-रग में करूणा का जहर व्याप्त हो गया है, हे बापू! हे गरीबों के मसीहा! तुम हमें हमेशा याद आते रहोगे आपने हम पर हमेशा मेहरबानी की। हम रह-रह कर सांसे ले रहे हैं, आप हमसें मुँह मोड़कर निर्मलधाम बैकुण्ठ की राह पर चले गये हों, अब हमें कौन धैर्य बंधायेगा।।५।।

हे बापू! मैं तुम्हें कितना प्रेम करता था, यह या तो मैं जानता हूँ या तुम जानते हो, अग्नि और लुहार के रिश्ते को धम्मन देने वाला क्यों जाने? मैं यह बात अगर झूठ कहता होऊँ तो भगवान मुझे दंड देंगे, क्योंकि वह तीनों लोकों का कर्ताधर्ता और घट-घट की जानने वाला है, हे बापू! जिस प्रकार धरती के गर्भ में सूम का धन समाया रहता है, उसी प्रकार मेरी आँखों के कोनों में शोक का सागर समाया हुआ है, मैं आपके चरण कमलों में पगड़ी रखकर हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हूँ आप जनता की यह पुकार सुनते जाओ कि हमें मार्गदर्शन देने के लिए पुनः अवतरित होना।।६।।

(३)

बापू तूनऽ नाम अमर करी दियो

गांधी तूनऽ नाम अमर करी दियो।
मातृभूमि इना देस का खातीर चैनबसर तजी दियो।।

-१-

धोती कुड़ता का पेरनऽ वाळो थारो अंग सुदामा सो दुर्बल।
प्रतिभा थारी सूर्य किरण सी, मोहन मन को निर्मल।।
धन्य जननी थारी, देस की प्रेमी जिन कोख रतन वरी लियो।।
गांधी तूनऽ नाम अमर करी दियो।

-२-

विशाल शक्ति सी टकरायो, नम्र स्वभाव वीर।
दुष्ट पांखड़ी क्रूर भगाया, आंगळी को बतइ न तीर।।
पन्द्रह अगस्त, सैतालिस मँ देस आजाद करी लियो।
गांधी तूनऽ नाम अमर करी दियो।

-३-

सत्य अहिंसा परमोधर्म को पाठ पढ़ायो हमकऽ ।
बिना हथियार दुस्मन का भगायों, प्रत्यक्ष बतायो सबकऽ।।
कर्मवीर तू कर्मठ योगी, हृदय सी धर लियो।
गांधी तूनऽ नाम अमर करी दियो।

४

स्वंतत्रता दिवस अति प्यारों हमकऽ या गांधी थारी देण।
स्वर्ग शान्ति मिलऽ तूखऽ गांधी ''सुमन'' का मुख बैन।।
लोक गीत निमाड़ी काव्य बापू चरण हृदय धरी लियों।
गांधी तूनऽ नाम अमर करी दियो।।

- श्री चन्द्रकान्त सेन के सौजन्य से प्राप्त

- तुर्रा गायकी के श्री सुमेर सिंह कहते हैं कि हे बापू! तूने मातृ-भूमि के खातिर सुख चैन त्याग कर अपना नाम अमर कर दिया है :-

-१-

धोती कुरता पहनने वाले बापू! तेरी काया सुदामा जैसी दुबली पतली थी तेरी प्रतिभा सूर्य किरण के समान तेजस्वी और तेरा मन अत्यन्त निर्मल था तुम्हारे जैसे देश प्रेमी को अपनी कोख में धारण करने वाली तुम्हारी माता धन्य है, बापू तुमने अपना नाम अमर कर दिया है,

-२-

हे विनम्र स्वभाव वाले वीर पुरूष! तूने अंग्रेजी की विशाल शक्ति से टक्कर ली, उस दुष्ट पाखंडी को भारत से भगाकर १५ अगस्त १९४७ को देश को आजाद कराया। बापू तूने अपना नाम अमर कर दिया है।

-३-

तूने हम सबको सत्य अहिंसा परमोधर्म का पाठ पढ़ाया है, हे कर्मवीर! योगी तूने अपने कर्तव्य को हृदय में धारण कर शस्त्र हाथ में लिये बिना ही उस दुश्मन को भगा दिया। तूने अपना नाम अमर कर दिया।

हे बापू! तूने हमें स्वतंत्रता की देन दी है 'सुमन' मुँह से निकले हुए वचन है, कि तुझे स्वर्ग में सुख शांति प्राप्त हो तूने अपना नाम अमर कर दिया है।

(४)

कलगी गायकी में ख्याल बापू के प्रति

भारत के लीडर गांधी की पुरपिजा[१] कहानी जेल में है,
गुरबत[२] में फंसा, परवाह नहीं, दुनिया की निशानी जेल में है.

---

१. पुरफिजा - संपूर्ण, २. गुरबत - बंधन।

(टेक)

आगा के महल में बैठ के वो कानूनी बगावत करता है।
बुनियाद बाजू-ए तोड़ रहा, भारत में सखावत[३] करता है।।
ताजीम[४] करे दुनिया भर के जालिम की सफायत करता है।।
साबूत सही सनेद लिख के दर पेश अदालत करता है।।

जंजाल जाल में से सोतों को जगाता है।
हसरत जिगर में भरकर पैगाम सुनाता है।।
खिजलत[५] में जो पड़े थे सिर पर खड़ा था तूफा-
दादूर की तरह सवा[६] से चुटकी में उड़ाता है।।

मिलान- जालिम ये जदल[७] जिसने डाली, कुदरत रब्बानी जेल में है।
गुरबत में फँसा परवाह नहीं, दुनिया की निशानी जेल में है।।

-१-

रंजीश जिगर में भारत की सुख नींद न सोने देती है।
जालीमे-कफ़स[८] से बीरों को वैराग न होने देती है।।

शब[९] में भी खुशी के, भारत में वो बीज न बोने देती है।
सब तौर से ही लाचार किये, लाचार न होने देती है।।

शबनम[१०] किये गायब, ये चश्म नम न होते ।
जो हम न फूट रखते, जालिम कदम न होते।।
तहरीर ये न होती तौकीर ये न रहती।
जाँ पर न आती आफत, फिर ऐसे गम न होते।।

मिलान- मोती के लाल जवाहर का भी दाना पानी जेल में है।
गुरबत में फँसा परवाह नहीं, दुनिया की निशानी जेल में।।
गाफिल न बनो वीरों जागो, काले बादल सिर छाय रहे।
फ्रांस, रूस, ब्रिटिश, ईरान पर बमयान से गोले गिराय रहे।।
कातिल है कतल करने को अड़ा, तुम कैसे दिल गम खाय करे।
क्रांतिकारी आवाज लगा जेलों से तुम्हें जगाय रहे

---

३. सखावत- प्रेम ४. ताजीम- आदर ५. खिजलत- कठिनाई ६. सबा -हवा ७. जदल- युद्ध- कलह ८. कफसब -कारागाह ९. शब- रात १० शबनम- औस।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शेर- *गरीब किसानों को कंगाल कर दिये हैं।*
लेकर अनाज जबरन जंजाल कर दिये हैं।
मजदूर निरास है किसको सुनाएँ अरजी।
नामी ये राजाओं को पामाल कर दिये है।

मि. *वाजिब है तुम्हें भी कर डालों समझो कुरबानी जेल में हैं।*
गुरबत में फँसा परवाह नहीं दुनिया की निशानी जेल में है।
लागिर[११] नबनों भारत वालों अपनी कूबत[१२] दिखलाना है।।
हम सब्र सब्र में खो बैठे जिंदगी का माल खजाना ।।
ये फेर समय नहीं आयेगा 'मोहन' का तुम्हें समझाना है।
फेतचंद गुनी गया गाये रहे, हरि प्रेम से ध्यान लगाना है।।

शेर- *होते भजन भारत में अब तो दयालु आ जा।*
'कलकीस'[१३] रूप धर कर सूरत जरा दिखा जा।।
दुलीचंद मनुआ कहते दुःख दूर कर दयालू।
दुष्टों का नाम जग से 'कलकीस' हो मिटाजा।।

मि. कथ बेली खान कहे यारों, भारत महारानी जेल में है
गुरबत में फंसा परवाह नहीं, दुनियां की निशानी जेल में है।

रचना- कसरावद के कलगी शायर बेली उस्ताद।
श्री प्रहलाद सिंह ठाकुर, चोली के सौजन्य से प्राप्त

- शायर बेली उस्ताद कहते हैं कि भारत के लीडर गांधी जी अगर कैद कर लिए गये हैं, तो कोई बात नहीं, उनके जीवन की संपूर्ण कहानी तो जेल ही जेल है, दुनिया में अपनी पहचान बनाने वाला हमारा नेता आज फिर बंधन में जकड़ लिया गया है, तो कोई चिन्ता की बात नहीं है-

(टेक)

वह पूना के आगाखाँ महल में कैद होकर बैठे-बैठे कानूनन कानूनी बगावत कर रहा है, वह दुश्मनों की फौलादी भुजाओं को तोड़ कर अपने देश वासियों में एकता का प्रेम का प्रचार कर रहा है।

सारी दुनिया के लोग उसका आदर करते हैं, क्योंकि वह जालिमों के जुल्मों की प्रामाणिक सनदे लिख लिखकर अदालत में पेश कर रहा है, देश के जो लोग सोते हुए से निष्क्रिय हैं, तुम्हें आजादी का पैगाम सुना कर उनके हृदय को उत्साहित कर रहा है।

---

११. लागिर- कमजोर १२. कूबत- शक्ति १३. कल्किस- कल्कि अवतार।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हमारे सिर पर अनेकानेक कठिनाईयों का जो तूफान छाया हुआ है, उसे वह हवा के मानिंद चुटकियों में उड़ा रहा है,

जालिमों ने हम पर यह युद्ध थोपा है, हमारे कई आला लीडरों को जेल में ठूँसने का सिलसिला चला रहा है, तो भी कोई परवाह नहीं, क्योंकि जेल में बैठा हुआ लीडर हमारे साथ है-

-१-

हमारा देश भारत जिन तकलिफों से गुजर रहा है, उन्हें देख कर हम सुख का नींद नहीं सो पा रहे हैं, वे तकलीफें रात्रि को आराम के समय में भी चैन नहीं लेने देती है, जेल में बैठे हुए हमारे नेता भी वैरागी नहीं हैं, पलायनवादी नहीं हैं, जो तकलिफों को देखकर मुंह मोड़ लें, हमारे शत्रु ने हमें हर प्रकार से लाचार करने की कोशिश की है, लेकिन हम लाचार नहीं होंगे। हमारी आँखों से आँसू सूख चुके हैं, अब हमारी आँखें कभी गीली नहीं होगीं।

दुश्मन ने हमारे यहाँ फूट के बीज बो दिये हैं, यदि हम इस फूट को पनपने नहीं देते तो उन जालिमों के जालिमाना कदम नहीं उठते और हमारी जानों पर नहीं बन पड़ती, हम गमगीन नहीं होते तथा आज के हालात कुछ और ही होते।

आज सिर्फ गांधी ही नहीं, मोती के लाल 'जवाहर लाल नेहरू' का दाना-पानी भी जेल में ही हो रहा है, सारा देश जेल में जुझ रहा है, फिर भी परवाह नहीं क्योंकि जेल में बैठा हमारा लीडर गांधी हमारे साथ है।

शायर अपने देशवासियों से कहता है कि वीरों। हमारे सिर पर मुसीबतों के काले बादल मंडरा रहे हैं, इसलिए गफलत में मत रहो, जागो वह देखो विश्व युद्ध में फ्रांस, रूस और ब्रिटेन, ईरान पर बम बरसा रहे हैं, वह कातिल हमें भी कत्ल करने पर तुला हुआ है, और तुम अपने मन में संतोष धारण करके कैसे बैठे हो, जेल में बैठे हुए हमारे क्रांतिकारी वीर नेता लोग जेल में बैठे हुए तुम्हें जगा रहे हैं— — -जागो।

हमारे शत्रु ने गरीब किसानों से अनाज आदि जबरन वसूल करके उन्हें कंगाल बना दिया है, मजदूर वर्ग भी निराश है, वह अपनी तकलिफों की दास्तान किसे सुनावें, क्योंकि उनकी अर्जी गौर करने वाले राजा- महाराजा भी पामाल हो गये हैं। दुनिया को भारत की पहिचान बताने वाला हमारा नेता अगर जेल में है तो कोई बात नहीं, तुम्हें भी चाहिये कि तुम भी जेल जाने से मत डरो और अपनी कुरबानी का— — - त्याग का उदाहरण प्रस्तुत करो।

-३-

हे देश वासियों! हमने बहुत सब्र किया है, सब्र-सब्र में ही हम अपनी खुशियों का मूल्यवान खजाना खो बैठे हैं, 'मोहन' (गांधी) तुम्हें समझा रहा है, कि अब तुम लाचार होकर मत बैठो, तुम भी अपनी शक्ति का जलवा दिखाओं, यह समय फिर आने वाला नहीं है।

अंत में शायर 'बेली' उस्ताद तथा गायक दुलीचंद इन संकट की घड़ियों में ईश्वर से प्रार्थना करते हैं, कि हे भगवान!

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तुम 'कल्कि अवतार' धारण करके आओ, अपनी सुरत दिखा जाओ। तुम दयालु हो, कल्कि अवतार के रूप में इस संसार से दुष्टों का नामो निशान मिटा जाओ। हमारी भारत माता और हमारे लीडर जेल में बंद हैं।

(५)

कलगी गायकी, में शायर ''बैली'' (कसरावद वाले) कृत छंद सखी

लगी है दरबदर तो बनी तसबीर गांधी की।
अलौकिक थी जहाँ के अंदर तकदीर गांधी की।।
'जबर को जेर' करने की ही हिम्मत एक फक्कड़ की।
हजारों हो गये साथी ये थी तासीर गांधी की।।
पश्ता सब हो गये कातिल जो, दुश्मन और रहजन थे,
काम में आगई आखीर वो सब तदबीर गांधी की
जियेंगे जब तलक गायेंगे बच्चे वीर गांधी के
जिन्हों के दिल भरे, देखे थे शांती तीर गांधी के।
कलेजा थाम कर बैठा, नहीं था होश तन-मन का।
जमी देहशत जिगर के दरमियाँ अकसीर गांधी के।।
जियेंगे जब तलक लड़ना सिखाया संत लासानी।
जियेंगे जब तलक 'बेरी' लिखे तहरीर गांधी की।।

- श्री प्रहलाद ठाकुर चोली के सौजन्य से प्राप्त

- शायर कहता है कि हमारे लीडर गांधी की तकदीर बड़ी अलौकिक है, इसीलिए आज हर घर में गांधी की तस्वीर लगी हुई है।

उस हिम्मतवाले फक्कड़ गांधी के स्वभाव की यह विशेषता थी कि वह छोटे को बड़ा और निर्बल को सबल बना देता था, इसलिए आज उसके हजारों साथी हो गये हैं।

आखिर गांधी की वे सारी तदबीरें- तरकीबें काम में आ गई, फलस्वरूप जो कातिल लुटेरे दुश्मन थे, वे सब हिम्मत हार बैठे हैं।

उस दुश्मन के हृदय में गांधी का ऐसा खौफ समाया है कि वह कलेजा थाम कर बैठ गया है, उसे तन-मन का भी होश नहीं रहा है।

इस देश के वे लोग, जिन्होंने जी भर कर गांधी के स्थापित करने के प्रयत्न देखे हैं, तथा देश का बच्चा-बच्चा जीवन भर गांधी के यशों की गाथा गाते रहेगा।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उस संत ने दुश्मन से लड़ने का ऐसा नायाब अहिंसक तरीका सिखा दिया है, कि हम जब तक जिएंगे दुश्मन से लड़ते रहेंगे और 'बेली, भी जीवन भर गांधी की शानदार तहरीर- कहानी लिखते रहेंगे।

(६)

कलगी गायकी के ख्याल में बापू-

बिलख के केहती है मात भारत सपूत सच्चा था लाल गांधी
छुड़ा के जालिम के फंद से अब गया है गर्दिश में लाल गांधी

टेक

विदेशी जालिम जो मुद्दतों से मुझे निहायत सता रहा था।
गुलामी बंधन में बांध करके अनेकों सदमें दिखा रहा था।।
दुखी थे भारत के कुल निवासी, वो खून जालिम जला रहा था।
बंधा हुआ भी तू शेर के सम ये गीत आजादी गा रहा था।।

तूने कपड़े खर्च का पहले किया दिल में विचार।
कह उठा चर्खा चलाओ तो ये जालिम जाये हार।।
और अहिंसा सत्यव्रत की ठान पक्की ठान ली।
कर बचत दिखला दिया हर रोज का सत्तर हजार।।

मिलान- *बनाये तूने हजारों नेता, किया है क्या-क्या कमाल गांधी।*
छुड़ाके जालिम के फंद से अब गया है गर्दिश में लाल गांधी।।

-१-

प्रचार चर्खे का देख जालिम वो अपने मन में ही जल रहा था।
हजारों नेता के बोल सुन-सुन निरास दिल में दहल रहा था।।
मिटा दें जालिम का जुल्म, नेता गरज के हरएक उबल रहा था।
वो अपनी सत्ता से सख्त जालिम, हमें कड़ाही में तल रहा था।।
जेल में तुझको वो तेरे साथियों को भर दिया।
हर तरह तकलीफ दे लाचार सबको कर दिया।।
पर तुझे शाबास गांधी, कौल पर पक्का रहा।
'वारडोली' करके कायम यह दिखा जौहर दिया।।
खिसाना होकर विचारे जालिम है, हम सबोंका ये काल गांधी।
छुड़ा के जालिम के फंद से अब गया है गर्दिश में लाल गांधी।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

स्वतंत्र करने को देश भारत, अनेकों संकट उठाये तूने।
अंहिसा व्रत के ही मंत्र से बस, ये शेर सोते जगाये तूने।।
ये चक्र चरखे को हाथ में ले, अनेकों कौतुक दिखाये तूने।
अमूल्य आजादी छीन करके, यहाँ से जालिम भगाये तूने।।

-२-

पर बड़ा चालाक सौदागर निकल अक्सर गया।
हिन्दू-मुस्लिम को लड़ाकर बैर कायम कर गया।।
हम नहीं समझे थे इस जालिम की ये चालाकियाँ।
देश के टुकड़े किये वो बेधड़क घर पर गया।।

प्रचार कर करके एकता के मिटाये लाखों बबाल गांधी।
छुड़ा के जालिम के फंद से अब गया है, गर्दिश में लाल गांधी।।

-३-

अभागीनी मैं बिलख रही हूँ हुआ इंधारा मिटा उजाला।
थे राष्ट्र के तुम पिता, यकायक अबोध बेटे ने मार डाला।।
निकलों दिल से दुई, मिलों सब रही खुशी से मिटा कसाला।
यही है मेरी दुआ सपूतों, पियों हमेशा ही प्रेम प्याला।

हिन्दू मुस्लिम किस लिए आपस में लड़कर मर रहे।
एक वालिद पिसर क्यों घात घर में कर रहे।।
एकता में ही मिले आजाद होने का मजा-
प्रहलादसिंह बस ये कहे खुश ये नारी नर रहे,

कहे है कस करके लाल मन्नू ये अपना भारत सम्हाल गांधी।
छुड़ा के जालिम के फंद से अब गया है, गर्दिश में लाल गांधी।।

- श्री प्रहलाद ठाकुर, चोली के सौजन्य से प्राप्त

- गांधीजी के शहीद होने पर भारत माता बिलख बिलख कर कहती है, कि गांधी मेरा सच्चा सुपुत्र था उसने मुझे जालिमों के फंदे से मुक्त किया और अब वह स्वयं गर्दिश में चला गया है,

विदेशी जालिम मुझे गुलामी की जंजीरों में जकड़ करके अनेक प्रकार के दुःख दे रहा था, उस दुष्ट के कारण समस्त भारतवासी दुखी थे- वह सबका खून जला रहा था, गांधी तो उसकी कैद में रहकर भी सिंह के समान गर्जना करता हुआ आजादी के गीत गा रहा था।

गांधीजी ने देशवासियों के वस्त्रों की समस्या पर विचार किया और कहा कि घरो-घर चर्खे का चलन हो जिससे जालिम हार जाय, उसने अहिंसा और सत्य व्रत धारण करके चर्खे के माध्यम से प्रति दिन सत्तर हजार रूपये की बचत करके दिखा दी। उसने हजारों नेताओं को जन्म देकर कमाल कर दिया, मुझे बंधन मुक्त करके वह स्वयं गर्दिश में चला गया है।

-१-

चर्खे का प्रचार देखकर विदेशी शासक मन ही मन जल रहा था। हजारों नेताओं के भाषण सुन सुन कर वह दिल ही दिल में दहल उठा था, हर एक नेता गरजना कर कह रहा था कि विदेशी जालिम के जुल्मों को मिटा दो। वह दुष्ट सत्ता के बल पर सबको कड़ाह में तल रहा था, उस दुष्ट ने गांधी और उसके साथी नेताओं को जेल में ठूंस कर तकलीफें दे देकर सबको हताश कर दिया था। परन्तु गांधी तू धन्य है, तू अपने कौल पर डटा रहा है और बारडोली सत्याग्रह करके तूने अपने जौहर का प्रदर्शन कर दिखाया, तब वह दुष्ट खिसियाना होकर समझ गया कि तू उनका काल है, गांधी, तूने मुझे विदेशी दासता से मुक्त किया और अब स्वयं गर्दिश में चला गया है।

-२-

हे गांधी, तूने देश की स्वतंत्रता के लिए अनेकों कष्ट उठाये। साथ ही अहिंसा के मंत्र बल से सोये हुए भारतवासियों शेरों को जगा दिया, तूने चर्खा रूपी चक्र हाथ में लेकर अनेकों कौतुक कर दिखाये, मूल्यवान आजादी प्राप्त करके विदेशी शासक को भगा दिया। लेकिन वह विदेशी सौदागर बड़ा चालाक निकला, वह यहाँ से जाते-जाते हिन्दू-मुसलमानों को लड़ाकर स्थायी बैर के कड़वे बीज बो गया, उसने देश के दो टुकड़े कर दिये और बेधड़क होकर भाग गया। लेकिन गांधी तूने एकता का प्रचार करके लाखों झंझटें मिटाई, मुझे बंधन मुक्त किया और अब स्वयं ही गर्दिश में चला गया।

-३-

अब मैं (भारत माता) अभागिनी बिलख रही हूँ, उजियाला लुप्त हो गया है और काला अंधकार छा गया है, गांधी तूने अपने त्याग आदि सेवा के बल पर राष्ट्रपिता की उपाधि पाई। लेकिन एक नादान अज्ञानी बेटे ने तेरा महत्व नहीं समझा और गोली चलाकर तुझे मार डाला। हे देशवासियों! मैं सच्चे मन से दुआएँ देती हूँ कि अपने मन से द्वेषता को निकाल फेंको और प्रेम का प्याला पीओ।

हे हिन्दू और मुसलमानों! तुम आपस में लड़-लड़कर क्यों मर रहे हो, तुम दोनों उस परमपिता परमेश्वर की संतान होकर आपस में एक दूसरे पर घात क्यों कर रहे हो? तुम्हें आजाद होने का सच्चा आनंद एकता में ही मिलेगा।

लोकशायर मन्नूलाल उस्ताद कहते हैं कि अब तुम सब अपना भारत सम्हालो, गांधी ने हमें दासता से मुक्त किया और अब वह स्वयं गर्दिश में चला गया है।

(७)

ख्याल बापू का रंगत खड़ी बहर सिकस्ता

खोदिया है बापू को हमने-भारत का जौ रत्न अमूला था।
जो सान्ति अहिंसा के प्रण को -आजन्म नहीं वो भूला था।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

-टेक-

इस देश के खातीर ही जिसने-अपना जीवन कुर्बान किया
भारत की आजादी के लिये-सर्वस अपना बलिदान किया
जैलों की मुसीबत का उसने -हर्षित होकर सनमान किया
अंग्रेजों के सब जुल्मों को- सह करके मन बलवान किया।

मिलान-

खामौसी से सहादुख्यों को-दिल किया ना कभी मलूला था

चौक-

जनता कि खिदमत करने को- वौ भारत माँ का लाल हुवा
असहाय अछूत गरीबों का-इस देस में वो प्रतिपाल हुवा
था आजादी का सैनिक वह- गौरे साही का काल हुवा
बिना शस्त्र भगाया दुस्मनों को- नहीं ऐसा कभी कमाल हुवा।

मिलान-

शांति के झूले में बापू भी - प्रिय मातके कर से झूला था।

चौक-

सब ऊँच नीच का भेदभाव -बापू ने दिल से टार दिया
सब एक पिता के बालक हैं- समझा सबको हर बार दिया।
गाँव-गाँव में फिर फिर कर-सेवा करना स्वीकार किया
सच्चे उस हरि के सेवक ने-हरिजनों का है उद्धार किया

मिलान-

गंभीर रहा वौ जीवन भर- तौड़ा नाब्रत जो कबूला था।

चौक-

सारे भारत की जनता को- आजाद किया उस वीर ने है
इस झंडे को आजादी के - फहराय दिया रनधीर ने है
जनवरी तीस साम को प्रार्थना -करते एक बेपीर ने है।
मार दिया था पिस्तौल फिर भी नहीं- क्रोध किया गंभीर ने है।

मिलान-

शांति के वीरों में बापू - कहे बाबू एक फारमुला था।

- श्रीपांचीलाल चौहान, मंडलेश्वर के सौजन्य से प्राप्त

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

- हमने भारत से अमूल्य रत्न को, जो जीवन भर शांति और अहिंसा के प्रण को नहीं भूला था, खो दिया।

जिसने हमारे देश की आजादी के खातिर हंसते-हंसते जेल खानों की मुसीबत उठाई, जुल्मों को सहते हुए अपने मन को कभी कमजोर नहीं होने दिया, सब कुछ त्याग दिया, यहाँ तक कि अपना जीवन भी कुर्बान कर दिया उस अमूल्य रत्न को हमने खो दिया-

-१-

वह भारत माता का लाल जन सेवा के लिए ही पैदा हुआ था। वह असहाय अछूतों और गरीबों का प्रतिपालक था। वह स्वतंत्रता सेनानी, अंग्रेज शाही के लिए काल के समान था उसने शस्त्र विहीन क्रांति करके अंग्रेजों को भगाने का कमाल कर दिया। भारत माता ने उसे शांति के पालने में झुलाया था, उस अमूल्य रत्न को हमने खो दिया।

-२-

बापू ने अपने दिल से ऊँच नीच के भेद भाव को त्याग दिया था, उसने हम सभी को सिखाया कि हम सब एक ही पिता के पुत्र हैं, उसने गाँव-गाँव भ्रमण करके जनसेवा की, हरिजनों का उद्धार किया, उसने जो व्रत (सत्य अहिंसा) का धारण किया था, उसे जीवन भर नहीं छोड़ा, उस अमूल्यरत्न को हमने खो दिया।

-३-

उस धीर वीर ने भारत की जनता को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त करके आजादी का तिरंगा झंडा फहराया, वह ऐसा धीर गंभीर वीर था कि ३० जनवरी १९४८ की संध्या को प्रार्थना के समय जब एक दुष्ट ने उन पर गोलियाँ दागी, फिर भी उसने क्रोध नहीं किया, उस अमूल्य रत्न को हमने खो दिया।

ख्याल गायक बाबू कहता है कि बापू शांति के वीरों में एक अद्वितीय नमूना था।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

महात्मा गाँधी पर मालवी लोकगीत

संकलन:
डॉ. भगवती लाल राजपुरोहित
बिलोटीपुरा, उज्जैन - ४५६००६

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

१

कांकड़ कांकड़ धरे फकीरो झोली खाली खांदे।
हांउ ऊब करे चूला पे कई ओरे कई रांदे।।
मती फिकर हम करो फकीरा गांदी बाबो आयो।
सबके मन में सदा भावतो दुनिया में जो छायो।।
उन झोली में घणी पराबत धान रतन धन टूटे।
आखो झूमे देस धान से सबकी झोली छूटे।।
कांकड़ कांकड़......

स्रोत- भेरूलाल सोलंकी, उज्जैन.

- जंगल जंगल, ग्राम के सीमांत पर, कंधे पर झोली डाले फकीर घूम रहा है। चूल्हे पर हंडी खाली है। उसमें क्या डालें और क्या पकावे? अरे फकीर तुम चिंता मत करो। गांधी बाबा आ गया है। वही गांधी जो सबके मन में सदैव अच्छा लगता है और जो (अपने गुणों से) दुनिया में छा गया। उस झोली में बड़ी आमदनी होने लगी। उसमें अनाज, रत्न और धन टूटमान हो रहे हैं, समाते जा रहे हैं। और तब तो पूरा देश अनाज से झूम उठता है। तब सबकी झोली छूट जाती है।

२

लाड़ा थांका चीरा न्यारा है।
इन चीरा की पेंचां न्यारी
इनके कोर किनारा है।
सगला ऊपर एक हे छोगो
जैसा चमके तारा है।
इन तारा में लाल जुवार की
मंगल तारा हे।
कसतूरां को परमल गगनां
सबका पियारा है।
लीम छलंगी सूरज चलको
ढलके तारा हे।
लाड़ा थांका चीरा न्यारा है।।
गांदी थांका चीरा न्यारा है।।

-भेरू लाल सोलंकी

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

- अरे दूल्हे तुम्हारी पगड़ी अनोखी है। कोरा किनारी वाली इस पगड़ी की पेंच भी अनोखी है। सबके ऊपर एक कलंगी है जिस पर एक तारा चमक रहा है। इस तारे में लाल जवार है, वही मंगल तारा है। आकाश में कस्तूरी का पराग फैला है जो सबका प्रिय है। नीम के शिखर पर सूर्य की चमक तारे अपने आप ढल जाते हैं। अरे दूल्हे (गांधी) तुम्हारी पगड़ी अनोखी है।

३

आवी गयो भावी गयो छावी गयो रे
गगनां तीरंगो लेराय गयो रे।।
बाबो लंगोटी वालो छावी गयो रे
गगनां तीरंगो लेराय गयो रें।।
थागी रया जागी रया भागी रया रे
बांदरा वना पूंछ का वी भागी रया रे।।
कोड्या को दोड्या भभूत्यो लग्यो
चूला से निसर्या तो भूरा पड्या रे
भागी गया भागी गया भागी गया रे
जीजी छिनाल वाला भागी गया रे
गगनां तीरंगो लेराई गयो रे
बाबो लंगोटी वालो छावी गयो रे।
न्हाटी जाओ न्हाटी जाओ न्हाटी जाओ रे।
बाबो लंगोटी वालो आवी गयो रे।।

- भेरूलाल सोलंकी

- लो आ गया, मन में भा गया और छा गया । गगन में तिरंगा झंडा लहरा गया है। तिरंगा ही नहीं वह लंगोट ही पहनने वाला बाबा गांधी भी छा गया है। जो देश को हजम करने की ताक में थे वे जग रहे हैं और भागे जा रहे हैं। देखो बिना पूंछ के बंदर भागे जा रहे हैं। उन्हें सफेद कोड़ हो गयी है या भभूतीया का रोग लग गया है अथवा चूल्हे से निकले हैं कि वे इतने भूरे हो गये हैं। अरे वे बदचलन माता की संतानें हैं जो भाग गयीं। आकाश में तिरंगा लहरा गया है। भाग जाओ तुम। लंगोट वाला बाबा गांधी आ गया है।

४

भरी ग्यो छाल्यो यो भरपूर।
ई में आँधी को हे जोर यो तो छलके हे मजबूर।
लागी खेंचाताणी हाय बनी आज सिंगणी गाय।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

एसो होवे घणो कमाल, भर ग्यो छाल्यो यो भरपूर।
बरसी अजादी की धार, अमरत जाणे मूसलधार।।
लायो करी करी तरकीब गांदी भारत को जो नसीबो
भर गयो अब तो यो भरपूर
अब ना हे यो तो मजबूर।।

- भेरूलाल सोलंकी, उज्जैन

- यह छोटी कटोरी पूरी भर गयी है। इसमें आंधी की शक्ति है। यह तो छलकने को मजबूर है। खींचतान चल रही है। आज सिंहनी गाय बन गयी है। और गाय सिंहनी बन गयी है। अब तो आजादी की धारा ऐसे बरस रही है जैसे मूसलधार अमृत बरस रहा हो। कई तरकीब लगा लगाकर गांधी भारत का भाग्य बना कर लाया है। यह भारत का प्याला पूरा भर गया। अब यह मजबूर नहीं है।

५
जदी तम चालो हो महराज जदी तम चालो हो महराजो।
थे अरवाणा एकला-चालो आखो चले समाज।।
धरती डोले फण सब कांपे सेस दरां में जाय।
नागा तन पण आगा सब में धाक समंदर पार।
एक लाकड़ी टेका की जो हांके सब संसार।।
कूण कणीकी सोचे पण ऊ सबको एक जहाज।
परदेसी वी गाय गोहरी जैसा भाग्या जाय।
जदी तम चालो हो महराजा।।

- मांगीलाल, फरनाखेड़ी

- अरे गांधी महाराज जब तुम चलते हो तो बिना जूते चप्पल पहने अकेले ही चल देते हो। और तुम्हारे चलते ही पूरा समाज तुम्हारे पीछे चल देता है। तुम्हारे चलने से, समाज के चल देने से जो हलचल होती है उससे धरती डोल उठती है। शेष के फण काँप उठते हैं और वह बिल में चला जाता है। अरे महाराज तुम तन से नंगे हो, तुम्हारे तन पर कपड़े नहीं (के बराबर) हैं पर हो सबसे आगे। तुम्हारी धाक समुद्र पार तक है। यों तो कहने के लिए आसरे के लिए एक लकड़ी है तुम्हारे पास परन्तु उससे तुम सारे संसार को हांकते हो। दुनिया में कौन किसका हित सोचता है? पर वही एक मात्र गांधी है जो सबका जहाज है। सबको दासता के समुद्र से पार उतार रहा है। वे परदेशी अंग्रेज तो ऐसे भागे जा रहे हैं जैसे दीपावली पर गोहरी पर्व पर भक्तों पर से गायें निकल भागती हैं।

६

करम करो रे करमी लोगां
करम की वेरां आवी रे।
करम करो तो करजो सपाई
सबके मन में भाई रे।
आओ दादासा आओ काका सा
अपनी करां भलाई रे।
अपनी भलाई सबकी भलाई
आवो लोग लुगाई रे।।
करम करो रे......
ई तो म्हारा गिरदर गांदी
आखो देस बचाओ रे।।
करम करो रे....

- मांगीलाल, फरनाखेड़ी

- अरे कर्म करने वाले लोगों कर्म करो। अब कर्म का समय आ गया है। कर्म करना तो सफाई का कार्य करना जो सबके मन को सुहाता है। आओ पिताजी आओ काकाजी हम सफाई करके अपनी ही भलाई करें। क्योंकि अपनी भलाई में ही सबकी भलाई है। आओ सभी नर-नारियों। कर्म करो। देखो ये गांधी तो मेरे गिरधर हैं, जिन्होंने पूरे देश को दासता से बचा लिया। कर्म करो।

७

ओ म्हारी मा ओ गगन यो गेरो
गांदी राजा आया।
तीन रंग की लई ने कामठी
सबके मन की भाया
केसरिया ने धोला बादल
हरियल वन पे चमके
देख रेख के संग मोर के
म्हारो मन यूं ठमके
बरसो मेघा अमरत धारां
गांदी तो अवतारी।।
ओ म्हारी मा ओ....

- मांगीलाल फरनाखेड़ी

- ओ मेरी माता यह गगन मेघों से गहरा गया है। इसमें गांधी राजा आये हैं। इनके हाथ में तीन रंग की (केसरिया, हरी और श्वेत) तिरंगा (इन्द्र) धनुष है। वे सबको सुहा रहे हैं। ये आकाश में केसरिया और शुभ्र बादल हरे वन पर चमक रहे हैं। उन्हें देख-देख कर मयूर के साथ मेरा मन भी ठुमक रहा है। अरे मेघों तुम तो अब अमृत की धारा बरसाओ। ये गांधी तो (ईश्वर के) अवतार रूप हैं।

८

खादी चीरा सिर पे सोवे।
आया म्हारा सरवर हंस।।
कांकड़ लसकर बागे बागां।
म्हारा केसरिया को रंग।।
घणो म्हारे मन लेराय।
आया म्हारा सरवर हंस।।
खादी बागा उनके भावे।
म्हारो मन बी उनपे जावे।।
केसा केसा बी ले राय।
आया म्हारा सरवर हंस।।

- मांगीलाल फरनाखेड़ी

- मेरे सरोवर के हँस प्रियवर आ गये। उनके सिर पर खादी की पगड़ी सुहा रही है। ग्राम सीमा पर जो बारात की सेना आ जाती है वह बगीचों में फैल कर ठहर गयी है। उन बाग बगीचों में मेरे प्रियवर का रंग छा गया है। वह रंग मेरे मन में लहरा रहा है। मेरे सरोवर के हंस प्रियवर आ गये। उन्हें खादी के कपड़े मन भाते हैं। और मेरा मन भी उन्हें देख ललचाता है कि वे कैसे कैसे लहरा रहे हैं? मेरे सरोवर के हंस आ गये।

९

पेनो पचरंग चीरा राज
पेनो सुरंग चीरा आज
पेनो अमुकजी का भीम
जिनपे सोवे पेंचां राज

घोड़ी बेसो हो सिरदार।
चालो तोरण पे सिरदार।।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गांदी चरखा ताण्या तार
चरखा चक्कर को हे सार
खादी चीरा को सिनगार
आंको होवे भलो विचार।।
पेनो पचरंग चीरा राज
पेनां सुरंग चीरा आज।।

- मांगीलाल, फरनाखेड़ी

- अरे दूल्हे पांच रंगों की पगड़ी पहनो। रंग बड़े सुहाने हैं। अमुकजी के पुत्र पहन लो पगड़ी। जिस पर पेंच सुहाती है। अरे सरदार घोड़ी पर बैठो और तोरण पर चलो। गांधीजी के चरखे से जो तार तने वह सब उस चरखे के चक्कर खाने का सार है। खादी की पगड़ी से श्रृंगार करने का आपका विचार बड़ा भला हो। आप सुहाने रंगों वाली पंचरंग पगड़ी पहनो।

१०
म्हारे भम्मर नी घड़ायो।
म्हारे झालज नी घड़ाया।
कठे चाल्या हो सिरदार, बलावे गांदीड़ो।
म्हारा सेल्यां का सिरदार, बुलावे गांदीड़ो।
म्हारे कड़ा नी घड़ाया म्हारे झूमर नी घड़ाया।
कठे चाल्या सिरदार बुलावे गांदीड़ो।
म्हारा सेल्यां का सिरदार बुलावे गांदीड़ो।।
(आभूषणों के नाम से गीत लंबा हो जाता है)

- मांगीलाल, फरनाखेड़ी

- अरे प्रियवर सरदार आपने मेरे सिर का बोर कानों के झेले (झुमके) नहीं बनवाये और किधर चल दिये? मुझे स्वतंत्रता आन्दोलन में गांधीजी बुला रहे हैं। मेरे श्रृंगार के स्वामी। आपने मेरे हाथ पैर के कड़े नहीं बनवाये और किधर चल दिये? मुझे गांधीजी बुला रहे हैं।

११
बना चीरा तो तम पेर पेंचा में जड़्यो रे जड़ाव
मील चल्यो खादी को
लाला में जड़्यो रे जड़ाव मील चल्यो खादी को।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बना कुणाजी चलाया लीला रेसमी
कुणाजी ने दीयो उपदेस, मील चल्यो खादी को।
बनी राजाजी चलाया लीला रेसमी
बनी चरखो चलायो गांदी मातमा
जीन कात्या झीना झीना तार
मील चल्यो खादी को।
गांदीजी को बड़ो उपदेस मील चल्यो खादी को
बना डोरा तो तम पेर लो, बना कड़ा तो तम पेर लो
पोंचो में जड़्यो रे जड़ाव, मील चल्यो खादी को।
(आभूषण के नाम से गीत लंबा हो जाता है)

- अरे दूल्हे तुम पगड़ी पहन लो, जिसके पेंचो में जरी का जड़ा व और रत्नों का जड़ाव है। अब तो खादी का मील चल रहा है। लाल में रत्न जड़े हैं। अरे दूल्हे किसने हरे रेशमी चलाये, किसने उपदेश दिया? अरी दुल्हन राजा ने हरे रेशमी वस्त्र चलाये। और महात्मागांधी ने चरखा चलाया। जिन्होंने पतले पतले तार काते। गांधीजी का मील चला। गांधीजी का यह बहुत बड़ा उपदेश है कि खादी के चरखे का मील चल पड़ा है। दूल्हे तुम गले में चेन पहन लो, कड़े पहन लो। तुम्हारे हाथों की पहुंची में रत्न जड़े हैं। खादी का मील चला।

- (भावसार बा से प्राप्त)

१२.
ओ थाने बूड़ा टाड़ा मोवे
ओ थाने आड़ा बाड़ा सोवे
ओ थाने गांदी बाबो भावे
ओ तम छोड़ी म्हने मती जाजो
ओ तम जावो तो वेगा आजो
के थाने म्हारो मनड़ो भावे
के थाने गोरो रंग बुलावे
के थाने परमल पांख झुलावे

म्हारी फूलां सेज सुखावो
तम तो वेगा वेगा आजो
थें तो मन को तन को छोगो

थांके मुखड़ो कद में देखूं
म्हरो रंग पड़ी यो फिको
आवो नानो थाने बुलावे
आवो कोयलड़ी या पुकारे
आवो गांदीड़ो संग लावो

म्हारो लूण बुलावे थाने
थें तो गांदी को लूण बखाणो
म्हारा समंदर लुण पिचाणो

ओ थाने बूड़ा टाड़ा मोवे
ओ थाने गांदी बाबो भावे।।

- चंपालाल बीबी खंडवा

- आंदोलन के लिए गृह त्याग कर गांधी के साथ चले युवा नायक की नायिका कहती है- अरे प्रियवर तुम्हें बूढ़े लोग, फालतू काम और गांधी बाबा अच्छे लगते हैं। पर तुम मुझे छोड़कर मत जाना और जाओ तो जल्दी आना। तुम्हें मेरा मन भाता है। तुम्हें मेरा गौरा रंग और मेरे पराग की पंखुड़ी बुलाती और झुलाती है। मेरी फूलों की शैया सुखाते हो। तुम जल्दी आना । तुम तो मेरे तन और मन के शिखर हो। तुम्हारा मुख कब देखूंगी? मेरा रंग फीका पड़ रहा है। आओ कि तुम्हें हमारा बच्चा बुलाता है। कोयल भी यह पुकार रही है। चाहे अपने गांधी को साथ ले आना। मेरा नमक (लावण्य) तुम्हें बुलाता है परन्तु तुम गांधी के नमक बनाने का ही बखान करते रहते हो। जरा मेरे समुद्र (का) नमक पहचानों। तुम्हें बूढ़े गांधी सुहाते हैं।

१३.
ओ म्हारी कंदोरा की लूमां
ओ म्हारा परमल पांख पखेरू

आवो उड़के डालां सूनी
थाने हलदी रंग बुलावे
म्हारे सूनी गोद सतावे
देवे सास नणंद ओलंबो
देवे सारी सेरी ओलंबो

आवो म्हारा मेवा बरसो
आवो सूखी धरती बरसो

छोड़ो डांडी डांडा छोड़ो
दोड़ो गांदीड़ो जस दोड़े

ओ पाण बिना ई गऊंड़ा
ओ पाण बिना ई खैतर

तरसे सूखे आवो।

ओ म्हारी कंदोरो की लूमां
ओ म्हारा परमल पंख पखेरू

- चंपालाल बीबी खंडवा

- मेरी करधनी की लटकन हो तुम और मेरे पराग की पंखुड़ी के पंछी भी हो। तुम आओ कि तुम्हारे बिना ये शाखाएँ सूनी हैं। तुम्हें मेरा हल्दी सा सुनहला रूप बुलाता है। कि मुझे मेरी सूनी गोद सता रही है। सास, ननद और पूरी गली मुझे उपालंभ देती है। आओ और मेघ बनकर बरसो, इस सूखी धरती पर बरसो। यह डांडी यात्रा छोड़ो और उस तरह दौड़ते हुए आओ जैसे गांधी दौड़ते हुए चलते हैं। ये खेत, ये गेंहूँ बिना सिंचाई के तरस रहे हैं, सूख रहे हैं-आ जाओ। आप तो मेरी करधनी की लटकन हो, आप तो मेरी परागभरी पंखुडी के पंछी हो।

१४
बनाजी थांको आंबो मोराणों आज।
गेरो गेरो पूरो लागे कोयल पंचम राग।
दखण में सूरज साथे उड़ी उड़ी के
आई धरऊ में आज।
वेस देस ने बोली बदली इन आंबा की राज।
देसी आज यो पूरो हुई गयो।
परदेसी पछताय।
बानाजी थांको आंबो.....

- चंपालाल बीबी खंडवा

- अरे गांधीजी दूल्हे अब तो तुम्हारा आम बौरा गया है। वह पूरा का पूरा बड़ा गहराया हुआ है और उसमें कोयल का पंचम स्वर में राग बड़ा भरा-पूरा लगता है। यह कोकिल दक्षिण में सूर्य के साथ उड़-उड़ कर (दक्षिणायन से उत्तरायण पर) उत्तर में आ गयी है। इस आम का अब वेश, देश और बोली बदल गयी है। अब यह आम पूरी तरह से देशी हो गया। यह देख-देख कर परदेशी पछता रहे हैं अरे गांधी दूल्हे आज आपका भारत देश रूपी आम बौरा गया है।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

१५

वेलड़ गांठ गठीली म्हारी
चड़्यो हलद को रंग।
परमल फूल पत्ते डारी
झर झर बरसे झेलो म्हारा
आंबा मोरां की भरमार।
मीठो कोयलड़ी को कंठ।
गावे थारा जीवन गीत
देखो गंद पवन में छाय।
म्हारा हिवाड़ा का महराज
छोड़ो गांदीड़ा रो मोम।।
वेलड़ गांठ गठीली म्हारी
चड़्यो हलद को रंग।।

- चंपालाल बीबी खंडवा

- गांधी के आह्वान पर स्वतंत्रता आन्दोलन के लिए घर-बार छोड़कर चल पड़ते नायक की यौवन से मदमाती नायिका कहती है—प्रियवर मेरी (देह) लता यथा स्थान विभिन्न ग्रन्थियों से गठीली हो गयी है। मेरे तन पर हल्दी का पीला रंग चढ़ गया है। अर्थात शरीर हल्दी सा पाला सुनहला हो गया है। इस लता की डाली, पत्ते और फूल परिमल पराग से भर गये हैं। प्रियवर वे झर-झर बरस रहे हैं। इन्हें झेल लो, सहेज लो। आम के पेड़ पूरी तरह से बौरा गये हैं। कोकिल के कंठ के बोल अब मीठे हो गये हैं, मीठे लग रहें हैं। वह कोकिल मीठे कंठ से तेरे यौवन के गीत गा रही है और पराग की गंध पवन में छा गयी है। हे मेरे हृदय के स्वामी- आप गांधी का मोह छोड़ो। इधर देखो-मेरी देह लता गांठों से गठीली हो गयी है। इस यौवन की हल्दी का रंग चढ़ गया है।

१६

म्हारी या हे आज जुआर।
इन धरती पे रागस रागस बडी गयो हे भार।
दास खास सब लोग बन्या हे जीवन को हे सार।
भारत माता दासी उदासी इनको करो उधार।
मोहन उतर्या बन के मोहन चरखा को सिनगार।
ढाल और तलवार नी सत्रु कर्या सबी नीढार।।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

धरती माता आज पुकारे गांदी सब सरदार।।
म्हारी या हे अरज जुआर।।

- चंपालाल बीबी खंडवा

- मेरी नमन पूर्वक यह प्रार्थना है कि इस धरती पर राक्षसों का भार बढ़ गया है। सब लोग, सभी महत्वपूर्ण लोग दास बन गये हैं। और इसे ही उन्होंने अपने जीवन का सार मान लिया है। यह भारत माता भी दासी बन गयी है और अपने प्रति उदसीन हो गयी है। उनका उद्धार करो। अब मोहनदास गांधी मोहन अर्थात् कृष्ण बनकर इस धरती पर उतरे हैं। उनके हाथ में चक्र की जगह चरखे का श्रृंगार है। उनके पास न रक्षा के लिए ढाल है और न वार के लिए तलवार है। फिर भी निहत्थे गांधी ने शत्रुओं को पराजित कर दिया। आज धरती माता पुकार रही है कि गांधी सबके (सरदारों के भी) सरदार हैं। मेरी प्रणाम सहित यह प्रार्थना है।

१७

चालो म्हारा छेल-छबीला
चाल्यो पूरो देस।
घर दरवाजे नाम वणी को
करसाणी हे वेस।।
ऊ सबको ने सब हे वणी का
कण कण में परवेस।
ई नीसान गगन में लेरे
देसी पावन हमेस।।
चालो म्हारा छेल छबीला
चाल्यो पूरो देस।।

- दुलें सिंह, खरसोद

- अरे मेरे सजे-धजे प्रियवर- चलो उधर, जिधर पूरा देश चला। घर-घर, द्वार-द्वार पर उसकी चर्चा है, जिसका अपना किसानी वेश है। वह सबका है और सभी उसके हैं। वह कण कण में व्याप्त है। ये चिन्ह, ये पताकाएँ गगन में लहरा रही हैं। और इन्हें स्वदेशी हवा सदा लहराती है। अरे मेरे सजे-धजे प्रियवर उधर चलो जिधर पूरा देश चला।

१८

चालो यो सायब चालो हम वेगा पेनो देसी वेस।
देसी गद्दी चाल परदेसी छोड़ो फिरंगी वेस।।

देसी धोती चादर देसी देसी वाणा राज।
तम तो देसी सायबजी हो गलफंदो दो फेंक।
उलटी टोपली मत मेलो माथे चीरा रूपाला हो पेंच।
अपना घर में गाम गाम में बने जो पेनो आप।
पर थाली देखी मत हींजरो मन रोको सिरदार।
अपणा घर का रूखो सूखो खावो पावो चेन।
चालो यो सायब......

- दुले सिंह खरसोद

- चलो, शीघ्र चलो स्वामी और स्वदेशी वेश भूषा पहन लो। आप यह अंग्रेजों का वेश छोड़ दो। देशी गधी यदि विदेशी चाल चलने लगे तो अच्छा नहीं लगता। देखो- यह देशी धोती है, चादर भी देशी है और देशी ही चप्पल हैं। अरे स्वामी तुम भी तो देशी हो। इस गले के फंदे (टाई) को फेंक दो। सिर पर यह उल्टी टोकरी (टोप) मत रखो। सिर पर तो पेंचदार पगड़ी ही सुंदर लगती है। अपने घर में और गांव गांव में जो वस्त्र और वस्तुएँ निर्मित होतीं हैं, उन्हें ही पहनो। दूसरे की थाली देखकर मत तरसो। अपने मन को कब्जे में रखो। अपने घर का रूखा सूखा खाकर ही मन में चैन पा सकोगे। स्वामी चलो, शीघ्र चलो।

१९

फोड़ो बरतन तोड़ो प्याला
मत पियो पियाजी दारूड़ी।
चालो म्हारा सायब साथे
उन लाठी वाला साथे आज।
चाल्यों सगलो समाज आपणो
घर को हुओ विनास।
अब तो तारे म्हारा बाबा
आवो सायब सात।
अपणो होवेगो उद्धार।
चालो सायबाजी अब सात।।

- दुलें सिंह खरसोद

- अरे प्रियवर बरतन फोड़ो दो, प्याले तोड़ दो। शराब मत पिओ। मेरे स्वामी आप आज उस लाठी वाले के साथ चल दो। अपना तो पूरा समाज ही उधर चल दिया। घर का विनाश हो गया। अब तो मेरे गांधी बाबा ही उद्धार करेंगे। अरे स्वामी आप साथ आओ। अपना उद्धार हो जाएगा। स्वामी अब साथ चलो।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

२०

थें तो बकरी को दूद पीयोजी बेंऽऽऽ
थें तो अपणा की रीत सुवाणा बेंऽऽऽ
थें तो करमां का पूत केवावो बेंऽऽऽ
थें तो कसतूरी गंद सुवावो बेंऽऽऽ
थें तो मनमानी करतां आजो
थें तो समदर तरी तरी जाजो
थें तो मोयन सबका छाजो
थें तो लोग लुगायां में गाजो
थें तो बकरी को दूद पीयोजी बेऽऽऽ

- दुलेसिंह, खरसोद

- गांधी तुम तो बकरी का दूध पीते हो। तुम्हें अपनी ही रीति अच्छी लगती है। तुम तो कर्म के पुत्र कहलाते हो। तुम तो कस्तूरी की गंध से सुहाने हो। तुम मनमानी करते आना। तुम समुद्र तैर कर जाना। हे मोहन तुम सब पर छा रहे हो। तुम नर नारियों (के चित) में गरजते रहते हो। तुम तो बकरी का दूध पीओ।

२१

मन मोयन वर दो एक हमार।
में छोटी मन बी छोटो छोटी हे मांग सबी तो।
मोयन गायां माया छोड़ी बकरी दूद न्हाया।
वा बकरी जो बें बें करती मोयन दूद सुवाया।
वा बकरी मेवा खावे पतियां दीन भुलाय।
वा बकरी रो जनम जमारो म्हारे बस मिल जाय।
मन मोयन वर दो एक हमार।।

- दुलेसिंह, खरसोद

- मन को मोहन वाले हे मोहन गांधी! हमें एक वर दो। मैं छोटी, मन भी छोटा है और हमारी सब प्रकार की मांगे भी छोटी हैं। हे मोहन तुम गायों की माया त्याग कर बकरी के दूध से स्नान करते हो। वह बकरी जो बें बें कर बोलती रहती है। उसका दूध मोहन को अच्छा लगा। वह बकरी मेवे खाती है। अब वह पत्तियाँ खाना भूल गयी। उस बकरी का जन्म मुझे मिल जाय अर्थात् अगला जन्म मुझे उस बकरी का मिल जाय। अरे मन मोहन हमें बस यही एक वरदान दे दो।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

२२

रंग तिरंगो फेरे गगनां या आजादी ले रे ले।
घणा फंदा से निकली न्यारी अबे तो तू ले रे ले।
गांदी बाबो लायो खेंचीं आवो आवों ले रे ले।
खून खराबो नी कार्यों पण ली आजादी ले रे ले।
राजी राजी दी आजादी वी न्हाटा तो ले रे ले।
सबका साते नाचो कूदो या आजादी ले रे ले।।
रंग तिरंगा फेरे गगनां या आजादी ले रे ले।।

- आनंदकवर, गाजनोद

- आकाश में तिरंगी पताका का रंग फहरा रहा है। अब इस आजादी को ले लो। अनेक बन्धनों से निकल आयी है यह अनोखी। अब इसे ले ले। गांधी बाबा इसे (विध्नों से) खींच लाया है। आकर इसे ले ले। उसने बिना रक्तपात के ही यह आजादी ले ली। इसे तू ले ले। वे (अंग्रेज) खुशी खुशी आजादी देकर भाग गये। उस आजादी को ले लें। सब के साथ नाचो कूदो। अब इस आजादी को ले ले। आकाश, में तिंरंगी पताका फहरा रही है। अब इस आजादी को ले लें।

२३

वीराजी थें तो चाल्या हो परदेस।
देस देस का चेला उनका
थोबी छोड़ेला विचारे जी नरेस।
उन घोड़ा की झबरी पूंछां
गरदन लेरे घेरे रेसम केस।
साबरमती के धड़े चरे वी
हीसें, करो मती कलेस।
सबी वणा को बस जस गावे
दुबरो हे जी बलेस।
सबको दुखड़ो अपणो माने
निरधानिया को गणेस।
उनको संग करो न रूकजो
मत करजो तम टेस।
वीराजी थें तो चाल्या हो परदेस।।

- आनंद कवर, गाजनोद

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

- मेरे भाई तुम तो परदेश चल दिये। उनके शिष्य देश देश के हैं। वे नरेश अपने घोड़े रोक-रोककर विचार कर रहे हैं। उन घोड़ों की झबरीली पूंछें हैं और रेशमी केशों से घिरी गरदनें लहरा रही हैं। वे अश्व साबरमती नदी के किनारे चरते हैं, हिन-हिनाते हैं कि अब क्लेश मत करो। उनका तो बस सब यशोगान करते हैं। यह देख देखकर बलेश (अंग्रेज) दुर्बल हो रहा है। वह गांधी सबका दुख अपना दुख मानता है। वह निर्धनों का गणेश है। उनका साथ करना, रुक जाना और अहंकार मत करना। मेरे भाई तुम तो विदेश चल दिये।

२४

थें तो आखा मलक का मोड़
ओ लाड़ा लीली घोड़ी रा असवार
थें तो चीरा पेंचा का पेणार
ओ लाड़ा लीली घोड़ी रा असवार।
थां की बनड़ी फिरंगी की नालां
ओलाड़ा लीली घोड़ी रा असवार।
आखो देस बन्यो हे बरात
ओ लाड़ा.....
गरीब गुरबा का हो तम भरतार।
ओ लाड़ा लीली घोड़ी रा असवार
थें तो आखा मलक का मोड़
ओ लाड़ा लीली छोड़ी रा असवार।।

- आनंद कवर, गाजनोद

- तुम तो पूरे विश्व के सिरमौर हो। अरे दूल्हे तुम तो नीली घोड़ी के सवार हो। तुम तो पेंचदार पगड़ी पहनते हो। तुम्हारी दुल्हन है- अंग्रेजों की चालें। और पूरा देश बारात बन गया है। तुम गरीबों के स्वामी हो। अरे दूल्हे तुम नीली घोड़ी के सवार हो।

२५

थें तो झामा से चाल्या।
धरमी जन के लेवा खुद वी धरमराज घर आया।
देखी थांकी असवारी न्यारी चकराया भमराया।
जमनातट पे मोयन जलम्या लेरां लई झुलाया।
वा जमनाजी थने बुलावे पूरा करम सुलाया।

एक मोचन ने आंख्यां खोली दूजे मीच विलाया।
वा जमना याखी दायां की जो खोया ने पाया।
थे तो रमा झमा ती चाल्या।।

- आनंद कवर, गाजनोद

- तुम तो पूरे गाजे बाजे के साथ चल दिये। तुम धर्मी हो। तुंम्हें लेने के लिए वे स्वयं धर्मराज तुम्हारे घर आये हैं। तुम्हारी अनोखी सवारी देख कर धर्मराज भी चकित और भ्रमित हो गये हैं। एक मोहन यमुना के तट पर मथुरा में जनमें थे जिन्हें यमुना ने अपनी लहरों के पलने पर झुलाया था। वही यमुना हे मोहन गांधी तुझे बुलाती है। तेरे कर्म पूरे हो गये। तुझे सुला दिया। इसी यमुना के तट पर एक मोहन ने आंखें खोलीं और दूसरा मृत्यु में विलीन हो गया, दूसरे ने आंखें बंद कर लीं। यह यमुना दोनों मोहन की गवाह है कि उन्होंने क्या खोया और क्या पाया। एक मोहन को पाने की भी वह गवाह है और दूसरे मोहन को खोने की भी वह गवाह है।

२६

पाकी निंबोरी छलंगी पे तेज।
चाल्या म्हारा वीराजी खांदे पड़ी हे सेज।।
एकला थे लाड़ा आखो मलक बरात।
दन ऊगवा के साते कसी आदी रात।
रींग रींग करी परा गया पूरा अंगरेज।
जूना चींथा रंगे देसी रया रंगरेज।।
रई रई आवे सबके घणी घणी याद।
कसो थो जमानो ऊ बी कसो थो संवाद।।
पाकी निंबोरी छलंगी पे तेज।।
सबी हे ठगोरा कतरा नुगरा हे जी लोग।
भूल्या बिसर्या सबी वीरा देता था जो धोग।।
परबात्या गावे दन ऊगता के माय।
भूका पेट रेता था जो मांगता था राय।।
बीज था बाप बापू बीज था जी माय।
न्हार बन्या अबे देखो कदी था जो गाय।।
पाकी निंबोरी छलंगी पे तेज।

- आनंद कवर, गाजनोद

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

- नीम के शिखर पर तेज है। नीम का फल पक गया है। मेरे भैया चल दिये। उनकी शैया कंधे पर पड़ी है। तुम अकेले दूल्हे हो। पूरा संसार बारात है। आजादी के सूर्योदय के साथ ही यह कैसी आधी रात आ गयी? बड़ी अनिच्छा से सभी अंग्रेज चले गये। अब फटे पुराने चीथड़े रंगने वाले देशी रंगरेज रह गये। बार-बार उस जमाने की याद आती है कि वह भी कैसा जमाना था और उसका भी क्या स्वाद था? सब लोक ठग हैं, कृतघ्न हैं। जो लोग तुम्हारे पैरों पड़ते थे वे सब तुम्हें भूल गये। जैसा दिन ऊगता है वैसी प्रभाती गाते हैं। जो भूखे पेट रहते थे और सदा राय मांगते थे। वे बापू ही माता थे और पिता भी। उनको भूलकर अब ये सिंह बन गये है जो कभी गाय थे। नीम का फल तक गया है और उसके शिखर पर तेज है।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

छत्तीसगढ़ी गांधी गीत

संकलन व अनुवाद
पीसीलाल यादव
गण्डई पंडरिया
राजनांदगाँव (म.प्र.)

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

धन-धन बापू

- स्व. मनराखन दास गंधर्व

सौजन्य-श्री खम्हनलाल अस्तुरे

धन-धन बापू हमर देस ल बाचाये तैं।
तन-मन-धन कर अर्पन भाग ल जगाये तैं।टेक।।

एक झन सरवन तैं अपन माँ-बाप के।
सत्य के पुजारी अहिंसा इतिहास के।।

पंडित जवाहर लाल पाठ फेर पढ़ाये तैं।।१।।
धन-धन.....

कुल वैस्य मोहनदास गांधी नाम जगाये।
अफ्रिका म बैरिष्टर बन सत के राह चलाये।।

सरकारी सन सम्बत चालीस सत्याग्रह अपनाये तैं।।२।।
धन-धन.....

रोजी करे इंग्लैंड म तैं हर हीरों के झोला उठाये।
एक दुवन्नी खातिर बापू दांत ल तैं झरवाये।।

देस महान बनाये खातिर, गज बेच दुख उठाये तैं।।३।।
धन-धन....

कइयो बार गेये तैं हमर खातिर जेल में
अत्तेक बड़ भारत ल लेये तैंहर खेल में।।

उन्नीस सौ सैंतालीस पंद्रा अगस्त म पाये तैं।।४।।
धन-धन......

देस महान बनाये बापू भारत लाल कहाये।
हमरे खातिर तैं दुनिया में गांधी नाम धराये।।

मनराखन कस लाखन मूरख,सबो ल सीख सिखाये।।५।।
धन-धन...

- धन्य-धन्य बापू तुमने हमारे देश की रक्षा की। अपना तन-मन-धन सर्वस्व अर्पण कर हमारे भाग्य को जगाया। बापू तुम धन्य हो।

श्रवण कुमार की तरह तुम अपने माता पिता की अकेली संतान हो। तुम सत्य के पुजारी, तुमने अहिंसा का इतिहास रचा और पंडित जवाहर लाल नेहरू को सत्य और अहिंसा का पाठ पढ़ाया। गांधी तुम धन्य हो।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वैश्य कुल में जन्म लिया। बचपन में तुम्हारा नाम मोहनदास गांधी था। अफ्रीका से बैरिष्ट्री की शिक्षा प्राप्त की। सत्य का मार्ग प्रशस्त किया और सन १९४० में सत्याग्रह आंदोलन चलाया। गांधी तुम धन्य हो।

हीरो का थैला उठाकर इंग्लैण्ड में तुमने मजदूरी की, एक दुवन्नी (दो आना) की खातिर अपने दांत उखड़वायें। पर सत्य और श्रम को नहीं छोड़ा। अपने कार्यों से देश को महान बनाने के लिए तुमने अनेकों कष्ट उठाये। गांधी तुम धन्य हो।

देश के लिए तुम कई बार जेल गए, यातनाएं सही। इतने विशाल देश को तुमने खेल-खेल में १५ अगस्त १९४७ को आजाद कराया, हमें आजादी दिलायी। गांधी तुम धन्य हो।

बापू तुमने देश को महान बनाया और भारत मां के लाल कहलाए। हमारे हितों की रक्षा के लिए तुम्हारा गांधी नाम-संसार में प्रसिद्ध हुआ। बापू तुमने 'मनराखन' जैसे लाखों अज्ञानियों को शिक्षा दी। सही राह दिखाई। गांधी तुम धन्य हो।

छुआ-छूत भरमा भूत

- स्व. बद्री विशाल यदु 'परमानंद'

हमर बबा गांधी हा गोविन्द भगवान ल।
हरिजन लड़का में पाइस ग........!

प्रेम-सगाई जइसे रामजी,
भिलनी के घर पाइस गा।
सबरी के जूठा बोइर खाइस
भेदभाव नई लाईस गा।

हमर बबा गांधी हा......

कोन जाही रोहीदास के घर म
अइसन छुआ लगाये ग।
मन हे चंगा कठौती में गंगा।
नेमहा मन पछताये ग।।

हमर बबा गांधी हा......

निच्चट नीच कुल जउन कहिथे
जग में बिदुर कहाये ग।
जिंहा कृष्ण होगे भाजी म राजी
ऊँच-नीच नई चिन्हिस ग।।

हमर बबा गांधी हा....

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ऊँच-नीच, भेद-भाव छुत्ती के छुआ
मनखे ल मनखे घिनाइस गा।
आत्मा ला 'परमानंद' नई चिन्हे
फोकट जनम तेहा पाइसे गा।।

हमर बबा गांधी हा....

- कृति-पिंवरी लिखे तोर भाग से साभार
सौजन्य-सुशील यदु

- हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने हरिजन बच्चों में गोविन्द (श्रीकृष्ण) भगवान के दर्शन किए।

जिस प्रकार से भगवान श्री रामचन्द्र जी ने अस्पृश्य भिलनी के घर जाकर उनका प्रेम सहर्ष स्वीकार किया। उन्होंने मन में- किसी प्रकार का भेद-भाव नहीं लाया और सबरी के जूठे बेर खाये।

रैदास को नीच जाति कहकर जो लोग छुआछूत मानते थे, उनके घर नहीं जाते थे। किन्तु जब उनकी ईश्वर भक्ति और उनके ज्ञान को जाना, 'मन चंगा तो कठौती में गंगा' को प्रत्यक्ष परखा तो ऐसे छुआ-छूत मानने वाले कट्टरपंथी लोग बहुत पछताए, लज्जित हुए।

जिन्हें सूत पुत्र, नीच कुल का कहा जाता था वे संसार में महात्मा विदुर के नाम से प्रसिद्ध हुए। जिनके घर स्वयं श्री कृष्ण के ऊँच-नीच का भेदभाव त्याग कर भोजन किया। भोजन में भाजी खाकर प्रसन्न हुए (दृष्टव्य छत्तीसगढ़ी लोकगीत व लोकोक्ति दुर्योधन के मेवा त्यागे साग विदुर घर खाये जी व भाजी म भगवान राजी)।

ऊँच-नीच का भेदभाव, छुआ-छूत मनुष्य-मनुष्य से घृणा कर रहा है। 'परमानंद' कहते हैं कि जिसने आत्मा में बसे परमात्मा को नहीं पहचाना, छुआछूत को माना उसका मनुष्य जीवन पाना व्यर्थ है। हमें गांधी जी ने यह समझाया और छुआछूत को मिटाया गांधी ने हरिजन बालक में श्रीकृष्ण के दर्शन किये।

:: फाग गीत ::

हमारो आए राज सुदेसा है

- स्व. द्वारिका प्रसाद तिवारी 'विप्र'

चल हां हमारे आए राज सुदेसा है।
अरे आए राज सुदेसा हे हमारो
आए राज सुदेसा हे
चला-आवा, चला आवा
चला आवा मनाबो तिहार।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चला आवा मनाबो तिहार
हमारे आए राज सुदेसा हे।।१।।

अरे हां हमारो कइसे राज सुदेसा है
फेर कइसे मनाबो तिहार, फेर कइसे मनाबो तिहार
हमारो आए राज सुदेसी है।।२।।

अरे हां हमारे परजा के परजा राजा
तेमा पन्द्रह अगस्त तिहार, तेमा पन्द्रह अगस्त तिहार
हमारो आए राज सुदसी हे।।३।।

अरे हां हो गांधी ले के अहिंसा तै आए
अऊ खोले सुतंत्र दुवार, अऊ खोले सुतंत्र दुवार
हमारो आए राज सुदसी हे।।४।।

अरे हां सुराज के होरी घर-घर गांवा ग
अऊ करा सुदेसी प्रचार, अऊ करा सुदेसी प्रचार
हमारो आए राज सुदेसी है।।५।।

अरे हां देस ल दुस्मन झन डेरूवावै रे
चलो उठा जम्मा ललकार, चलो उठा जम्मा ललकार
हमारो आए राज सुदेसी हे।।६।।

कृति -'फागुन गीत' से साभार
सौजन्य-जीवन यदु

- हमारे देश में हमारा स्वराज्य स्थापित हो गया है। हमें स्वतंत्रता मिल गई है। चलो आओ अब मिलकर त्यौहार मानयेंगे।

हमारा स्वराज्य कैसा स्वराज्य है? फिर हम किस तरह त्यौहार मनायेंगे? हमारे स्वराज्य में प्रजा के लिए प्रजा ही राजा है। और उसमें १५ अगस्त का त्यौहार, स्वतंत्रता दिवस मनायेंगे।

गांधी जी अहिंसा को लेकर आए और हमारे लिए स्वतंत्रता के द्वार खोले। स्वतंत्रता की होरी (फाग-गीत) घर-घर गाओ स्वदेशी वस्तुओं का प्रचार-प्रसार करो। देश के शत्रुभय न दिखावें। इसलिए सारे देशवासी उठो और शत्रु को ललकारो। स्वराज्य हमें मिल गया है, स्वतंत्रता हमें मिल गई है।

गांधी के नाम

- स्व. मनराखन दास गंधर्व.

गली-गली, खोर-खोर म, उड़त हे गांधी के नाम ।।टेक।।
गांधी बबा बड़ परतापी
धन-धन ओकर छाती।
बिना गोला बारूद भगाइस
गोरा अंगरेज उत्पाती।।
भारत मां के मान बढ़ाके, बन गेइस भगवान।
गली-गली खोर-खोर म उड़त हे गांधी के नाम।।
सत्य अहिंसा के रेहे पुजारी
तहिंच हमर देस में।
तोर सहीं कोनों नई होइन
ये जुग कोनो देस म।।
सत्त धरम के तही मनैया, राम कहौ ते स्याम।
गली-गली खोर-खोर म उड़त हे गांधी के नाम।।
भारत ल आजादी देये
अमर करे तैं नाम।
जुग-जुग ले भुलावन नहीं
हम तोरे अहेसान।।
'मनराखन' तोर गुन ल गाथे, रोज के सूबे-साम।
गली-गली, खोर-खोर म उड़त हे गांधी के नाम।।

सौजन्य-श्री खम्हनलाल मस्तुरे

- गली-गली में गांधी के नाम का शोर (प्रसिद्धि) है।

राष्ट्रपिता गांधीजी बड़े पुण्यात्मा, प्रतापी और महान वीर है। उनकी छाती (ताकत) को धन्य-धन्य है, जिन्होंने बिना गोला -बारूद, बिना हिंसा के अंग्रेजों को देश से भगाया और उनके उत्पात को मिटाया। गांधी भारत माता का गौरव बढ़ाकर अपने कार्यों से भगवान बन गए।

तुम हमारे देश में सत्य और अहिंसा के पुजारी थे। इस युग में तुम्हारे समान शक्तिवान किसी भी देश में कोई नहीं हुआ। सत्य और धर्म को मानने वाले ओ बापू! मैं तुम्हें भगवान राम कहूँ या भगवान श्री कृष्ण कहूँ?

भारत को स्वतंत्र कर तुमने अपना नाम अमर कर लिया है। युगों-युगों तक तुम्हारे अहसानों को, बलिदानों को हम विस्मृत नहीं करेंगे। 'मनराखन' कवि कहते हैं कि बापू मैं तुम्हारी गुण-गाथा को प्रतिदिन सुबह-शाम स्मरण कर गाता हूँ। गली-गली में गांधी जी के नाम का शोर है।

गांधी के बिरवा

- लक्ष्मण मस्तुरिहा

धरती के अंगना म गांधी के बिरवा,
फुलगे राजा फुलगे, माटी के भाग।
अंधियारी के समे उजरगे,
चंदा अंजोरी भुंइया उतरगे,
महर-महर मोर अंगना महके
राम-सिया के तन-मन दहके।
होईस बिहान हांसिस किसान।।
हिन्दू-मुस्लिम बदिन मितान।।
धरती के अंगना म गांधी के बिरवा,
फुलगे राजा फुलगे, खुलगे माटी के भाग।
धरम-करम के भितिहा बनगे,
पहरा हिम कस छाती तनके।
बादर बिपत के बरस के झरगे
दया-मया के रूख फरगे।।
देवता आके होइस सियान
भागिस कपटी लेके परान।
धरती के अंगना म गांधी के बिरवा
फुलगे राजा फुलगे, खुलगे माटी के भाग।
फुटगे बैरी के आंखी फटाफट
संभरिन भुंइया के बेटा खटाखट
समे के साथ हर घर में आगे
दुख भुलागे भुइया हांसे।।
करिया-गोरिया बदिन मितान
भागिस रतिहा आइस बिहान।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

धरती के अंगना में गांधी के बिरवा
फुलगे राजा फुलगे खुलगे माटी के भाग।

- इस धरती के आंगन में गांधी एक वृक्ष की तरह उग आए। इस गांधी रूपी वृक्ष में सुन्दर-सुन्दर सत्य, अहिंसा प्रेम और सेवा के फूल खिले हैं जिससे धरती के सौभाग्य का द्वार खुला।

अंधकार (गुलामी) का समय नष्ट हो गया, चन्द्रमा की शीतल किरणें धरती पर बिखर गईं। महर-महर घर-आँगन महकने लगा। राम-सिया (नर-नारी) के तन-मन में स्वतंत्रता की आभा चमकने लगी। स्वराज मिला, नई सुबह का आगमन हुआ, किसान मुस्कुराने लगा। हिन्दुओं और मुसलमानों में भाईचारा और एकता स्थापित हुई, गांधी के आने से इस धरती के भाग खुल गए।

धर्म और कर्म की सुन्दर दीवार बन गई हिमालय का सुदृढ़ पहरा लगा हुआ है। सीना गर्व से फूल गया। विपत्तियों के बादल बरस कर छँट गए। दया और प्रेम के वृक्ष फल से लद गए। आजादी के अगुवा गांधी जी यहाँ आकर देवता हो गए। उनके नेतृत्व के आगे कपटी-दुश्मन अंग्रेज अपने प्राण लेकर यहाँ से भागे। गांधीजी के आने से इस देश का भाग्य खुल गया।

दुश्मनों की आँखे फूट गई। इस धरती के बहादुर बेटों ने शीघ्र मोर्चा सम्हाल लिया। अभिलाषा का पर्व प्रत्येक घर में आ गया। सारे दुख दूर हो गए, विस्मृत हो गए। रंगभेद समाप्त हो गया। काली रात बीत गई और नया सबेरा आया। गांधी के आने से इस धरती के सौभाग्य का द्वार खुला।

बापू के सुरता

-महेन्द्र प्रताप सोम

सुने रेहेन हम बापू बोला, अड़बड़ दुबर-पातर रेहे।
छाती बजर रही रिहिस, अऊ दानी दधीचि सही रेहे।।
बिरबिट अंधियारी रसदा में, तैं मसाल बन के जागे।
अऊ सुराज के खातिर तैं आंधी-पानी संग भागे।।
कांटा-खूंटी सब सरपट होगे, कुरसी अंग्रेज के थर्रागे।
तोर पांव के चिन्हा-चिन्हा में भारत के नक्सा बनगे।।
तोला देखके बिजली रोइस,तै तो महाकाल रेहे।
सुने रेहेने हम बापू तोला, अड़बड़ दूबर-पातर रेहे।।
हिंसा के बधवा ल तै, बकरी अस बांधे रेहे।
घासी दास के सत लो तैं, चिमचिम ले साधे रेहे।।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बिखरे अक्षर ल तै जोरे, ओ नवा इतिहास होगे।

तोर पसीना ये धरती में, गंगा के धारा होगे।।

चरखा तोर सुदर्शन होगे, तैं आगू-आगू रहे।

सुने रेहेन बापू तोला, अड़बड़ दूबर-पातर रेहे ।।

सुरता ह बांचे ह बापू चरित सब उल्टा होगे।

बुराई के तीन बेंदरा सत खातिर सौहत होगे।।

तोर राम राज ल गुनत-गुनत, बच्छर उपर बच्छर होगे

हुंडरा- कोलिहा बधवा बनगे, हमर तो जौहर होगे।

करिया बिलवा सब उजरागे तै जेखर दुस्मर रेहे।

सुने रेहेन हम बापू तोला, अड़बड़ दुबर-पातर रेहे ।

- बापू हमने सुना है कि तुम बिल्कुल दुबले-पतले थे। पर तुम्हारी छाती वज्र की तरह कठोर थी और तुम दधीचि की तरह दानी थे।

हमारे रास्ते में धुप्प अंधेरा था, वहाँ तुम मशाल बन कर आगे आए और स्वराज्य प्राप्ति के लिए आंधी और तूफान के साथ चले। तुम्हारे संघर्ष के पथ पर 'काटा-खूंटी' अर्थात, कष्ट और समस्याएँ सब नष्ट हो गई, जिससे अंग्रजों की कुर्सी डगमगाने लगी। तुम जिधर चले वहां तुम्हारे पद चिन्हों पर भारत का नक्शा मानचित्र तैयार हो गया। तुम शत्रु के लिए महाकाल थे, तुम्हें देखकर बिजली भी रोने-कांपने लगी थी।

हिंसा रूपी बाघ को तुमने बकरी के समान अपने आधीन कर लिया था। गुरू घासीदास के 'सत्य' की जीवन में तुमने साधना की थी। सत्य को अपने जीवन से कभी अलग नहीं किया। तुमने बिखरे अक्षरों को जोड़कर नए शब्दों का निर्माण किया, नया इतिहास रचा। सारे देशवासियों को एक सूत्र में पिरोया। तुम्हारा पसीना इस धरती पर जहां भी गिरा, वहां गंगा की पवित्र धारा बह निकली। तुम्हारा 'चरखा' तो चक्र सुदर्शन बन गया था। जिसे लेकर तुम आजादी के पथ पर आगे ही आगे चले थे।

हे बापू। अब तुम्हारी स्मृतियाँ ही शेष हैं। सारे चरित्र उल्टे हो गए हैं। तीनों बंदर जिनसे तुमने बुरा न देखने, बुरा न सुनने व बुरा न कहने की शिक्षा ली थी सत्य की खातिर स्वयं खोने लगे हैं। तुम्हारे राम राज्य के बारे में सोचते-सोचते साल-पर-साल बीत गए। भेड़िया और लोमड़ी शेर बन गए। हमारा तो सर्वनाश हो गया। काले (भ्रष्ट) लोग जिनमें तुम शत्रु थे वे ही अब उजले हो गये हैं।

बापू हमने सुना है कि तुम बिल्कुल दुबले-पतले थे।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तैहा जान गंवाए गांधी

- पंचराम मिर्झा

तैहा जान गवाएं गांधी,
इही तिरंगा खातिर तैहा जान गंवाए।

रहिस गुलामी चलत रिहिस
सासन ह अंग्रेजी।
जेल में धांधिन बहुत तपिस
ओ पापी परदेशी।

होरा बरोबर कतको ल भुजीन,
अऊ कतको ल फांसी।
तैहा जान गवाएं गांधी.....

वीर नरायन तेग बहादुर
चन्द्रशेखर महाराजा।
संगवारी तोर कतको रिहिन
सबके ये सुमत हा।।

मरगे कतको गोली खाके,
काटे तै चौरासी।
तैंहा जान गवाएं गांधी

धोती एकठन पहिरे राहस
तैंहर सुघ्घर तन म।
देस आजादी बर निच्चट ग
ठाने रहे तैं मन म।।

दुख ल सब ग हांस के झेले
तैं नई रेहे उदासी।
तै जान गंवाए गांधी...

३० जनवरी ४८ के
नाथू ह मारिस गोली
प्रान तियागे ये मोर बबा
भर दिय तैं झोली।।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नाम कमाये तैं हर गा
भारत ल मिलिस आजादी।
तैं जान गंवाए गांधी....

- गांधी जी तुमने इस तिरंगे के लिए अपने प्राणों का बलिदान किया। हमारा देश गुलाम था, परतंत्र था, यहां अंग्रेजों की शासन व्यवस्था चल रही थी। उन्होंने बहुत अत्याचार किए देशभक्तों को जेलों में डाला। 'होरा' की तरह लोगों को गोलियों से भूना और अनेक लोगों को फांसी दे दी।

वीर नारायण तेग बहादुर, चन्द्रशेखर ने आजादी के लिए प्राण गवाएं। गांधी जी तुम्हारे अनुयायी, साथी बहुत थे सबकी एक राय थी। देश की आजादी के लिए उन्होंने गोलियां खाई। तुमने अनेकों यातनाएं झेली।

तुम्हारे अंग में केवल एक धोती रहती थी। देश को आजाद करने का तुमने प्रण किया था। अंग्रेजों की सारी यातनाएं, सारे कष्ट तुमने हंस कर झेल लिया। पर कभी निराश नहीं हुए।

३० जनवरी १९४८ को हत्यारे नाथू ने तुम्हें गोली मार दी। ओ बापू तुमने प्राण त्याग दिए। हमारी झोली भर दी, हमें आजादी दे दी। तुम्हारा यश हुआ तुमने नाम कमाया। अपना सर्वस्व अर्पण कर भारत को आजाद कराया।

गांधी बबा केहे रिहिस.

- लक्ष्मण मस्तुरिहा

जे दिन अड़हा किसान के बेटा, पढ़-लिख के बनही नेता
गांव म रूरहा-मुरहा जे दिन, रोजी मंजुरी कमाखाही रे
गांधी बबा केहे रिहिस, उही दिन राज राज आही रे।
जे दिन मंदिर कस लगही कछेरी, थाना-बाड़ा के छुटही बेड़ी
पाछु खुलै कुछु कारखाना, पहली झुमें गांव-गांव खेती
जे दिन रोटी-पानी छईया परे-डरे मनखे पा जाही रे।
पहली गांव-गांव म मदरसा, पादू बनय बंगला सहर म
पहली गांव-गांव म अंजोरी, पाछू चलय फउवारा नगर म
जे दिन खेती कमईया मन साहेग, सिपइहा ले मान पाही रे।
चलही धरम अऊ करम बरोबर, आही सइता-सुमति घरोघर
देश के पूंजी अऊ भूमि सबो के गांव अऊ सहर म रही धरोहर
जे दिन अपने पीरा कसपरोसी के पीरा जना जाही रे
गांधी कहे रहिस वोही दिन-राम राज आही रे।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

- गांधी जी ने कहा था-जिसदिन भोला-भाला किसान का बेटा पढ़-लिखकर नेता बनेगा, जिस दिन गांव के भूखे प्यासे, दीन-हीन लोगों को काम मिलेगा, रोजी-मजूरी मिलेगी, उनकी भूख मिटेगी उसी दिन इस देश में राम-राज्य आयेगा।

जिस दिन न्यायालय मंदिर की तरह लगेगा, छोटे बड़े सबको न्याय मिलेगा। थाना और जेल की जंजीरे टूटे जायेगी। जिस दिन कारखाना खुलने से पहले खेतों में फसलें लहलहायेंगी गांवों में हरियाली झूमेंगी। जिस दिन पिछड़े लोगों को रोजी-रोटी पानी और मकान मिल जायेगा। उसी दिन इस देश में राम-राज्य आयेगा।

पहले प्रत्येक गांव में शिक्षा के लिए स्कूल खुले, फिर बाद में शहरों में बंगले बने। पहले गांवों में प्रकाश की व्यवस्था हो, फिर बाद में शहरों में फव्वारे चले। जिस दिन खेतों में काम करने वाले किसानों और मजदूरों को 'साहेब-सिपइहा' अफसरों की तरह सम्मान मिलेगा उसी दिन इस देश में राम राज्य आयेगा।

जिस दिन धर्म और कर्म में समानता होगी, सत्य और सुमति, एकता प्रत्येक घर में होगी। देश की सम्पत्ति और भूमि गांव व शहर में सबके लिए समान धरोहर होगी। जिस दिन पड़ोसी की पीड़ा अपनी पीड़ा बन जायेगी। उसी दिन इस देश में राम राज्य आयेगा। बापू ने ऐसा कहा था।

गांधी महिमा

(अल्हा तर्ज)

- रामेश्वर प्रसाद वरदानिक

कतेक महिमा बतावंव तोर
अंगरेजन कछु पार न पाय।
बड़का काम करे तैं बापू
देश ले दुस्मन मार भगाय।
पोरबंदर तोर जनमभूमि हे
करमचंद हे पिता तुम्हार।
भागमान तैं बेटा कहाये
पुतलीबाई के मिलिस दुलार।
सत्य अहिंसा के रहेस पुजारी
भारत माता के सच्चा सपूत
अनाचार के सदा विरोधी
विश्व शांति के बनेस दूत।।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

धन्न-धन्न तोर जिनगी गांधी
करे देश के अचरज काज।
देश के भाग ल तिहीं जगाये।
तोर भरोसा मिलिस सुराज।।

- गांधीजी, मैं तुम्हारी महिमा का कितना बखान करूं। अंग्रेजों ने तुम्हारा भेद नहीं पाया। तुमने देश से अंग्रेजों को भगाकर महान कार्य किया। पोरबंदर तुम्हारी जन्म भूमि हैं, और पिता करमचंद तुम भाग्यवान पुत्र कहलाए। तुम्हें माता पुतली बाई का स्नेह और दुलार मिला।

तुम सत्य-अहिंसा के पुजारी और भारत माता के सच्चे सपूत थे। अत्याचार, अन्याय का सदैव विरोध किया तुम विश्व-शांति के दूत थे।

धन्य-धन्य है, तुम्हारे जीवन को गांधी, जो तुमने असंभव कार्य को भी कर दिखाया। देश का भाग्य तुम ही ने जगाया। तुम्हारे भरोसे ही इस देश को स्वराज्य मिला, आजादी मिली।

देवदूत बन आए गांधी.....

- सौजन्य-अघनू राम निषाद

हाय रे हाय गांधी दुनिया में राम
देवदूत बन आए गांधी
दुनिया में राम।
दुबला-पतला मानो पुतला
उज्जर खादी वाला
कोटि-कोटि के दिल में बैठे
एक निंगोटी वाला।
गांधी दुनिया में राम।।१।।
पोरबंदर गुजरात प्रान्त में
ये हा जनम धरिस
देवदूत बन आके एहा
सबके दुख हरिस
गांधी दुनिया में राम।।२।।

शांति स्वर में बाबा कहिस
सांति म देश ल लेबो
यहू गाल ल मार दीही
य यहू गाल ल देबो
गांधी दुनिया में राम॥३॥
कतको पढ़िस- लिखिस तबले
सबके सेवा करिस बबा
सूत कात कपड़ा पहिना के
सबके दुख ल हरिस बबा।
गांधी दुनिया में राम॥४॥
हिन्दू मुस्लिम-सिख-इसाई
सबके नयनों के तारा
नाथूराम गोडसे ह
धोखा देके मारा
गांधी दुनिया में राम॥५॥

- गांधी जी इस संसार में देवदूत बनकर आए।

उनका दुबला पतला शरीर मानो वे पुतला है। वह उज्जवल खादी वस्त्र वाले गांधी जो 'निंगोटी' (कम वस्त्र) पहनते हैं, कोटि-कोटि लोगों के हृदय में विराजमान हैं।

गुजरात प्रान्त के पोरबंदर नामक स्थान में गांधी ने जन्म लिया और देवदूत की तरह आकर यहां सबके दुखों को दूर कर दिया।

शांत स्वर में बापू ने कहा कि हम देश को अहिंसा और शांति से स्वतंत्र करायेंगे अगर शत्रु ने हमारे एक गाल में चांटे लगाये तो हम उन्हें अपना दूसरा गाल भी दे देंगे।

शिक्षा-दीक्षा बहुत ग्रहण की गांधी जी ने। खूब पढ़े -लिखे थे, वे फिर भी उन्होंने सबकी सेवा की। चरखा चलाकर, सूत कातकर सबको खादी पहनाया और सबके दुखों का निवारण किया।

गांधी जी हिन्दू-मुस्लिम-सिख-ईसाई सबकी आंखों के तारा थे, सबको प्रिय थे। नाथूराम गोडसे ने उसे धोका देकर मारा। गांधी जी इस संसार में देवदूत बनकर आए थे।

हीरो गीत

- सौजन्य-प्रहलाद निषाद

गांधी खेलय होरी
गांधी खेलय होरी
संग म जवाहर नेहरू।

काखर भिंजगे धोती, काखर कुरता
काखर भिंजगे टोपी....
गांधी खेलय होरी।

गांधी के भिंजगे धोती, तिलक के कुरता
नेहरू के भिंजगे टोपी....
गांधी खेलय होरी।

सत अऊ अहिंसा के बल, भारत होइस अजाद
विजय के डंका बजगे...
गांधी खेलय होरी।

झुमय गांवय नर-नारी, जय जवान जय किसान
नंदाके बिदेसी आँधी....
गांधी खेलय होरी।

- गांधी जी होली में रंग गुलाल खेल रहे हैं, उनके साथ नेहरू जी भी हैं। किसकी धोती भींग गई? किसका कुरता भींग गया और किसकी टोपी भींग गई?

महात्मा गांधी की धोती भींग गयी। लोक मान्य गंगाधर तिलक का कुरता भींग गया और पंडित जवाहर लाल नेहरू की टोपी भींग गई।

सत्य और अहिंसा के बल पर भारत आजाद हो गया। विजय का डंका बजने लगा। सारे देशवासी नर-नारी झूम-झूमकर गाने लगे 'जय जवान जय किसान'। विदेश से जो गुलामी की आंधी आई थी, वह समाप्त हो गई।

आये तोर सुरत गांधी

- पीलू राम गंधर्व

देश के खातिर जूझ परे अऊ जान गंवाये।
आये तोर सुरता गांधी मोला-रहि- रहि आये।।

१५ अगस्त १९४७ में
आजादी ल पायेन।
गांधी तोर संग-संग में
रघुपति राघव गायेन।।

इंकलाब जिंदाबाद क नारा ल तैं बोलाये।
आये तोर सुरता गांधी मोला रहि-रहि आये।।

सही-सही बोल के गांधी
अंग्रेज के पोल खोले।
सत्य-प्रेम के बल से लड़े

कभू झूठ नई बोले।
अंग्रेज मन ल भगा के, तैंहा अजादी देवाये।
आये तोर सुरता गांधी, मोला रहि-रहि आये।।

धर तिरंगा गांधी जी
तै खाये कसम भगवान के।
तिल भर भुईया हम नई
जावन देवन हिन्दुस्तान के।।

कतको गोली-झेल-झेल के, अंग्रेज ल इहां ले भगाये।
आये तोर सुरता गांधी, मोला रहि-रहि आये।।

-देश की खातिर तुमने संघर्ष किया और अपनी जान गंवायी। गांधी जी, मुझे तुम्हारी याद आती है, रह-रह कर याद आती है।

पन्द्रह अगस्त सन१९४७ को हमें आजादी मिली। हमने तुम्हारे साथ-साथ 'रघुपति राघव राजाराम' का गान किया। तुमने इंकलाब जिन्दाबाद के नारे लगाये। गांधी जी मुझे तुम्हारी याद आती है।

सत्य बोलकर ही गांधीजी ने अंग्रेजों के भेद को खोला। सत्य और प्रेम के बल पर संघर्ष किया। गांधी कभी झूठ नहीं बोले। अंग्रेजों को यहां से भगाकर तुमने देश को स्वतंत्र किया। गांधी जी मुझे तुम्हारी याद आती है।

गांधी तुमने तिरंगा झंडा लेकर भगवान की यह सौगंध ली कि ''हम हिन्दुस्तान की तिल भर भी जमीन नहीं जाने देगें।'' कितनी गोलियाँ झेलकर भी तुमने अंग्रेजों को यहाँ से भगाया। गांधी जी मुझे तुम्हारी बहुत याद आती है।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गांधी बबा

- रामेश्वर प्रसाद वरदानिक

लउठी मा तोर अतका ताकत हे,
देश ल छोड़ के अंगरेज मन भागत हे।
सत्य अहिंसा के रस्ता ल तै बताये,
गांव-गांव म गांधी अलख जगाये
छोटे बड़े बर चरखा ल चलाये,
लोगन ल स्वदेशी के मरम समझाये,
गांधी डोकरा भगवान सरिख लागते हे।।१।।
दुब्बर-पातर तन म हिमालय के जोर हे,
दुनिया के भर म तोर नाम के सोर हे
तेहां मिटाये गुलामी के अंधियारी ल,।
देश भर म बगरिस आजादी के अंजोर हे।
बुढ़वा भारत म नवा जवानी जागत हे।।२।।
शिवाजी के धरम राखे परताप के परन
बड़े-बड़े नेता मन आइन तोर सरन,
करें या मरें के भाव ल जगाये तेहां,
लोगन के मन म देश परेम के लगन
जिनगी म कठिन बरत ल साधत हे।।३।।

- बापू तुम्हारी लाठी में इतनी ताकत है कि अंग्रेज अब इस देश को छोड़कर भाग रहे हैं। तुमने सत्य और अहिंसा का पथ अपना गांव-गांव में आजादी की अलख जगाया छोटे-बड़े सबके लिए चरखा चलाकर देशवासियों को स्वदेशी का मर्म समझाया। गांधी जी भगवान की तरह लग रहे हैं।

तुम्हारे दुबले-पतले शरीर में हिमालय की शक्ति है। विश्व के कोने-कोने में तुम्हारे नाम की प्रसिद्धि है। तुमने देश से गुलामी के अंधकार को मिटाया और आजादी का प्रकाश बिखराया। बूढ़े भारत में नई जवानी जाग रही है।

गांधी जी तुमने वीर शिवाजी के धर्म और राणा प्रताप के प्रण की रक्षा की। बड़े-बड़े नेता तुम्हारे साथ आए। तुमने करो या मरो का भाव तथा लोगों के मन में देश सेवा की लगन जागृत की। जीवन में तुमने कठिन व्रत की साधना की।

तोर सेती चमके भाग

- छगनलाल सोनी

तोर सेती चमके भाग..गांधी
होगेन सबो आजाद
मानुस तन म देवता के अवतार रेहे तंय।
बड़ भागी तोर जनम देवैया
पाइस सरवन कुल तारन।
सुरूज बन तयं जग मं चमके।।
किरन बन चमकिस भारत।।
अंधियारी म जोगिनी चिन्हार रेहे तंय।
मानस तन म देवता के अवतार रेहे तंय।।
सादा जीवन बने बिचार
जस कथनी तस करनी तोर।
तंय दरपन अस सांच बात के
सीख आय बैतरनी तोर।।
सांच पेड़ ल बोय अऊ रखबार रेहे तंय।
मानुस तन म देवता के अवतार रेहे तंय।।

- गांधी तुम्हारे त्याग और बलिदान के कारण हमारी किस्मत जागी। हम सब आजाद हो गए, हमारा देश आजाद हो गया। सचमुच तुम मनुष्य के रूप में देवता के अवतार हो।

तुम्हें जन्म देने वाली माता-पिता बड़े भाग्य शाली हैं, जिन्होंने श्रवण कुमार की तरह कुल प्रकाशक पुत्र पाया। सूरज की तरह तुम इस संसार में उदित हुए, जिसकी एक किरण बनकर भारत भी प्रकाशवान हुआ। बापू, घनघोर अंधेरे में जुगनू की तरह तुम पहचान, पथ-प्रदर्शक थे। गांधी! सचमुच तुम मनुष्य के रूप में देवता के अवतार थे।

''सादा जीवन उच्च विचार'' जैसी तुम्हारी कथनी थी वैसी तुम्हारी करनी थी। तुम्हारे वचन और कर्म में तनिक भी भेद नहीं था। तुम सत्य वचनों के दर्पण थे। तुम्हारी शिक्षा नाव के समान है। तुमने सत्य रूपी वृक्ष को लगाया, उसे सींचा और उसकी रखवाली की। गांधी जी! सचमुच तुम मनुष्य के रूप में देवता के अवतार थे।

जय हो गांधी तोर

- पीसीलाल यादव

ताग-ताग ल जोर, भांजे तैहा डोर
जय हो गांधी तोर, जये हो गांधी तोर

गांव गली अऊ खोर, बगराये तै अंजोर
जय हो गांधी तोर, जये हो गांधी तोर।

टोरी बैरी के कानून,
सौंहत बनाये नून।
तोर भारी तप अऊ पुन,
अपन ओगराये खून।।

अहिंसा के मंतर झोर, देस परेम म चिभोर
बगराये तैं अंजोर, जय हो गांधी तोर।

परदेसिहा म फूंके आगी,
पहिराये सब ल खादी
पोगराये हमल थाथी
मिलिस हमला आजादी।।

बांहा में बांहा जोर, सब रेंगिन पाछू तोर
बगराये तै अंजोर, जय हो गांधी तोर।।

भारत माता के पूत,
बन के सैती के दूत।
मेटाय जी छुआछूत

भगाये घिरना के भूत।।
इरखा के गांठ ल छोर, परेम पियाये घारे
बगराये तैं अंजोर, जय हो गांधी तोर।।

सत के खम्भा गाड़े,
तैं चक्र भंवाए पांड़े।

फिरंगी ह कांपे ठाढ़े।
अजादी के जुगती माढ़े।
अरे सांकर बेली टोर, अंधियारी कोठी फोर
बगराये तैं अंजोर, जय हो गांधी तोर।

- तिनके-तिनके को जोड़कर तुमने एक मजबूत रस्से का निर्माण किया। बिखरे हुए लोगों को, संगठित कर देश की आजादी के लिए एक सूत्र में उन्हें बांधा। गांधी तुम्हारी जय हो। गांवों-शहरों,गलियों-सड़कों में तुमने आजादी का प्रकाश फैलाया, देश को स्वतंत्र कराया। गांधी तुम्हारी जय हो, जय हो जय हो।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अंग्रेजों का नमक कानून तोड़कर तुमने स्वयं नमक बनाया। तुम्हारी तपस्या और साधना विशद थी, तुम्हारा पुण्य प्रताप महान था। तुमने राष्ट्र के लिए अपना खून बहाया। अहिंसा का मंत्रोच्चार कर देश वासियों को प्रेम में डुबाया। तुमने-आजादी का प्रकाश फैलाया तुम्हारी जय हो।

विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार कर उनमें आग लगा दी। स्वदेशी आंदोलन चलाकर लोगों को खादी-वस्त्र पहनाया। तुम्हारे मार्गदर्शन में हमने अपनी थाती (धरोहर) आजादी प्राप्त की। बाहों में बाहें जोड़कर लोगों ने तुम्हारा अनुशरण किया। तुमने आजादी का प्रकाश फैलाया तुम्हारी जय हो।

ओ भारत माता के सपूत तुमने शांतिदूत बनकर विश्व को शांति का सन्देशा दिया। छुआछूत को मिटाया, घृणा का भूत भगाया। लोगों को परस्पर प्रेम करना सिखाया। ईर्ष्या- द्वेष की गांठ खोलकर, प्रेम का अमृत पान कराया। आजादी का प्रकाश फैलाया, गांधी तुम्हारी जय हो।

गांधी तुमने सत्य का स्तम्भ स्थापित किया। अपना सुदर्शन चक्र (चरखा) चलाया, जिससे अंग्रेज कांप उठे। देश को आजादी का मंत्र मिला। गुलामी की जंजीरे तोड़कर, अंधेरे कारागृह को नष्ट कर तुमने आजादी का प्रकाश फैलाया। गांधी जी तुम्हारी जय हो।

अवतारे गांधी भगवान

सौजन्य श्रीमती लता साहू

जय हो गांधी जय हो तोर
जग में होवय तोरे सोर। जै गंगान
धन्य-धन्य भारत के भाग
अवतारे गांधी भगवान। जै गंगान
धन्य-धन्य हमरो बड़ भाग
आजादी के दीप जलाय। जै गंगान
अट्ठारा सौ ओन्हत्तर के बात
पोरबंदर में खुसियां छाय। जै गंगान
मोहनदास बचपन के नाम
देस के खातिर करिस बड़ काम। जै गंगान
मोहन स्कूल पढ़े ल जाय
लइका मन ले बड डर्राय। जै गंगान
हरिशचन्द्र राजा के बात

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुने कहानी तैं दिन रात। जै गंगान
सत्य अहिंसा ल अपनाय
छुआछूत के भूत भगाय। जैं गंगान
तेरह वर्ष के उम्मर आय
कस्तूरबा से ब्याह रचाय। जै गंगान
अट्ठारा सौ अट्ठयासी के बात
गांधी पढ़े ल विलायत जाय। जै गंगान
तीन साल इंग्लैण्ड म बिताय
बने बैरिष्टर भारत आय। जै गंगान
गांधी फेर अफ्रिका जाय
काला-गोरा के भेद मिटाय। जै गंगान
अंग्रेज के बाढ़े अत्याचार
कोड़े मारे व दो चार। जै गंगान
देस के नेता जेल में जाय
भगत सिंह ल फांसी लटकाय। जै गंगान
जलिया वाला में बंदूक चलाय
आंखो में अंधेरा छाय। जै गंगान
१५ अगस्त ४७ के बात
अंग्रेज भाग रातों-रात। जै गंगान
उन्नीस सौ अड़तालीस के बात
काली घटा अंधेरा छाय। जै गंगान
सीढ़िया उतरत गांधी आय
पापी नाथू गोडसे ताय। जै गंगान
धड़-धड़ गोली तीन चलाय
रात-राम कहि करे पुकार। जै गंगान
धरती गिरे गांधी भगवान
तजिस प्रान पर लोक सिधाय। जै गंगान
जय हो गांधी जय हो तोर
जय में होवय तोरे सोर। जै गंगान

-जय हो गांधी, तुम्हारी जय हो। सारे विश्व में तुम्हारी प्रसिद्धि हो। भारत भूमि के भाग्य के धन्य है, जहाँ गांधी

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भगवान ने अवतार लिया। हमारा भाग्य भी धन्य है। गांधी जी ने स्वतंत्रता का दीप प्रज्जवलित किया।

बात सन् १८६९ की है। गांधी जी ने जन्म लिया जो पोरबंदर में खुशियां छा गई। उनके बचपन का नाम मोहनदास था। उन्होंने देश के लिए महान कार्य किए। मोहन दास पढ़ने के लिए स्कूल जाने लगे तो स्कूल में बच्चों से वे बहुत डरते थे। माता-पिता का प्यार दुलार पाया। सत्य अहिंसा को उसने अपनाया। मोहनदास बचपन में राजा हरिशचन्द्र की कहानी दिन-रात सुनते। सत्य-अहिंसा के रास्ते पर चलकर उन्होंने छुआछूत का भूत भगाया। छोट-बड़े ऊँचे नीचे का भेदभाव मिटाया। जब उनकी तेरह वर्ष की आयु हुई तो कस्तूरबा के साथ उनका विवाह हुआ।

सन् १८८८ में गांधी जी पढ़ने के लिए विलायत गए। वहां इंग्लैण्ड में तीन साल में पढ़ाई पूरी कर गांधी बैरिस्टर बनकर भारत लौटे। फिर वे आफ्रीका गए, वहां उन्होंने काले-गोरे का भेद मिटाया।

भारत में अंग्रेजों का अत्याचार बढ़ गया था। वे भारतीयों को कोड़ों से मारते थे। देश के नेताओं को उन्होंने जेलों में डाल दिया। भगत सिंह को फांसी पर लटका दी। जालियां वाला बाग में निहत्थे लोगों को गोलियों से भून डाला। आंखों के सामने अंधेरा छा गया।

१५ अगस्त सन् १९४७ को अंग्रेज रातों रात इस देश को छोड़कर भागे। देश स्वतंत्र हो गया। पर १९४८ में फिर काली, अंधेरी घटा छा गई। जब गांधी सीढ़ी से उतर रहे थे, तब पापी नाथूराम गोडसे ने उन पर धड़-धड़-धड़ तीन गोलियां चलाईं। हे राम! कहते हुए गांधी भगवान धरती पर गिर पड़े। उनके प्राण पखेरू उड़ गए और स्वर्गलोक सिधार गये। जय हो गांधी, तुम्हारी जय हो। सारे विश्व में तुम्हारी प्रसिद्धि हो।

फाग गीत

अरे हाँ गांधी
झंडा गड़ा दिये भारत में
गड़वईया जवाहर लाल
अरे हाँ
गड़वईया जवाहर लाल
गांधी झंडा गड़ा दिये भारत में।
गड़वईया, गड़वईया
गड़वईया जवाहर लाल
गड़वईया जवाहर लाल
गांधी झंडा गड़ा दिये भारत में।

- गांधी जी ने देश को आजादी दिलाई। आजादी का खम्भा गाड़ कर तिरंगे झंडे को फहराया। आजादी का खम्भा

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गाड़कर तिरंगा फहराने वाले हैं पंडित जवाहर लाल नेहरू। अर्थात् गांधी जी के पुण्य प्रताप व संघर्ष से जवाहर लाल नेहरू ने लाल किले पर झंडा फहराया।

जै बोलो महात्मा गांधी के

- सौजन्य- पं. रमाकांत शर्मा

कपड़ा पहिरो खादी के
जै बोलो महात्मा गांधी के।
दिन भर काम करेन
छै आना पायेन।
छै आना के चाँऊर बिसा
माई-पिला खायेन।।
लालच मत करो चांदी के
जै बोलो महात्मा गांधी के।।

- खादी के कपड़े पहनो और महात्मागांधी की जय बोलो।

दिन भर हमने मेहनत की, काम किया। तब छै आना मजदूरी मिली। उस छै आने का चावल खरीदा और उसे पूरे परिवार के लोग मिलकर खाये। चांदी की लालच मत करो और महात्मा गांधी की जय बोलो।

देवता गांधी

- स्व. द्वारिका प्रसाद तिवारी ''विप्र''

देवता बनके आये गांधी, देवता बनके आये
अड़बड़ अटपट काम करे, तै घर-घर अलख जगाये।। गांधी
रामकृष्ण औतार ल जानने रावण- कंस ल मारिन।
एही देस ला राक्षस मन सो लड़-लड़ दूनो उबारिन।।
चक्र सुदर्शन धनुष बान ला रहिन दूनों झन धारे।
तैं हर सोज्झे मुह मां कहिके अंग्रेजन ल हारे।।
सटका धर के पटकू पहिरे- चर्चिल ला चमकाये।। गांधी
हमर देस के अन ला धन ला जन ला जम्मो लूटिन।
परदेसियन के लड़वाये ले भाई से भाई छूटिन।।
देस ला करके निचट निहत्था उल्टा मारिन सेखी।
बोहे गुलामी करत देहेन हम उंखरे देखा देखी।।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तै आँखी ल हमर उघारे, जम्मो पोल बताये।। गांधी

पंचम जार्ज तोर दरसन बर तोला बिलायत बलाइस।
छेरी-बोकरी तोर संग माँ गोलमेज हो आइस।।
राजा के आगू मां तै फेर बैठे देस के दसा बताये।
अपन जादू के डंडा फेरे ओहुला अपन बनाये।।

पटुका पहिरे घलो राजा सो, हाथ म हाथ मिलाये।। गांधी

तोर करनी ला कतेक बताबो सक्ती नई है भारी।
देस-विदेश गांव-गांव मां तोरेच चरचा जारी।।
मैं उपास कर करके मौनी बनके करे तपस्या,
अंग्रेजी औगुन ल मेटे टोरे जम्मो समस्या।

साठ बछर ले धरे अहिंसा पथरा ल पिघलाये।। गांधी

पोठ रिहिस परिवार तोर बालिस्टर घलो रहे तैं।
देस के खातिर धन-जन छोड़े बिपत म बिपत सहे तैं।
जहल घलो म डारिन तोला आँकड़े उहों रहे तैं।
लेके छोड़िहौं मैं सुराज अतके उहों कहे तैं।।

जै-जैकार होय तोर गांधी कल जुग ल कलपाये।। गांधी

तौ पन्द्रा अगस्त सैंतालिस मां सुराज ला पाये।
देत-देत म ओहू ला बाँटिन तभोले तैं रजियाये।
कोनो किसिम ले लाली मुंह के बेंदरा ल भगवाये।।
जम्मो जात रिहिस तेखर ल तैं हर बहुत बचाये।
एती बनाबो जैसन बनही तैं तो अमर कहाये।।
गांधी देवता बनके आये।

- छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य का अध्ययन : दयाशंकर शुक्ल से साभार.

- गांधी तुम देवता बनकर आए। तुमने अद्‌भुत और विचित्र कार्य किया। घर-घर में आजादी का अलख जगाया। हम राम और कृष्ण के अवतार को जानते हैं। उन्होंने रावण और कंस जैसे अत्याचारियों का नाश कर, इस देश को राक्षसों से बचाया। राम और कृष्ण ने चक्र सुदर्शन और धनुष बाण से उनका संहार किया। किन्तु तुमने सीधे मुंह, बातों ही बातों में अंग्रेजों को परास्त कर दिया। धोती पहन कर लाठी टेक कर तुमने चर्चित का चमकाया, उसे डराया।

अंग्रेजों ने हमारे देश के अन्न-धन के साथ-साथ लोंगों को भी लूटा। उन्होंने आपस में फूट करवाकर भाई-भाई

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

को लड़वाया। भाई से भाई कतराने लगा। अंग्रेजों के बहकावे में आकर हम गुलामी को ढोते हुए अंग्रेजों की देखा-देखी, नकल कर रहे थे। तुमने हमारी आंखें खोली। सत्य से हमें परिचित कराया और अंग्रेजों के भेद को उजागर किया।

जार्ज पंचम ने तुम्हारे दर्शन को लिए तुम्हें विलायत बुलवाया। तुम्हारे साथ बकरी भी गोल मेज हो आई। राजा के सामने बैठकर तुमने उसे देश की स्थिति बताई। अपने जादू के डंडे (सत्य अहिंसा) के बल पर उसे प्रभावित किया और अपना बनाया। धोती पहन कर भी तुमने राजा के हाथ मिलाया।

तुम्हारे कार्यों का मैं कितना बखान करूं। मेरे पास उतनी भारी शक्ति नहीं है। देश- विदेश में, गांव-गांव में तुम्हारी चर्चा जारी है। तुमने उपवास व मौन व्रत धारण कर तपस्या की और इस तपस्या के बल पर पश्चिमी अवगुणों को मिटाकर हमारी समस्याओं का समाधान किया। साठ वर्षों तक तुमने 'अहिंसा' के प्रभाव से पत्थर (कठोर हृदय) को भी पिघला दिया।

तुम सम्पन्न थे, तुम्हारा परिवार धन-धान्य से परिपूर्ण था। तुम बैरिस्टर भी थे किन्तु, देश कि खातिर तुमने संपत्ति व परिवार को छोड़कर अनेक कष्टों को सहा, संघर्ष किया। तुम्हें अंग्रेजों ने जेल में डाला पर वहां भी तुम अडिग रहे और कहा कि- मैं स्वतंत्रता लेकर रहूंगा। तुम्हारी जय-जय कार हो गांधी। इस कलयुग को तुमने द्रवित कर दिया।

जब पन्द्रह अगस्त सन उन्नीस सौ सैंतालिस को हमें स्वतंत्रता मिली। अंग्रेजों ने आजादी देते-देते देश का विभाजन कर दिया फिर भी तुम तैयार हो गए। किसी भी प्रकार से लाल मुंह के बंदरों (अंग्रेजों) को देश से भगाया। सारा देश परतंत्र था। सब कुछ खो गया था इससे तो अच्छा है जो तुमने बहुत कुछ बचा लिया। अब इधर जैसा होगा हम नया भारत गढ़ेंगे। गांधी तुम अमर हो गए। गांधी तुम देवता बनकर आये।

गांधी

- लखन लाल गुप्त

धन हे भाग हमर देस के, गांधी तोला हम पाएन।
तोर बन्दना करे खातिर, हम सब ये मेर जुरियाएन।।
तंय कतका भारी देस रचइता आजादी के हस दाता।
अफ्रिका म धूम मचाये, दुनिया भर में तोर नाता।।
तंय हमर हवस अभिमान, तेखरे सेती तोर गुन गाएन।
धन्य भाग हे हमर देस के, गांधी तोला हम पाएन।।
भारत ल अजाद करे बर, अब्बड़ दुख तंय पाए।
तभी ले नई थिरकाए ओला, मन म नई घबराए।।
सत्य अहिंसा अऊ सेवा के जम्मो ल पाठ पढाए।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भारत माँ के कइसे सेवक, रइथे तेला बताए।।
माटी के कन-कन मा तोला अऊ आत्मा में पाएन।
धन्य भाग हे हमर देस, के गांधी तोला हम पाएन।।
जब तक चंदा-सुरूज रइही, रहिबे तब तक गांधी।
दुनिया तोला नई बिसरावय, कोटि-कोटि के गांधी।।
भारत देस के तयं सिरतो, राष्ट्रपिता हस गांधी।
तोर किरत ह जगमग रइही गंगा कस हे गांधी।।
हिन्दू मुस्लिम-सिक्ख-ईसाई, जोरे तेला पतियाएन।
धन्न भाग हे हमर देस के, गांधी तोला हम पायेन।।

- गांधीजी यह हमारे देश का सौभाग्य है जो हमने तुम्हें पाया। हम यहाँ तुम्हारी वंदना, तुम्हारी अभ्यर्थना के लिए एकत्रित हुए हैं। तुम कितने महान हो। तुम देश का नव निर्माण करने वाले स्वतंत्रता के जन्म दाता हो। तुमने अफ्रीका में रंगभेद का विरोध कर धूम मचायी। सम्पूर्ण विश्व से तुम्हारा आत्मीय संबंध रहा। तुम हमारे गौरव और स्वाभिमान हो, इसलिए हम तुम्हारी गौरव-गाथा गाते हैं। गांधीजी हमारे देश का भाग्य धन्य है, जो हमने तुम्हें पाया।

भारत को स्वतंत्र कराने के लिए तुमने अनेकों कष्ट सहे। फिर भी तुमने आजादी के लिए संघर्ष को रोका नहीं। तुम किंचित भी विचलित नहीं हुए। सबको सत्य-अहिंसा और सेवा का पाठ पढ़ाया। भारत के सपूत सेवा के पथ पर किस तरह चलते हैं, इसे तुमने बता दिया। हमने तुम्हें मिट्टी के कण-कण में और अपनी आत्मा में पाया। गांधीजी यह हमारे देश का सौभाग्य है, जो हमने तुम्हें पाया।

जब तक सूर्य और चन्द्रमा रहेंगे तब तक तुम जीवित रहोगे। तुम करोड़ों लोगों के गांधी हो, विश्व तुम्हें कभी विस्मृत नहीं करेगा। सचमुच तुम भारत देश के राष्ट्रपिता हो। गंगा की तरह पवित्र तुम्हारी यश-कीर्ति सदैव जगमगाती रहेगी। हिन्दू-मुस्लिम-सिख-ईसाई सबको तुमने एकता के सूत्र में पिरोया। एकता पर हमने विश्वास किया। गांधीजी यह हमारे देश का सौभाग्य है कि हमने तुम्हें पाया।

गांधी बबा के सुराज के दिन

- बी.डी.एल. श्रीवास्तव

गांधी बबा के सुराज के दिन
आज आगे हे रे।
भइया पन्दरा अगस्त के तिहार
आज आगे हे रे।।टेक।।

भादो के कजरारे बादर संग,
छागे धरती म नवा उमंग।
नंदिया-नरवा बोले हमर संग
अऊहा-इऊहा बन्दे मातरम्।।
आज आगे हे रे।।१।।
मन हा छितरागे मोंगरा असन
पाके भुइयां के सुन्दर रतन
महमहाये हमर इमान
पुरवईयापवन के संग।
आज आगे हे रे।।२।।
पंचरंगा लगे अब ये देस
नई हे कोनो डहर अइसन भेस।
गाही सरग ले इहील देख
पावन तोरे ओदर ले जनम।।
आज आगे हे रे।।३।।

- महात्मा गांधी द्वारा दिया हुआ स्वतंत्रता दिवस आज आ गया। भाइयों आज पन्द्रह अगस्त आजादी का त्यौहार है।

भादो के काले कजरारे बादलों के साथ धरती पर नई उमंगे छा गई। नदी-नाले हमारे साथ-साथ मिलकर निरंतर 'वंदे मातरम्' का राग आलाप रहे हैं। आजादी रूप रत्न को पाकर हमारा मन मोगरे की तरह प्रफुल्लित है। पवन के साथ हमारा ईमान भी महक रहा है।

अब सारा भारत देश-बिरंगी इन्द्र धनुषीय छटाओं से परिपूर्ण है। कहीं भी कोई कमी नहीं। देवतागण स्वर्ग से इसकी सुंदरता व शोभा देखकर इस देश की कीर्ति गाते हैं और कहते हैं कि-''भारत मां की पवित्र कोख से हम भी जन्म लें।'' महात्मा गांधी द्वारा दिया हुआ स्वतंत्रता दिवस आ गया। आओ आज आजादी का त्यौहार है।

गांधी-गौरा

- स्व. कुंज बिहारी लाल चौबे

उये हे आकाश में पुन्नी के चंदा! हां पुन्नी के चन्दा!
अवतरे धरती में हवे गांधी देवता।
सत के खातिर ओ दाई, घर-बार छाड़िके
हां घर-बार छाड़िके

गरीब औ गुरूबा के करत हवे सेवा।
डैकी-लैका ला घलो तज देहे कइथे,
ओ तज देहे कहिथे,
हमरे खातिर ओ दाई बन गेहे साधु!
जब ले अंग्रेज मन के राज होईस हे,
हां राज होईस हे,
तैहा के दिन अब कहां पाबे दाई।
घर्र-घर्र कातत रहिन हवे चरखा,
कातत रहिन चरखा।
घर्र-घर्र पेरत रहिन हवे पोनी।
वोही दिन खातिर लड़त हवे कइथे,
लड़त हवे कइथे।
अंग्रेज के संग गांधी महात्मा।
अंग्रेज डहर हवे फौज औ फटाका,
हां फौज और फटाका,
गोला अऊ बारूद कहां पाबे दाई।
गांधी ल हे एक सत के भारोसा।
हां सत के भरोसा
सत के ओखर हे परन बड़ भारी।
एक दिन जी तिहैं, ओ गांधी महात्मा
हां ओ गांधी महात्मा।
उड़ही सबो जगहा झंडा सुराजी।
जुग जुग जीयत रहे गांधी महाराज,
हो गांधी महाराज,
मुलुक-मुलुक में ओखर जस बाढ़े।

- सौजन्य-वीरेन्द्र बहादुर सिंह

- देखो आकाश में पूर्णिमा का चन्द्रमा उदित हुआ है और धरती पर गांधी जी देवता के रूप में अवतरित हुए हैं।

सत्य की रक्षा के लिए वे अपना घर-परिवार को छोड़कर शोषित-पीड़ित और गरीबों की सेवा कर रहे हैं। कहते हैं कि उन्होंने अपनी पत्नी व बच्चों को भी भुला दिया है। माताओं! सुनो जब से यहां अंग्रेजों का राज्य हुआ तब से हमारी

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

व हमारे देश की भलाई के लिए वे साधु बन गए हैं, सन्यासी की तरह जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

कल की बात अब कहां? अब तो घर-घर में गांधी की प्रेरणा से घर्र-घर्र की आवाज के साथ चरखे रहे हैं। घर्र-घर्र पोनी (कपास) कात रहें हैं। उसी दिन (आजादी) के लिए गांधी अंग्रेजों से लड़ रहे हैं। अंग्रेजों की ओर फौज-फटाके, गोली - बारूद हैं, पर गांधी के पास कुछ नहीं। गांधी को तो केवल 'सत्याग्रह' पर विश्वास है। सत्याग्रह का उनका प्रण बड़ा भारी है। एक दिन महात्मा गांधी अवश्य जीतेंगे। चारों ओर एक दिन तिरंगा झंडा अवश्य लहरायेगा। हमें आजादी अवश्य मिलेगी। युगों-युगों तक गांधी जीवित रहें। देश-देश में उनका यश हो।

मोर गांधी बबा

(जंवारा-तर्ज)

मोर गांधी बबा दसे ल सुराज कराये।
सत-अहिंसा के बल म अंग्रेज मन ल भगाये।।टेक।।

घर छोड़े परिवार छोड़े आजादी के रन म कूदे।
भूख-दुख विपत झेल देस बर सौहे जूझे।।

करो-मरो के नारा देके घर-घर अलख जगाये।
मोर गांधी बबा.......(१)

हमरे चीज म बैरी फिरंगी आके इहां गरजे।
बिदेसी जी निस झन बऊरो कहि के तैहा बरजे।।

खादी पहिराये सबला चरखा ल चलाये
मोर गांधी बबा.......(२)

तोला देख अंग्रेज मन के खुसी डगमग डोले।
सुराज ले के रहिबो कहिके छाती अड़ा के बोले।।

बंदूक गोली बारूद ल तै चिटको नई डर्राये।
मोर गांधी बबा........(३)

सत के रद्दा ल बबा तै जियत भर नई तियागे।
तोर सत-सैंती देख अंग्रेज कपटी मन भागे।।

१५ अगस्त सन सैंतालिस म तिरंगा लहराये।
मोर गांधी बबा.....(४)

धन-धन तोर काम गांधी धन-धन तोर नाँव।
सौहें धाम-भोंभरा ताप जब ल दे सैंती के छाँव।।

हिन्दू-मुस्लिम सबला तैं परेम के बाट देखाये
मोर गांधी बबा.......(५)

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

- महात्मा गांधी ने देश को स्वतंत्र कराया। केवल सत्य और अहिंसा की ताकत से अंग्रेजों को यहाँ से भगाया।

गांधी जी अपना घर-परिवार का परित्याग कर आजादी की लड़ाई में कूद पड़े। भूखे-प्यासे रहे देश के लिए स्वयं यातनाएं झेली। 'करो या मरो' का नारा देकर उन्होंने घर-घर आजादी की ज्योति जगाई।

हमारे ही देश की कच्ची वस्तुओं पर व्यापार करने वाले अंग्रेजों ने हम पर अपना अधिकार जमा लिया। वे हम पर अत्याचार करते थे। अपने देश की बनी वस्तुओं को यहां बेचते थे। गांधी जी ने देशवासियों को ऐसी विदेशी वस्तुओं का उपयोग करने से मना कर विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया और चरखा सबको खादी वस्त्र पहनाया।

गांधी जी के इन कार्यों से, गांधी जी को देख अंग्रेजों की कुर्सी हिलने लगी। 'हम स्वराज्य लेकर रहेंगे' ऐसा कहकर गांधी ने अंग्रेजों के हथियारों, बंदूकों के आगे अपनी छाती तान दी। बंदूक, गोली और बारूद से गांधी ने तनिक भी भय नहीं माना।

गांधी जी तुमने जीवन भर सत्य-पथ को नहीं छोड़ा। तुम्हारे सत्याग्रह और शांति के आगे कपटी अंग्रेज इस देश को छोड़कर भाग गए। पन्द्रह अगस्त सन् उन्नीस सौ सैंतालिस को हमारा देश आजाद हुआ और तिरंगा झंडा लहराने लगा।

धन्य है गांधी तुम्हारे कार्यों को और धन्य है, तुम्हारे नाम को, जो तुमने स्वयं चिलचिलाती धूप में चलकर इस विश्व को शांति की शीतल छाँव दी।

देस में सुराज भये

(नचौड़ी-तर्ज)

देखो लाठी-लंगोटी के कमाल
देस में सुराज भये।
उड़े चारों खुंट गुलाल
देस म सुराज भये।।टेक।।

गांधी देवता मोर सत के पुजेरी।
चरखा चलावे अऊ पोंसे छेरी।।

बइरी के करे बारा हाल
देस म सुराज भये।।१।।

पातर-दुबर तन बजूर कस छाती।
अंधियारी रात म बरे बनिके बाती।।

धरे सत- अहिंसा के ढाल
देस म सुराज भये।।२।।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सत के रद्दा मोर सैती के बाना।
धरे तिरंगा गावे सुराजी-गाना।।
गांव-गांव सुराजी सुकाल
देस म सुराज भये।।३।।
पापी अंगरेज मन संग जोम दे के।
लड़े लड़ाई जी जिनगी ल होम के।।
चमके भारत मांके कपाल
देस म सुराज भये।।४।।

- देखो गांधी जी की लाठी और लंगोटी का कमाल। देश स्वतंत्र हो गया।

गांधी जी हमारे देवता हैं, वे सत्य के पुजारी हैं। उन्होंने चरखा चलाया और बकरी पाली। शत्रु (अंग्रेज)की उसने हालत पस्त कर दी और देश स्वतंत्र हो गया। उनका शरीर दुबला-पतला है किन्तु छाती बज्र की भांति कठोर है। अंधेरी रातें में वे ज्योति बनकर जले। सत्य और अहिंसा स्वतंत्रता आन्दोलन में उनके ढाल थे। सत्य-अहिंसा की ताकत से देश स्वतंत्र हो गया।

शांति का अस्त्र लेकर सत्य के पथ पर चलकर उन्होंने सत्याग्रह आन्दोलन चलाया। हाथ में तिरंगा झंडा लेकर स्वतंत्रता के गीत गाए। इससे गांव-गांव में स्वतंत्रता सेनानी बन गए और देश स्वतंत्र हो गया।

पापी, अत्याचारी अंग्रेजों के साथ उनहोंने बड़ी हिम्मत के साथ लोहा लिया। अपना सम्पूर्ण जीवन देश के लिए होम कर आजादी की लड़ाई लड़ी। भारत माता के माथे पर स्वतंत्रता का मुकुट चमकने लगा और देश स्वतंत्र हो गया।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बुन्देली गीतों में गांधी

माधव शुक्ल मनोज

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

स्वकथन

मैने किशोर अवस्था में गीत-कवितायें लिखना प्रारंभ की थी। सन् १९४२ में मैंने गांधीजी के भूमिगत सत्याग्रह-आंदोलन में भाग लिया। बस यही हुआ कि मैं बन्दी नहीं बनाया गया। उसी समय मैंने लोकबद्ध शैली में बुन्देली गीत लिखे। जिन्हें मैंने उस समय के कवि सम्मेलनों के मंचों पर कई बार गाया। एक शिक्षक होकर उन्हें गाँवों की शालाओं एवं चौपालों में भी गुंजाया।

ग्रामीण लोगों की रामायण- मंडलियों-सौबतों में बैठकर राम कथा-भजन कीर्तन के साथ इन गीतों को स्वरबद्ध सुनाते हुए -मैं गांधी जी के सिद्धांतों, उनकी जनसेवी भावनाओं एवं देशभक्ति को बुन्देलखण्ड के गांवों में उजागर करता रहा हूँ।

मेरे द्वारा लोक शैली बद्ध रचित बुन्देली गीतों के अलावा लोक कवि फकीरे और सेवकदास के पांच गीत संकलित हैं।

- माधव शुक्ल मनोज

गांधी जू के जे बंदरा।

गांधी जू के जे बंदरा।
आंख-कान मूदें दो देखो
एक रखें मो पे अंगुरी।

सतपथ की जे बातें भैया-
इन्हें नें तुम मारो पथरा।
गांधी जू के जे बंदरा।

अच्छो देखो-सुनो भी अच्छो
कड़वी बानी -बोलें नें।

शीतल शान्त करो मन सबकौं
रखो ने कोऊ पे अंगरा।
गांधी जू के जे बंदरा।।

सत्य-अहिंसा समता के जो
तीन-तिरंगा बैठे हैं।

समझो इन्हें और समझाओं-
बनों नें मैं-मैं के बुकरा।
गांधी जू के जे बंदरा।।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

- गांधी के उद्देश्यों के प्रतीकात्मक तीन बन्दर हैं एक आंख मूंदे। दूसरा कानों में अंगुली डाले।। तीसरा-मुंह पर अंगुली रखे।।। तीनों बन्दर सतपथ की शिक्षा देते हैं इन्हें तुम पत्थर मत मारो उनसे शिक्षा ग्रहण करो। पहला बन्दर जाहिर करता है- अच्छा देखों! दूसरा बताता है -अच्छा सुनो!! तीसरा कहता है- कड़वा मत बोलो!!! सभी को शांति-खुशी दो! किसी का दिल मत जलाओ!! किसी को दुखी मत करो!!! सत्य-अहिंसा-समता के तीनों रंग बन्दरों में समाहित हैं उनको समझो! दूसरों को समझाओ!! अपने कोरे अहं के बकरा मत बनो!!!

२

आजादी के तिलक सहोदर।

आजादी के तिलक-सहोदर
जब आये गांधी बब्बा।
आंधी जैसे चले हवा में
लांघे पैदल पथ लम्बा।
जब आये गांधी बब्बा।।
दुबरे-पतरे लगे ठठेरे
सेर के ऊपर हो सब्बा
जब आये गांधी बब्बा।।
निरमल मन समता की मूरत
राम-रहीम लगे रब्बा।
जब आये गांधी बब्बा।।
जिनकी सत्य-अहिंसा चादर
नहीं-नहीं कोई धब्बा
जब आये गांधी बब्बा।।
राष्ट्रपिता-बापू-महात्मा
देश के जो हो गये अब्बा।
जब आये गांधी बब्बा।।
लाल गुलेंदे-गोरे बांके
गए बजाऊत खाली डब्बा
जब आये गांधी बब्बा।।

- आजादी को सुशोभित करने वाले श्रेष्ठ सहयोगी गांधीजी नंगे पांव लम्बी पैदल यात्रा कर लेते वे हर मौसम में आंधी की तरह तेज चलते सूखे ठठेरे के समान दुबले-पतले दिखते उनमें अधिक स्फूर्ति- जोश था यदि ब्रिटिश सरकार

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सेर थी तो वे उस पर - भारी सवा सेर की तरह थे। गांधीजी सभी को एक समान देखते उनका मन निष्कपट -पवित्र था जनमानस को वे राम-रहीम-भगवान की तरह थे सत्य-अहिंसा उनके मनो-भावनाओं की साफ-स्वच्छ चादर की तरह थी जिस पर कहीं कोई एक भी धब्बा (मैल) नहीं था। गांधीजी, बापू, राष्ट्रपिता कहलाते किन्तु वे तो देश को गौरव प्रदान करने वाले व्यक्तित्व हो गये गोरे रंग के सुन्दर अंग्रेज जो गुलेंदे की तरह लाल रंग के थे वे गांधी के भय से देश छोड़ कर अपना साज-समान लेकर भाग गये।

३

हाड़-मांस कौं बनो आदमी।

हाड़-मांस कौं बनो आदमी
लगे देवता-बलिदानी।
हम जानी कैं -तुम जानी।।

पोरबंदर में जनम लियो तो
सुख-सविधा में पले -बड़े।
करम-धरम- घर गिरहस्ती लेकें
नेम नियम से रहे जुड़े।
गीता-रामायण खों ले कैं-
पढ़ो-लिखो हो गये ज्ञानी।
हम जानी कैं-तुम जानी।।

देखी भारत मैया उनने
अंखियन अंसुआ ढरकाऊत।
जातपांत में धंसी गरीबी
भूखी-नंगी शरमाऊत।
जकड़े सभी गुलामी में हैं-
पीवें तक नइयां-पानी।
हम जानी कैं तुम जानी।।

गओ तिलमिला गांधी कौ मन
रहन लगे वे कुटिया में
छोड़े वसन, सुखों की घड़ियां
ठाड़ें एक लंगुटिया-में।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सत्य अहिंसा को व्रत ठानौ
सब कछु देवे कुरबानी
हम जानी कैं-तुम जानी।।

- पंच तत्वों से बना हाड़-मांस का मनुष्य देश पर निछावर होने वाला देवता के समान लगने लगा जिसे हम-तुम सभी ने महसूस किया जिसने समुद्र के किनारे पोरबंदर नगर में जन्म लिया सुख-साधनों में पल कर बड़ा हुआ। गृहस्थ जीवन अपनाया। कर्म-धर्म का पालन किया। गीता-रामायण जैसे अन्य ग्रन्थों को पढ़कर ज्ञानी हुआ। जिसने अपनी भारत माता को रोते बिलखते जाति-पांति के भेदभावों में फंसी शरमाती भूखी नंगी गरीबी को देखा जो गुलामी परवशता में जकड़ी उसे साफ स्वच्छ पानी भी पीने को नहीं है। ऐसा देख गांधी का मन दुखी हुआ वे गरीबों की तरह झोपड़ी में रहने लगे उन्होंने सभी सुखों को छोड़ वस्त्रों को पहिनना छोड़ दिया तन पर सिर्फ एक लंगोटी लपेट ली सत्य अहिंसा का व्रत लेकर देश के लिये अपना सब कुछ निछावर कर देने की ठान ली।

४

दर्शन खों चलो चलिये-

दर्शन खों चलो चलिये।
अरे, गांधी बब्बा आये।
हिन्दू मुसलिम-सिख ईसाई सब खों कंठ लगाये।
मिलजुर कें इक मानवता की धरम धुजा फहराये।
बड़े-बड़े राजा-महाराजा गांधी टोपी लगाये।
घर-घर चरखा चलन लगे खादी गांधी ले आये।
दर्शन खों चलिये-
अरे- गांधी बब्बा आये।
चालीस दिनों कौ लेकैं अनशन जलबिन अन्न न खाये
मौलाना अुर वीर जवाहर गोविन्ददास कहाये।
नगर, गाँव, तहसील जिलों में जा जा कें सब छाये।
गाड़न झेला चढोत्तरी-लाखन भीड़ लगाये।
दर्शन खो चलिये-
अरे, गांधी बब्बा आये।
राजपाट धन कुटुम छोड़ दये ऐसो दुख्य उठाये।
गांव गलिन में कीरत गूंजे सब नर मुक्ति पाये।
सब दासों के दास 'फकीरे' -आंखन देखी गाये।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सत्य अहिंसा लेकैं गांधी सतवादी वीर कहाये।
दर्शन खों चलो चलिये-
अरें, गांधी बब्बा आये।

- खबर सुनते ही कि गांधी बाबा आ रहे हैं, जनता उनके दर्शन के लिए उमड़ पड़ी। हर व्यक्ति एक दूसरे से कहने लगा-गांधीजी आ गये हैं। हम सब उनके दर्शन को चलें।

जिन्होंने हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, सभी जाति के लोगों को हृदय से लगाया है। हम सभी गांधी बाबा के महान आदर्शों को ध्यान में रखते हुए सभी एक होकर मानव धर्म का झंडा फहराये।

बड़े-बड़े महाराजा गांधीजी से प्रभावित होकर गांधी टोपी लगाने लगे हैं। गांधीजी सूत की खादी का महत्व लेकर आये हैं। जिससे घर-घर चरखा चलने लगे हैं। जिन्होंने देश की गरीब जनता की उन्नति सुख-शांति के खातिर-जल और अन्न को छोड़कर चालीस दिन का अनशन व्रत किया है। जिनके साथ मौलाना अब्दुल कलाम, पंडित जवाहर लाल नेहरू, गोविन्द दास , जैसे वीर रहे हैं, जो नगरों -गाँवों, तहसीलों, जिलों में जा जा कर जनता को प्रभावित करते रहे हैं। जिनके दर्शन के लिये देश भक्त जनता अपने अपने वाहनों बैलगाड़ियों द्वारा चढ़ोत्तरी (भेंट) ले लेकर लाखों की संख्या में एकत्रित हुए।

जिन गांधी बाबा ने अपने प्यारे देश के खातिर आजादी के लिये अपना घर द्वार दौलत कुटुम्ब परिवार ऊँचा राज पद छोड़कर दुख और कष्ट सहे हैं, गुलामी से छुटकारा पाने और आजादी लाने के लिये उनकी कीर्ति, यश, बढ़ाई गाँव-गाँव गली-गली में गूंजने लगी। एक फकीरे नाम का व्यक्ति (इस गीत का रचियता) जो बेड़ियों में जकड़ा था, उसने अपने इस गीत में आंखों देखा वर्णन किया है। इस तरह गांधीजी सत्य अहिंसा को लेकर सतवादी वीर कहलाये।

५

वीर शहीदों की गाथायें

वीर शहीदों की गाथायें
बेर-बेर दुहराने रे।
सब खों खूब सुनाने रें।।
गांधी एक महात्मा उपजे
कुलजुग में अवतारी रे
जिनकी तिरिया पति बिरता भई
कस्तूरी जग जाने रे।
वीर शहीदों की गाथायें-
सब खों खूब सुनाने रें।

चरखा संग रमाई धूनी
दोई मानस उपकारी रे
सांची बात धरम की जानी
लएँ अहिंसा ढाने रे
वीर शहीदों की गाथायें-
सब खों खूब सुनाने रें।
अंगरेजन से जबर जोर भई
हार उनन नें मानी रे
मरद-लुगाई लड़े-भिड़े सो
सत्याग्रह खों जाने रें।
वीर शहीदों की गाथायें-
सब खों खूब सुनाने रें।

- हमें वीर शहीदों की कहानियाँ बार-बार सभी को सुनाना है इस कलियुग में गांधीजी अवतारी महात्मा पुरूष होकर सभी के सामने प्रगट हुए उनकी पतिव्रता स्त्री कस्तूरबा को संसार जानता है। मनुष्य की भलाई के लिये दोनों ने चरखा चला कर अहिंसा का व्रत लेकर सच्चे उपकारी धर्म को अपनाया। अंग्रेज सरकार द्वारा कई प्रकार की यातनाएँ पहुँचाने पर भी उन्होंने हार नहीं मानी दोनों पति-पत्नि सत्याग्रह के माध्यम से लड़ाई लड़ते रहे।

६

एक चुवन्नी चाँदी की।

एक चवन्नी चांदी की-
जय बोलो-महात्मा गांधी की।
देश गुलामी में जकड़ों है।
तानाशाही ने पकड़ों है।
जिनने सच्ची डगर दिखाई-
चलते खों आजादी की।
एक चुवन्नी चांदी की-
जय बोलो महात्मा गांधी की।।
अध नंगो हथियार बिना जो।
फौज और सरकार बिना जो।

लड़ो विदेशी गोरों सें जो।
चमक उठी तलवार सरीखी-
सत्य अहिंसा गांधी की।

एक चुवन्नी चांदी की-
जय बोलो महात्मा गांधी की।।

हिन्दू, मुसलिम, सिख, ईसाई।
आपस में सब भाई-भाई।

पग पग पर चल-चल कर जिसने-
संझा-सुबह मुनादी की।

एक चुवन्नी चांदी की-
जय बोलों महात्मा गांधी की।।

- जिस प्रकार चांदी की चवन्नी दमकती है उसी प्रकार गांधी की कीर्ति पग-पग पर मार्गदर्शक के रूप में चमकती है। हे, भाई गांधीजी की जय बोलो? देश को तानाशाही सरकार ने पकड़ कर गुलाम बना लिया है ऐसी स्थिति में गांधी ने आजादी हासिल करने के लिये सही रास्ता दिखाया है। बिना शस्त्र के अधनंगे गांधी के पास फौज और सरकार नहीं है फिर भी वह विदेशी अंग्रेजों से लड़ा उसकी भावनाओं में बैठी सत्य-अहिंसा। तलवार की तरह चमक उठी। गांधी ने हमेशा सुबह-सांझ पग-पग पर चलते हुए जोर से आवाज लगाते हुए कहा न मेरे देश के हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई सभी भाई-भाई हैं हम सब एक हैं।

७

गांधी जू महाराज तुमाई जय हो।

गांधी जू महाराज तुमाई जय हो।
गांधी जू महाराज जरी फैशन अंगरेजी।
सबरे नेता खड़े करें गेरऊं से ऐजी।
गांधी टोपी चल गई देखों चारहुँ देश।
आज तलक लौ पुज रओ देखो गांधी जैसो वेष।
तुमसें मिलो सुराज तुमारी जय हो।।
गांधी जू महाराज तुमाई जय हो।
जैसो गांधी वेष पजे हैं जैसे नाहर।
पंडित मोतीलाल और सुतवीर जवाहर।
जिनके घर लक्ष्मी खड़ी माया कौन हिं पार।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जो अब जेलों में डरे छोड़े घर अुर दुआर।
शेर सरीखे गरजत हैं निरभय हो।।
गांधी जू महाराज तुमाई जय हो।।
जिनको चारहुँ देश-विदेश गूँजत है डंका।
छोड़े घर अुर दुआर मानते नहि कुछ शंका।
जय गांधी महाराज तुमाई जय हो।।
कहें फकीरे लाल-
लएँ सुरताल तुमाई जय हो।
गांधी जू महाराज तुमाई जय हो।।

- हे गांधी जी? तुम्हारी जय हो तुम्हारे ही सामने अंग्रेजी फैशन का सामान-वस्त्रों को सभी नेताओं ने एक साथ खड़े होकर फेंके और जलाये। तभी से चारों ओर गांधी टोपी लगाने की चलन खादी पहिनने की फैशन प्रारंभ हुई गांधी जी द्वारा दिया गया खादी के वस्त्रों से सादा वेष आज भी सम्मानित किया जाता है। पंडित मोतीलाल और उनके पुत्र जवाहर लाल ने खादी पहिन कर शेर जैसा वीर होने का परिचय दिया जिनके घर लक्ष्मी का निवास अटूट धन-सम्पत्ति है ऐसी धनी मानी लोग गरीबों के हाथों की बुनी खादी के वस्त्रों को पहिने हुए अपना महल छोड़कर जेलों में पड़े हैं। जिनके दिलों में राष्ट्र सेवा के प्रति कोई खेद-शंका नहीं है उनका तो नाम देश-विदेशों में जाना जाता है हे गांधी महाराज? यह सब तुम्हारी ही प्रेरणा का फल है तुम्हारे ही द्वारा यह आजादी हासिल हुई है तभी तो लोक कवि फकीरे अपनी सुरताल में गाते हैं- हे गांधी महाराज? तुम्हारी जय हो?

८

देख गरीबी टपरिया में–

देख गरीबी टपरिया में–
बब्बा रहन लगे झुपड़िया में।
मोड़ा-मोड़ी रार करत हैं।
नंग-धुरंगे उघारे फिरत हैं।
गांधी ने छोड़ों कपड़ा पहिरवो
बैठे वे घामो-दुपहरिया में।
बब्बा रहन लगे झुपड़िया में।।
कांते वे सूत-कतावें सब खों।
खादी सुदेशी पहिरावे सब खों।

सब खों समझावें-आजादी आहे-
मंजीरा बजाऊत नगरिया में।
बब्बा रहन लगे झुपड़िया में।।
इक दिन गरीबी पे परहे तुषार
आंगन में सबके आहे बहार
धुंध के धूआं -लग जेहे आगी-
जोर जुलम की अटरिया में।
बब्बा रहन लगे झुपड़िया में।।

- देश की गरीब जनता झुपड़िया में रह रही है उनकी ऐसी दयनीय हालत देख गांधी का दिल भर आया वे भी झोपड़ी में रहने लगे। जहाँ नंगे धूल से लिपटे वस्त्रहीन बच्चों को रोते दिखते हैं उन्हें देख गांधी ने भी वस्त्र पहिनना छोड़ दिया वे तपती दुपहर में गरीबों का दुख-दर्द महसूस करने के लिये बैठ गये। वे चरखा सूत कातने लगे सभी को चरखा चलाने सूत कातने को प्रेरित करने लगे वे स्वयं के हाथों की बुनी खादी सभी को पहिनाना चाहते थे। वे समझाते-स्वावलम्बी बनो एक दिन मंजीरे बजाती हुई आजादी तुम्हारे गांवों में आयेगी। तब तुम्हारी गरीबी समाप्त हो जायेगी तुम्हारे आंगन में खुशहाली आयेगी जोर जुल्म की ऊंची हवेली धुंधकेगी। उसमें अपने आप आग लग जायेगी।

९

गांधी के गांव में सूत कते रे।

गांधी के गांव में सूत कते रे।
सूत करते ऐ भैया-
सूत कते रे।
बेकारी-निरधनता जरे-बरे-सूखे
अभावों कौ दुखयारी भूत भगे रे
सूत कते ऐ भैया-
सूत कते रे।।
मिलजुर के बोलें सब, खेले रस घोलें
पलना के झुलना सब पूत उठे रे।
सूत कते ऐ भैया-
सूत कते रे।।
गांधी की बानी-बलिदानी-कहानी
माथे पे बन कें भभूत लगे रे।

सूत कते ऐ भैया-

सूत कते रे॥

-गांधी के गांव में घर-घर सूत काता जाने लगा बेकारी-गरीबी सूख कर जल-भुन गई अभावों का दुखदायी भूत भाग गया। सभी एक साथ बैठते मधुरवाणी में बोलते अपना सुन्दर वातावरण बनाते सूत कातने लगे हैं। शहीदों की कहानियाँ गांधी के उद्देश्य सभी को प्रेरणा दें उनका आशीर्वाद भभूत जैसा तिलक स्वरूप सभी के माथे पर दमके।

१०

देखो-टूटे नें चरखा कौ तार-

देखो-टूटे नें चरखा कौ तार
चरखवा चालू रहे महाराज?
गांधी महात्मा दूल्हा बने हैं
दुल्हन बनी सरकार।
सबरे चमचा बने बराती
नऊआ बनो थानेदार।

लेकैं तिरंगा चरखा घुमावे-
तारी दे हँसे- समाज
चरखवा चालू रहे महाराज॥

सब पटवारी गारी गावें
पूड़ी बेले तहसीलदार।
तकिया लगा के बैठो महाजन
लेवे नें कोऊ उधार।

कीरो तोरो कागद रह गओ-
झूठो रह गओ ब्याज
चरखवा चालू रहे महाराज।

गांधी जू जब नेंग खों मचले
दायजे में मांगे सुराज।
ठांडी गवरमेन्ट विनती सुनावै
जीजा, गौना में देहों राज।

सेवक दास कहें संगठन कौ-
बल है भुजाओं में आज।
चरखवा चालू रहे महाराज॥

- हे गांधी महाराज! चरखा का तार न टूटे चरखा चलता ही रहे। देखो तो-गांधीजी दूल्हा बने हैं दुल्हन सरकार बनी है सभी चमचे बाराती थानेदार नाई बना है सभी तिरंगा लेकर चरखा घूमा रहे हैं जिसे पूरा समाज देख कर हँसता हुआ तालियाँ बजा रहा है। पटवारी गारियाँ (गीत) गा रहे हैं तहसीलदार साहब पूड़ियां बेल रहे हैं तकिया गदिया से टिका महाजन, खामोश बैठा है अब उससे कोई भी कर्ज लेने नहीं आता महाजन का खाता रद्दी हो गया उसमें लिखी ब्याज की राशि झूठी है गांधीजी नेग-दस्तूर के लिये मचल गये वे दहेज में स्वराज मांगते हैं अंग्रेज सरकार खड़ी-खड़ी विनती करती है- हे जीजाजी? गौने में तुम्हें पूरी आजादी, पूरा राज्य दे दूंगा। सेवकदास जी कहते हैं- अंग्रेज सरकार को झुकना ही पड़ेगा क्योंकि हम सभी संगठित हैं संगठन की ताकत आज हम सभी की भुजाओं में है।

११

अजब करिश्मा दिखा दियो है–

अजब करिश्मा दिखा दिये है
एक लंगोटी वारे ने।
मोहनदास करमचंद गांधी।
हवा नहीं वह तो था आंधी।
जोर जुलम के तूफानों से-
लड़ना-भिड़ना सिखा दियो है-
एक लंगोटी वारे ने।
कटी गुलामी की जंजीरे।
बजी आजादी की मंजीरे।
जन कुरबानी की किताब में-
पन्ना-पन्ना लिखा दियो है-
एक लंगोटी वारे ने।
राम नाम कौ जिन्हें भरोसो
चलत रहत ते पैदल कोसों
सत्य अहिंसा की लठिया में-
कितनी ताकत बता दियो है-
एक लंगोटी वारे ने।
अजब करिश्मा दिखा दियो है
एक लंगोटी वारे ने।

- एक लंगोटी पहिनने वाले ने अपना अद्‌भुत चमत्कार दिखा दिया मोहनदास करमचंद गांधी हवा ही नहीं-तेज

आंधी के समान हैं। जोर जुल्म के तूफानों से जिसने लड़ना सीखा है। जिसकी ताकत ने वर्षों पुरानी गुलामी की जंजीरें तोड़ी हैं उनकी बलिदानी पुस्तक ने अपने पन्ने-पन्ने पर अमर शहीदों को उजागर किया है जो राम के सहारे कोसों दूर की पैदल यात्रा करते थे सत्य अहिंसा की लाठी में कितनी शक्ति थी यह उन्होंने बता दिया है।

१२

गांधी बब्बा बोलते ते

गांधी बब्बा बोलते ते
मिसरी सो रस घोलते ते।
गांधी बब्बा डोलते ते
आजादी खों तौलत ते।
गांधी बब्बा सोऊत ते
अपनौ सपनों बोऊत ते।
गांधी बब्बा देखत ते
हीन गरीबी लेखत ते।
गांधी बब्बा ढूँकत ते
अंगरेजी पे थूंकत ते।
गांधी बब्बा गाऊत ते
सब खों एक बताऊत ते।

- गांधी जी देश के चप्पे-चप्पे में जाते आजादी लाने की सोचते वे सान्त्वना देकर सभी का मन प्रसन्न करते। सो जाने पर गांधी जी, आजादी के सपनों का ताना-बाना बुनते। देश को परवशता गरीबी कैसे दूर हो उसकी राह खोजते। मन की खिड़की से झांक कर ब्रिटिश सरकार की करतूतों पर थूकते गांधीजी सभी जन के साथ बैठ कर गाते- हमें एक होकर संगठित रहना है सभी को बार-बार समझाते।

१३

दाल चांवल रोटी के।

दाल, चांवल, रोटी के।
गांधी एक लंगोटी के।
थारी-बिलिया-लुटिया के
गांधी जू की कुटिया के।
ज्वांर-बाजरा-कुटकी के
गांधी जू की मटकी के।

दीन-हीन सब गांवों के
गांधी नंगे पावों के।
रघुपति राजाराम के
गांधी सेवाग्राम के।
हाथ-पांव-मन फरती के
गांधी अपनी धरती के।
हते विदेशी कौड़ी के
गांधी पांच पसेड़ी के।

- गरीबों के लिये खाने को दाल, चांवल-रोटी नहीं पहिनने को कपड़ा नहीं इसलिये गांधी ने सब कुछ त्याग कर तन पर एक लंगोटी ही लपेटी। उनकी घास-फूस की झोपड़ी में एक थाली/कटोरा/लोटा था गरीबों की ही तरह उनकी मटकी में जुआर-बाजरा-कुटकी ही थी। गरीब जनता के पांवों में कांटे चुभते देखकर गांधी जी नंगे पाँव रहने लगे। श्री राम के सिद्धांतो पर चलते ग्रामीण जनता की सेवा करते उनके हाथों पांवों में थिरकती ओजस्वी फुर्ती थी वे धरती मां के लाड़ले बेटे थे। उनके सामने विदेशी अंग्रेज कौड़े के समान थे और गांधी जी एक पसेड़ी (५ कि.) के समान थे।

१४

जाति पांति कौ भेद, भगा दव गांधी नें।

जातपात कौ भेद, भगा दवा गांधी नें।
अपने सिर पे मैला ढोकें
महतर गरें लगा लय रे।
दलितों खों छाती सें चिपका
अपने जरें बिठा लय रे।

उँचे पद खों छोड़-छाड़ कें-
समता कौं सद्भाव -
जगा दव गांधी नें।

जातपांत कौ भेद, भगा दव गांधी नें।
जोर जुलम अन्याय के ऊपर
अनशन उनने ठानों रे।
सब धर्मों कौ एक धरम जो
मानवता कौ मानों रे

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सत्य अहिंसा की धरती पे
प्रेम-प्यार कौ बीज
उगा दव गांधी नें।
जातपांत कौ भेद, भगा दव गांधी नें।
भजन कीरतन की धुन गाई
रघुपति राघव-राम रे।
सनमति दायक एक ही तो है
अल्ला-ईश्वर नाम रे।
सांझ सुमरनी गाई हर दिन-
भजन वैष्णवी-गीत-
गुंजा दव गांधी नें।
जातपात कौ भेद, भगा दव गांधी नें।

- जाति पांति के भेद भावों को गांधी ने दूर फेंक दिया सब से पहिले उन्होंने ही अपने सिर पर मैला रखकर फेंका महतर को गले लगाया दलितों को छाती से चिपकाया अपने पास सभी को बिठाया गांधी ने ऊंचे पद को छोड़कर समानता की भावना जागृत की। जोर जुल्म, अन्याय के विरोध में अनशन-उपवास किया सभी धर्मों में मानवता को धर्मश्रेष्ठ माना सत्य अहिंसा के सिद्धांतों को लेकर भाई चारे का बीज बोया। सभी के साथ बैठकर भजन कीर्तन गुंजाया रघुपति राघव राम का गीत गाया सबको सुबुद्धि देने वाला एक ही नाम- अल्ला-ईश्वर बतलाया। दूसरे का दुख अपना ही समझो उन्होंने इस भावना का भजन हर दिन-सुबह-सांझ मंदिर में जाकर गाया।

१५

गांधी की आंधी आई रे-

गांधी की आंधी आई रे।
टूटी नींद जगे अब सबरे
मांगे दानों-पानी
ऐसेई बनें रहे में अब तो
हुइये दुखदाई हानी।
उठो, चलो, देखों-आगें खो-
गांधी ने टेर लगाई रे।
गांधी की आंधी आई रे।।
अगल-बगल आगें पीछे जो
सन्-सन् हवा बुहे।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लगी किवरियों में दे धक्का
समझो ऊक कहे।

सुनो? गुलामी की हथकड़ियाँ
मिलजुर टोरो भाई रे।
गांधी की आंधी आई रे।।

एक सूत कच्चों डोरा सो
चटका दे टूट गिरे।
मिलजुर के रस्सा होओ तो
अंगद सो पांव परे।

संगठन को बल हनुमान सो
रावन की लंक जराई रे।
गांधी की आंधी आई रे।।

- हे भाई? गांधी तो- आंधी की तरह आया है जिसे देख सभी लोग जाग कर उठ-बैठे अपना अधिकार दाना-पानी मांगने लगे यदि इसी तरह चुपचाप- निराश बैठे रहे तो दुख ही भोगना पड़ेगा इसमें हमारी ही हानि होगी गांधी जी ने आवाज लगाते हुए कहा- तुम शान्त हवा नहीं- अब उठकर तूफान बनो। अगल-बगल/ आगे-पीछे जो सनसनाती हवा चल रही है वह बन्द खिड़कियों को झकझोर कर खड़खड़ा रही है लगता है- वह कुछ कहना चाहती है। हे भाई सुनो? वह कह रही है सभी संगठित हो एक होकर गुलामी की हथकड़ियाँ तोड़ो। एक सूत का कच्चा धागा एक झटके में ही टूट जाता है यदि रस्सियाँ मिलकर एक रस्सा हो जायें तो वह अंगद की तरह अचल जमे हुए शक्तिशाली पाँव की तरह हो जायेगा संगठन की शक्ति हनुमान की तरह है जिसने देखते ही देखते तानाशाह रावण की लंका जला दी थी।

१६

गांधी हमें जगा रये ते

गांधी हमें जगा रये ते
गांधी हमें बता रये ते
गांधी हमें सुना रये ते
चेते-चातो-गुनो उठो फिर
ऊ देखों अंगरेजन खों।
जिनने देश हड़प लव भैया
काम-धाम-स्टेशन खों।
अंगरेजी सरकार स्वारथी
आपस में खूब लड़ाराई है।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अपनौ देश पतंग सरीखों
अपनी डोर-उड़ा रई है।
अपनौ अबै गरीब देश है
खावें खों रोटी नइयां।
रहबे खों घर-दोर नहीं है
पीवे पानी टोंटी नइयां।
समझ बूझ से काम करो अुर
लड़ो नें झगड़ों आफत में।
परवशता में ढूंनर होकें-
धरौं कछू नहिं खांसत में।
भेदभाव खों दूर करों अुर
मन सें गरे मिलो भैया।
आपस कौं जौ बैर-बुरौव है
होकें फूल खिलो भैया।

- गांधी हमें सावधान कर समझाते हुए- सुनाते हुए दिखा रहे थे- उन अंग्रेजों का जिन्होंने हमारा काम धंधा रहने की जगह हड़प ली हमें गुलाम बना लिया है। ब्रिटिश सरकार बड़ी स्वार्थी हमें आपस में लड़ा कर राज्य कर रही है हमारे ही देश की पंतग हमारी ही डोर से उड़ा रही है। अपना देश गरीब हो गया उसे भरपेट खाने को रोटी नहीं मिलती रहने को घर-गृहस्थी पीने को साफ पानी नहीं मिलता हे भाई? समझदारी से काम करो इस मुसीबत में फंस कर आपस में लड़ो-झगड़ो नहीं दूसरे के सहारे/गुलामी और रोगों से त्रस्त झुकने-खांसने से कुछ नहीं होगा। जाति पांति के भेदभावों को दूर करो आपस की दुश्मनी कमजोर करती है सभी एक होकर- गले में बाहें डाल कर मिलो। मुस्कुराहट और उत्साह लिये फूलों की तरह खिलो।

१७

गांधी बब्बा हमें ले चलो?

गांधी बब्बा हमें संग लैं-
चलो झुपड़ियों गांवो में।
देश कौ जौ मैदान बड़ो है।
झुरमुट-झाड़ी-बाड़ी कांटे।
अंगरेजन ने भेदभाव बो।
गांव गली-गलियारे बांटे।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ऊ पगडंडी हमें लै चलो-
खाई खंदक ठाँकों में।
गांधी बब्बा हमें संग लैं-
चलो झुपड़ियों गांवों में।।

गांधी कहां तुमारी कुटिया
घास फूस की बनी झुपड़िया।
राम नाम लै बिरछा नेचें
अंगारे सी कटे दुपहरिया।

ज्वांर-बाजरे की आटे की
बनती रोटी छांवों में।
गांधी बब्बा हमें संग लैं-
चलो झुपड़ियों गांवो में।।

जंगल और पहाड़ों की
सोंधी सुगन्ध हो माटी की।
चढ़ना और उतरना फिर
पगडंडी हो उस घाटी की।

कांटो से छलनी छलनी-
छाले हों उन पांवों में।
गांधी बब्बा हमें संग लैं-
चलो झुपड़ियों गांवो में।।

-हे गांधी बाबा? मुझे अपने साथ झोपड़ियों-गांवों में ले चलो। देश का मैदान- बहुत बड़ा है जिसमें झुरमुट झाड़ियाँ-कांटे हैं अंग्रेजों ने देशवासियों के मन में भेदभावों की भावनाओं को बोकर हमें अलग-अलग फिरकों में बांट दिया है हमें उस जगह ले चलो जहाँ दुखों विपदाओं से भरी गहरी खाई-खंदकें हैं। हे गांधी बाबा? जहाँ तुम्हारी रहने की जगह घास-फूस की झुपड़ियां हैं जहाँ तुम वृक्ष के नीचे राम नाम लेते अंगारे सी तपती दोपहर व्यतीत कर लेते हो हमें उसी वृक्ष की छांव में ले चलो जहाँ जुआँर, बाजरे के आटे की रोटी बनती है। उस ओर.............. जंगल और पहाड़ों के बीच जहाँ माटी की सोंधी सुगन्ध हो ज़िस पगडंडी से चलकर ऊँची-नीची घाटियाँ चढ़ना-उतरना हो उस ओर............. जहां ग्राम वासियों के पाँव कांटो से छलनी होकर रिसते हों पांवो के छाले दुखते हों।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

१८

अंगरेजों? भारत खों छोड़ों?

अंगरेजों, भारत खों छोड़ों
गांधी ने दे दई ललकार।
जोर जुलमों खों सह लव हमने
अब तौ तनिक सही नें जाय।
भारत मां की व्यथा-कहानी
अब ई मों से कहीं नें जाय।
कानों-कानों दई गांधी नें-
सत्य अहिंसा की टंकार।
अंगेरेजो, भारत खों छोड़ो-
गांधी ने दे दई ललकार।।

धोके में तुम घुस बैठे हो
मार गुडेरी सांपों सी।
चाय सरीखी उफन रही है
भरी भावना मापों सी।
जियो और जीने दो भैया-
अंगरेजो खों दई हुँकार।
अंगरेजो, भारत खों छोड़ो-
गांधी ने दे दई ललकार।।

चौपट करी सभई भाषायें
लाद दई अंगरेजी खों।
तुम तो आव विदेशी बंदरा
रोंधत काय सुदेशी खों।
चले जाव, हम हाथ हैं जोरत-
ओ गोरी? भूरी सरकार।
अंगरेजों, भारत खों छोड़ो
गांधी ने दे दई ललकार ।।

- अंग्रेजों? भारत छोड़कर भाग जाओ गांधी ने ललकार कर आवाज दी। तुम्हारी ओर से दी जाने वाली यातनायें अब जरा भी सही नहीं जाती भारत माता की व्यथा कहानी इस मुंह से कही नहीं जाती सत्य-अहिंसा की आवाज़ लगाते

हुए गांधी ने यह बात सभी को सुनाई। तुम अनायास-मेरे देश को धोखा देकर घुस आये सांप जैसी गुन्डी मार कर बैठ गये हम भारतवासियों को विद्रोही भावनायें चाय जैसी उफन कर जोशीली भापें छोड़ रही हैं जियो और जीने दो का नारा लगा कर गांधीजी ने अंग्रेजों के सामने शेरों जैसी गर्जना की। हमारी संस्कृतियाँ-भाषायें नष्ट कर अपनी अंग्रेजी भाषा सभी के सिरों पर लाद दी तुम तो विदेशी बन्दर हो मेरी राष्ट्रीयता को क्यों रौंधते हो, ओ गोरी सरकार? मैं हाथ जोड़ कर कहता हूँ तुम मेरा भारत छोड़ कर चले जाओ।

१९

करई तुरईया-करेला फिरंगी

करई-तुरईया-करेला फिरंगी
मीठे से बोल-बोलत नइयां।
आंखे दिखा तिंदुआ सो गुररावे।
छाती पे मूंग दरे-दररावें।

तिरसकार की लगा कें खिरकी-
दया कौ छुआरों खोलत नइयां।
मीठे से बोल-बोलत नइयां।।

पिस्तौलें-गोली-बन्दूक दिखावे
छल-बल से मारे, जहर पियावे।

राम-रहीमा की ई धरती पे-
सदभावों कौ रस घोलते नइयां।
मीठे से बोल-बोलत नइयां।।

गरीबों खों मारे-पीटे बुलावे।
पकर जेल में ठूंस कें आवे।

मानवता की लैकें तराजू
दानवता अपनी तौलत नइयां
मीठे से बोल-बोलत नइयां।।

- गांधी जी कह रहे थे यह फिरंगी करेला-कड़वी तुरईया के समान है जो प्रेम की मीठी बोली नहीं जानता गुस्से से तेंदुआ की तरह गुर्राता है दिल दुखाकर तानाशाही दिखाता है घृणा की खिड़की.लगा कर करूणा का दरवाजा नहीं खोलता है पिस्तौल बन्दूक दिखाकर छल-कपट का जहर पिला मार डालना चाहता है राम-रहीम की धरती पर सद्भावों से व्यवहार नहीं करता। निर्दोष-असहाय गरीबों को बुलाकर बेगार लगा मारता-पीटता है उन्हें जबरदस्ती पकड़ कर जेलों में बन्द कर देता है वह मानवता के तराजू में अपनी राक्षसी प्रवृत्ति को नहीं तौलता अर्थात् वह अपनी हरकतों से बाज नहीं आता।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

२०

लगे फूल से गांधी बब्बा।

लगे फूल से गांधी बब्बा
तुम गोरे कांटे से।
शान्त और गंभीर लहर में
तुम निकरे भाटे से
भूखों के सूखे हाथों में
तुम गीले आटे से।
दूर खड़े शुभ-लाभ देखते
तुम कोरे घाटे से।
मिसरी-सी मीठी बातों पर
तुम तीखे चांटे से।
सत्य-न्याय की लिये तराजू
तुम बन्दर-बांटे से।
गांधी बब्बा ऊंचे लम्बे
तुम कद में नाटे से।

-गांधी बाबा फूल की तरह हे गोरे अंग्रेज? तुम नुकीले कांटे की तरह हो। गांधी बाबा-गंभीर शांत लहर की तरह तुम ज्वांर भाटे की तरह हो। हे गोरे अंग्रेज? भूखों के हाथों में तुम गीले आटे की तरह हो सुअवसर सभी देखना चाहते हैं किन्तु तुम- दुर्दिन की तरह हो। हे अंग्रेज? मिश्री जैसी मीठी प्रेम भरी बातों पर तुम तीखें चांटे की तरह हो। गांधी बाबा-ऊंचे लम्बे उनके सामने तुम कद में बौने हो।

२१

अनयायी सरकार देख कें

अनयायी सरकार देख कें
गांधी ने अनशन-ठानौ।
हमने जानौं-सब ने जानौ।
दुखदाई कानून बना कें
अंगरेजों नें लगा दियो तो-
जब अग्गो-पिच्छो-कानौ।
गांधी ने अनशन ठानौ।।
हमने जानौं-सब ने जानौ।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मारपीट करफू कौ आडर।
बेड़ी हथकड़ियां ले हंटर।
जेल कौ लिआये परवानो।
गांधी ने अनशन ठानौ।
हमने जानौं-सब ने जानौ।
गांधी खों भूमी में डारें
आकें बरे-बेर छुछकारें।
बन्दूक दिखा देंवे तानौ।
गांधी ने अनशन ठानौ।
हमने जानौं-सब ने जानौ।

- ब्रिटिश सरकार का अन्याय देख गांधी जी समयानुसार अनशन का व्रत ले लिया करते थे जिसे हम सभी देशवासी जानते हैं। अपना कानून बनाते समय अंग्रेजों ने देशवासियों को कष्ट पहुंचाने के लिये कई तरह के रोड़े-खड़े कर दिये थे। कर्फ्यू का आर्डर/बेड़ी हथकड़ियां मारपीट के लिए हंटर लाये गये निर्दोष लोगों को बंदी बनाने के लिये परवाने भी लाये गये गांधीजी को निमर्मता के साथ धरती पर घसीट कर घृणा की दृष्टि से देखा गया बन्दूक दिखा कर उन्हें मार डालने की धमकी दी गई जिसे हम तुम सभी भारत वासी जानते हैं।

२२

वे गोरे-उघारे फुस करिया ते।

वे गोरे-उघारे फुसकरिया ते
गांधी के आगे बुकरिया ते।
फूसत ते सांप-सरीखे भारी
मीठे जहर की सी पुड़िया ते।
गांधी के आगें बुकरिया ते।
उलझा के राखें-सुलझन नें देवें
आंगन में बेरी की जरिया ते।
गांधी के आगें बुकरिया ते।
बिलरू सी आंखें-बिलायती फैशन
देखत में भोरी पुतरिया ते।
गांधी के आगे बुकरिया ते।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कोहनूर-हीरे-मोती असरफीं
भर-भर के ले गओ-टुकनिया ते।
गांधी के आंगें बुकरिया ते।
आग लगावी वे जानत ते घर में
पाकिट में माचिस की डिबिया ते।
गांधी के आंगें बुकरिया ते।

- वे छाती निकाले- गोरे अंग्रेज खतरनाक फुफकारने वाले गांधीजी के आगे बकरी के समान थे। वे काले जहरीले सांप की तरह फुफकारते देखने में मीठी जहर की पुड़िया थे। जो भी उनसे उलझा उसे उन्होंने कभी भी सुलझने नहीं दिया सचमुच वे देश के आंगने में कटीली बेरी की जरिया थे। बिल्ली सी खूनी-शिकारी आंखें बिलायती ठाट-बाट फैशन देखने में वे भोले पुतली जैसे लगते थे। देश का कीमती कोहनूर हीरे-मोती-असर्फियां भर-भर कर ले जाने के लिये वे एक टुकनियां (टोकनी) के समान थे। वे घरों में ईर्षा-घृणा की आग अच्छी तरह लगाना जानते थे इसलिये प्रत्येक की जेबों में माचिस की डिबिया के समान थे।

२३

बन कें गांधी सुदेशी बाजीगर

बन कें गांधी सुदेशी बाजीगर
विलायती बन्दर नचाऊन लगे।
ऐना दे -मों खों दिखाऊन लगे।।
भर दई जेलें-उलट दई रेलें।
फिरंगी कौ पुतरा जरावे-खेंलें।
गुलामी पकर कें-कुलाटे खुआ कें-
आजादी कौ ढो बजाऊन लगे।
विलायती बन्दर नचाऊन लगे।।
जय भारत माता नारो लगा कें।
कचहरी पे जा तिरंगा चढ़ा कें।
हुकारौं दैकें-छू मंतर कह कें-
लठिया पे फिरंगी कुदाऊन लगे।
विलायती बन्दर नचाऊन लगे।।
जमूरे पूरे-ओ गोरे मुखड़े।
कब लौं सुना हें हम अपने दुखड़े।

ले अब तू चढ़ जा अपनी अटारी
घट दैकें पानी भराऊन लगे।
विलायती बन्दर नचाऊन लगे।।

-गांधीजी स्वदेशी बाजीगर बनकर विलायती बन्दर नचाने लगे उसके हाथों में दर्पण देकर उसका ही मुंह दिखलाने लगे। क्रान्तिकारी-देश भक्तों ने बन्दी बनाकर जेलों को ठसाठस भर दिया फिरंगी का पुतला जला कर खेल-खेला गुलामी को पकड़ कर- खूब कुलांटे लगवाई आजादी का सुहाना ढोल बजाया। कचहरी (अदालत) पर तिरंगा झंडा फहरा कर भारत माता की जय का नारा लगाया छूमंतर कह कर हुँकारा दिया फिर फिरंगी बन्दर को अपनी लाठी पर कुंदाने लगे। ओ गोरे मुंह वाले अंग्रेज? मेरे जमूरे? तुझे कब तक अपना दुखड़ा सुनाता रहूँगा। अब तू यह घड़ा ले चढ़ जा अपनी ऊंची अटारी वहां से ठंडा पानी पीने के लिये भर ला।

२४

गांधी बब्बा लैकें आ गअे आजादी

गांधी बब्बा लैकें आ गअे आजादी
एक हाथ से चरखा घुमाऊत
सो दूजे हाथ लएँ-पौनी।
लैकें आजादी।।
एक हाथ में सत्य-अहिंसा
सो दूजे हाथ लएँ-खादी
लैकें आजादी।।
एक हाथ में लएँ एकता
सो दूजे हाथ खुशहाली।
लैकें आजादी।।
एक हाथ में लएँ तिरंगा
सो दूजे हाथ लएँ लाठी।
लैकें आजादी।।
गांधी बब्बा लैकें आ गअे आजादी

- गांधी बाबा आजादी लेकर आ गये एक हाथ से चरखा चलाते दूसरे हाथ में पौनी लिये सूत कातते- आजादी लेकर गांधी बाबा आ गये। एक हाथ में सत्य-अहिंसा दूसरे हाथ में अपने ही हाथों की बुनी हुई खादी लिये- आजादी लेकर गांधी बाबा आ गये। एक हाथ में एकता-बन्धुत्व दूसरे हाथ में सुख-सम्पन्नता लिये आजादी लेकर गांधी बाबा आ गये।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

एक हाथ में राष्ट्रीय-तिरंगा झंडा दूसरे हाथ में सदैव साथ देने वाली अपनी लांठी लिये - आजादी लेकर- गांधी बाबा आ गये।

२५

बाग लगा कें गांधी उड़ गओ

बाग लगा कें गांधी उड़ गओ
सोन चिरैया सो।
लोकतंत्र की राह बता कें।
अमन-चैन की छाँह दिखा कें।

आसमान में चमकौं-दमकौ-
मोर तरैया सो।
उड़ गओ सोन चिरैया सो।।

घर-आंगन में दीप धरा कें ।
इंदियारे में जोत जरा कें।

गाँव गली-गलियों में छुटकौ-
रैन जुनैया सो।
उड़ गओ सोन चिरैया सो।।

आजादी के फूल खिला कें।
हिन्दू मुस्लिम गरे मिला कें

सत्य अहिंसा लैकें हिलरो-
ताल-तलैया सो।
उड़ गओ सोन चिरैया सो।

बाग लगा कें गांधी उड़ गओ
सोन चिरैया सो।

- गांधी-हरा-भरा बगीचा लगाकर सोन चिड़या सा उड़ गया है। गांधी ने लोकतंत्र की राह बता कर अमन-चैन की शीतल छांह दिखाई है आजादी के आकाश में सुबह के तारे सा- वह चमक गया है। प्रत्येक घर-आंगन में दीप रखकर अंधकार में ज्योति जलाकर गाँवों की गलियों में रात के अंधकार में वह चांदनी सा छुटक गया है। आजादी के फूल खिला कर हिन्दू मुसलमान को गले से मिला के सत्य-अहिंसा की क्यारी में- वह सरोवर जैसा लहर गया है।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

२६

गांधी खोटो नहीं हतो।

गांधी खोटो नहीं हतो
शुद्ध ठनकदी चांदी तो।
गंधियाती वो हवा नहीं
तूफानों की आंधी तो।
अनशन लैकें धूनी पे
बैठो संत-समाधी तो।
भूखे पेट गरीबों की
आधी-धोती रोटी तो।
लएँ जागरण कानों में
घर-घर एक मुनादी तो।
निरधनता की बेटी की
गाजो-बाजो शादी तो।
रेशा-रेशा ई तन पे
हाथों की वो खादी तो।
लठिया लैकें हाथों में
अंगरेजों की दादी तो।
तानाशाही छाती पे
देश की वो आजादी तो।

- गांधी खोटा नहीं वह तो शुद्ध ठनकती चांदी जैसा चमकता हुआ निर्मल मन का था वह सड़ी हुई बेचैन कर देने वाली हवा नहीं? वह तो तूफानों के साथ चलने वाली आंधी के समान था। वह गरीबों की लज्जा तन लपेटने को आधी धोती भूखों के पेट को धैर्य बंधाता हुआ रोटी के समान था। प्रत्येक देशवासी के कानों में गूंजती हुई- वह जागरण की मुनादी था। वह तो द्वारे पर गूंजती मंगल शहनाई के साथ किसी गरीब बेटी की हो रही शादी की तरह था। जिस सूत के रेशे-रेशे से यह तन ढका है वह खादी- गांधी के हाथों द्वारा ईजाद की गई है। हाथ में लाठी लेकर डांट फटकार के लिये गांधीजी अंग्रेज सरकार की दादी के समान थे। तानाशाह सरकार को बेहद परेशान करने अपना अधिकार आजादी छीन लाने का साहसी प्रतीक गांधी ही तो थे।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

२७

पहिरौ नओ सुदेशी कपड़ा

पहिरौ नओ सुदेशी कपड़ा
अन्न खुदई उपजाओ।
भैया गांधी के गुन गाओ।।
रंग बिरंगो देश जो अपनौ
अपनी बानी बोलो रे।
एक दूसरे से मिलजुर कें
मिसरी सो रस घोलो रे।
लगे सुहानौ पल-छिन अपनौ
हँस-हँस के बताओं।
भैया गांधी के गुन गाओ।।
अमर शहीदों की कुरबानी
विरथां नें जावे भैया।
गांधी जू की त्याग-तपस्या
फले और फूले-भैया।
सेवा अुर ईमान धरम की-
तुम पक्की गैल बनाओ।
भैया गांधी के गुन गाओ।।
गांधी कौ जो देश सुहानौ
जी में समता कौ है-सपनौ।
गांधी ने दव ज्ञान हमें है
भरो एकता में बल अपनौ।
सुबह हमारी/सांझ हमारी
दिन मंगलमय रैन बिताओ।
भैया गांधी के गुन गाओ।

- अपने देश का बुना हुआ कपड़ा पहिनो किसान बन कर स्वयं अन्न पैदा करो गांधीजी के गीत गाओ। अपना यह इन्द्रधनुषी देश है स्वतंत्र होकर अपनी-अपनी भाषा बोलो बन्धुत्व की भावना से- एक दूसरे के गले मिलो हर क्षण आपस की वार्तालाप में मुस्कुराते हुए सुहाना लगे हर पल मिश्री सा मीठा बनाओ। अमर शहीदों का बलिदान व्यर्थ न जाये गांधी

का त्याग और उनकी तपस्या फूले फले मानवी सेवा भाव से सच्ची-पक्की राह बनाओ। गांधी के सपनों का समानता वाला यह सुहाना देश है कोई भी ऊंची नीची जाति का नहीं है संगठन-एकता में ही शक्ति है यह संकेत गांधी जी ने बार-बार हर जगह दिया है। यह जगमगाती सुबह यह झिलमिलाती सांझ हमारी ही तो है अपना दिन-रात प्रसन्न होकर बिताओ।

२८

सांझ-सकारे लगा कें आसन

सांझ-सकारे लगा कें आसन-
भजन-कीरतन कर गओ गांधी।
रघुपति राघव राजाराम।
अल्ला ईश्वर एक ही नाम।
देहरी-दुआरे भाईचारे कौ-
जरा कें दियला धर गओ गांधी।
भजन-कीरतन कर गओ गांधी।
गांव-गांव चौपाले गातीं
सब मानव हैं एक समान।
ऊंच-नीच कौ भेद भुला कें।
सब खों सनमति दे भगवान।
देश प्रेम बन्धुत्व दया कौ-
अनमोल खजानौ भर गओ गांधी।
भजन-कीरतन कर गओ गांधी।
भारत माँ खों हाथ जोर कें
अंत समय हे राम कह गओ।
क्षमाशील गांधी महान-ते
हत्यारे खों क्षमा कह गओ।
हो महान-खुशबू बिखर कें-
खिले फूल से झर गओ गांधी।
भजन-कीरतन कर गओ गांधी।

-सुबह-सांझ आसन लगा गांधी-भजन-कीर्तन कर चले गये। ईश्वर-अल्ला एक ही नाम है भजन गाते हुए गांधी देहरी-द्वारे बन्धुत्व का सुनहला दिया जलाते हुए चले गये। गांधी की धुन में गांवों की चौपाले गीत गाने लगी सभी मानव एक समान है जाति-पांति का भेद भुलाकर ईश्वर सभी को सुबुद्धि दे। इस प्रकार देश भक्ति करूणा भाई चारे का अनमोल खजाना

भर कर गांधीजी चले गये। अंत समय में हे राम कहते भारत मां को हाथ जोड़ते क्षमाशील-करूणामयी गांधी हत्यारे का अपराध क्षमा कर गये इस धरती पर वे महान हो गये अपनी खुशबू बिखेर कर गांधी खिले फूल की तरह मानवता के पथ पर देश के लिये समर्पित हो गये।

२९

चुनरिया रंग दैयो मोरे यार -

चुनरिया रंग दैयो मोरे यार
भारत के रनवीरों की हो जी मे झलक अपार।
चुनरिया रंग दैयो मोरे यार -
चूनर ऊपर रेशे-रेशे आजादी की झलक दिखा दैयो
शुद्ध सूत की चादर मोरी शांति की कलफ चढ़ा दैयो।
तीन रंग कौ लगा के झंडा सच्चो रूप सजा दैयो।
गांधी बब्बा की सूरत खों चरखा सहित छपा दैयो।
झांसी वारी रानी के कर होवे नगिन कटार।
चुनरिया रंग दैयो मोरे यार।।
जुलम भये जलयान बाग के नक्शा ठीक बना दैयो।
डायर पापी के फायर के खून की नदी बता दैयो।
कई हजार लाल भारत के, मरे हुए दिखला दैयो।
फतहचंद, जोरावर, जिन्दें ईटों में चिनवा दैयो
ग्यारह साल के मदनलाल पर हों गोली के बार।
चुनरिया रंग दैयो मोरे यार।।
जेल के अन्दर कमला सरोजनी चक्की दलती हो
कस्तूरी बाई भी बैठी, हाथ क्षोभ से मलती हों।
बिरला मंदिर की सिड्ढी पर बापू को चढ़वा दैयो।
इस नक्शे पर देश वासियों नैनो नीर बहा दैयो।
राष्ट्रपिता को किस पागल ने अनजाने दिया है मारा।
चुनरिया रंग दैयो मोरे यार।।

-मेरे प्यारे दोस्त? अपनी भारत माता की चुनरी रंग देना। जिसमें देश के वीर बहादुर सेनानियों का बलिदानी रंग चमक उठे।

मां की चुनरी के रेशे -रेशे पर स्वतंत्र देश की एक तस्वीर दिखलाना। मेरी शुद्ध सूत-खादी की चादर पर शांति

का पेन्ट (कलफ) चढ़ा देना। चारों ओर तीन रंगों की गोट लगा कर एक तिरंगा-झंडा का रूप देकर, उसे सजा देना। गांधी बाबा की फोटो-उनके चरखा सहित छपवा देना। जिस पर झांसी की रानी के हाथों में नंगी तलवार चमकती दिखे।

जलयाना बाग का जुलूस। पापी डायर की दनदनाती फायरिंग। बहती हुई खून की नदी। आजादी के लिये कई हजार भारत के सपूतों की लाशें। और फतहचंद जोरावर को ईटों में चिनवा देने वाली कहानी। ग्यारह साल के बालक मदन लाल पर बरसती गोलियों की याद दिला देना।

जेल के अन्दर चक्की चलाती-सरोजनी नायडू- कमला नेहरू/दुख से पीड़ित कस्तूरबा/बिरला मंदिर की सीढ़ियों पर बापू। जिनके वियोग से/देशवासियों की आँखों से बहती अश्रुधार दिखा देना और किसी पागल बेटे के हाथ में-हिंसा की पिस्तौल और राष्ट्रपिता की हत्या दिखला देना।

मेरे दोस्त? उस चुनरी में/मेरी खादी की चादर में/ऐसे रणवीरों की झलक बार-बार दिखे।

३०

मिलजुर कें अपनी महनत सें.......

मिलजुर कें अपनी महनत सें.......
गांधी कौ देश सजैयो मोरे लाल।
गांधी जू ने सौंप दओ है।
बिरछा जैसी रोप दओ है।
फूले और फरे जो निस दिन-
खून सींच हरयैयो मोरे लाल।
गांधी कौ देश सजैयो मेरे लाल।।

गांधी जू की हँसे कामना।
रखियो सच्ची सही भावना।
मानवता की करियो पूजा-
मानव धरम निभैयो मोरे लाल।।
गांधी कौ देश सजैयो मोरे लाल।।

फूलों सी मुस्कानों वारे।
पूरी दुनिया के उजयारे।
गांधी जू नयनों के तारे-
अंखियन में चमकैयों मोरे लाल।
गांधी कौ देश सजैयो मोरे लाल।।

जनमन जिनकी करे आरती।
गावें उनके गान भारती।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सत्य अहिंसा कौ मतवारो-
सिरधा के सुमन चढ़ैयो मोरे लाल।
गांधी कौ देश सजैयो मोरे लाल।।

- ओ मेरे लाल? संगठित होकर अपनी मेहनत से गांधी का यह प्यारा देश सजाओ-संवारों। गांधी ने जिसे वृक्ष जैसा रोप कर तुम्हें सौंप दिया है जो दिन-रात फूले और फले उसे अपना खून-पसीना देकर हमेशा सींचते रहना ताकि वह हरा-भरा रहे। निर्मल-हितकारी भावना से ही गांधीजी की कामना मुस्कुरायेगी तुम मानवता को पूजते हुए मानव धर्म निभाते रहना। फूलों की तरह मुस्कुराते हुए गांधीजी पूरी दुनिया में पथ दर्शक सभी की आँखों में चमकते सितारे थे तुम उनके उद्देश्यों को अपनी आँखों में चमकाते रहना। देश की जनता उनकी आरती उतारती गीत गा-गा कर अपने को भारतीय होने का गर्व करती है सत्य अहिंसा को साकार करने वाले मतवाले देश भक्त गांधी को सभी नत होकर श्रद्धा के फूल चढ़ाओ।

गांधी इक्कीसा

१. धरम मानवी गांधी कौ।
२. आँख पे चश्मा गांधी कौ।
३. कंधा जनेऊ गांधी कौ।
४. पौनी-चरखा गांधी कौ।
५. अनशन-भाषण गांधी कौ।
६. सेवा आश्रम गांधी कौ।
७. सूत कताई गांधी की।
८. एक लंगोटी गांधी की।
९. हाथ में लठिया गांधी की।
१०. पांव खड़ाऊ गांधी की।
११. सत्य-अहिंसा गांधी की।
१२. समता सेवा गांधी की।
१३. दीन-गरीबी गांधी की।
१४. दलितों की भाषा गांधी की।
१५. पद-पैदल यात्रा गांधी की।
१६. प्रेम-एकता गांधी की।
१७. पीर पराई गांधी की।
१८. भजन-प्रार्थना गांधी की।
१९. जा आजादी गांधी की।
२०. पिस्तौल की गोली गांधी की।
२१. हे-राम की बोली गांधी की।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हिन्दी गीतों में गांधी जीवन दर्शन

संकलन

शरद कुमार जोशी

दुर्गा निवास, सुसनेर जिला शाजापुर

(म.प्र.)

हिन्दी गीतों में गांधी जीवन दर्शन

प्रस्तुति– शरद कुमार जोशी (बी.ए.)

हिन्दी भाषा और साहित्य का आंदोलन करने पर स्पष्ट प्रतीत होता है कि आधुनिक साहित्यकारों की कलम गांधी जीवन दर्शन की अभिव्यक्ति में उतनी नहीं चल पाई जितनी कि उनसे आशा थी। गांधी जीवन दर्शन से ओत-प्रोत उन्हीं वरिष्ठ साहित्यकारों ने उन पर कलम चलाई जो उनके साथ रहे तथा उनसे प्रभावित रहे। शेष काव्यकारों ने अपने छुट-पुट गीत ही जयंती विशेष पर लिखे हैं। तथापि ऐसे गीतों का संकलन किया जाय तो गांधी बाङ्‌मय को यह विशिष्ट देन कही जायेगी।

स्व. श्री गणेश दत्त शर्मा ''इन्द्र'' रचित ''काव्य तपोवन'' से एक साथ नौ गीतों की प्राप्ति हुई है। स्वयं इन्द्रजी अपने जीवन में गांधीजी के नैंकट्य में रहे। उनका मानस भी गांधीजी को सदैव समर्पित रहा। अत: जितनी निकटता से उन्होंने गांधी जीवन एवं दर्शन के प्रति अपनी आत्मा का द्वार खोला, वह स्तुत्य है। इनके अतिरिक्त श्री रमेश कुमार रायकवार, श्री कुंज बिहारी पाण्डेय तथा श्री मान सिंह राही आदि के भी गीत प्राप्त हुए हैं।

बापू तुम्हें प्रणाम

श्री इन्द्रजी ने प्रथमत: पूज्य बापू के सम्मुख नमन किया है। इस गीत का भाव है कि हे बापू! तुम निराश्रितों को आश्रय देने वाले थे। तुम गरीबों के सेवक, दीन हरिजन, सत्य-अहिंसा के उपदेशक थे। बूढ़ों में तुम भीष्म पितामह और तरुणों में रामचंद्र के समान थे। बच्चों में बच्चे थे। हे बापू! जोभी जैसा था-तुम सबके साथ उसी रूप में हो जाते थे। तुमको मेरा शतश: प्रणाम स्वीकार हो।

गीत-एक

निराश्रितों के आश्रय थे तुम बापू तुम्हें प्रणाम।
दीन-हीन के तुम थे सम्बल-बापू तम्हें प्रणाम।
दीन हरिजनों के उद्धारक-बापू तुम्हें प्रणाम।
सत्य-अहिंसा के उपदेशक-बापू तुम्हें प्रणाम।
वृद्धों में तुम भीष्म पितामह-बापू तुम्हें प्रणाम।
तरूणों में तुम रामचंद्र से-बापू तुम्हें प्रणाम।
बच्चों के संग तुम बच्चे थे- बापू तुम्हें प्रणाम।
जो जैसा था वैसे तुम थे-शतश: तुम्हें प्रणाम।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गीत-दो

बापू

कवि इन्द्रजी महात्मा गांधी को प्रणाम करते हुए, उनके विराट रूप, विराट व्यक्तित्व के सामने श्रद्धा से नत मस्तक हो जाते हैं। वे सारे विश्व में गांधीजी को व्याप्त मानते हैं। कहते हैं-हे बापू! तुम मृत्युंजय महाकाल सद्धश हो, तुम वज्र के समान अस्थियों वाले, बल निधान हो तथा कलियुग के दधीचि हो, तुम हरिशचंद्र से दृढ-व्रती तथा बोधिसत्व से निर्मोही हो। तुम सन्यासी हो, महान यती हो, अजर-अमर हो। तुम कर्मवीर हो। तुम स्थित प्रज्ञ हो, सत्यवादी हो, देवदूत हो। तुम शान्ति के प्रदाता हो। तुम महायज्ञ हो। तुम निर्भय हो। तुम राम व कृष्ण के समान हो। तुम धर्म के ध्वजाधारी हो। तुम ऋषि वसिष्ठ हो। तुम क्षीण एवं शस्त्र हीन होने पर भी अति बलवान हो। तुम दुर्जन हो। दीनबन्धु और सत्य के समुद्र हो। तुम सत्याग्रह रूपी नवीन ''शर'' के सृजन हार हो। तुम सत-चित और आनंद हो। हे बापू! तुम को मेरा नमन स्वीकार हो।

गीत-तीन

तुम मृत्युन्जय,
तुम कुलिश अस्थि,
तुम बल निचय,
तुम युग के पावन दधीचि,
तुम हरिश्चन्द्र से दृढ व्रती,
तुम बोधिसत्व से निर्मोही,
तुम सन्यासी,
तुम महायती,
तुम अव्यय ,
तुम अजर अमर,
तुम कर्मवीर,
तुम स्थित प्रज्ञ,
तुम सत्य दूत,
तुम देव पूत,
तुम शान्त दान्त,
तुम महायज्ञ,
तुम निर्भय,
तुम कृष्ण चन्द्र श्री राम चन्द्र,
तुम धर्म निकेतन,

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तुम वसिष्ठ,
तुम क्षीण काय शास्त्रास्म हीन फिर भी
तुम हो अतिबलिष्ठ,
तुम दुर्जय, तुम दीन बन्धु, तुम सत्य सिन्धु,
तुम सत्याग्रह शर सृजन हार,
तुम सत, तुम चित, तुम आनंद,
तुम को बापू नमस्कार।

हे बापू! तुम्हारे चरण कमलों में सेंकड़ों बार प्रणाम करते हुए तुम्हारी वंदना करता हूँ। हे भगवान! इस संसार में जितने महिमावान मानव और देव हुए हैं तुम उनके समान ही गुणों की खान थे। तुम सतचित्, आनंद एवं अप्रतिम रूप में उत्पन्न हुए थे। तुम शान्ति यज्ञ के अर्ध्य और विश्व शांति के दूत थे। तुम षड्रथ के प्रलयकार सृष्टा और संसार के इष्ट थे। तुम विष्णु तुल्य पालक और देवों में मृत्युंजय महादेव थे। अविनाशी परमात्मा भी साकार रूप में तुम में अवतारित हुआ। तुम अविचल, एक निष्ठ और भारत के प्रेरणाधार थे। ध्रुव, प्रहलाद, कृष्ण, बलि, वामन, अम्बरीष, शुकदेव और व्यास सब के पुण्यों का तेज तुममें दिखाई देता था। तुम शंकर रामानुज और वल्ल्भाचार्य सदृश थे। तुम वैष्णव, शैव और शाक्त मतों के सच्चे आर्य थे। तुममें प्रताप की ज्योति के दर्शन होते थे। हे बापू! तुममें शिवाजी की ज्योति उद्भासित थी। हे बापू! तुममें गुरू गोविंद सिंह का रक्त प्रवाहित था क्योंकि तुम सदैव भारत और भारतियों की संस्कृति में अनुरक्त रहे। तुम काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर आदि षड्रिपुओं के त्यागी बन, बीत रागी बने रहे। हे विदेह! मैं तेरे चरणों में बारम्बार प्रणाम करता हूँ, तुम भारत भूमि के पूर्ण अवतारी बापू थे। श्री गणेश दत्त शर्मा ''इन्द्रजी'' ने इन्हीं शब्दों में गांधी गुणगान करके उन्हें अपनी भाव भीनी श्रद्धाँज्जलि अर्पित की है।

गीत-चार

गांधी गुणगान

जितने जग के महा महिम मानव महात्मा देव।
विद्यमान थे सबके तुम में गुण स्वभाव स्वय मेव।
तुम सत तुम चिदानन्द तुम अप्रमेय संभूत।
शान्ति यज्ञ के अद्धर्यू तुम विश्व शान्ति के दूत।
तुम प्रलयकार शड़रथे स्त्रष्टा थे जग के इष्ट।
विष्णु तुल्य पालक थे तुम थे मृत्युन्जय देव वरिष्ठ।
ईश्वर बन मानस आया था अविनश्वर साकार।
अविचल एक निष्ठ सुंसंस्थित भारत प्राणा धारा।
ध्रुव, प्रहलाद, वेणु, बलि, वामन, अम्बरीष, शुक, व्यास।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सबके पुण्य तेज का तुममें दिखता था आभास।
तुम शंकर थे तुम रामानुज तुम वल्लभ आचार्य।
तुम वैष्णव थे शैव शक्ति थे सच्चे आर्य।
तुममें बापू जाग रही थी वह प्रताप की ज्योति।
तुममें बापू उदभासित थी वीर शिवा की ज्योति।
तुममें बापू व्यापक था गुरू गोविन्द का रक्त।
भारत भारतीय संस्कृति में सदा रहें अनुरक्त।
वीतरात्र तुम बीत क्रोध मद भत्सर गत निष्काम।
हे विदेह तेरे चरणों में बारम्बार प्रणाम।
तुम थे भारत भू के बापू पूर्णश अवतार।
तू तेरे पाद पद्म में भगवन है प्रणाम शतबार।

कविवर इन्द्रजी गांधीजी का स्मरण करते हुए दोहा छंद में अपनी भावान्जलि अर्पित करते हैं कि हे बापू! आप दिव्य ज्ञान का प्रकाश लेकर इस देश में अवतरित हुए। और इस पृथ्वी और आकाश को आलोकित कर गये। आप अपने हाथों में स्वतंत्रता की मशाल लेकर उत्पन्न हुए और उसमें घर-घर स्वतंत्रता की ज्योति जगाकर अज्ञानांधकार एवं परतंत्रता की बेड़ी रूपी समस के जाल को काट गये। हे गांधीजी! आप हमें अहिंसा की ऐसी ढाल सोंप गये कि जिससे जीवन भर लड़ते रहो, कभी बाल भी बांका नहीं हो सकता। गांधीजी देश को स्वतंत्र करने के लिए उत्पन्न हुए और मानव मानव, भाई-भाई का एकता रूपी मंत्र सिखा गये। गांधीजी इस देश में दूत बनकर उभरे, जिन्होंने छुआ-छूत का भूत मार भगाया। गांधीजी भारत मां के एक ऐसे लाल थे, जिन्होंने सत्य की तलवार हाथों में थामकर असत से लोहा लिया। गांधीजी भारत भूमि में व्याप्त साम्प्रदायिकता को देखकर अति दुखी रहे। इसीलिए वे कहते थे कि ईश्वर और अल्लाह एक है। हिन्दू-मुस्लिम सब भाई-भाई हैं। गांधीजी हरिजनों का कार्य अपने हाथ में लेकर स्वयं हरिजन बन गये। उस समय जो दलित वर्ग मृत प्रायः था उसमें प्राणों का संचार किया। गांधीजी इस देश में पुण्य और प्रेम के अवतारी पुरूष के रूप में उत्पन्न हुए थे। उनके चरण कमलों में कवि का शतशः नमन स्वीकार हो।

गीत-पाँच

श्री गांधी स्मरण

गांधी आये देश में लेकर दिव्य प्रकाश।
आलोकित वे कर गयें भूमि और आकाश।
गांधी आये थे यहाँ लेकर हाथ मशाल।
घर-घर ज्योति जगा गये मिटा गये तम जाल।
गांधीजी दे गये हमें सत्य अहिंसा ढाल।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इसको ले लड़ते रहो होय न बांका बाल।
गांधी आये हिन्द में करने देश स्वतंत्र।
मानव मानव एक हैं सिखा गये यह मंत्र।
गांधी थे इस लोक में देव लोक के दूत।
मार भगाया देश से छुआ छूत का भूत।
गांधीजी बस एक थे भारत मां के लाल।
लोहा लिया असत्य से लिये सत्य करवाल।
गांधीजी थे अति व्यथित साम्प्रदायिकता देख।
इसी लिए वे कह गये ईश्वर अल्लाह एक।
गांधीजी हरिजन हुए कर हरिजन संत्राण।
दलित वर्ग मृत प्रायः था फूंके उसमें प्राण।
गांधी थे इस देश के पुण्य प्रेम अवतार।
उनके चरण सरोज पर है प्रणाम शतबार।

एक और गीत काव्य बापूजी के महाप्रमाण पर लिखा गया है। श्री इन्द्रजी कहते हैं हे विश्व देव मृत्युंजय बापू! तुम्हारा महाप्रयाण भी मुरदों में नवजीवन और नवप्राणों का संचार कर गया है। हे देव! आपने इस संसार में साधुओं का परिमाण बढ़ाने और असाधुओं के दुष्कृत्यों को मिटाने के लिए अपना बलिदान दिया। हे बापू! तुम अपने प्राणों की आहुति देकर इस काल के दूसरे दधीचि बन गये। तुमने साम्प्रदायिकता रूपी वृत्रासुर को मृत प्राय कर दिया था। राजा शिवि और हरिश्चंद की गाथाएं भी आज निष्प्राण साबित हो रही है। तुम गीता के गायक भगवान कृष्ण के दास बनकर रहे। और हमें कर्म योग का ज्ञान कराया। भगवान बुद्ध का अहिंसा रूपी अस्त्र सत्य के चाप पर संधान किया। और इस कलि काल के महासमर में निर्भय होकर कूद पड़े। घमासान युद्ध किया। इसी कारण विजयश्री ने भारत में स्वतंत्रता का आव्हान किया। हे बापू! तुम्हारा किया हर व्रत और अनुष्ठान पूर्ण होता दीखता है। जिस प्रकार भृगु ऋषि की एक लात अपने वक्षस्थल पर खाकर विष्णु महान बने, उसी प्रकार तुमने तो तीन गोलियाँ अपनी छाती पर झेलकर अपनी महानता का परिचय दिया।

गीत-छह

विश्व देव मृत्युन्जय बापू तेरा महा प्रमाण।
फूंक गया मुर्दों में भी नवजीवन नवप्राण।
देव जगत में करने आये सत्तों का परित्राण।
और मिटाते दुष्कृत्यों को स्वयं हुए बलिदान।
तू दधीचि बन गया दूसरा देकर अपने प्राण।
वृत्र साम्प्रदायिक को तूने कर डाला प्रिय माण।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

शिवि हरिश्चन्द्र की गाथाएँ भी हुई आज निष्प्राण।
दिखा दिया है राम राज्य का हमको स्वर्ण विहान।
गीता गायक मोहन का तू बनकर दास महान।
कर्म योग हमें कराया बापू तू-ने ज्ञान।
बुद्ध देव का शस्त्र अहिंसा सत्य चाप संधान।
कूद पड़ा निर्भय तू रण में मचा दिया घमासान।
विजय श्री ने स्वतंत्रता का भारत में आव्हान।
किया और पूरण होता है तेरा व्रत-अनुष्ठान।
भृगु की लात एक ही खाकर विष्णु बने महान।
पर तूने तो तीन सही है गोली छाती तान।

- बापू का आदेश था कि भारत का नारा पंचशील है और उसी से मानवता की वाणी गूँज सकती है। इसी पंचशील के नारे से विश्व शान्ति कायम हो सकती है और हमारे जीवन का उद्देश्य पूर्ण हो सकता है। उन बलिदानियों का यह दिन हमें याद दिलाता है कि बापू अमर है, वीर है, और उनके इसी कृतित्व के आगे हमारा मस्तक झुक जाता है। वह स्वर्ग में बैठा अपनी अभय दानी मुद्रा में हाथ ऊँचा किये कह रहा है कि तुम अपने चरणों को अपने निर्दिष्ट पथ कि ओर सतत् आगे बढ़ाते चलो। और सत्य अहिंसा के मार्ग पर चलते रहो। यह पुण्य पर्व पर की जाने वाली वीरों की प्रतिज्ञा है। इस पर बलिदानियों को बलि चढ़ाते रहना चाहिये।

गीत-सात

गूंजी मानवता की वाणी,
पंचशील भारत का नारा,
विश्व शांति से हो सकता है,
पूर्ण आज उद्धेश्य हमारा।
बलिदानी वीरों का यह दिन,
हमको याद दिलाता ,
अमर वीर बापू की स्मृति में,
मस्तक हे झुक जाता।
देखो वह संदेश स्वर्ग से,
देता निज हाथ उठाये,
लक्ष्य निकट है बढ़े चलो,
तुम अपने चरण बढ़ाये।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सत्य अहिंसा के पथ पर हम,
अपने कदम बढाये,
पुण्य पर्व की वीर प्रतिज्ञा,
पर बलिदानी बलि जायें।

श्री इन्द्रजी अपने एक और गीत ''श्रद्धा के दो फूल'' में काव्यान्जलि अर्पित करते कहते हैं हे प्रभो! तुम्हारी गाथा लिखकर मैं ही नहीं इतिहास भी धन्य हुआ। क्योंकि स्वर्ण पत्र पर अमृत रूपी स्याही से अक्षर अंकित कर के वाग्देवी सरस्वती ने अपनी वीणा के तारों को झंकृत किया है। और सुमधुर वाणी से उनका यशोगान गाया है। मैं भी उनके श्री चरणों पर श्रद्धा के दो सुमन चढ़ाता हूँ।

हे गांधी बाबा! तुम उग्र तपस्वी हो, असि के समान तीक्ष्ण व्रत को धारण करने वाले हो। सत्य, अहिंसा, दया और क्षमा के तुम अवतारी हो। तुम को देख ऐसा लगता है, जैसे दूसरी बार भगवान बुद्ध ने ही इस जगत में जन्म ले लिया हो। और अपने स्वतंत्र विचारों और कार्यों से भारत को फिर से ज्ञान से आपूरित किया है। गांधीजी ने इस विश्व को ईश्वर मय जानकर समग्र मानवता से प्रेम करना सिखाया। इसीलिए कि उन्होंने महावीर, सिद्धार्थ और ईसा के रूप में भारत भूमि पर अवतार लिया था।

गीत-आठ

''श्रद्धा के दो फूल''

धन्य हुआ इतिहास तुम्हारी गाथा लिखकर।
कनक पत्र अमृत मासि से लिपि अंकित कर।
वाग्देवी ने उसे संजोया निज वीणा पर।
यशोगान हे किया तुम्हारा सुमधुर स्वर।
मैं भी उनके चरण पर श्रद्धा के दो फूल हूँ।
अर्पित कर सिर रख रहा गांधी पद की धूल हूँ।
हे गांधी तुम उग्र तपस्वी असिव्रत धारी।
सत्य, अहिंसा, दया, क्षमा के तुम अवतारी।
लगता जैसे बुद्ध जगत में फिर से आया।
निज स्वतंत्रों का भारत को फिर ज्ञान कराया।
ईश्वर मय जन जानकर उसे विश्व से प्यार था।
महावीर, सिद्धार्थ वह ईसा का अवतार था।

एक और आव्हान गीत का सार यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है। इसके रचियता हिन्दी और संस्कृत साहित्य के प्रख्यात

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

साहित्यकार डॉ. प्रभु दयाल अग्निहात्री हैं। वे कहते हैं-आज एक और नक्षत्र भारतीय आकाश से टूटकर अंतरिक्ष में विलीन हो गया। लगा जैसे किसी ने कल्पना के वक्ष पर तीर मार दिया हो। हमारी भारती की वाटिका का अधखिला पुष्प फिर से नियति के क्रूर हाथों टूटकर गिर पड़ा है। लगता है हमारी आस्था का चरण जो आगे बढ़ रहा था वह लड़खड़ा गया है। आज प्रकाश की किरण ने फिर से तम के द्वार के सम्मुख मस्तक झुका दिया है।

हे बापू! तुम आरोह के स्वरों को अधूरा ही छोड़कर चल दिये हो। ऐसा कौन विपंची है जिसके स्वर भंग की याद आई और चल दिये। तुम्हें भारत माता की सिंदूरी मांग भी बांध न सकी अरे प्रशासन के निरंकुश देवता क्या तुम्हारे कोश में सहृदयता नामक शब्द भी है? हे लोक का कल्याण करने वाले प्रशासन! हर ओर तुम्हारी दुहाई दी जा रही है कि तू जनजन को फिर से मिल जायें क्या इसी के लिए राष्ट्र ने अखंडता की धूनी नहीं रमाई थी?

हे अहिंसा के व्रती पूज्य बापू! बस एक बार अपना मौन खौल दो। बापू की चिता के भस्मी कणों उठो। कुछ तो अपने मुख से बोलो। क्या इसी के लिये तुमने अपना सर्वस्व न्यौछावर किया था। गीत में श्रद्धान्जलि के शब्द पूज्य बापू के त्याग और बलिदान की ऐसी कहानी कहते प्रतीत हो रहे हैं जिनके बिना हमारी अस्मिता मूक सी हो गई है।

गीत-नौ

आज फिर टूटा गगन से एक तारा।
फिर किसी ने कल्पना के वक्ष पर ज्यों तीर मारा।
भारती की वाटिका का अर्ध पुष्पित मुकुल टूटा।
फिर नियति ने साधना की गोद का शृगांर लूटा।
आज आस्था का चरण बढ़ता हुआ फिर लड़खड़ाया।
ज्योति ने फिर आज पत के द्वार पर मस्तक झुकाया।
ओ परिचित गीत मेरे—-
चल दिये तुम छोड़कर आरोह के भी स्वर अधूरे।
किस विपंची की त्वरित स्वर मूर्च्छना की याद आयी।
जो सिंदूरी मांग थी पलभर न तुमको बांध पायी।
ओ प्रशासन के निरंकुश देवता।
क्या तुम्हारे कोष में है शब्द सहृदयता।
उपकरण बनकर किसे तुम बन गये फिर साध्य।
और बनते जा रहे हो आज परमाराध्य।
लोक कल्याणी प्रशासन हर तरफ तेरी दुहाई।
तू मिले क्या इसलिए थी राष्ट्र ने धूनी रमाई।

हे अहिंसा के व्रती बस एक बार जुबान खोलो।
उठो बापू की चिता के भस्म कण,
कुछ आज बोलो।
था इसी के हेतु क्या तुमने प्रथम सर्वस्व त्यागा।
और फिर इसके लिए ही था हमारा सीस मांगा।
ओ पुरातन देश मेरे।
क्या यही है भाग्य लिपि के अंक तेरे।
चोंच खोले गीध निर्भय न्याय तोलें।
जय अहिंसा की उलूक श्रृंगाल बोलें।
बूध पर विषधर पले फन-फन फनायें,
पातकी दो जल कणों को गिड़गिड़ायें,
पाठ गीता का सदय बगुले पढ़ाये,
और पिंजरें में पड़ी हौं सारिकायें।

एक और लम्बे गीत में कवि इन्द्रजी ने पूज्य बापू के महाप्रयाण पर अपनी श्रद्धाँन्जलि अर्पित करते हुए उनकी विभिन्न ''विशेषणों'' के माध्यम से अभ्यर्थना की है। कहते हैं-हे बापू! तुम तो भगवान विष्णु से भी बड़े हो। क्योंकि भगवान विष्णु ने तो भृगु ऋषि की एक ही लात अपने वक्षस्थल पर खाई थी किन्तु तुमने तो अपनी छाती पर तीन तीन गोलियों के आघात सहन किये हैं।

हे बापू! तुम तो दधीचि से भी महान हो। क्योंकि दधीचि तो अपनी अस्थियों का दान इन्द्र को देकर दानी बने किन्तु तुमने तो भारत के हितों के लिये अपना दुर्बल गात ही न्यौछावर कर दिया। हे बापू! शिवि राजा बड़े शरणागत वत्सल थे इसीलिए उनका नाम अजर-अमर हुआ। किन्तु तुम तो शरण में आये मानवों के आश्रय दाता थे।

हे बापू! हरिश्चंद्र तो सत्यवादी होने से अमर हुए किन्तु तुम तो सत्याग्रह के ही सृष्टा थे।

हे बापू! रघुपति राजा राम ने तो भारत को राक्षसों से रहित किया किन्तु तुमने उद्दण्ड ब्रिटिश राज्य को ही भारत से उखाड़ फेंका।

हे बापू! हनुमान तो वन में रामचंद्रजी से मिलकर उनके भक्त बनें, किन्तु तुम तो राम के आजीवन भक्त बने रहे और ''राम'' कहते कहते ही अपने प्राणों का उत्सर्ग किया। हे बापू! भीष्मपितामह ने तो ब्रहमचर्य व्रत धारण करने से बड़ा सम्मान पाया। किन्तु तुमने तो अपनी पत्नी को ही पूज्या माता के समान माना।

हे बापू! धर्मराज ने तो दुर्योधन को सुयोधन नाम दिया किन्तु तुमने तो जिन्ना का नाम ''कायदे आजम'' रखा।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हे बापू। कृष्ण ने तो गीता के बल पर सामंतवाद का अंत किया किन्तु तुमने तो कुछ ही अध्यायों के बल बूते पर भारत को स्वतंत्र करवा दिया।

हे बापू! गौतम बुद्ध तो अपनी दया और क्षमा के प्रसार के कारण महान बने किन्तु तुम तो राग, द्वेष, मद, मोह और लोभ से रहित हो हमेशा शुद्ध बने रहे।

हे बापू! वर्द्धमान महावीर तो अहिंसा परमोधर्म के संस्थापक हो अरिहन्त कहलाये। किन्तु तुम तो सत्य और अहिंसा के आलोक से दिगन्त व्यापी हो गये।

हे बापू! सुकरात ने तो सत्य तत्व विज्ञान के लिए विष पान किया किन्तु तुमने तो मानवता का पाठ पढ़ाते हुए ही अपना शरीर त्याग किया।

हे बापू! ईसा तो दया प्रेम की बलिदेवी पर क्रास पर चढ़े थे। किन्तु तुम्हें तो सत्य,अहिंसा, दया और प्रेम ही सर्वदा अभीष्ठ रहे।

हे बापू! हजरत मोहम्मद ने तो दीनों की सेवा करके बंधुत्व की शिक्षा दी, किन्तु तुमने तो हरिजन के लिए स्वयं ही हरिजन बनें और गूढ़ ज्ञान से लोगों का साक्षात्कार करवाया।

हे बापू! मन्सूर तो ''अनहलक'' कहते ही सुली पर चढ़ा दिये गये थे किन्तु तुमने तो राम नाम का जाप करते हुए ही मरण को अपना लिया।

हे बापू! तेग बहादुर ने सिक्ख धर्म के लिये अपने प्राणों की आहुति दी किन्तु तुमने तो ठेठ विश्व धर्म के प्रतिपादक होकर अपना उत्सर्ग किया।

हे बापू! दयानंद तो सामाजिक और धार्मिक सुधार में लीन रहे किन्तु तुम तो सार्वकालिक क्रांति के सृष्टा बने रहे।

हे बापू! दास प्रथा का बंधन तोड़ने में लिंकन ने प्राणाहुति दी किन्तु तुमने तो साम्प्रदायिकता की जड़ पर ही प्रहार किया।

हे बापू! लेनिन जैसे वीर तो समाजवादी प्रजातंत्र के पोषक रहे किन्तु तुम्हारे गांधीवाद में तो वे सभी वाद वैसे ही समाहित हुए है जैसे दूध में पानी।

हे बापू! ट्राटस्की ने बोल्शेविक क्रांति में अपने प्राण दिये। किन्तु तुमने तो धर्मों के बाह्य आडम्बर का भेद मिटाने में अपने ही प्राणों का उत्सर्ग कर दिया।

हे बापू! टाल्सटाय तो कृषक हितैषी होकर सबका सम्मान करते रहे किन्तु तुम्हारा तो वेश ही कृषक मय था और कृषक वर्ग के तो तुम प्राणों के ही समान थे।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गीत-दस

- तुम रमाकान्त

रमाकान्त ने खाई भृगु की एक वक्ष पर लात।
तुमने झेले तीन तीन है-गोली के आघात।
तुम दधीचि-
हुए अस्थि देकर सुरपतिको ऋषि दधीचि विख्यात।
भारत हित तुमने दे डाला दुर्बल निर्बल गात।
तुम शिवि—
शरणागत वत्सल थे शिविनृप अजरामर है नाम।
तुम बापू शरणार्थी जन के आश्रय थे अभिराम।
तुम हरिश्चन्द्र—
सत्यव्रती होने के कारण अमर हुए हरिश्चन्द्र।
तुम सत्याग्रह स्त्रष्टा थे अविचल और अमन्द।
तुम रामचंद्र—
निशिचर हीन किया भारत को रघुपति राजा राम।
ब्रिटिश राज भारत से तुमने उठा लिया उद्दाम।
तुम हनुमान—
रामचंद्र से वन में मिलकर भक्त बने हनुमान।
भक्त रहे जीवन भर तुमतो राम कहते गये प्राण।
तुम भीष्म देव—
भीष्म देव ने ब्रहमचर्य से पाया अति सम्मान।
तुमने अपनी पत्नी मानी पूज्या मातृ समान।
तुम धर्मराज-
धर्मराज ने दुर्योधन को कहा सुयोधन नाम।
रखा कायदे आजम तुमने जिन्ना का था नाम।
तुम कृष्ण चंद्र—
किया कृष्ण ने गीता के बल सामतंवाद का अंत।
कुछ अध्यायों के बल तुमने भारत किया स्वतंत्र।
तुम बुद्ध देव—
दया क्षमा के हुए प्रसारक महान गौतम बुद्ध।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

राग द्वेष मद मोह लोभ से बापू तुम थे शुद्ध।
तुम सुकरात—
सत्य तत्व विज्ञान हेतु विषपान किया सुकरात।
मानवता का तत्व सिखाते तुमने त्यागा गात।
तुम ईसा—
दया प्रेम की बलिवेदी पर क्रूस चढ़े थे ख्रीष्ट।
सत्य अहिंसा दया प्रेम थे तेरे नित्य अभीष्ट।
तुम मोहम्मद—
हजरत ने दीनों की सेवा सिखा दिया बंधुत्व।
हरिजन के हरिजन तुम बापू कितना गूढ़ गुरूत्व।
तुम मंसूर—
अनलहक कहने पर शूली चढ़ा दिये मन्सूर।
राम नाम जपते तुमको भी मरना था मंजूर।
तुम तेगबहादुर—
तेग बहादुर सिक्ख धर्म पर चढ़ा गये निज भेंट।
बापू तुमतो विश्व धर्म के प्रति पादक थे ठेठ।
तुम दयानन्द-
सामाजिक धार्मिक सुधार में दयानंद थे लीन।
चतुर्मुखी क्रान्ति के सृष्टा तुम थे पूर्ण प्रवीण।
तुम लिंकन-
दास प्रथा का पाश तोड़ने लिंकन हुए शिकार।
साम्प्रदायिकता की जड़ पर तुमने किया प्रहार।
तुम लेनिन-
समाजवादी प्रजातंत्र संस्थापक लेनिन वीर।
सभीवाद है गांधीवाद में ज्यों पानी अरूक्षीर।
तुम ट्राटस्की—
ट्राटस्की बोल्ठोविक क्रांति में खो बैठा निज प्राण।
धर्माडम्बर भेद मिटाते आप हुए बलिदान।
तुम टाल्स टाय—
कृषक हितैषी टाल्सटाय का सब करते सम्मान।

तुम थे कृषक वेषमय बापू कृषक वर्ग के प्राण।

एक और गीत काव्य में इन्द्रजी ने बापू के प्रति अपनी काव्यांजलि अर्पित करते हुए कहा कि हे बापू! वे लोग बड़ी भूल करते हैं, जो यह कहते हैं कि काल तुम्हें खा गया है। किन्तु सच तो यह है कि काल तुम जैसे मानव को खाकर इस संसार में अमृत तत्व को पा गया है।

आज तुम्हारा मोहन नाम अमर हो गया है। गांधी अमर हो गया है। और वह मृत्युंजयी बापू नाम भी अमर हो गया है। तुम अपनी पार्थिव देह को तजकर चिन्मय हो गये हो।

सत्य शिव और सुंदर भी तुम्हारे चरणगामी हो गये हैं। वे लोग भूल करते हैं जो यह कहते हैं कि काल ने तुम्हें खा लिया है।

तुम्हारा समुद्र के समान गांभीर्य आंका नहीं जा सकता। हिमालय के धैर्य से भी तुम्हारा अंकन नहीं हो सकता। पृथ्वी से अधिक तुम क्षमावान थे। जेल में अनशन रूपी हलाहल के कितने ही प्याले तुम पी गये थे। इसीलिए तुम्हारे धवल यश का प्रकाश इस ब्रहमांड में छाया हुआ है। वे लोग भूल करते हैं, जो यह कहते हैं कि काल तुम्हें खा गया। तुम दया के अवतार और अहिंसा व्रती थे। साबरमती सी भूमि तुम्हारी चरणरज को पाकर धन्य हो गई थी। उस समय भारत भूमि की दशा अहिल्या सम जड़ थी। किन्तु तुम्हारे चरण कमल को छूकर चैतन्य मयी हो गई थी। देवता भी स्वाधीनता रूपी वरदान तुममें पा गया है। लोग अक्सर कहा करते हैं कि तुम इस घर से चले गये हो पर मैं कहता हूँ कि जब आत्मा अमर है, उसका यश अमर है फिर उसका देह से क्या वासता रह जाता है।

हे बापू! तुमने अपने वक्ष-स्थल पर तीन गोली झेली और त्रिलोकी के स्वामी हो गये। मानो त्रिलकी विजय कर ली हो। तेरे चरणों का स्पर्श तो उस समय मृत्यु देव ने भी किया था। हे देव! देवलोक में इस प्रकार तुमने देवत्व का पद प्राप्त कर लिया। भूल करते हैं वे लोग जो यह कहते हैं कि काल ने तुमको खा लिया।

जब तक आकाश में सूर्य, चंद्र, नक्षत्र, और तारे प्रकाशमान है। जब तक देव नदी गंगा प्रवाहित है। जब तक हिमालय और विंध्य विद्यमान है। जब तक शरद, वर्षा, शिशिर, हेंमंत, ग्रीष्म और वसंत आदि ऋतुएँ इस पृथ्वी पर हैं, तब तक तुम्हारा अमल धवल यश इस दिग-दिगंत में व्याप्त रहेगा। वायु, पृथ्वी, आकाश, अग्नि और जल इन पाँच तत्वों की तो तुम भूमिका से बन गये हो। अर्थात् सर्वत्र तुम्हारा ही सम्राज्य फैला है। तब तुमको काल कैसे खा सकता है? काल तो स्वयं तुम्हें पाकर अमर तत्व को पा गया है।

गीत-ग्यारह

भूल करते जो कि कहते काल तुमको खा गया है।
काल तो पाकर तुम्हें अमृतत्व जग में पा गया है।
मोहन अमर, गांधी अमर, बापू अमर मृत्युन्जयी।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

त्याग पार्थिव देह को अब हो गये तुम चिंमयी।
सतय शिव सुंदर तुम्हारा चरणगामी हो गया है।
भूल करते जो कि कहते काल तुमको खा गया है।
आंकी नहीं जा सकती तुम्हारी जलधि से गंभीरता।
आंकी नहीं जा सकती हिमालय से तुम्हारी धीरता।
क्षमा में भी तुम धरा से अधिक क्षमता थे लिये।
जेल अनशन के हलाहल अनगिनत प्याले पिये।
धवल यश आलोक अब ब्रहमांड में भी छा गया है।
भूल करते जो कि कहते काल तुमको खा गया है।
दया के अवतार थे तुम थे अहिंसा के व्रती।
चरणरज पाकर तुम्हारी धन्य थी साबरमती।
अहल्या सी उपज-जड़ भूमि भरत की हुई जब।
चरण पंकज छू तुम्हारे चेतनामय हो गयी तब
स्वाधीनता वरदान यह देव तुमसे पा गया है।
भूल करते जो कि कहते काल तुमको खा गया है।
लोग कहते हैं कि तुम हो चल दिये इस गेह से।
आत्मा अमर यश हे अमर फिर वास्ता क्या देह से।
तीन गोली झेलकर त्रय लोक विजयी तुम हुए।
मृत्यु ने भी उस समय तब चरण थे तेरे छुए।
सुर लोक में भी देव, तुमने देवत्व पद को पा लिया है।
भूल करते जो कि कहते, काल तुमको खा गया है।
जब तक गगन में सूर्य, शशि, नक्षत्र, तारे हैं प्रकाशित।
जब तक हिमालय विंध्य गिरि है और सुरसरिता प्रवाहित।
जब तक शरद, प्रावृद, शिशिर, हेमंत ग्रीष्म वसंत है।
जब तक तुम्हारा अमल यश परिव्याप्त भुवन दिगंत है।
अनिल, क्षिति, नभ, अलन, जल की भूमिका तू बन गया है।
भूल करते जो कहते कि, काल तुमको खा गया है।
काल तो पाकर तुम्हें, अमृतत्व जग में पा गया है।

अपने गीतिकाव्य में श्री रमेश कुमार रायकवार ने भी लिखा है। आपने अपने देश की महानता का चित्रण करते हुए बापू के विराट व्यक्तित्व को उभारने का प्रयास किया है। कहते हैं मेरे देश के उस बूढ़े आदमी को गीत गाने की तो

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ठीक बोलने की भी स्वतंत्रता नहीं थी। वह लाठी के सहारे खड़ा था। बंदूकों और लाठियों का घेरा उसके चारों ओर अड़ा था। तब भी वह गा रहा था। लोग उसकी जबान बंद कर देना चाहते थे। लोगों ने उसकी झोपड़ी और लंगोटी का भी घेराव कर लिया था। कवि कहता है कि एक दिन मेरे देश के आका गरीबों को ढूंढने हवाई जहाज पर बैठकर निकले। सारा देश छान मारा पर कोई ना मिला। अपने देश में एक बूढ़ा (गांधी) इतना प्रसिद्ध हो गया कि उसकी मृत्यु के कई माहों के उपरांत आज भी लोग सच बोलने के लिए उसके नाम की झूठी कसमें खाते हैं। और प्रत्येक शुभ-अशुभ कार्य करने से पूर्व उनकी समाधि पर अगरबत्ती लगाकर अपने कार्य को शुभ समझने का स्वांग रचते हैं।

गीत-बारह

अरे कौन कहता है कि,
पशु पक्षियों की तरह,
इन्सान नहीं खरीदे जाते मेरे देश में,
मैंने तो इन्सानों को घर भेदी बनते देखा है।
सड़कों पर क्रांति का गीत गाने वाले,
एक बूढ़े आदमी को,
लोगों ने जबरदस्ती खरीदना चाहा था।
और अभी भी बोलियाँ लग रही है।
मेरे देश का वह बूढ़ा आदमी,
बहुत कीमती चीज है।
पहले तो उस बूढ़े को,
गीत गाने की कौन कहे।
बोलने की भी मनाई थी।
लेकिन उस अशक्त आदमी ने गीत गाया,
उस बूढ़े के पैर कांप रहे थे।
वह लाठी के सहारे खड़ा था।
ओठों पर ठंडक छाई थी।
बन्दूकों और लाठियों का घेरा,
उसके चारों और अड़ा था।
तब भी वह बूढ़ा बीच चौराहे पर,
गीत गाता रहा, गाता रहा।
लोगों को उस बूढ़े का गाना,
बहुत पसंद आया।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इतना पसंद आया कि,
बंदूक और लाठियों का घेरा तोड़कर,
लोग उसके करीब आ गये,
बहुत करीब आ गये,
फिर उस बूढ़े को खरीदने के लिए,
बोलियाँ लग ने लगी।
उसकी जबान बंद कर देना चाहते थे,
बढ़-बढ़कर बोलियाँ बोल रहे थे,
बहुत अजीबो गरीब हे ये मेरा देश,
यहाँ पर झगड़े होते हैं तो,
नमक तेल मिर्ची से लेकर,
झोपड़ी और लंगोट तक,
एक बूढ़े साधू की झोंपड़ी का,
घेराव कर लिया था,
कुछ सिपह-सालारों और राजा ने,
बेचारे साधू के पास क्या था।
लेकिन राजा अड़े थे कि,
साधू से आशीर्वाद लेंगे
उस साधू की झोंपड़ी को पवित्र स्थान मानकर,
वहां एक स्मारक बनाऐगें।
बेचारा साधू अभी तक पशोपेश में हैं,
वह सोच रहा कि वह झोंपड़ी में रूके या भाग जाए,
एक दिन मेरे देश के आका,
गरीबों को ढूँढने निकले,
हवाई जहाज पर बैठकर उन्होंने,
सारा देश छान मारा,
उन्हें कोई गरीब नहीं मिला,
तब उन्होंने अपने नौकर को आदेश दिया,
इस देश का नया इतिहास लिखो,
कि अमुक सन में मरा कोई गरीब था,
यहाँ पर एक बूढ़ा इतना,

प्रसिद्ध हो गया कि उसकी,
मृत्यु के कई मासोपरान्त
आज भी लोग सच बोलने के लिए,
उसके नाम की झूठी कसमें खाते हैं,
और प्रत्येक शुभ-अशुभ कार्य करने से पूर्व,
उसकी समाधी पर–
दो अगरबत्ती लगाकर,
अपने कार्य को शुभ समझने का,
स्वांग रचते हैं।

हास्याचार्य कुंज बिहारी पाण्डेय ने अपने एक काव्य में उल्लेख किया है कि हे भाई अगर तुम गांधीजी का काम न कर सको तो उनका नाम लेकर दुहाई मत दो। गांधीजी मरते मरते भी जो कांम कर गये हैं, वह हम जीते जी भी नहीं कर पा रहे हैं। पहिले तुम पेड़ लगाओ फिर उसके आम खाने का यत्न करो। हमारे बुजुर्गों ने जो पेड़ लगाये थे। हे साथी! तुम उनके आम बहुत दिनों तक नहीं खा सकते। गांधीजी की कथनी और करनी एक समान ही थी। कल जो वह कहते गये उसमें आज भी जन कल्याण का भाव दिखाई देता है। गांधीजी की तुम न तो पूजा करो, न मानो किन्तु जो उन्होंने कहा है उसे ही मानो। इससे बड़ी पूजा गांधी की दूसरी हो ही नहीं सकती। यदि गांधीजी का जीवन दर्शन ही हमारा ध्येय है तो अन्य राष्ट्रों की दौड़ में हमारी अपनी गति मन्द हो ही नहीं सकती।

गीत-तेरह

नाम गांधी का न लो भाई।
अगर तुम काम गांधी का न करते।
हम न जीतेजी उसे कर पा रहे हैं।
काम गांधी कर गया जो मरते मरते।
पेड़ पहिले लगाओ, फिर आम खाओ।
बुजुर्गों ने जो लगाये पेड़–
साथी आम उनके तुम बहुत दिन खा न सकते।
उसके जीवन में-
कि जो करनी, वही कथनी रही थी।
है कि जन कल्याण उसमें आज भी,
जो बात कल उसने कही थी।
गांधी की मत करो पूजा, न मानो।
कहा उसने, उसे मानो।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कभी इससे बड़ी पूजा,
गांधी की हो न सकती।
गांधी दर्शन हमारा ध्येय है तो-
राष्ट्रों की दौड़ में,
गति मंद अपनी हो न सकती।

श्री मानसिंह राही जनवादी क्रांतिदर्शी कवि एवं गीतकार हैं। आपके आव्हान गीत में हमें क्रांति का आमंत्रण मिलता है। वे असंतुष्ट पीढ़ी के नाम अपना संदेश देते हुए कहते हैं। कि हे नौजवानों! हे युग के निर्माताओं! तुम्हें मैं परिवर्तन के लिए आव्हान करता हूँ। जन जीवन पर कब तक अभाव के काले बादल मंडराते रहेंगें। ये मुठ्ठी भर लोग (अंग्रेज) कब तक करोड़ों मानवों के अधिकार छीनते रहेंगे। ये जात पांत, ये छुआछूत के भेद भावों की दीवारें, ये फटे कपड़ों में लिपटे शरीर की चीत्कारें, महल और झोपड़ों के अंतर का वर्ग-संघर्ष कब तक चलता रहेगा?

ये प्रांतवाद, क्षेत्रवाद की विघटनकारी आंधियां, ये आगजनी, हिंसा दंगे आदि पागलपन, कब तक चलते रहेंगे। तुम गणेश शंकर विद्यार्थी और हमीद के उस गर्म खून को याद करो, जिस पर पूज्य महात्मा गांधी ने अपने प्राणों का उत्सर्ग किया। तुम उस मानवता पर उत्सर्ग करो। तुम्हें राज घाट की कसम है। गंगा-जमना भी तुम्हें क्रांति के लिए पुकार रही है। आज भी असंतोष उभर रहा है। इस लोकतंत्र में परदेशी पूंजी की नागिन लिपट रही है। हे नौजवानों! तुम्हें इस समग्र क्रांति के लिए मैं आव्हान करता हूँ।

गीत-चौदह

ओ नौजवान युग के निर्माता तुम्हें क्रांति का आमंत्रण
परिवर्तन का आव्हान।
कब तक अभाव के काले बादल जन जीवन पर छायेंगें।
ये मुद्ठी भर लोग करोड़ों के अधिकार छिनायेगें।
ये जात-पांत, ये छूत-छात, ये भेद भाव की दीवारें।
ये फटे चीथड़ों के अंदर लिपटे शरीर ये चित्कारें।
ये महल झोंपड़ों के अंतर, ये दो वर्गों को संघर्षण।
ओ नौजवान युग के निर्माता—
ये प्रांतवाद, ये क्षेत्रवाद, ये उठी आंधियाँ विघटन की।
ये आगजनी, हिंसा, दंगे, ये घटनाएँ पागलपन की।
वो गणेश शंकर वो हमीद के गर्म खून को याद करो।
जिस पर गांधी ने प्राण दिये उस मानवता पर जियो-मरो।

हे राजघाट की कसम तुम्हें आवाज लगाती गंग-जमन।
ओ नौजवान युग के निर्माता—
ये असंतोष की लपटों में जल जाती है ट्रामें रेलें।
ये नई पीढ़ियां अंगारों का खेल कहाँ तक खेलें।
हां यह सच है मुक्त राष्ट्र में युवा धर्म को काम नहीं।
यह भी सच है अर्थ तंत्र की अपने हाथ लगाम नहीं।
यह लोकतंत्र में लिपट रही परदेशी पूंजी की नागिन।
ओ नौजवान युग के निर्माता—

श्री सरदार सोहन सिंह बुक सेलर इन्दौर द्वारा प्रकाशित गीतों की एक पुस्तिका में गांधी दर्शन पर आधारित राष्ट्र गीत मिला है। इसमें नौजवानों को संबोधित करते हुए गीतकार कहता है कि हे नौजवानों उठो और फूलों से भरे हुए भारत रूपी नंदन से काँटों को दूर कर दो। सारे विदेशी जाल को तोड़कर देश को अपना बना लो। देखो कहीं अपना स्वप्न अपूर्ण न रह जाये। जो दीपक अपने घर को ही जलादे उसे बुझाना ही ठीक है। हम भारत वासी दुनिया के सम्मुख क्यों शर्मिन्दा हों। यदि देश के खातिर हमें प्राणोत्सर्ग भी करने पड़े तो उसके लिए हमें सर्वदा तैयार रहना चाहिये। हमारे साथ जवाहर लाल जो की हिम्मत तथा बापूजी की देश भक्ति है। अतः हमें चाहिये कि देश का तिरंगा सारे संसार में ऊंचा ही रखें। इसकी शान बनी रहे।

गीत-पन्द्रह

नौजवानों भारत की तकदीर बना दो।
फूलों के इस गुलशन से कांटों को हटा दो।
तोड़ के सारे जाल विदेशी करलो देश अपना।
रह न जाये देखो अधूरा कही वो सुंदर सपना
घर में आग लगाए जो दीपक उसको बुझा दो।
फूलों के इस गुलशन से-
हम भारत के वासी क्यों हो दुनिया में शर्मिन्दा।
देश के कारण मौत भी आए फिर भी रहेंगे जिंदा।
जय जय के नारों से धरती को हिला दो।
फूलों के इस गुलशन से-
अपने साथ कैसे कैसे बलवानों की शक्ति।
देश का झंडा जग में ऊँचा करके दिखा दो।
फूलों के इस गुलशन से कांटों को हटा दो।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हिन्दी के सुप्रसिद्ध गीतकार श्री छैल बिहारी गुप्त का एक सुंदर गीत है। इसमें गांधी स्तवन तो हैं ही भारत माता के प्रति विनत वन्दन भी अभिव्यक्त हुआ है। सागर की लहरें उनके चरण पखार रही है। गंगा, यमुना, कृष्णा और कावेरी जैसी नदियों से कल-कल की ध्वनि गूंज रही है। इसकी रक्षा के लिये हिमालय खड़ा है। अरावली पर्वत से हर समय हर हर की प्रतिध्वनि गूंजती रहती है। इसके पुष्पों से लदे नंदन अभिनव शोभावलि है। इसमें राम कृष्ण, गौतम और गांधी ने उत्पन्न हो हर युग की सीमाओं को बांधा है। जिसकी चाल में आंधी भरी है। ऐसे करोड़ों जन इस मातृभूमि की वंदना करते हैं।

गीत-सोलह

कोटि-कोटि नत शिर चरणों में करते अभिनंदन।
गूंज रहा कुण्ठा ध्वनियों का उठता नव वन्दन।
लहर लहर लहराता सागर
चरण धो रहा नित प्रति गति भर
गंगा, यमुना, महानदी, कृष्णा
कावेरी का कल कल स्वर।
तेरी माटी का मस्तक पर लगे आज चंदन।
कोटि-कोटि नत शिर चरणों में करते अभिनंदन।
इसका रक्षक खड़ा हिमालय,
फिर हमको किसका कैसा भय?
अरावली से उठता है स्वर,
अब भी हर हर महादेव जय।
नंदन वन भी न्यारे इसके कुसुमित कानन।
कोटि-कोटि नत शिर चरणों में करते अभिनंदन।
राम कृष्ण और गौतम गांधी
युग युग की सीमाएँ बांधी,
कोटि कोटि हम हैं इसके जन
भरी चाल में जिनके आंधी
हम दुश्मन पर छायेंगे बन महाप्रलय के घन।
कोटि-कोटि नत शिर चरणों में करते अभिनंदन।

एक छंद में युवा कवि शरद जोशी ने पूज्य बापू के प्रति विनम्र श्रद्धांजलि इस प्रकार अर्पित की है—

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गीत-सत्रह

गाँधी बाबा ने किया, भारत को आजाद।
सत्य अहिंसा ''अस्त्र'' का उनने किया ईजाद।
उनने किया ईजाद शान्ति-सुख दोनों भाई।
पर स्वतंत्रता के दुश्मन को रास न आई।
वज्रादपि कठोर हृदय था बधिक कसाई।
जिसने गोली धायं धायं कर तीन चलाई।
तपः पूत भारत का, विष्णु से बढ़कर था।
मिली तेज से तेज 'राम' मुख में सुखकर था।

श्री राम नारायण द्विवेदी बड़नगर वाले जिनको हम आज ख्यात ''प्रदीपजी'' के नाम से जानते हैं, ने देश प्रेम से सराबोर भक्तिप्रद गीत लिखे हैं।

देदी हमें आजादी,
बिना खड्ग बिना ढाल।
साबरमती के संत,
तूने कर दिया कमाल।
रघुपति राघव राजा राम।

गांधीजी का स्मरण तो हास्य व्यंग्य के प्रख्यात कवि काका हाथरसी ने भी किया है। उनकी एक कुंडली में व्यंग्य के माध्यम से आज के नेताओं को फटकारा है।

गीत अठ्ठारह

गांधी बाबा दे गये,
खद्दर को अतिमान।
बहुतक खद्दर पहिनकर,
छोड़ चले ईमान।
छोड़ चले ईमान,
घरों में घुसगई वन्दे।
अब तो आदाबर्ज छोड़,
आंखों के अंधे।
कह काका कवि राय,

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अरे क्यों भूला पाजी,
बन जाए सब काम,
अगर प्रकटे नेताजी।

पूज्य गांधीजी के बहु आयामी व्यक्ति से समग्र संसार अनुप्राणित हुआ है। उनके द्वारा देश के लिए किया गया बलिदान आज नेताओं को मार्ग दर्शन दे सकता है।

किन्तु आज के स्वतंत्र भारत की तस्वीर से सामान्य एवं बुद्धि जीवी वर्ग वितृष्ण हो गया है। अत: गांधीजी का पुन: इस पृथ्वी पर आव्हान करते हुए ख्यात साहित्यकार डॉ. प्र.च. जोशी ने इस प्रकार भांवाजलि व्यक्त की है—

गीत-उन्नीस

बापू लौट पुन: आ जाओ।
चरखों को चर खाय रहे।
अहिंसा पर हिंसा भारी है।
बे-गुनाहों की क्षुद्र मौत के,
गुनहगार द्वे, व्यभिचारी हैं।
बापू लौट पुन: आजाओ।।१।।
सत्य अहिंसा न्याय नीति,
के तुम उद्घोषक बने रहे।
काम क्रोध मद लोभ मोह से,
विगलित होकर डटे रहे।।२।।
आज तुम्हारे सत्याग्रह की,
उड़ी धज्जियां सारी है।
असत और कुर्सीवादी ही,
बने हुए अधिकारी है।।३।।
हे बापू तुम दया धर्म के,
अवतारी बन आ जाओ।
देश की भीषण ज्वालाओं पर,
अमिय बूंद बरसा जाओ।।४।।

शायर साहिर लुधयानवी से कौन परिचित नहीं है? आपने भी पूज्य बापू के कर्तव्य पथ पर चलने के लिए बच्चों को आव्हान किया है। कहते हैं-हे बच्चों! तुम ही कल के हिन्दुस्तान की तकदीर हो। तुम्हें आज इन टूटे खण्डहरों का पुननिर्माण

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करना है। जो आजादी की मशाल हमें पूज्य बापू सौंप गये हैं। जो आजादी हमें स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदानों से मिली है। उसे खोना नहीं है। हमारे देश में जयचंद और जाफर से गैरतवादी अब भी विद्यमान हैं। उनके दुष्ट इरादों को हमें अब सफल नहीं होने देना है। हे बच्चों! अन्यों का दिल प्रसन्न करने के लिए अपने वादों पर कोई खंजर न उठने पाये। धन दौलत के आश्रय में ईमान की तो नहीं हो। क्योंकि धनवानों की सुरक्षा के लिए नंगे भूखों की फौजें ही हमेशा युद्ध करती रही। इस देश ने नारी को देवी का दर्जा देकर भी दासी सा व्यवहार किया। जिसे कोई अधिकार न देकर भी 'घर की रानी' से उपमित किया। हे बच्चों! तुम कल के हिन्दुस्तान की तस्वीर हो तुम ऐसा आदर न लेना जिसकी आड़ में हिन्दुस्तान का अपमान हो। हे बालकों! तुमको अब मेहनत करने वालों के लिए अपना तिरंगा राष्ट्र ध्वज फहराना है। और प्रयत्न करना है। कि देश के सभी मिल मजदूरों तथा खेतीहर किसानों की खुशहाली हो।

गीत-बीस

बच्चों तुम तकदीर हो,
कल के हिन्दुस्तान की।
बापू के वरदान की,
नेहरू के अरमान की।
आज के टूटे खण्डहरों पर,
तुम कल का देश बसाओगे।
जो हम लोगों से न हुआ,
वह तुम करके दिखाला ओ गे।
तुम नन्हीं बुनियादे हो,
दुनिया के नये विधान की।
बच्चों तुम तकदीर हो—
जो सदियों के बाद मिली है,
वह आजादी खोए ना।
दीन धर्म के नाम पे कोई,
बीज फूट का बोएना।
हर मजहब से ऊंची है,
कीमत इन्सानी जान की।
फिर कोई जयचंद न उभरे,
फिर कोई जाफर न उठे।
गेरों का दिल खुश करने को,

अपनों पे खंजर न उठे।
धन दौलत के लालच में,
तोहिन न हो ईमान की।
बच्चों तुम तकदीर हो–
बहुत दिनों तक इस दुनियां में,
रीत रही हे जंगों की।
लड़ी है धनवानों की खातिर,
फौजें भूखे नंगों की।
कोई लुटेरा ले न सके अब,
कुरबानी इन्सान की।
बच्चों तुम तकदीर हो ——
नारी को इस देश ने देवी,
कहकर दासी जाना है।
जिसको कुछ अधिकार न हो,
वह घर की रानी माना है।
तुम ऐसा आदर मत लेना,
आड़जो हो अपमान की।
बच्चों तुम तकदीर हो ——
रह न सके अब इस दुनियां में,
युग सरमायादारी का।
तुम को झंडा लहराना है,
अब मेहनत की सरदारी का।
मिले हो अब मजदूरों के,
और खेती हो दहकान की।
बच्चों तुम तकदीर हो ——

डॉ. राम प्रताप भावसार सुसनेरी मूलतः गीतकार हैं। आपने अपने गीतों में पूज्य बापू के जीवन वृत्त एवं उनके कर्तव्य पथ को रूपायित करने का प्रयास किया है। गीत की लय सुंदर होने के साथ-साथ उनकी भावाभिव्यक्ति भी सशक्त है। एक सवैया छंद में कहते हैं- हे बापू! तुमने सत्य व्रत धारण किया और पुतली सुत के नाम से विश्व में जाने गये। आपने सदैव उज्जवल कर्मों का संधान किया और साधना के बल पर साधक कहलायें। अपने मन को दृढ़ संकल्पों से आपूरित किया। विश्व के सच्चे मित्र बने। जैसे बादल हमेशा दूसरों का भला करते हैं वैसे ही तुम भी मोहन बनकर धन्य हो गये।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गीत-इक्कीस

सत का व्रत मानलिया तुमने,
पुतली सुत विश्व महान बने।
करके शुभ उज्जवल कर्म सदा,
वर साधक सिद्ध सुजान बने।
संकल्प लिए दृढ़ मानस में,
जग जाहिर मीत जहान बने।
तुम धन्य मोहन राम कहे,
परजन्य यथावत गान बने।

दूसरे एक और गीत में डॉ. राम '' सुसनेरी'' जी ने गांधीजी के पुण्य अवतरण पर उनके कर्तव्य बोध को रूपायित किया है। कहते हैं जब देश में गांधीजी अवतरित हुए तब चारों ओर आलोक की सुरभि छा गई। परतंत्र भारत में भी स्वतंत्रता के वरण की चेतना फैलने लगी। आपने अपनी ज्ञान गरिमा से जन मानस में वह शंखनाद फूंका कि देश में स्वराज्य भाव की आंधियां उठ चली। देश को नव जीवन दान मिला। समग्र देशवासी गांधीजी के सत्याग्रह पथ पर बढ़ चले। परतंत्र भारत में इससे आजादी की ज्योति को बल मिला। मन में विजय का संकल्प संजोये जनता कर्तव्य पथ की ओर बढ़ी। उन्होंने सोच लिया था कि इस पथ में कितने भी कष्ट आवे, वे फिरंगियों का सामना अवश्य करेंगे। फिर सत्य का आग्रह लेकर मां वीणापा जी भी जयनाद गाने लगी। देश वासियों ने सत्याग्रहियों ने देश को आजाद कराने का कर्तव्य पथ अपना लिया। गांधीजी के अहिंसा के मर्म को समझा। सब ओर से एक ही नारा गूंज उठा है, अंग्रेजों भारत छोड़ दो! गांधीजी ने अपने कर्मों से दलितों को ऊँचा उठाने का प्रयास किया। उनके हीन भावों को मोड़ देकर उन्हें अपने कुल गौरव का पाठ पढ़ाया। इस प्रकार पूज्य गांधीजी ने हमारे भारत को स्वतंत्र करवाया। इससे चारों ओर खुशयाली छा गई ।

गीत-बावीस

जब देश में गांधी हुए,
आलोक सुरभी छा गई।
परतंत्र भारत में विजय की,
चैतना सी आ गई।।
जन जागरण का शंख फूँका,
ज्ञान गरिमा का कराया।
स्वराज्य की आँधी चली,
फिर देश को आगे बढ़ाया।
चल पड़े सब देश वासी,

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ज्योति जनता पा गई।
परतंत्र भारत में— —
संकल्प की दृढ़ता बढ़ी,
मन में विजय की कामना।
चाहे भी जितना कष्ट हो,
करना फिरंगी सामना।
फिर सत्या का आग्रह लिए,
जय भारती भी गा गई।
परतंत्र भारत में— —
कर्तव्य समझा कर्म को,
सब त्याग मोहन दास ने।
पाया अहिंसा मर्म को,
सद ज्ञान के आकाश में।
अग्रेंज भारत छोड़ दो,
उक्ति सभी को भा गई।
परतंत्र भारत में— —
ऊँचा दलितो को उठाया,
ज्ञान की गंगा बहाकर।
पाठ गौरव का पढ़ाया,
हीन भावों को ढहाकर।
आजाद भारत को कराया,
सब और खुशियाँ छा गई।
परतंत्र भारत में— —

एक और गीत प्रस्तुत है जिसे डॉ. राम ''सुसनेरी'' ने गाया है। वे लिखते हैं आज हमें ऐसे गांधी की आवश्यकता है जो देश को भली भांति चलाना सिखला देवे। जो संकल्पों की दृढ़ता सिखा दे। आज के स्वतंत्र भारत में निश दिन आतंकवाद बढ़ता जा रहा है। हमारी राजनीति में भ्रष्टाचार फैल गया है। नैतिकता भ्रष्ट हुई है। अब गांधीजी के सत का सरगम कौन गाए। आज हमें पुनः ऐसे मांझी की आवश्यकता है जो सत का नौका चलावे। भारत में आज चारों ओर धोखा धड़ी का साम्राज्य फैल रहा है। इससे सारा देश बदनाम हो रहा है। बागुरें ही अब खेत को खाये जा रही है। नेताओं का वेश छल छदम मय हो गया है। आज सत्य को अपनी प्रतिष्ठा दिलवा दे ऐसे गांधी की आवश्यकता है। आज हमारे चित्त में स्थिरता नहीं रही। और न ईमान को तौलने वाली तराजू है। अब तो अहिंसा की नाव ही हिंसा के ज्वार में डूबने लगी है। आज

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ऐसे गांधी की आवश्यकता है, जो इंसानियत को भी बांधने का साहस कर सके। देश को जो चलना सिखा दे ऐसे ही गांधी की आवश्यकता है। आज सारा देश अज्ञान रूपी अंधकार में डूबता जा रहा है। हमें फिर से इसके पुनर्निर्माण में कितना समय लगेगा? इसलिये इस नैया को डूबने से उबारने के लिये उसमें ऐसी डांडी (डंडे, सहारे) की आवश्यकता है जो देश को चलना सिखला दे।

गीत-तेईस

देश को चलना सिखादे, आज गांधी चाहिए।
संकल्प की दृढ़ता सिखादे, आज गांधी चाहिए।
बढ़ रहा आतंक निशदिन,
मर रहे भोले बिचारे।
भ्रष्ट नैतिकता हुई है,
कौन सत सरगम उचारे।
सत्य नौका चलादे, आज माँझी चाहिए।
देश को चलना सिखादे आज गांधी चाहिए।
सब ओर धोखा दुर्दशा,
बदनाम सारा देश है।
बागड़ें भी खेत खाती,
छल प्रवंची वेश है।
सत्य को उपर उठाले, आज गांधी चाहिए।
देश को चलना सिखादे, आज गांधी चाहिए।
चित्त में दृढ़ता नहीं है,
है नहीं ईमान भी।
अब अहिंसा डूबती है,
हे नहीं ईन्सान भी।
इन्सानियत को बाँध डाले, आज बाँधी चाहिए।
देश को चलना सिखादे, आज गांधी चाहिए।
डूबता है देश अब,
अज्ञान की मझधार में।
कितना समय फिरसे लगेगा,
डूबते की पार में।
डूबती नैया बचाले, आज डाँडी चाहिए।
देश को चलना सिखादे, आज गांधी चाहिए।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बुन्देली गीतों में गांधी

संकलन
डॉ. जुगल किशोर नामदेव
परकोटा, सागर

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

(१)

गारी

१. बचन मानो महात्मा गांधी के,
बचन मानो महात्मा गांधी के।
काट दो पंख हिंसा की आंधी के,
बचन मानो महात्मा गांधी के–/२/

२. सत्य अहिंसा के डगर पे चलो,
बनो स्वावलम्बी और फूलो फलो।—-
बचन मानो महात्मा गांधी के।–/२/

३. मतभेद भाव तजो छोड़ो छुआछात,
पीड़ितों की सेवा करो मान जाओ बात।
बचन मानो महात्मा गांधी के।–/२/

४. प्रगति के जनक हैं ज्ञान और विज्ञान,
उन्नति की जननी है, सहकारता महान।
बचन मानो महात्मा गांधी के।–/२/

५. एकता अखण्डता में सबको है विकास,
बापू के बचनो पे करियो विश्वास।
बचन मानो महात्मा गांधी के।–/२/

६. मिल जुर के करियो अपने राष्ट्र को उत्थान,
स्वतंत्रता अमर हो साक्षरता अभियान।
बचन मानो महात्मा गांधी के।–/२/

७. बाइबिल गुरू ग्रंथ पड़ो, गीता और कुरान,
सिख ईसाई हिन्दू मुसलिम बनियो इंसान।
बचन मानो महात्मा गांधी के।–/२/

८. प्रतियोगिता में लइयो अब्बल अस्थान (स्थान)
''नवरंग'' भारत की ऊँची रहे शान।
बचन मानो महात्मा गांधी के।—
बचन मानो महात्मा गांधी के।

(२)

गारी

१. चली बापू ने अहिंसा की चाल,
फिरंगियों की नानी मरी।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

२. अंग्रेजों की गल ने पाई दाल,
फिरंगियों की नानी मरी।

३. बापू ने जन जन में शक्ति जगाई,
बिखरे मोतियों की माला बनाई।
बिना हथियारों के लड़ी है लड़ाई।
भारत के बैरियों खों धूरा चटाई।
प्यारे बापू ने कर दओ कमाल।
फिरंगियों की नानी मरी।

४. जलियाँ वारे बांग में खूब चली गोली।
अमर शहीदों ने खून से खेली होली (होरी)
बढ़ी स्वतंत्रता संग्राम सेना की टोली।
भारत माता की जनता जय जय बोली।
वीरों ने काटे गुलामी के जाल।
फिरंगियों की नानी मरी।

५. लहराये तिरंगा फिर सोये भाग जागे।
हिन्दुस्तान छोड़ के सब अंग्रेज भागे।
नाचे गीत जाये सबई (सभी)
सोये भाग (भाग्य) जागे।
भारत में आनंद रस बरसन लागे।
बनो नवरंग भारत विशाल,
फिरंगियों की नानी मरी।

(३)

गारी

मुखड़ा- प्यारे महात्मा गांधी प्यारे,
प्यारे महात्मा गांधी।
भारत माँ के दुलारे हमारे,
प्यारे महात्मा गांधी।

१. गीता के श्लोक पड़े जिन वाणी,
बाइबिल के बचन पड़े गुरवानी (वाणी)
पड़त ते कुरान के पारे हमारे
प्यारे महात्मा गांधी।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

२. देश की दशा देख गये व्याकुल
सत्याग्रह करन भये आकुल खोले स्वतंत्रता के द्वारे हमारे,
प्यारे महात्मा गांधी।

३. भारत में एकता की नदियाँ बहाई
सत्य अहिंसा की ज्योति जगाई।
अंधियारे में कर दये उजियारे हमारे, -
प्यारे महात्मा गांधी।

४. अंग्रेजों को भारत से भगायो
नवरंग (बेड़ा) नैया खों पार लगाओ।
बिगरे सब संवारे हमारे।
प्यारे महात्मा गांधी।

(४)

गारी

मुखड़ा- दो अक्टूबर १८८९ में गांधी जी लये अवतार मोरे लाल।

२. तन मन धन देश पे बारी कर गय
राष्ट्रपिता बापू कहाय मोरे लाल।

३. राजनीत की गैरी (गहरी)
चाल चले बापू।

४. रोक दई अंग्रेजों की चाल मोरे लाल।

५. जब गांधी जी भक्षे बीसर बरसके,
पढ़वे खों गये इंग्लैंड मोरे लाल।

६. पढ़ लिख के गांधी देश खों लौटें,
देखे भारतीयों के बुरे हाल मोरे लाल।

७. गांधीजी की सोई आत्मा जगी,
तो जाग उठो पूरो हिन्दुस्तान मोरे लाल।

८. जागे उठे मौलाना आजाद जिन्ना,
जाग उठे डॉ. इकबाल मोरे लाल।

९. तिलक गोखले टैगोर जागे,
जागे उठे नेहरू मोतीलाल मोरे लाल।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

१०. जागे सुभाषचंद शास्त्री जी जागे,
जागे राधाकृष्न और पटैल मोरे लाल।

११. जागे राजेन्द्र बाबू जागे कृष्णामेनन,
जागे करोड़ों सपूत मां के मोरे लाल।

१२. कांग्रेस दल को जनम भयो फिर,
भारत मां हो गई निहाल, मोरे लाल।

१३. सत्याग्रह भये अनेकों आंदोलन,
लाखों हो गय अमर शहीद मोरे लाल।

१४. ''नवरंग'' पूर्व पश्चिम, उत्तर दक्षिण में,
गांधी जी की हो रई जय जय कार मोरे लाल।।

(५)

स्वांग

मुखड़ा- मिल जुल के चलो, हिल मिल के रहो,
कै गये हमारे बापू।

२. लैयो ग्राम स्वराज देश में,
घी के दिया जरइयो।
बिगरे काज बनईयों देश में,
प्रेम की गंगा बहईयो।।
करियो जग को भलो,
जन जन को भलो।
कह गये हमारे बापू।।

३. बहुमुख उन्नत करियो राष्ट्र की,
जनसंख्या ने बढ़ईयो।
निरक्षरता, निर्धनता मेनत करके, घटिईयो।
बैठे हांत ने मलो,
बैठे हांत ने मलो।
कै गये हमारे बापू।।

४. अखंडता की सौगंध खईयो,
एकता के गुन गईयो,

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

नेता और पंडत मुल्लों की
बातों (चालों) में ने अईयो।
अब समर के चलो,
अब समर के चलो।
कह गये हमारे बापू।।

५. नेहरें बना के बाणों को रूख,
मरूस्थलों तक लईयो।
सींचियो जंगल खेत बगीचा।
घर घर वृक्ष लगइयो
''नवरंग'' सदा फूलो फलो।
कह गये हमारे बापू।।

(६)

गारी

मुखड़ा- जय जय बोलियो महात्मा बापू की
जय जय, जय जय बोलियो।।

१. मानो श्री महात्मा बापू की बात,
छोड़ो छोड़ो छुआ छात,
बनो मानव एक जात,
तजो छल कपट और घात,
कम करो दिन और रात,
पढ़ो लिखो सब जमात
जय जय बोलियो।।
जय जय बोलियो महात्मा बापू की जय....
जय जय बोलियो।।

२. गांधी जी ते सपनों खों करियो साकार
खोलियो उन्नत के द्वार,
करियो नय नय अविष्कार,
बढ़ैइयो धंधे रूजगार,
सींचो जंगल पहार,
जय जय बोलियो।।
जय जय बोलियो महात्मा बापू की जय....

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

३. *भारत के वीर सहारहियो तैयार*
भैया रहियो होशियार।
लुके हैं, देश में गद्दार।
करियो उनको मन्टा झार।
करियो बैरियों पे बार।
हो जईयो ''नवरंग'' बलहार।
जय जय बोलियो महात्मा बापू की जय....

(७)

दिवारी

१. *गांधी की आंधी चली,*
तो उड़ गये, सब अंग्रेज रे।
हिंसा घूंस दहेज से, करियो सब परहेज रे।।

२. *साबरमती के संत ने भारत करो आजाद रे,*
धर्म जात और भाषा पे,
करियो ने वाद विवाद रे।

३. *सेवा करियो दुखियों की,*
करियो राष्ट्र विकास रे।
महात्मा बापू के बचनों पे,
राखो अटल विश्वास रे।।
देशी विदेशी शत्रु से, रहियो सदा होशियार रे,
''नवरंग'' जवान किसान देश के
देश में होय बलहार रे।।

(८)

गारी

१. *गांधी बापू भये महान,*
गांधी बापू भये महान,
भारत को आजाद कर गये,
दलितों को उत्थान।।
गांधी बापू भये महान......./२/

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

२. पोरबंदर गुजरात में चमके,
तारे शशि और भान।
गूंज उठो जयहिंद को नारा,
धरती और आसमान।
गांधी बापू भये महान......./२/

३. मोहन दास करमचंद गांधी
नाम रखे विद्वान।
जैसे नाम काम करो तैसो
जानत सकल जहान।।
गांधी बापू भये महान......./२/

४. मोहन बजाई अहिंसा की मुरली
छेड़ी एकता की तान।
स्वतंत्रता के दीवाने भये,
सिख, हिन्दू, मुसलमान।।
गांधी बापू भये महान......./२/

५. देश विदेशों में विधा पाई,
पढ़े ज्ञान विज्ञान।
गुरू ग्रंथ साहब पड़े बाईबल,
गीता और कुरान।।
गांधी बापू भये महान......./२/

६. देशवासियों की दशा देख के
करे आम ऐलान।
रहे अंग्रेजों भारत छोड़ो,
हमाओ है हिन्दुस्तान।।
गांधी बापू भये महान......./२/

७. होरी जराई विदेशी वस्त्रों की
बढ़ाई खादी की शान।
आंदोलन सत्याग्रह करके,
पाये संत सम्मान।।
गांधी बापू भये महान......./२/

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

८. राजनीति की गहरी चाल चली,
गोरों खों करे हैरान
दुश्मनों खों भारत से भगा दओ
''नवरंग'' करे गुणगान।
गांधी बापू भये महान......./२/

(९)

तर्ज- मोरी बहू हिरानी है ऐ भैया मिले बता दैयो

१. बापू रे गोली खाई रे
हमने आजादी पाई रे

१. गांधी ने ऐसी अक्कल भिड़ाई
सरफरोशों की टोली बनाई
एक भये सिख हिंदू मुसलिम ईसाई
मातृभूमि की सबने सौगंध खाई
बैरी पे करदई चढ़ाई रे
बापू ने गोली खाई रे

२. सबने देशी खादी अपनाई
विदेशी कपड़ों की होरी जराई
बापू ने ऐसी धूम मचाई
गोरों के प्रानों पे बन आई
बिन हथियार के लड़ी लड़ाई रे
बापू ने गोली खाई रे

३. गांधी महात्मा ने लठिया उठाई
फिरंगईयों खों धूरा चटाई
अंग्रेजों से धरती छुड़ाई
भारत से बैरी की करदई विदाई
भारत की लाज बचाई रे
बापू ने गोली खाई रे

४. बापू जी ने करी सबकी भलाई
सत्य अहिंसा की राह दिखाई
मतभेदों की लंका जलाई

(छुआछात)
साक्षरता ज्ञान की ज्योति जगाई
नवरंग सुधा बरसाई रे
बापू ने गोली खाई रे।।

(१०)

बंबुलिया

१. महात्मा गांधी जन्म लये रे, जन्म लये रे
भारत वालों के खुल गये भाग रे
महात्मा गांधी हो।

२. महात्मा गांधी पलना झूले रे,
पलना झूले रे
पिता माता बलईयां लेंय रे,
महात्मा गांधी हो।

३. महात्मा गांधी ऐसे खेले रे, ऐसे खेले रे,
जैसे ग्वालों के संग में गोपाल रे,
महात्मा गांधी हो।

४. महात्मा गांधी ऐसे पढ़े रे, ऐसे पढ़े रे,
जैसे मिट्ठू पड़त है सीताराम रे,
महात्मा गांधी हो।

५. महात्मा गांधी ऐसे लिखे रे, ऐसे लिखे रे,
जैसे दोहा लिखत ते तुलसी दास रे,
महात्मा गांधी हो।

६. महात्मा गांधी ऐसे सुने रे,
ऐसे सुने रे, जैसे
अर्जुन सुनत ते गीता ज्ञान रे,
महात्मा गांधी हो।

७. महात्मा गांधी ऐसे बोले रे,
ऐसे बोले रे,
जैसे जंगल में बोलें बब्बर शेर रे
महात्मा गांधी हो।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

८. महात्मा गांधी ऐसे चले रे
ऐसे चले रे,
जैसे सिंघल दीपों में चले, हंस रे,
महात्मा गांधी हो।

९. महात्मा गांधी ऐसे बैठे रे,
ऐसे बैठे रे,
जैसे बैठे कमल पे ब्रह्मा देव रे,
महात्मा गांधी हो।

१०. महात्मा गांधी ऐसे उठे रे,
ऐसे उठे रे,
जैसे सागर में उठे तूफान रे,
महात्मा गांधी हो।

११. महात्मा गांधी ऐसे सोवें रे,
ऐसे सोवें रे,
जैसे सांपों की शैय्या
पे, नारान रे,
महात्मा गांधी हो।

१२. महात्मा गांधी ऐसे जागे रे,
ऐसे जागे रे,
जैसे बनवास में जागें लखन वीर रे,
महात्मा गांधी हो।

१३. महात्मा गांधी ऐसे लड़े रे,
ऐसे लड़े रे,
जैसे सांपों से लड़े गुरूड़ राज रे,
महात्मा गांधी हो।

१४. महात्मा गांधी ऐसे तके रे (देखे),
ऐसे तके रे,
जैसे प्रजा को तकत (देखते) थे,
राजाराम रे,
महात्मा गांधी हो।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

१५. महात्मा गांधी ऐसे हँसे रे,
ऐसे हँसे रे,
जैसे बगियों में, हंसे बेला फूल रे,
महात्मा गांधी हो।

१६. महात्मा गांधी ऐसे ठाढ़े रे,
ऐसे ठाढ़े रे,
जैसे ठाढ़े हिमालय पहाड़ रे,
महात्मा गांधी हो।

१७. महात्मा गांधी ऐसे बहें रे, ऐसे बहें रे,
जैसे बहत है गंगा जमना की धार रे,
महात्मा गांधी हो।

१८. महात्मा गांधी ऐसे पीवें रे,
ऐसे पीवें रे,
जैसे पीवें हलाहल भोले नाथ रे,
महात्मा गांधी हो।

१९. महात्मा गांधी ऐसे मिलें रे
ऐसे मिलें रे, जैसे भकतों खों मिलें भगवान रे,
महात्मा गांधी हो।

२०. महात्मा गांधी ऐसे बिछुड़े रे,
ऐसे बिछुड़े रे,
जैसे बिछड़े मतारी और बाप रे,
महात्मा गांधी हो।

२१. महात्मा गांधी ऐसे चमके रे,
ऐसे चमके रे,
जैसे ''नवरंग'' चमके सूरज
चांद रे,
महात्मा गांधी हो।

(११)

दादरा

१. भजो राम रघुराई बापू ने कई हती-२
सबकी करो भलाई बापू ने कई हती
भजो राम— — —

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

२. अपनाओ अछूतो खों मतभेदों खों तजो-२
छुआछूत है बुराई बापू ने कई हती
भजो राम— — –

३. ईसाई हिंदू मुसिलम सिख जैन पारसी
तुम सब हो बहिन भाई बापू ने कई हती
भजो राम— — –

४. पर नारी को मानी सदानिज माता बहन सी-२
तजो सम्पत्ति पराई बापू ने कई हती
भजो राम— — –

५. हिलमिल के रओ देश में उन्नत करो भईया-२
खाओ मेहनत की कमाई बापू ने कई हती
भजो राम— — –

६. तीन फसलें काटो खेत की काटो ने हरे जंगल-२
तुम्हें राम की दुहाई बापू ने कई हती
भजो राम— — –

७. दीन दुखियों की पीड़ा हरो है धर्म अहिंसा-२
हिंसा है अधमताई बापू ने कई हती
भजो राम— — –

८. सावधान सजग रईयो सदा किसान और जवान-२
जा धरती है हमाय बापू ने कई हती
भजो राम— — –

९. नवरंग अमर शहीदों से बनियो राष्ट्रभक्त -२
जा भारतभूमि ताई बापू ने कई हती
भजो राम— — –

- रचयिता- नवरंग, सागर

(१२)

सावन का सैरा

हां हां रे बापू हमारे प्राणों से प्यारे हो
भारत मांओं के लाल

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

१. साबरमती के संत महात्मा
हते गांधी जी हृदय बिशाल

२. हां हां रे बापू ने निज बल
बुद्धि के कारण हो
काम करे नेक अनेक
भारतवासियों के हृदय में
जगा दये सोय ज्ञान विवेक रे

३. हां होरे निर्भय वीरों की
सेना बनाई हो
बनाये अनशन खो तीरकमान
गूंज उठो जय हिंद को नारा
भैया धरती और आसमान

४. हां हारे सत्याग्रह को माला बना लय हो
आंदोलन की छुरी कटार
सत्य अहिंसा की ढाल बना लई
एकता की बनाई तलवार

५. हां हां रे राजनीत को चक्र बना लओ हों
भाषणों को त्रिशूल
कर दई चढ़ाई फिरंगईयों पे
अंग्रेजों की उड़ा दई धूल

६. हां हां रे गांधी ने देश
आजाद करा लऊं हो
राखी है अपनी टेक
पर्वत हिमालय से कन्याकुमारी तक
नवरंग भारत खों कर दऊं एक

- रचयिता- नवरंग, सागर

(१३)

कार्तिक गारी

आजाद भारत को छोड़ के चले गये
बापू आजाद भारत खों छोड़ के

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

१. बापू ने रघुपति राघव गाये
सोये हुए जन जन खो जगाये
अंधयारे में दिया जराये
सत्य अहिंसा की गेल दिखाये
टूटे मनों खों जोड़ के चले गये बापू---
आजाद भारत खों---

२. देश को बिगरे काम बना दओ
छुआछात को रोग मिटा दओ
अंग्रेजों खों मजा चखादयो
बैरी खों भारत से भगा दओ
फिरंगियों को गढ़ तोड़ के
चले गये बापू---
भारत खों आजाद छोड़ के ---

३. दलितों को उत्थान करा गय
अधिकार खों समान करा गय
किसानों खों भूदान करा गय
जु आनो को सम्मान करा गय
मतभदों को घड़ा फोड़ के चले गये बापू---
भारत खों आजाद छोड़ के ---

४. भारत मैया की लाज बचा गय
एकता को महामंत्र सिखा गय
सहकारता को भेद बता गय
शिक्षा ज्ञान खों आगे बढ़ा गय
नवरंग चदरिया ओढ़ के
चले गये बापू---
भारत खों आजाद छोड़ के ---

- रचयिता- नवरंग, सागर

(१४)

गारी

१. आजादी दुआई बापू ने-२
बीच भँवर में फंसी ती नैया-२

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पार लगाई बापू ने
आजादी दुआई बापू ने

२. भटक रये ते हिन्दुस्तानी-२
गैल दिखायी बापू ने
आजादी दिखाई बापू ने

३. छायै हते अंधयारे-२
जोत जगाई बापू ने
आजादी दुआई बापू ने

४. आजादी के दीवानों की-२
सेना बनाई बापू ने
आजादी दुआई बापू ने

५. हथियारों के बिन बैरी से-२
लड़ी लड़ाई बापू ने
आजादी दुआई बापू ने

६. अमर शहीदों के बलिदानों की-२
याद कराई बापू ने
आजादी दुआई बापू ने

७. अंग्रेजों खों भारत से भगा दयो
धूम मचाई बापू ने
आजादी दुआई बापू ने

८. सत्य अहिंसा की डगर पे चल के-२
मंजिल पाई बापू ने
आजादी दुआई बापू ने

९. छुआछात और मतभेदों की-२
रीत मिटाई बापू ने
आजादी दुआई बापू ने

१०. बुरो ने कहो सुनो-२
बुरी ने देखो
नीति सिखाई बापू
आजादी दुआई बापू ने

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

११. भारतीय संस्कृति भारत मां की -२
लाज बचाई बापू ने
आजादी दुआई बापू ने

१२. अंत समय नवरंग राम भजके - २
गोली खाई बापू ने,
आजादी दुआई बापू ने

(१५)

देवी भगत

१. ३० जनवरी, १९४८ दिन हतो शुक्रवार मां
प्यारे बापू सरग सिधारे
रोवे सकल नर नार मां

२. नाथूराम ने जुल्म गुजारे
बापू पे करो बार मां
तीन गोली बापू खों मारी
करा न तनक बिचार मां

३. दुनिया भर में खबर फैल गई
छोड़ गये बापू संसार मां
छाई उदासी सारे जगत में
मच गओ हाहाकारा मां

४. बंद भये बाजार दुकानें
रूके सब कारोबार मां
बड़े-बड़े लोग विदेशों से आये
करे अंतिम संस्कार मां

५. बापू हमारे प्राणों से प्यारे
हमें दे गये अधिकार मां
नवरंग सब ऐ पार खड़े रये
गांधी जी हो गये पार मां

- रचयिता- नवरंग, सागर

(१६)

फाग

बाबुल महात्मा गांधी
हमाये भारत के कहाबें।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गांधी जी खों तोई सब जानत
सांचे स्वाराज की आंधी.........
तितर बितर हती देश की जनता
जो एक डोर में बांधी..............
बा एक डोर बनी गोरों खों
जो देश छोड़ वे फांदी.......
पन्ना प्यारे भारत मां की नइैया
लै गये किनारे बन मांझी......

- रचयिता - पन्नालाल अहिरवार, सागर

(१७)
गालो गुन हाय गांधी जी के
हते हमें बड़े नीके ....
दो अक्टूबर अठारा सौ उनहत्तर
लाल भये पुतली के......
बोलियौ बुरये ने देख्यौ सुनियौ
शब्द कहे उनही के......
सत्य अहिंसा के मारग पै,
अंग्रेजन से जीते......
तीस जनवरी उन्नीस सौ अढ़तालिस
बने निशाना गोली के........
पन्नालाल हिन्दू और मुस्लिम
जिनखों एक ओली के ....

- रचयिता - पन्नालाल अहिरवार

(१८)
ढिमरयाई
महात्मा गांधी ने
हमें आजाद कराये
राजाओं में फूट परी तो
नियत विदेशियों की रे लगी तो

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आखर घुसई वे आये.......
घुस तौ आये बन व्यापारी
हथयालई हर शक्ति हमारी
कोऊ कछू ने कर पाये.......
लौ शक्ति बन बैठे शासक
छीन लई हर एक रियासत
फिर हाय जुलम का ढोय.....
सैह सैह जुलम भड़क गई आगी
बन गये गांधी जी फिर बागी
सबके खून खौलाये.......
भड़क उठौ भारत कौ पानी
भगतों गैल उनों ने दिखानी
ऐसे टरर भगाये ....
राष्ट्र पिता की पदवी पाई
पन्ना चलौ गली उनकी बताई
हैं जो पूज्य हमाये......

- रचयिता : श्री पन्नालाल अहिरवार

(१९)
जन जन से जायें ने भुलाये रे
राष्ट्र पिता गांधी हमाये
हम सोई जानत तुम सोई जानत
मानत सबई चरखा बाये रे......
कर-कर के देश में रे आन्दोलन
सोत देश बासी जगाये रे........
जिनकी क्रान्ती रई शान्ती की
तबई सफल हो पाये रे ......
उनकी स्वाराज पै लगन लगी तो
आखर स्वाराज लै आये रे.......
पन्ना चलौ पद चिन्हौं पै उनके
जैहौ नै क्याऊँ ठगाये रे..........

- रचयिता- पन्नालाल अहिरवार

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लोकगीतों में गांधीजी

देवेन्द्र सत्यार्थी

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

द्वार-द्वार पर खड़े हुए यह कोटि-कोटि जन,
कहते, आओ आओ चिर-नूतन हे उषा-किरन,
ज्यों मुक्तहासिनी दुलहन घूंघट खोल रही,
उतरो हे ज्योतिर्वसना, धरती बोल रही।
ज्यों लिये चूड़ियों की गठरी घर घर झांके मनियार,
गोमति-धारा की प्रियम्वदा सोंधी सुगन्ध करती व्यापार,
यह सत्य सनातन पृथिवीपुत्र, माटी का तन माटी का मन,
जाती जब रात, उषा आती, ऋतु-मन भी·तो शिल्पी का मन।।

कुछ इस तरह की कविता करने लगता है मेरे भीतर का कवि, जब भी मैं ऋग्वेद के ऋषि-कवि द्वारा अभिनन्दिता उषा के महिमा-गान पर विचार करता हूँ। उपनिषद्कार ने भी यही कहा- ''हमें तम से ज्योति की ओर ले चलो।'' भगवान बुद्ध ने यही उपदेश दिया-''समय अपने दीप बनो।'' ज्योति की कल्पनामात्र से हमारी यात्रा रंगीन हो उठती है। महाभारत की यह सीख हमारे साथ चल रही है। ''गुह्यं ब्रह्म तदिदं ब्रवीमि नहि मानुषाच्छ्रेष्ठतरं हि किंचित्।'' (जो ब्रह्मा का गोपनीय अभिप्राय है उसे मैं रूप में कहता हूँ कि कोई भी वस्तु मनुष्य से श्रेष्ठ नहीं है।)

यही भाव चण्डीदास की कविता में गूंज उठा- ''सबार ऊपरे मानुष सत्य ताहर ऊपरे नाई''मनुष्य तभी सबसे ऊपर है जब वह तम से ज्योति की ओर बढ़े, जब स्वयं अपना दीप बने। ''नाम बड़ेरे दर्शन थोड़े'' वाली बात न हो। जन-जन की समानता और कर्मशीलता ही हमें शिरोधार्य हो। सत्य के व्रत से ही यह यात्रा सफल हो सकती है। सबको काम मिले। सब स्वाधीन हों। हमारी यात्रा ही हमारी तपस्या हो। सत्य हमारे साथ चले। अभय हमारा मार्गदर्शक बने अहिंसा हमारी आवाज हो, जो प्राणों के व्यापार को युग-कल्याणी वाणी में ढाल दे। आठ पहर चौंसठ घड़ी हम सत्याग्राही रहें। अहिंसा हमारे अनुशासन का महामंत्र बने। काल तो घोड़ा है। मनुष्य वही है जो इस घोड़े पर सवार होकर चले। विचार के लिए भाषा चाहिए। भाषा अपनी वेश-भूषा में ही प्रसन्न रहती है। एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पुल बनाकर रहती है भाषा। हमारी भाषा हमारी सबसे बड़ी थाती है। ''मनसा वाचा कर्मणा'' की सिखावन हमें प्रिय है। भाषा को कर्म में ढालती है। महाभारत में बड़ा सुन्दर प्रसंग आया है। चोंच से घोंसला बनाने वाले पक्षियों के मुंह से विराट बुद्धि वेदव्यास ने युग-कल्याणी कविता की प्रतीक भाषा में यह बात कहलवाई है- ''धन्य है वे प्राणी जिनके पास हाथ हैं। हमसे कोई पूछे कि तुम्हें क्या चाहिए तो हम यही कहेंगे कि बीस उंगलियों वाले हाथ-पैर मांगते हैं। जो हाथों वाले हैं वे कौन सा काम नहीं कर सकते जो हाथों वाले हैं, उन्हीं का जीवन सार्थक है।''

मनसा वाचा कर्मणा की भावना ही हमारी कार्यभूमि है। सेवा ही सनातन सत्य है। सेवा की भाषा रूखी रहेगी, यदि सत्य और अहिंसा का संग नहीं रहता। कर्तव्य ही सच्चा वरदान है। लोक कल्याण ही सच्चा निर्माण है। तिमिर पार जाने वाले बटोही मात्र स्वार्थ के बल-बूते पर आगे नहीं बढ़ सकते। स्वार्थ तो तिमिर है। ऋग्वेद का कवि कहता है ''नमः ऋषिभ्यः

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पूर्वेभ्यः पूर्वजेभ्यः पाथिकृद्भ्यः'' (पूर्व के ऋषियों को प्रमाण है, जिन्होंने पहले जन्म लिया और हमारे चलने-योग्य पथों का निर्माण किया।)यही बात महाभारत की एक कथा में उभरती है, जब युधिष्ठर यक्ष के प्रश्न का उत्तर देते हुए कहते हैं- ''महाजनः यन गतः स पन्थः'' (जिस पर महाजन चले रहे वही पन्थ है।) सत्य ही इस मार्ग में हमारा पथ प्रदर्शक हो सकता है।

गांधी का नाम

गाड़ीवान? ओ गाड़ीवान? तेरे हाथों में है रूखी रोटी। क्या बस यही कमाई तेरी, गाड़ीवान? ओ गाड़ीवान? गांधी का नाम जरूर सुना होगा तुमने, ओ गाड़ीवान?

एक मराठी लोकगीत की यह भावलिपि मेरे मन पर सदा के लिए अंकित हो गई। गीत के मूलशब्द, जो एक डायरी में लिख लिए थे, फैजपुर कांग्रेस अधिवेशन के अवसर पर, उन्हीं दिनों कहीं गुम गए। पर इस गीत की गूंज से मुझे राह दिख गई। दोपहरी के घाम में गांव के कच्चे रास्ते पर धूल का बादल उठाने वाले गाड़ीवान ने अपने को सम्बोधित करते हुए अपनी स्थिति बता दी थी। नूतन लोकगीत की पुकार मुझे बता दी गई कि एकमत होकर समस्त राष्ट्र ने गांधी का सार्वभौम नेतृत्व मान लिया। इसी सूचना का प्रतीक था यह गीत। जैसे गांधी का नाम सम्पन्नता और स्वतंत्रता की सूचना हो; प्रत्येक संघर्ष का संबल, प्रत्येक कष्ट का अमोघ उपचार।

''और कोई नेता तो अभी लोकगीत की रस्सी से नहीं बंधा, बापू'' यह बात मैंने फ़ैज़पुर-अधिवेशन के अवसर पर ही गांधीजी से कही थी। वे हंसकर कह उठे थे, ''मुझे इस रस्सी में बंधा देखकर तो तुम अवश्य खुश हो रहे होगे।'' मराठी लोकगीत गांधीजी के सामने था। मैंने कहा- भारत के लोकगीत बुद्ध का नाम कहीं भी ऊंचे-नीचे स्वरों में सुनाई नहीं देता, और यह बुद्ध की जन्म-भूमि के लिए अत्यन्त लज्जा की बात है।''

बापू हंसकर बोले, ''बुद्ध के व्यक्तित्व में तो इससे कुछ अन्तर नहीं पड़ा। लोकगीत की रस्सी में बंधकर ही कौन-सा सुख मिलता है?''

मैंने कहा,- ''जब बौद्ध धर्म को भारत से देश-निकाला दिया गया होगा, तो लोकगीतों से भी बुद्ध का नाम निकाल दिया गया होगा, और उसके स्थान पर किसी अन्य नायक या देवता का नाम रख दिया गया।''

बापू हँसकर बोले, ''रस्सी आखिर रस्सी है। किसी भी रस्सी से बंधना मुझे नापसन्द है। यह बात बुद्ध को भी नापसन्द रही होगी।''

मैंने कहा, ''लोकगीतों की जिस रस्सी से आप बंधते चले गये हैं, वह तो बहुत पक्की नजर आती है। अब आप इस रस्सी से छूटने के नहीं।''

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

''यह तो ठीक नहीं।'' बापू कह उठे,- ''रस्सी से बंधने की अपेक्षा मुझे रस्सी से मुक्त होना ही प्रिय लगता है।''

बापू चरखा चलाते-चलाते हँसकर फिर बोले, ''यह भी हो सकता है कि कल ही मैं इस धरती से उठ जाऊँ और मेरे पीछे लोकगीत से मेरा नाम हटाकर दूसरा कोई नाम जोड़ दिया जाए। मुझे तो खुशी ही होगी।''

मैंने कहा,- ''बुद्ध का नाम लोकगीत से निकालकर लोगों ने जो भूल की थी वे अब दोबारा उसे नहीं दोहरायेंगे।''

इस पर बापू खिलखिलाकर हँस पड़े। बोले, 'जब मैं हूँगा न तुम, तब कौन देखने आएगा?''

मैं कहना चाहता था कि इस पीढ़ी से बापू का इंतना गहरा सम्बन्ध है कि उन्हें तटस्थ होकर देखना उसके लिए बिल्कुल सहज नहीं। भय था कि कहीं बापू बीच ही में न टोक दें। मुझे पूर्व विश्वास था कि इस दुबले-पतले इंसान ने जन्मभूमि को बदलकर रख दिया है, पराजय के स्थान पर विजय की भावना भर दी है और केवल इसी कारण वे लोक-प्रतिभा की रंगभूमि पर युग युगान्तर तक सदैव कुलपति और अधिनायक के रूप में उपस्थित रहेंगे। हिमालयके सम्मुख खड़े होकर कालिदास की शतसहस्त्री प्रतिभा ने कैसे इस पर्वत की प्रशंसा की होगी, मैं इसी चिन्तन में डूब गया। लोकगीत का राष्ट्रीय थाती के रूप में क्या महत्व है, इसकी चर्चा चलती रही। परन्तु बापू की प्रशंसा में लोकगीत में जो नए स्वर बज उठे हैं हमारे एक एक जनपद में, उस पर अधिक कहने की हिम्मत न हुई। उन लोकगीतों में कुछ यहाँ देने का लोभ संवरण हम नहीं कर सकते :-

यह एक तेलगु लोकगीत है :

राटमु ओड़कारम्मा, ओ अम्मालारा?
गांधी की जय अंचु दारामु तीयारे।

एकुलु रामसु इन्टिकन्दम्मू,
महात्मा गांधी प्रजल कन्दम्मु।

(चरखा कातो, ओ पुत्रियो?
गांधी की जय कहते हुए सूत के तार निकालो।
पूनी और चरखा घर की शोभा है।)

''स्वराज्य के लिए चरखा कातो, सूत के धागे में ही स्वराज्य छिपा है।'' गांधीजी की यह वाणी समस्त देश को स्पर्श करती चली गई थी।

गांधी बाबा आए हैं

यह एक सन्थाल लोकगीत है :-

चेतना दिसम् खुन गांधी बाबाये दराये कान्
तीरे तापे तायो गो कानुन पुथी
बहक् रेताये खद्दर टोपरी
तारिन रेताये नायो गो मोटा गामछा
माहो दिसम् रेन मानैवा वंचाव
तवोन लगितये है अकाना ।।१।।

चेतना दिसम राज गतेञ
लतार दिसम रानी गतेञ
मुलागढ़ किञ रेयेकना
हती गतेञ आलुम अड़ागे
उनि रेगि सोना मेनाआअनिरिगे सँखा
मेनाआ हती गतेञ आलुम अड़ागे ।।२।।

नुयिन मारांग धरीत रे गाडा
इंगराज को बेनाब आकात्
गाडा रे दो बाबाञ जुराकना
गाडा खोम दा बाबा राकाप कञ में
मनिवा होड़ बाबपाञ बाञचाव कोआ।।३।।

(पश्चिम दिशा से गांधी बाबा आये हैं
मां उनके हाथ में कानून की पोथी है
उनके माथे पर खद्दर की टोपी है
मां, उनके माथे पर मोटा गामछा है
वे हम लोगों को बचाने आए हैं
हे बन्धुगण, सुनो ध्यान देकर।।१।।

पश्चिम दिशा से राजा ने आकर
पूर्व दिशा से रानी ने आकर
नुलागढ़ पर अधिकार जमा लिया

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अब वे छोड़ना नहीं चाहते
हम भी पराधीनता से मुक्ति पाने के लिए
निरन्तर संघर्ष करते रहेंगे।।२।।

इस हमारी धरती पर
अंग्रेजों ने गहरे गर्त बना रखे हैं
हम उनमें गिर गये
हे (गांधी) बाबा, हमें बाहर निकालो
फिर हम समाज को बचायेंगे।।।३।।।

श्री रामचरित्रसिंह के कथनानुसार ''जिस जाति ने सभ्यता के थपेड़ों को कालान्तर से सहकर भी आदिम युग की सभ्यता, अपने पूर्वजों के आचार-विचार एवं उनके शौर्य को बचाए रखा है, उस जाति का साहित्य किसी भी जाति के साहित्य से क्या कम महत्व रखता है, भले ही वह लिपिबद्ध न हो? शिक्षा से दूर रहने पर भी वे लोग गांधी-सम्बन्धी गीत गा-गा कर जंगल में मंगल मनाया करते हैं।''

गांधी का राज

जब चतुर्दिक् अपमान के अतिरिक्ति कुछ भी दृष्टिगोचर न हो रहा हो, उस समय अकस्मात् कहीं से गांव में यह सूचना मिलना कि गांधी का राज होने वाला है, अन्धकार में प्रकाश-किरण का दृश्य उपस्थित करता है। आशा की यही किरण युगारम्भ की सूचना बनकर एक गोंड लोकगीत में जगमगा उठी :—

अद्दल गरजे बद्दल गरजे
गरजे मालगुजारा हो
फिरंगी राज के हो गरजे सिपाइरा, रामा
गांधी का राज होने वाला हाय

(बादल गरजता है- मालगुजार गरजता है, हो हो हो,
गांधी का राज होने वाला है रे।
फिरंगी राज का सिपाही गरजता है, हे राम?
गांधी का राज होने वाला है रे
हो हो हो, गांधी का राज होने वाला है रे?)

गांधी, दीवा दिखैयो रे?

यह मेरठ जनपद का लोकगीत है :-

तेरे घर में घुस गये चोर
गांधी, दीवा दिखैयो रे
तेरे तो भाई, गांधी, टोपीवाले,
यह टोपवाला कौन?
गांधी दीवा दिखैयो रे?
तेरे तो भाई, गांधी धोती वाले,
यह पतलूनवाला कौन?
गांधी दीवा दिखैयो रे?
तेरे तो भाई, गांधी लाठीवाले,
यह बंदूकवाला कौन?
गांधी दीवा दिखैयो रे?

यह एक भोजपुरी विरहा है :—

गांधी के लड़इया नाहिं जितबे, रे फिरंगिया?
चाहे कर केतना उपाय;
भल-भल मजवा उड़ौले ऐहि देसवा में
अब जइहैं कोठिया बिकाय।

(गांधी की लड़ाई में तुम नहीं जीत सकते, ओ रे फिरंगी?
चाहे तुम कितना भी उपाय करो
भले-भले मजे उड़ा इस देश में
अब कोठियाँ बिक जायेंगी।)

सुमरी गांधी ओ गंगा

तुलसीपुर (जिला गोंडा) के निवासी नारायण अहीर द्वारा रचित यह अवधी बिरहा दिल्ली में रामदयाल अहीर से प्राप्त हुआ, जिसने कहा, ''मेरे गुरु ने ऐसे-ऐसे बीसियों बिरहे रच डाले हैं।'' इस बिरहा में गांधीजी की उस कलकत्ता यात्रा की झांकी प्रस्तुत करने का यत्न किया गया है जो उन्होंने अंतिम बार दिल्ली पधारने से पहले वहाँ शान्ति स्थापित करने

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

के लिए की थी। गीत की रचना अंतिम बार दिल्ली पधारने से पहले वहाँ शान्ति स्थापित करने के लिए की थी। गीत की अन्तिम पंक्तियों में लोक-कवि ने बड़े अर्थ-पूर्ण ढंग से बताया है कि गांधीजी ने यह बुद्धि अंग्रेजों से ही सीखी थी- जीन जैसा मोटा कपड़ा पहनने की बुद्धि। खादी की परम्परा में लेखक-कवि की पूरी आस्था है-

सुमिरौ गांधी औ गंगा
बस्तर पहिरे रंग रंगा
जिनके कर्म में राज लिखा
फिर कोई नहीं मेटनवाला
कितो काम करिहै वह गाजी
कितो काम करि है भाला
लड़ने मां अंग्रेज खड़ा है
बिगड़ परे हिन्दू काला
रामचन्द्र केदारनाथ क्या
लेक्चर देत निराला
बैठे गांधी पूजा करते
फेर रहे तुलसी-माला
हाथ-कमण्डल भस्म रमाये
बगल लिहें मिरला-छाला
जाय तो पहुँचे कलकत्ते में
वहां केर सुन लेहु हवाला
ठीक दुपहरे लूट भई औ
घर घर बंद भये ताला
आना थाना पुलिस वहां पै रहे पहरा।
लिहे बन्दूक सिपाही करें टहरा
आज सभा में सुनो गांधी का लहरा।
अक्किल अगरेज से लीन
कपड़ा पहिरो मोटिया जीन
नहीं तो होइजैहो बेदीन।

गांधी ऋषि महा ऋषि

यह है एक तमिल लोकगीत :—

गांधी ऋषि नम्मे काप्पालु
महाऋषि गांधी ऋषि

(गांधी ऋषि हमारी रक्षा करता है, महाऋषि गांधी ऋषि)।

गांधी बाबा का हुकम

यह छत्तीसगढ़ी का लोकगीत है :-

नवा रे घर को नवा रे थुनिया
गांधी बाबा के हुकम में चले रे दुनिया।

(नये घर में नई धूनी लगाई।
गांधी बाबा के हुक्म में दुनिया चलती है।)

हिन्दुस्तान छोड़ो

ये कुछ पंजाबी लोकगीत हैं -

आप गांधी कैद हो गया
सानू दे गया खद्द दा बाणा।।१।।

गांधी दा नां सुणी के
आंग्रेज दा नां सुणी के
अंग्रेज दा नानी मर गई।।२।।

गांधी दे नां उत्तों
मैं सत्ते बहिश्तां वारो।।३।।

गांधी दे खद्दर ने
संघ लट्ठे दा घुट्टिया।।४।।

गांधी कहे फिरंगिया वे
हुण छड्ड दे हिन्दुस्तान।।५।।

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

(गांधी स्वयं कैद हो गया।
हमें खद्दर का बाना दे गया।।१।।

गांधी का नाम सुनकर
अंग्रेज की नानी मर गई।।२।।

गांधी का नाम पर
मैं सात बहिश्त न्यौछावर कर दूं।।३।।

गांधी के खद्दर ने
लठ्ठे का गला घोंट डाला।।४।।

गांधी कहता है- ओर रे फिरंगी?
अब हिन्दुस्तान छोड़ो।।५।।

सत्याग्रह-हथियार

यह हरियाना जनपद का लोकगीत है -

घर घर लेडी-लेडी लंदन रोवे
गांधी बनो गले का हार
घुटनन कर दिई गवरमेन्ट
अब वा के थोथे बाजे हथियार
बर्र तितैया जैसे चिटमन लागें
बेड़ा कौन लगावे पार?
हाहाकार मचौ लंदन में
भैणा, अब रूठ गये करतार,
बाजी नायें पायें या लंगोटीवाले से
हाथ या के सत्याग्रह हथियार

लंदन कोपा गांधी बाबा
संग में और जवाहरलाल
अब तक तो भारत में भैणा
मुफ्ता मारा माल
नीयत विरुद्ध होय जो राजा

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वा को ऐसे ही बिगड़े हाल
नीयत विरुद्ध रावण कीनी
लंका बिछो मौत का जाल
हथियार उठाओं, गांधी बाबा
नित नित कहे जवाहरलाल

(लन्दन में घर-घर में रो रही है
गांधी हमारे गले का हार बना गया।
सरकार घुटनों के बल झुक गई
अब उसके हथियार थोथे बज रहे हैं।
भिड़ों के समान लोग अंग्रेजों पर चिपटने लगे
कौन बेड़ा पार लगाए?

लंदन में हाहाकार मच गया
इस लंगोटीवाले से हम बाजी नहीं ले जा सकते।
उसके हाथ में सत्याग्रह का हथियार है।
लंदन कांप उठा, गांधी बाबा
संग में है जवाहरलाल
अब तक तो भारत में बहन
हमने मुफ्तका माल उड़ाया है
जब राज की नीयत बुरी हो जाती है
उसका हाल ऐसे ही बिगड़ जाता है
रावण ने भी नीयत बुरी की थी
लंका में मौत का जाल बिछ गया था।
हथियार उठाओ गांधी बाबा
नित नित कहता है जवाहरलाल।)

राष्ट्रपिता गांधी के साथ स्वतंत्र भारत के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू का उल्लेख इस गीत की विशेषता है।

सच्चे हिन्दुस्तान का जन्म

फुलोप मिलर ने गांधी के व्यक्तित्व पर विचार करते हुए कहा है- ''किसी युग में बुद्ध के सम्मुख जिस तरह मानव की वेदना अपना घूँघट खोलकर खड़ी हो गई थी, उसी तरह अब गांधी के सम्मुख खड़ी हो गई है।''

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लोकगीतों में गांधी महिमा का मूल्यांकन करते समय हमें गांधीजी के ये शब्द अपने सामने रखने होंगे-

मेरा ध्येय सारी दुनिया से मैत्री है।
विश्वबंधुत्व के लिए जिऐंगे और
विश्वबंधुत्व के लिए मरेंगे
मेरा मिशन केवल हिन्दुस्तान की आजादी नहीं है,
चाहे आज भले ही मेरा लगभग पूरा जीवन और
मेरा सब समय उसी में लगा हुआ है।
मैं तो हिन्दुस्तान की आजादी के द्वारा·
मानवमात्र की एकता का मिशन
पूरा करना चाहता हूँ।

''भारत छोड़ो'' प्रस्ताव की विवेचना करते हुए गांधीजी ने ठीक लिखा था- ''मैं साफ शब्दों में कह चुका हूँ, मेरे इस प्रस्ताव में किसी व्यक्ति या दल के हाथों में हुकूमत सौंपने की बात नहीं है। अगर अंग्रेज किसी समझौते के फलस्वरूप हिन्दुस्तान छोड़ने को तैयार हों तो इस सवाल पर विचार जरूरी हो जाता है। लेकिन मेरे इस प्रस्ताव के अनुसार तो उन्हें हिन्दुस्तान को भगवान भरोसे छोड़ जाना है- आजकल की भाषा में इसी को अराजकता कहते हैं- इस अराजकता के फलस्वरूप देश में कुछ समय के लिए यादवी मच सकती है, बे-लगाम लूट-मार फैल सकती है। लेकिन इसी में से आज के इस झूठे हिन्दुस्तान की जगह एक सच्चे हिन्दुस्तान का जन्म होगा।''

('हरिजन सेवक' २४-५-१९४२)

इसमें कोई सन्देह नहीं कि महात्मा गांधी ने हिन्दुस्तान की आजादी का जो सपना देखा था, उसी की छाप लोकगीतों पर भी पड़ी है। कभी उन्होंने लिखा था- ''अपने पौरुष के बदले सुरक्षा खरीदने की बजाए मैं यह अधिक पसंद करूंगा कि मैं स्वयं और मेरा सर्वस्व बिल्कुल नष्ट हो जाए।'' (यंग इंडिया मई और दिसम्बर १९२१)। फिर उन्होंने यह तक कह डाला- ''मेरा यह विश्वास गहरा होता जाता है कि ब्रिटिश सरकार की संगठित हिंसा को शुद्ध अहिंसा के सिवाए और कोई शक्ति नहीं रोक सकती........'' (लार्ड इरविन को पत्र, १९६०) और जब गांधीजी का सपना पूरा हुआ तो दिल्ली की एक प्रार्थना सभा में उन्होंने कहा, ''मैं हिमालय क्यों नहीं जाता? वहां रहना तो मुझे पसन्द पड़ेगा। ऐसा नहीं कि मुझे खाना, पीना ओढ़ना इत्यादि नहीं मिलेगा। वहाँ जाकर शान्ति मिलेगी। मगर मैं अशान्ति में शान्ति चाहता हूँ, नहीं तो उस अशान्ति में मर जाना चाहता हूँ। मेरा हिमालय यहां है। आप सब हिमालय चलें तो मुझे भी अपने साथ लेते चलें।'' (दिल्ली, २९ जनवरी १९४८ की प्रार्थना सभा के भाषण से)।

और आखिर गांधीजी अपने सपनों के सच्चे हिन्दुस्तान की शान्ति बनाए रखने के लिए शहीद हुए। लोकगीतों में उनकी कीर्ति-गाथा को हमें पृष्ठभूमि में समझना चाहिए।